अभिव्यंजना, नयी दिल्ली

संपादक
सुरेन्द्र तिवारी

नोबेल पुरस्कार विजेताओं की श्रेष्ठ कहानियां

प्रकाशक : अभिव्यंजना
109/48, पंजाबी बाग,
नयी दिल्ली-110 026

सज्जा : हरिप्रकाश त्यागी

प्रथम संस्करण : 1985

मूल्य : 65.00 (पैंसठ रुपये)

मुद्रक : पाराशर प्रिंटर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

A collection of best stories by the Nobel laureates.
Price : Rs. 65.00
First edition : 1985

स्वदेश भारती
और
उत्तरा भारती
के लिए

आभार

इस सकलन को तैयार करने मे कई पत्र-पत्रिकाओ से, विशेष रूप से 'सारिका' और 'सचेतना' से मैंने कई रचनाएं ली हैं, इन सभी पत्र-पत्रिकाओ का…

डा० मुरारी सिंहा की पुस्तक 'साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता' की मदद भी मुझे समय-समय पर लेनी पडी है, उनका…

जिनके सहयोग के बिना यह कार्य कदापि पूरा नही होता उन सभी अनुवादको का…

और विशेष उत्सुकता और चाव से इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए 'अभिव्यजना' का मैं हार्दिक आभारी हू !

क्रम

नोबेल पुरस्कार चरितम्

सन् 1901.

अचानक ही विश्व का ध्यान एक ऐसे पुरस्कार की ओर आकृष्ट हुआ जो इसी वर्ष पहली बार एक कवि को दिया गया। वह कवि था फ्रांस का सुली प्रूधों और यह पुरस्कार था 'नोबेल पुरस्कार'।

शायद तब किसी के मन मे यह कल्पना भी नही रही होगी कि किसी व्यक्ति विशेष द्वारा शुरू किया गया यह पुरस्कार एक दिन विश्व के सभी देशों के लिए महत्त्वपूर्ण हो उठेगा, सिर्फ साहित्य के क्षेत्र मे ही नहीं बल्कि विज्ञान और राजनीति के क्षेत्र मे भी, और इसे प्राप्त करने वाला व्यक्ति ही नही बल्कि उसका देश भी अपने को धन्य मानेगा।

आखिर इस पुरस्कार के पीछे वह कौन-सी बात है जिसने इसे इतना महत्त्वपूर्ण बनाया है ? इस तथ्य को जानने के लिए 'नोबेल पुरस्कार' के इतिहास को थोड़ा-सा जानना-समझना जरूरी होगा। यह पुरस्कार स्वीडन निवासी एल्फ्रेड नोबेल के नाम पर दिया जाता है। इनका पूरा नाम था एल्फ्रेड बर्नहार्ड नोबेल। 21 अक्टूबर, 1833 को स्टाकहोम में जन्मे नोबेल को नियमित शिक्षा के नाम पर स्कूल की पहली कक्षा तक की शिक्षा मिली थी। ये कभी किसी कालेज या विश्व-विद्यालय मे पढने नही गये। लेकिन फिर भी ये अशिक्षित नही थे। बड़े होने पर स्वाध्ययन द्वारा जर्मन, अंग्रेजी, फ्रांसीसी भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। ये साहित्य-प्रेमी थे और अंग्रेजी साहित्य से इनको सबसे अधिक लगाव था। एल्फ्रेड नोबेल के जीवन में नियमित शिक्षा का भले ही अभाव रहा हो परन्तु इन्होंने अपने जीवन में अत्यधिक धनोपार्जन किया। ये स्वभाव से बहुत ही उदार, भावुक और दयालु थे फिर भी ये कभी खुद सुखी नही रह पाए। सन् 1870 तक ये योरोप के धनी

व्यक्तियों में गिने जाने लगे थे और इनका नाम योरोप में चमकने लगा था, फिर भी ये मन से दुखी थे क्योंकि इन्हें परिवार का सुख कभी नहीं मिल पाया। एक बार किसी ने इनसे इनके जीवन के बारे में पूछा तो इन्होंने उत्तर दिया था—"एल्फ्रेड नोबेल एक दुखी, दयनीय और अर्ध-मृत व्यक्ति है। डाक्टर को उसका गला तभी घोंट देना चाहिए था जब वह रोता हुआ धरती पर आया था।"

किन्तु उसी दुखी नोबेल ने अपनी सम्पत्ति का उपयोग एक ऐसे क्षेत्र में किया जहां उसका नाम शताब्दियों तक बना रहेगा। अपने एक मित्र बैरोनस वान सट्नर को नोबेल ने 7 जनवरी, सन् 1893 ई० को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने स्पष्ट लिखा था, "मेरी इच्छा है कि मैंने जो धन एकत्र किया है उससे एक पुरस्कार हर पांचवें वर्ष दिया जाये।" और इनके देहान्त (10 दिसम्बर, 1896) के बाद जब इनका वसीयत-नामा पढ़ा गया तो संसार चौंक उठा। इन्होंने अपने वसीयत में लिखा था:

"जो धन बचेगा, उसका उपयोग इस प्रकार किया जायेगा—जो मूलधन होगा उसको मेरे एक्जिक्यूटर्स सुरक्षित सिक्युरिटीज में लगायेंगे और उसका एक धन-कोष भी बनेगा। इस धनकोष से जो भी ब्याज प्राप्त होगा वह उन लोगों में प्रतिवर्ष पुरस्कार स्वरूप बांटा जायेगा जिन्होंने पिछले वर्ष में मनुष्य जाति के लिए कार्य किया होगा। इस सर्वोपयोगी ब्याज को पांच बराबर हिस्सों में बांटा जायेगा और बांटने की विधि इस प्रकार होगी—एक भाग उस स्त्री या पुरुष को दिया जायेगा जिसने पदार्थ विज्ञान में सबसे महत्त्वपूर्ण अनुसंधान या आविष्कार किया होगा; एक भाग उस स्त्री या पुरुष को दिया जायेगा जिसने शरीर-शास्त्र या चिकित्सा शास्त्र में सबसे महत्त्वपूर्ण खोज की होगी; एक भाग उस स्त्री या पुरुष को दिया जायेगा जिसने साहित्य के क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण व आदर्शवादी स्वभाव की रचना लिखी होगी और एक भाग उस स्त्री या पुरुष को जिसने राष्ट्रों के बीच शान्ति उत्पन्न करने के लिए प्रयत्न किये होंगे या फौजों को कम करने के लिए राज्यों को उत्साहित किया होगा। यह मेरी प्रबल इच्छा है कि इन पुरस्कारों को प्रदान करने में उम्मीदवारों की राष्ट्रीयता का कोई भी ध्यान नहीं दिया जायेगा और उसी को पुरस्कार प्रदान किया जायेगा जो इसका अधिकारी होगा, चाहे वह स्कैंडिनेविया निवासी हो

या न हो।"

उस वसीयतनामे को आधार बनाकर स्वीडिश अकादमी ने 'नोबेल पुरस्कार' की शुरुआत की। साहित्यिक पुरस्कार के सम्बन्ध में अल्फ्रेड नोबेल ने अपने वसीयतनामे मे स्पष्ट लिखा है कि पुरस्कार उन पुस्तकों पर प्रदान किया जायेगा जो गत वर्ष तैयार की गयी है, और पुरस्कार के लिये नाम तभी पेश किया जायेगा जब कोई लिखित तथा छपी हुई पुस्तक होगी। 'साहित्य' का अर्थ केवल नम्र-साहित्य ही नही होगा वरन् वह सब लिखित सामग्री जो कि अपने गुणो के कारण साहित्यिक है। किन्तु साहित्य के क्षेत्र में यह पुरस्कार हमेशा विवादास्पद बना रहा। सन् 1901 में सुली प्रूधो के नाम की जब घोषणा की गयी तभी उस पर नुक्ता-चीनी शुरू हो गयी। फ्रांसीसी अकादमी के कई सदस्यो ने सुली प्रूधो का नाम प्रस्तावित किया था और स्वीडिश अकादमी ने एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण नियम का उल्लघन करके प्रूधो को यह पुरस्कार दिया। इस पुरस्कार के लिए यह शर्त है कि पुरस्कार किसी नवीन अर्थात् हाल ही में हुए काम के लिए मिलना चाहिए न कि उस काम के लिए जो बहुत पहले किया जा चुका हो। प्रूधो को जो पुरस्कार मिला वह उनकी उन कृतियो के आधार पर मिला जो सन् 1888 से पहले प्रकाशित हो चुकी थीं। उस वक्त लोगों का विचार था कि यह पुरस्कार तालसताय को मिलना चाहिए था परन्तु इसमे स्वीडिश अकादमी का कोई दोष नही था क्योंकि तालसताय का नाम प्रस्तावित ही नही हुआ था।

अल्फ्रेड नोबेल के वसीयतनामे मे लिखा है कि आदर्श प्रवृत्ति के किसी काम पर यह पुरस्कार दिया जायेगा इसलिए कई प्रसिद्ध लेखकों को यह पुरस्कार नही दिया जा सका जैसे हेनरिक, इब्सन और टामस हार्डी। प्रूधों के बाद सन् 1902 मे जब यह पुरस्कार जर्मन इतिहासकार मामसन को दिया गया तब भी विवादों का बवंडर उठ खड़ा हुआ क्योंकि मामसन की पुस्तक 'ए हिस्ट्री आफ रोम' सन् 1850 मे प्रकाशित हुई थी और 52 वर्ष बाद इसी पुस्तक पर मामसन को पुरस्कार दिया गया। नोबेल पुरस्कार इस तरह प्रारम्भ से ही महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ ही विवादास्पद और चौंकाने वाला भी रहा है। विश्व प्रसिद्ध उपन्यास-कार इरविंग वैलेस ने इस पुरस्कार की धांधलीबाजी पर 'दि प्राइज' उपन्यास लिखा और फिर यह बताने के लिए कि यह उपन्यास कैसे लिखा गया उन्होने एक और किताब लिखी—'दि रायटिंग आफ ए नोबेल'।

इसमे स्वीडिश अकादमी के एक निर्णायक सदस्य डाक्टर हेदिन के जो विचार उन्होंने रखा है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। हेदिन ने निर्णायको के अवरोधों और कमजोरियो को बताने के बाद यह स्वीकार किया है कि जहां अनेक निर्णय एकदम सही और अत्युतम थे वही अनेक मूर्खतापूर्ण, पूर्वाग्रहग्रस्त और राजनीति से प्रेरित भी थे। ताल्सताय, इब्सन, स्ट्रिडवर्ग जैसे चोटी के साहित्यकारो को नोबेले पुरस्कार इसलिए नही मिल सका क्योकि एक निर्णायक कवि और समीक्षक डाक्टर कार्ल डेविट इन तीनो के कट्टर विरोधी थे। इसी तरह इर्विग वैलेस ने एक बार वैरन वान श्नोवर से, जो पिछले चालीस वर्षों से नोबेल समिति के कार्यालय सचिव थे, पूछा कि जेम्स जायम या वर्जीनिया वुल्फ को यह पुरस्कार क्यो नही मिला तो वैरन ने बताया कि इन रचनाकारो का तो उसने नाम ही नही सुना था, साहित्य तो बहुत दूर की चीज है! फिर वैलेस ने विश्व की भाषाओ पर बातचीत करते हुए हिन्दी के रचनाकारो को नोबेल पुरस्कार न मिलने का कारण पूछा तो वैरन ने सीधा-सादा परन्तु चौंकाने वाला उत्तर दिया कि "जिस भाषा के बारे मे हम कुछ जानते ही नही उसके किसी साहित्यकार को यह पुरस्कार देने के बारे मे सोच भी कैसे सकते है ?"

इस दृष्टि से भारत के एक मात्र नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ की बात अगर हम सोचे तो हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार अज्ञेय की इस बात से अवश्य ही सहमत हुआ जा सकता है कि "अगर वे (रवीन्द्रनाथ) 'गीताजलि' का स्वय अनुवाद न करते और उनके समर्थक योरोप तथा अन्य पश्चिमी देशो मे न होते तो उन्हें यह पुरस्कार कभी न मिलता। जो निर्णायक समिति हिन्दी के बारे में कुछ नही जानती वह बंगला के बारे में क्या जानेगी ? पुरस्कार निर्णायको को सिर्फ भारतीय ही नही, एशिया की अधिकाश भाषाओ की जानकारी ही नही होती।" इसी से मिलते-जुलते विचार वयोवृद्ध साहित्यकार जैनेन्द्र के भी हैं।

इस तरह यह पुरस्कार हमेशा विवादों के घेरे मे घिरा रहा, फिर भी यह भी एक सच्चाई है कि इस पुरस्कार के लिए विश्व-भर के साहित्यकारो की आकाक्षाएं उमड़ती रहती हैं। कुछ लोग जोड-तोड़ करके अपना नाम प्रस्तावित कराते हैं, कुछेक की पत्निया और प्रेमिकाएं ही उनका नाम प्रस्तावित कर देती हैं और कई बार तो यह भी सुनने मे आया है कि कुछ लोगो ने सामान्य पुरस्कारो की तरह यहा भी अपनी पुस्तकें और पांडुलिपिया विचारार्थ भेज दी। यह सब इस पुरस्कार की

महत्ता को ही दर्शाता है ! फिर भी आज यह एक आम धारणा बन गयी है कि 'नोबेल पुरस्कार' अब विश्व राजनीति से या पूंजीवादी राजनीति से मुक्त नहीं रहा है और इसी कारण बहुत-से द्वितीय श्रेणी के साहित्यकार इस पुरस्कार को पा जाते हैं और जो सही है, सम्मान के योग्य हैं, वे रह जाते हैं।

तो इस तरह अगर इस पुरस्कार की गहराई में हम जायें तो बहुत सारे तथ्य और सत्य उसी तरह नजर आते हैं जिस तरह दूसरे छोटे-मोटे पुरस्कारों में। परन्तु नोबेल पुरस्कार की महत्ता है तो इस कारण अधिक है कि वह विश्व की भाषाओं में से किसी रचना या रचनाकार का चयन (अपनी सीमाओं के बीच) करता है और उसे सम्मानित करता है। यह किसी एक व्यक्ति का नहीं एक राष्ट्र का सम्मान होता है, वह चाहे साहित्य के क्षेत्र में हो या कि साहित्येतर क्षेत्रों में।

साहित्य के क्षेत्र में सन् 1901 से सन् 1984 तक 80 पुरस्कार दिये जा चुके हैं और पुरस्कृत साहित्यकारों में कवि भी हैं कथाकार भी, दार्शनिक भी हैं इतिहासकार भी। लेकिन मेरी यह निश्चित धारणा है कि इन साहित्यकारों में जो कथाकार रहे हैं उन्होंने पूरे विश्व पर अपना एक अलग प्रभाव छोड़ा है और उनकी कथाकृतियां सर्वाधिक चर्चित-प्रशंसित होती रही हैं। इस पुस्तक में मेरा प्रयास रहा है कि इन कथाकारों की कुछ श्रेष्ठ कहानियों को एकत्र किया जाये। यह मुझे इसलिए भी जरूरी लगा कि अभी तक इस तरह का कोई संकलन मुझे नहीं मिला जिसमें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कृतिकारों की कुछ रचनाएं एकसाथ पढ़ने को मिलें। हिन्दी में इस तरह के संकलनों का अभाव तो हमेशा से रहा है। इसी दृष्टि से इस संकलन को मैंने तैयार किया है जिसमें 28 कहानीकारों (इन कहानीकारों के अतिरिक्त भी नोबेल पुरस्कार प्राप्त कई ऐसे कथाकार हैं जिनकी रचनाओं की चर्चा विश्व साहित्य में हमेशा होती है परन्तु मैं इनकी रचनाएं प्राप्त करने में असमर्थ रहा जिस कारण यह संकलन अधूरा प्रतीत हो सकता है, परन्तु मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक के अगले संस्करण तक कुछ कहानियां मैं और प्राप्त कर लूंगा) की कहानियां हैं। इन कहानियों को पढ़ने के बाद सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि विश्व के इन श्रेष्ठ और समर्थ रचनाकारों के पास कैसी वैचारिक दृष्टि थी और कैसी रचनाशैली थी ! और यह भी अनोखी बात इन कहानियों के माध्यम से हमारे सामने आती है कि अलग-अलग देशों के अलग-अलग

साहित्यकारो की वैचारिक दृष्टि भले ही अलग हो किन्तु मानवीय सवेदनाओ के, मूल्यों के, जीवन के प्रति गहरी आस्था और विश्वास के वे एक जैसे पक्षधर है और शायद यही इनकी श्रेष्ठता का प्रतीक है। इस पुस्तक की अनिवार्यता और महत्ता को मैं इसी दृष्टि से स्वीकारता हू और मुझे विश्वास है कि आप भी मुझसे बहुत अलग नही होगे

—सुरेन्द्र तिवारी

10101 बी-4, वेस्ट गोरख पार्क
शाहदरा, दिल्ली-32

कहानियां

माली

रुडयार्ड किप्लिग

जन्म : 30 दिसम्बर 1865 मृत्यु 18 जनवरी, 1936.

भारत मे जन्मे इंग्लैंड के साहित्यकार रुडयार्ड किप्लिग को नोबेल पुरस्कार सन् 1907 में प्राप्त हुआ। इनकी रचनाओं मे कई विशेषताएं उल्लेखनीय है। इन्होंने साहित्य को अन्तर्राष्ट्रीयता प्रदान की। इन्होने उपन्यास, कहानी, नाटक कविता आदि सभी विधाओ मे साहित्य रचना की। इनकी रचनाओ मे भारत-के अंग्रेजो के समाज का बहुत ही वास्तविक वर्णन है। इन्होने फौज के सिपाहियो की जिन्दगी, उनकी बहादुरी, सच्चाई तथा तकलीफो को प्रमुखता देकर कई रचनाए लिखी। एक पत्रकार के रूप में भी इनकी काफी ख्याति रही। इनकी प्रमुख रचनाए है: डिपार्टमेण्टल डिट्टिज, बैरेकरूम बैलेड्ज, प्लेन टेल्स फ्राम दि हिल्स, दि लाइट दैट फेल्ड, दि जंगल बुक, सेकेण्ड जंगल बुक, किम, दाइ सर्वेण्ट ए डाग आदि।

अनुवाद : विनोद दास

गांव का हर आदमी इस बात को जानता था कि हेलेन टुरेल अपना फर्ज पूरी तरह निभाती थी और खासकर अपने इकलौते भाई के अनाथ बच्चे के प्रति और भी ज्यादा ईमानदार थी। गांववाले इस बात को भी जानते थे कि उठती जवानी से ही जार्ज टुरेल ने अपने परिवार वालों को खूब सताया था और बताने पर वे इस पर अचंभा भी नहीं करेंगे कि कई नये लाभ के अवसर देने और छीने जाने के बाद वह एक गैरकमीशन प्राप्त अधिकारी की लडकी से फंस गया और अपने बच्चे के जन्म से कुछ हफ्ते पहले घोडे से गिरकर मर भी गया। दुखद बात तो यह थी कि जार्ज के माता-पिता दोनों स्वर्गस्वामी हो चुके थे। स्वतंत्र जीवनयापन करने वाली हेलेन चाहती तो इस अशोभनीय कृत्य से किनारा काट सकती थी और खासकर ऐसे मौके पर जबकि उसे फेफडों की बीमारी का खतरा था। और···वह दक्षिणी फ्रांस चली आयी थी।

उसने बच्चे को मंगाने के लिए भाडे और बम्बई से एक धाय का बंदोबस्त किया और उनसे आकर मार्सेलेज में मिली। शैशव में पेचिश के दौरे से उसने बच्चे की रक्षा की। आखिरकार उस दुबले-पतले लेकिन बीमारी पर विजय पाने वाले बच्चे को शरद के अन्तिम दिनों में वह अपने हैंपशायर के घर में पूर्णतया स्वस्थ अवस्था में ले ही आयी।

ये सभी विवरण सार्वजनिक सम्पत्ति है। चूंकि हेलेन खुले दिल की तरह खुली थी और उसका मानना था कि बदनामी दबाने से बढती ही है। उसने कबूल कर लिया था कि जार्ज अत्यन्त कमीना था लेकिन तब स्थिति और भी अधिक बदतर होती यदि कहीं बच्चे की मां बच्चे को अपने पास रखने के अधिकार पर जोर देती।

सौभाग्य से, ऐसा लगता है कि सचमुच उस वर्ग के लोग धन के लिए लगभग सभी कुछ कर सकते हैं और वैसे भी जार्ज संकट में हेलेन की शरण में जाता था। उसने खुद को सही महसूस किया। उसके मित्र भी उससे सहमत थे कि गैरकमीशन प्राप्त अधिकारी से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया जाये और बच्चे को हर तरह का लाभ दिया जाये। रेक्टर द्वारा बपतिस्मा में 'माइकेल' नामकरण से इसका श्रीगणेश हुआ और जहां तक वह खुद को जानती थी, उसका कहना था कि वह शिशु प्रेमी कभी नहीं रही। लेकिन अपने भाई की गलती की वजह से वह जार्ज पर आसक्त हो गयी थी और उसने यह भी संकेत किया था कि जार्ज

का चेहरा-मोहरा और कद-काठी अपने पिता पर ही गयी है।

दरअसल, सच्चाई यह थी कि उसका माथा टुरेल वंश की तरह था—चौड़ा, छोटा, सुडौल और इसके नीचे बड़ी-बड़ी आखे जिसे माइकेल ने अत्यत-ईमान-दारी से दुबारा प्रकट किया था। उसके मुह का कटाव उसके परिवारगत कटाव से बेहतर था। लेकिन हेलेन जिसका मानना था कि उसकी मा के पक्ष मे कुछ भी अच्छा नही है, दृढ़तापूर्वक कहती थी कि वह पूर्णतया टुरेल है।

कुछ ही सालो मे माइकेल वैसा ही निकल आया जैसा हमेशा हेलेन चाहती थी—निडर, विवेकशील और सुदर्शन। छह वर्ष की उम्र मे वह जानना चाहता था कि वह उसे मम्मी क्यों नही कह सकता जैसा कि दूसरे बच्चे अपनी-अपनी मां को कहते है। उसने समझाया कि वह सिर्फ उसकी आंटी है और आंटी हू-ब-हू वही नही होती है जैसी कि मम्मी। लेकिन यदि उसे यह पुकारने मे अच्छा लगता हो तो वह रात को सोने के वक्त उसे मम्मी कह सकता है।

माइकेल ने इस राज को अत्यन्त निष्ठा से छिपाये रखा जबकि हेलेन हमेशा की तरह इस सच्चाई को उसके दोस्तो को बता देती थी। इसकी जानकारी जब माइकेल को लगी तो वह क्रोध से बिफर उठा, "आपने क्यो कहा? आपने क्यो कहा?"

"चूंकि सच्चाई को कह देना हमेशा ही सबसे अच्छी बात होती है!" खाट पर कापते हुए उसके शरीर को अपनी बांहो के घेरे में लेते हुए हेलेन ने कहा।

"यह तो ठीक है, लेकिन जब सच्चाई अप्रिय हो तो मेरे खयाल से यह अच्छी बात नही है।"

"बुरा नही मानते, मुन्ने!"

"नहीं, मैं बुरा नही मानता लेकिन," हेलेन ने महसूस किया कि उसका शरीर तन गया है, "जब आपने कहा है कि मैं आपको मम्मी नही कहूगा। कह सकता तो आज से, अब कभी मैं मम्मी नही कहूगा। सोते वक्त भी नहीं।"

"लेकिन क्या यह ज्यादती नही है?" हेलेन ने पूछा।

"मैं परवाह नही करता···बिल्कुल नही करता। आपने मेरे मन को ठेस पहुचायी है और मैं भी बदले मे ठेस पहुचाऊगा। जब तक जीवित रहूंगा, तब तक ठेस पहुंचाऊंगा।"

"ऐसी बात मत कहो, मेरे बच्चे! तुम नही जानते क्या···"

"मैं पहुंचाऊंगा और जब मैं मर जाऊंगा तो और भी ज्यादा सताऊंगा!"

"शुक्र है कि मैं तुमसे बहुत पहले ही स्वर्ग सिधार जाऊंगी बच्चे!"

"अपना भाग्य आप नही जानती।" माइकेल, हेलेन की बुढ़िया और सपाट चेहरेवाली नौकरानी के सामने बात कर रहा था।

"बहुत-से बच्चे कम उम्र मे ही मर जाते हैं और मैं भी मर जाऊंगा तब तुम देखना।"

हेलेन की सास रुक गयी और वह दरवाजे की ओर मुड गयी लेकिन 'मम्मी, मम्मी' का विलाप सुनकर वह फिर लौट आयी और दोनो मिलकर रोने लगे।

दस वर्ष की उम्र मे प्राइमरी स्कूल की दूसरी कक्षा मे किसी ने उसे बताया कि शहरी दर्जा बिलकुल ठीक नही है। इस बात को लेकर वह हेलेन से भिड गया और परिवारो से सम्बन्धित हकलाते स्वरो मे दी जाने वाली उसकी सभी दलीलो को ध्वस्त कर दिया।

"इसके एक शब्द पर भी यकीन न करो!" अत में उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा, "आंटी, चिंता मत करो। मैंने अंग्रेजो के इतिहास और शेक्सपियर के लेखन मे अपने जैसे बहुत-से उदाहरण खोज लिये हैं। शुरू करें, एक विलियम थे —महान विजेता, और ढेर सारे व्यक्ति और ये लोग पहले दर्जे का हक पा गये, मेरे ऐसे होने से आप पर कोई फर्क नही पडेगा न? क्या पडेगा?"

"यदि ऐसा कुछ हो सकता!" हेलेन ने कहा।

"ठीक है। यदि आपको रोना आता है तो अब हम इस विषय पर बात नही करेंगे।" इसके बाद उसने फिर कभी अपनी इच्छा का जिक्र नही किया। दो वर्ष बाद जब उसने चतुराई से अपने लिए चेचक का इतजाम कर लिया और 104 डिग्री बुखार में वह और कुछ नही, सिर्फ इसी बात को तब तक बुदबुदाता रहा जब तक कि उसके कानो मे हेलेन की दिलासा-भरी यह आवाज नही पहुची कि पृथ्वी पर या इसके परे कोई भी चीज उन दोनो के बीच कोई फर्क पैदा नही कर सकती।

माइकेल मूर्ख नही था अत युद्ध ने उसे उन्नतिपूर्ण जीवनवृत्ति की ओर उन्मुख किया। वह अक्टूबर मे वजीफा लेकर ऑक्सफोर्ड चला आया। अगस्त के अंतिम दिनो मे वह पब्लिक स्कूल के लडको के युद्ध के 'पूर्णाहुति' में शामिल होने जा रहा था, जिसमे सभी लोग अपने-आपको झोंक रहे थे। लेकिन उसके ओ० टी० सी० के कप्तान, जहां वह एक साल सार्जेण्ट के रूप मे रह चुका था, ने उसका इरादा बदल दिया और उसे सीधे उस बटालियन मे कमीशन प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जो एकदम नयी बनी थी और जिसमे आधे लोग पुरानी रेड आर्मी के थे और बाकी आधे लोग सीलन-भरे तबुओं मे मानसिक रोगी हो गये थे। हेलेन को सीधी भर्ती के बारे मे सुनकर धक्का लगा।

"लेकिन यह तो हमारे परिवार मे है।" माइकेल हसा।

"तुम्हारा मुझसे कहने का आशय यह तो नही है कि तुम अभी भी उस पुरानी कहानी पर यकीन रखते हो?" हेलेन ने कहा, "मैं तुम्हें अपनी शपथ दे चुकी हू और मैं इसे दुबारा देती हू कि इतना काफी है।"

"ओह ! इसकी मुझे कोई परवाह नही। कभी थी भी नही।" उसने ओज-भरे स्वर मे जवाब दिया, 'मेरा मतलब यह था कि मुझे भर्ती कर लिया जाता तो मैं पहने ही चला जाता—अपने दादा की तरह।"

"ऐसी बात मत करो। क्या तुम इतनी जल्दी खत्म होने से नही डरते ?"

"ऐसे भाग्य कहा ! जानती है, 'के' क्या कहता है ?"

"हा, लेकिन मेरे बैकर ने पिछले सोमवार को कहा था कि इसे क्रिसमस से आगे जाने की सभावना नही है—आर्थिक कारणो से।"

"उम्मीद कीजिए कि वह सच हो लेकिन हमारे कर्नल जो स्थायी नौकरी मे है, कहते है कि यह काम अधिक दिनो का है।"

माइकेल की बटालियन सुयोग से उस मायने से भाग्यशाली थी जिसका अर्थ होता है, बहुत-सी छुट्टिया। नारफोक तट की सुरक्षा के लिए इस बटालियन का उपयोग पिछली खाइयो के बीच किया गया। तदुपरान्त उत्तर मे स्कॉच के मुहाने की चौकसी के लिए इसे भेजा गया और अन्त मे दूरस्थ सेवा के आधार-हीन अफवाह मे आकर इसे हफ्तो रोके रखा गया। इसी दिन रेलवे जक्शन पर पूरे चार घंटो के लिए माइकेल का हेलेन से मिलना था लेकिन एक व्यवधान आ गया और उसने हेलेन के पास कुशलता का तार ही भेजा।

फ्रास मे भाग्य ने बटालियन का फिर साथ दिया। इसकी तैनाती सेलियत के करीब की गयी और वहा पर इसने खुशहाल समय गुजारा। उन दिनो सोम्मे का निर्माण कार्य चल रहा था। आरमेन्ट्री और लेवेन्ट्री क्षेत्रो की शान्ति का लाभ यह ले चुकी थी।

एक महीने बाद, और माइकेल के उस खत के ठीक बाद जिसमे उसने हेलेन को लिखा था कि यहा पर कोई खास काम नही है, अत चिंता की कोई बात नही है, एक भीगी सुबह मे एक बम के परखचे के गिरने मे उसकी मृत्यु हो गयी और शरीर पर मलबे का ढेर जमा हो गया।

अब तक गाव को युद्ध का अनुभव पुराना हो चला था और अग्रेजी फैशन के मुताबिक उन्होने इसकी आवश्यकतानुसार एक अनुष्ठान को खोज लिया था। जब महिला डाकपाल ने सात वर्षीय बच्ची को मिस टेरेल को देने के लिए सरकारी तार दिया तो उसने रेक्टर के माली को देखकर कहा, "अब मिस हेलेन की बारी है," उसने अपने पुत्र के बारे मे सोचते हुए जवाब दिया, "वह औरो से ज्यादा दिन जीवित रहा।" वह बच्ची जोर-जोर से रोती हुई खुद ही तार देने आयी क्योकि मास्टर माइकेल उसे प्राय. मिठाइया दिया करते थे। उस वक्त कमरे की प्रत्येक अधकारी पट्टियो को अत्यन्त सावधानी से गिनते हुए व्यग्रता मे कह रही थी, "खोने का मतलब मृत्यु है।" तत्पश्चात् वह उग भयावह मात्रा में शामिल हो गयी जो कि भावनाओ की निष्प्रयोजन शृखला मे मे गुजरने के

लिए अनिवार्य रूप से उत्प्रेरित करता है। रेक्टर ने बेशक आशा बंधायी और ढाढस दिया कि कैदियों के शिविर से वह जल्दी ही आ जायेगा। कुछ लोगों ने उसे कुछ पूर्णतया सच्ची कहानियां सुनायी जिनके मुताबिक दूसरी महिलाओं के बिछुड़े आत्मीय चमत्कारिक ढंग से मिल गये थे। बाकी लोगों ने उससे उन सचिवों को इस बारे में सूचित करने का आग्रह किया जो परोपकार के लिए तटस्थता से हूण कारागारों के कमांडरों से अत्यन्त गुप्त और एकदम सही सूचना हासिल करके उसे सूचित कर सकते हैं। हेलेन ने सभी कुछ किया, लिखा और उस पर दस्तखत किये जो उसे सुझाया गया।

एक बार माइकेल अपनी छुट्टियों में हेलेन को एक गोला-बारूद बनाने वाले कारखाने में ले गया था जहां हेलेन ने एक बम का निर्माण खाली लोहे से लेकर निर्मित वस्तु में होते देखा था। उस समय उसके दिमाग में अचानक यह बात कौंधी थी कि इस कमबख्त चीज को एक भी सेकेंड के लिए अकेला क्यों नहीं रहने दिया जाता था, "मेरे ही सगे की जान लेकर इसने मुझे अनाथ बना दिया।" उसने दस्तावेज को तैयार करते समय खुद से ही कहा।

यथासमय जब सभी संगठनों ने उसका पता न लगा पाने के बारे में असमर्थता के लिए अत्यधिक ईमानदारी से खेद व्यक्त किया तब उसके अन्तर्मन से खुद ही आवाज आयी। माइकेल की मृत्यु हो गयी थी और उसका समूचा संसार जड़ हो गया था और वह उसके शोक में डूब गयी थी। अब वह जड़ हो गयी थी और सारा संसार आगे बढ़ रहा था।

फिर नजदीकी रिश्तेदार होने के कारण एक सरकारी सूचना आयी जिसमें अमिट पेंसिल से उसके लिए लिखा हुआ पत्र का एक पन्ना, चांदी का एक परिचय पत्र और एक घड़ी थी जिसमें बताया गया था कि लेफ्टिनेंट माइकेल टुरेल की लाश मिल गयी है, उसकी शिनाख्त कर ली गयी है और हूर्गेनजीले के तीसरे फौजी कब्रिस्तान में दुबारा उनका नाम दर्ज हो गया है।

हेलेन को लगा, एक उल्लास से भरा-पूरा संसार था और दूसरी ओर टूटे बन्धन वाले रिश्तेदार…यह सब बातें शीघ्र ही उसे बता दी गयीं और समय सारणी द्वारा यह बात स्पष्ट हो गयी कि कितना सरल है और जीवन क्रम में कितना कम हस्तक्षेप होता है किसी के कब्र पर जाने में और देखने में!

"कितना फर्क होता," रेक्टर की पत्नी ने कहा, "यदि वह मेसोपोटामिया या गैल्लीपोली में भी मारे जाते!"

दूसरे किस्म के जीवन दान की पीड़ा ने हेलेन को चैनल के पार पहुंचा दिया जहां सशेष पदवियों की दुनिया थी। वहां उसे पता लगा कि तीसरे हूर्गेनजीले आराम से पूर्वाह्न की ट्रेन से पहुंचा जा सकता है जिसमें सुबह की नाव पकड़ी जा सकती है और वहां एक आरामदायक छोटा होटल भी है जहां कोई भी

शातिपूर्वक रात गुजार सकता है और दूसरी सुबह किसी की कब्र देख सकता है। यह सब जानकारी उसे एक केंद्रीय अधिकारी से प्राप्त हुई जो चूने के बुरादों, रद्दी कागजो के वात्याचक्र से भरे उजडे हुए चेहरे के एक वोर्ड मे रहता था और जिसकी छतें कोलतार की बनी हुई थी।

"वैसे," उसने कहा, "क्या आप अपनी कब्र जानती है?"

"हा, शुक्रिया।" हेलेन ने कहा, और माइकेल के खुद के छोटे टाइपराइटर पर टाइप उसकी कतार और सख्या को दिखाया। अधिकारी अपने पास की बहुत-सी बहियो मे से इसकी मिलान करके जाच कर लेता अगर लंकाशायर की एक मोटी औरत इन दोनो के बीच मे न आ टपकी होती। वह औरत पूछने लगी कि वह अपने लडके को कहा पा सकती है जो कि ए० एस० सी० मे कारपोरेल था। सुबकते हुए उसने कहा कि उसका सही नाम ऐडरसन था लेकिन प्रतिष्ठित परिवार मे आने की वजह से वह स्मिथ के नाम से भर्ती हुआ था और 1915 के शुरू मे डिकीबुश मे वह मारा गया था।

उसके पास न तो उसकी सख्या थी और न ही उसे पता था कि उसने अपने कुलनाम के साथ अपने दो ईसाई नामो मे से किसका प्रयोग किया था। उस महिला के आवधिक पर्यटन टिकट की अवधि ईस्टर सप्ताह के अत से खत्म होने वाली थी और तब तक उसे यदि अपने लडके के बारे मे पता नही चला तो वह पागल हो जाएगी। ऐसी हालत मे वह हेलेन की छाती पर गिर पडी, लेकिन दफ्तर के पीछे एक छोटे-से सोने के कमरे से अधिकारी की पत्नी जल्दी से बाहर निकली और उन तीनो ने महिला को खाट पर लिटा दिया।

"ये लोग प्राय ऐसा ही करते है," अपने घाघरे के कमर नाडे को ढीला करते हुए अधिकारी की पत्नी ने कहा, "क्या इसने बताया था कि वह हूज मे मारा गया। क्या आपको निश्चित रूप से पता है कि आपके आत्मीय की कब्र कहा है? इससे काफी फर्क पड़ता है।"

"हां, शुक्रिया!" हेलेन ने कहा और इससे पहले कि खाट पर लेटी महिला दुबारा अपना विलाप शुरू करती वह बाहर निकल आयी।

कासनी और नीली धारीदार लकडी की इमारत मे जमा भीड के बीच चाय ने उसे पुन. दूसरे दु स्वप्न में पहुचा दिया। उसने अपने बिल का भुगतान किया और उसके पास खड़ी निर्विकार और सपाट नाक-नक्शवाली वह अग्रेज औरत उसके साथ स्वेच्छा से हो ली, जो हगेनजीले जानेवाली ट्रेन के बारे मे उसकी पूछताछ सुन रही थी।

"मैं भी हगेनजीले जा रही हू," उसने स्पष्ट किया, "लेकिन तीसरी हगेनजीले नही। मेरा एक चीनी का कारखाना है। यह तीसरी हगेनजीले के दक्षिण मे है। क्या आपको वहा होटल मे कमरा मिल गया है?"

"हां, शुक्रिया ! मैंने तार दे दिया है।"

"अच्छा किया ! कभी-कभी यह जगह पूरी तरह भर जाती है और कभी-कभी वहां एकाध ही आदमी होता है।"

"मेरे लिए यह सूचना नयी है। मैं पहली बार वहां जा रही हूं।"

"दरअसल, मैं युद्धविराम के बाद से नवीं बार जा रही हूं। अपने किसी के लिए नहीं। खुदा का शुक्र है मैंने किसी को नहीं खोया। लेकिन जैसे कि हर एक के मित्र होते हैं मेरे भी घनिष्ठ मित्र हैं जिन्होंने आत्मीयों को खोया है। प्रायः यहां आते हुए मैंने देखा है कि सिर्फ जगह दिखा देने से और बाद मे उसके बारे मे बता देने से उन्हे सुविधा होती है। कोई उनके लिए फोटो भी खीच सकता है।" फिर वह बोली, "इस वक्त दो या तीन को चीनी के कारखाने पर देखना है, कब्रगाह के आसपास और भी बहुत-से है। मेरी कार्यप्रणाली यह है कि मैं उसे सुरक्षित रखती हू और उन्हें व्यवस्थित करती हू। और जब एक क्षेत्र को उपयुक्त बनाने के लिए काफी कमीशन मिल जाता है तो मैं तुरन्त दूसरे क्षेत्र मे चली जाती हू और कार्य करती हू। इससे लोगो को सुविधा होती है।"

'मेरा भी यही खयाल है।" हेलेन ने कांपते हुए कहा।

"बेशक ! इससे मदद मिलती है। मेरे पास यहां पूरे बारह या पन्द्रह कमीशनों की सूची है," उसने कोडक को पुन थपथपाया, "मैं आज रात उसकी छटनी करूगी। ओह ! मैं तो आपसे पूछना ही भूल गयी। यह आपके क्या थे ?"

"मेरा भतीजा था," हेलेन ने कहा।

"ओह ! हां, मुझे कभी हैरानी होती है कि मृत्यु के बाद क्या होगा, इसे जानते हैं ? आपका क्या विचार है ?"

"मैं नहीं जानती। मुझे ऐसे विषयों पर सोचने का कभी साहस भी नहीं होता।"

"शायद यह अच्छी बात है। मैं समझती हू कि मृत्यु का ही दुःख काफी है, मैं अब आपको और अधिक परेशान नहीं करूगी।"

हेलेन ने आभार व्यक्त किया लेकिन जब वह होटल पहुंची तो श्रीमती स्कासंवर्थ ने उसे अपनी मेज पर खाना खाने का आग्रह किया और भोजन के पश्चात एक छोटे-से घिनौने सभाकक्ष में अपने कमीशनों तथा मृतकों की जीवनी के माध्यम मे ले गयी जहां रिश्तेदारो की फुसफुसाती आवाज गूंज रही थी। हेलेन लगभग साढ़े नौ बजे तक इसे सहती रही।

थोड़ी देर बाद ही दरवाजे पर दस्तक हुई और स्कासंवर्थ अपने हाथ मे मृतकों की सूची लिये हुए दाखिल हुई। "हां, हां···मैं जानती हूं···" उसने शुरू किया, "आप मुझसे आजिज आ गयी हैं—लेकिन मैं आपसे कुछ कहना

चाहती हूं, आप विवाहित नही है ? तब शायद आप नही समझ पायें लेकिन इससे कोई फर्क नही पडता है। मुझे किसी न किसी से कहना ही है। मैं अब इस तरह ज्यादा दिन नही रह सकती। लेकिन कृपया···" स्कार्सवर्थ सीधे मुड़ी और उसने दरवाजा बन्द कर दिया । उसकी रूखी जबान चलने लगी थी, "एक मिनट में," उसने कहा, "आप···आप जानती हैं कि मैं अभी सीढियो के नीचे अपनी उन कब्रो के बारे मे बात कर रही थी। वे वास्तव मे सभी कमीशन प्राप्त है। वहरहाल, इसमें अधिकांशत. वही लोग है।" उसकी आंखे चारो तरफ घूम गयी, "वेल्जियम में उनके पास क्या अद्वितीय भित्तिपत्र थे। तुम सोच भी नही सकती। हा, मैं कसम से कहती हू कि वे सभी कमीशन प्राप्त थे। लेकिन उनमे से एक···तुम जानती हो···वह मेरे लिए ससार की दूसरी चीजो से ज्यादा महत्त्वपूर्ण था। समझ गयी न !" हेलेन ने सिर हिलाया।

"किसी और से महत्त्वपूर्ण···और हा, वह मेरा कुछ भी नही था लेकिन वह था। वह है। इसीलिए मैं कमीशन का काम करती हू। यही राम कहानी है।"

"लेकिन तुमने मुझसे क्यो कहा ?" हेलेन ने पूछा।

"चूकि मैं झूठ बोलते-बोलते थक गयी हू। हमेशा झूठ वोलना सालो-साल। जब मैं झूठ बोलती नही हूं तो झूठा अभिनय करना पडता है। आप नही जानती कि इसका क्या मतलव होता है ? वह मेरे लिए सब कुछ था जो उसे नही होना चाहिए था—एक सच्ची चीज—सिर्फ वह चीज जो इससे पहले मेरे सपूर्ण जीवन मे घटित नही हुई थी। और मुझे ऐसा दिखावा करना पड़ता था कि जैसे वह मेरे लिए कुछ भी नही था। मुझे हर लफ्ज के बारे मे ध्यान रखना पडता था।"

"कितने वर्ष बीत गये ?" हेलेन ने पूछा।

"छह साल और चार महीने पहले और इसके बाद तीन तिमाही। मैं तब से आठ बार आ चुकी हू। कलो नवी वार होगा। और मैं उसके पास दुबारा नही जा सकती जबकि दुनिया मे इस बात को कोई जानता न हो। मैं जाने से पहले किसी के सामने दिल खोलना चाहती थी। क्या आप समझ गयी ? मुझे आपसे कहना ही पड़ा। मैं इसे और अधिक दबाकर नही रख सकती थी···आह ! मैं नही रख सकती !"

अपने जुड़े हुए हाथ लगभग अपने मुंह के बराबर उसने ऊपर उठाये और तेजी से नीचे गिरा दिये। हेलन आगे बढ़ी और उसे पकड़ लिया फिर अपना सिर उस पर झुकाया। स्कार्सवर्थ पीछे हट गयी और उसका चेहरा स्याह हो गया, "हे खुदा ! तुम इसे इस कदर महसूस कर रही हो !"

हेलेन कुछ भी न बोल सकी।

दूसरे दिन सुवह श्रीमती स्कार्सवर्थ कमीशन का चक्कर लगाकर तड़के ही आई और हेलेन तीसरे हगेनजीले की ओर अकेले ही पैदल चल पड़ी।

अभी भी यहां निर्माण कार्य चल रहा था और पक्की सड़क से पांच-छह फुट ऊपर स्थित था। गहरी खाई के पार पुलिया, अधबनी दीवार में जाने के लिए प्रवेशद्वार का काम करती थी। वह काष्ठयुक्त मिट्टी की कुछ सीढ़ियों पर चढ़ी। उसे नहीं मालूम था कि तीसरे हृगेनजीले में 20 हजार मृतकों की गणना हो चुकी है। वह भीड़ में किसी क्रम या व्यवस्था का भेद नहीं कर पा रही थी।

काफी दूरी पर सफेदी की एक रेखा थी जो यह साबित करती थी कि कुल दो-तीन सौ कब्रों का खंड है जिसमें कब्र का पत्थर लगाया जा चुका है, जिसमें फूल यहां रोप दिए गए थे और जिसमें नवजात बोयी हुई घास हरी दिखाई दे रही थी। कतारों के अन्त में साफ-साफ अक्षरों को देख सकती थी और जब उसने अपनी पर्ची से उनका मिलान किया तो उसे लगा कि यह जगह नहीं है।

कब्र के पत्थर की सीध में पीछे एक आदमी झुका हुआ था। जाहिर था, माली रहा होगा। चूंकि वह मुलायम जमीन में एक नवजात पौधे को दबा रहा था, अपने हाथ में कागज लिये हुए वह उसकी ओर चली आयी। उसने सिर उठाया और किसी दुआ-सलाम या भूमिका के बिना उससे पूछा, "किसे खोज रही हैं आप ?"

"लेफ्टिनेंट माइकेल टुरेल, मेरा भतीजा।" हेलेन ने धीरे से कहा—एक-एक शब्द को अलग करते हुए जिसे वह अपने जीवन में हजारों दफा दुहरा चुकी थी।

"मेरे साथ आइए।" उसने कहा, "मैं आपको दिखाऊंगा कि आपका बेटा कहां लेटा है।"

जब हेलेन कब्रगाह से जाने लगी तो अंतिम बार पीछे देखने के लिए मुड़ी। उसने देखा कि कुछ दूरी पर वह शख्स अपने नवजात पौधे पर झुका हुआ था। हेलेन ने उसे माली समझा और चली आयी।

काबुलीवाला

रवीन्द्रनाथ टैगोर

जन्म : 6 मई, 1861. मृत्यु : 7 अगस्त, 1941.

अब तक भारत के एकमात्र साहित्यकार जिन्हे 1913 मे नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। टैगोर ने आठ वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखना आरम्भ कर दिया था। इनके ऊपर बिहारीलाल चक्रवर्ती तथा विद्यापति का गहरा प्रभाव पड़ा था। इनके ऊपर भारतवर्ष की प्राचीन धार्मिक पुस्तको का भी बहुत प्रभाव था और इन्होने भारतवर्ष के पन्द्रहवी तथा सोलहवी शताब्दी के वैष्णव कवियो की रचनाओ को फिर से जीवन प्रदान किया था। इनकी रचनाएं रस से ओतप्रोत है। इन्होंने कविता, नाटक, उपन्यास तथा कहानियां लिखी हैं। ये एक अच्छे सगीतज्ञ और चित्रकार भी थे। इस कारण इनकी रचनाओ मे धर्म, भावुकता, कविता, सगीत, ज्ञान, गान, उपदेश, चित्रात्मकता सभी का मिश्रण है।

पुरस्कृत कृति : गीताजलि।

इनकी अन्य प्रमुख रचनाए हैं . माली, चित्रा, घर-बाहर, गोरा, डाकखाना आख की किरकिरी, नौकाडूबी, करुणा, गल्प-गुच्छ (तीन भाग), गीतिमाल, गीताली आदि।

अनुवाद : सुरेन्द्र तिवारी

मेरी पाच बरस की छोटी लडकी मिनी घडी-भर भी बात किये बिना नही रह सकती। संसार मे जन्म लेने के बाद भाषा सीखने में उसने सिर्फ एक ही साल लगाया होगा। उसके बाद जब तक वह जगी रहती है अपना एक मिनट का समय भी मौन मे नष्ट नही करती। उसकी मा अक्सर डाटकर उसका मुह बन्द कर देती है किन्तु मैं ऐसा नही कर पाता। मिनी का चुप रहना मुझे ऐसा अस्वाभाविक लगता है कि मुझसे वह ज्यादा देर तक नहीं सहा जाता और यही वजह है कि मेरे साथ वह कुछ ज्यादा उत्साह से ही बातचीत किया करती है।

सुबह मैंने अपने उपन्यास के सत्रहवें परिच्छेद मे हाथ लगाया ही था कि इतने मे मिनी ने आकर शुरू कर दिया, "बाबूजी, रामदयाल दरबान है न, वो 'काक'[1] को कौआ कहता था—वह कुछ जानता नही न बाबूजी ?"

दुनिया की भाषाओ की भिन्नता के विषय में मेरे कुछ कहने के पहले ही उसने दूसरा प्रसग छेड दिया, "देखो बाबूजी भोला कहता था, 'आकाश मे हाथी सूड से पानी फेंकता है इसी से बरसा होती है।' अच्छा बाबूजी, भोला झूठ-मूठ का बकवास बहुत करता है न? खाली बक-बक किया करता है, रात-दिन बकता रहता है।"

इस विषय मे मेरी राय जानने के लिए जरा भी इन्तजार न करके वह चट मे बड़े नरम स्वर मे एक जटिल सवाल पूछ बैठी, "अच्छा बाबूजी, मा तुम्हारी कौन लगती है ?"

मैंने मन ही मन कहा, 'साली'। और मुह से बोला, "मिनी, तू जा, भोला के साथ खेल जाकर। मुझे अभी कुछ काम है, अच्छा।"

तब उसने मेरी टेबिल के बगल मे पैरो के पास बैठकर अपने दोनो घुटनो और हाथो को हिला-हिलाकर जल्दी-जल्दी मुह चलाकर 'अटकन-बटकन दही चटकन' खेल शुरू कर दिया, जबकि मेरे उपन्यास के सत्रहवें परिच्छेद मे प्रताप सिंह उस समय कचनमाला को लेकर अधेरी रात मे कारागार के ऊँचे झरोखे में से नीचे बहती हुई नदी मे कूद रहे थे।

मेरा घर सड़क के किनारे पर था। सहसा मिनी 'अटकन-बटकन' खेल छोडकर खिडकी के पास दौडी गयी और बडे जोर से चिल्लाने लगी "काबुली-

1. बगाल मे 'कौआ' को 'काक' कहते है इसलिए बगाली लडकी की नजर मे दरबान गलत बोलता है।

वाला, ओ काबुलीवाल. .

मैले-कुचैले ढीले कपड़े पहने, सिर पर साफा बांधे, कंधे पर मेवों की झोली लटकाये, हाथ में दो-चार अंगूर की पिटारियां लिए एक लम्बा-सा काबुली धीमी चाल से सडक पर जा रहा था। उसे देखकर मेरी कन्या के मन में कैसा भावोदय हुआ यह बताना कठिन है। उसने जोरों से उसे पुकारना शुरू कर दिया। मैंने सोचा, अभी झोली कंधे में लटकाये एक आफत सिर पर आ खड़ी होगी और मेरा सत्रहवां परिच्छेद आज पूरा होने से रह जायेगा।

लेकिन मिनी के चिल्लाने पर ज्यों ही काबुली ने हंसते हुए उसकी तरफ मुंह फेरा और वह मकान की तरफ आने लगा त्यों ही मिनी जान लेकर भीतर भाग गयी। फिर उसका पता ही नहीं लगा कि कहां गायब हो गयी। उसके मन में एक अंधविश्वास-सा बैठ गया था कि उस झोली के अन्दर तलाश करने पर उसकी जैसी और भी दो-चार जीती-जागती लड़कियां निकल आयेंगी।

इधर काबुली ने आकर मुस्कराते हुए मुझे सलाम किया और खड़ा हो गया। मैंने सोचा, यद्यपि प्रतापसिंह और कंचनमाला की हालत अत्यन्त संकटपूर्ण है, फिर भी घर में बुलाकर इससे कुछ न खरीदना अच्छा न होगा।

कुछ सामान खरीदा गया। उसके बाद मैं उससे इधर-उधर की बातें करने लगा। अब्दर रहमान, रूस, अंग्रेज, सीमांत-रक्षा इत्यादि विषयों में गप-शप होने लगी।

अन्त में उठकर जाते वक्त, उसने अपनी खिचडी भाषा में मुझसे पूछा, "बाबू साब, आपकी बिटिया कहां गयी ?"

मिनी के मन से बेकार का डर दूर करने के इरादे से मैंने उसे भीतर से बुलवा लिया। वह मुझसे बिलकुल सटकर काबुली के मुंह और झोली की तरफ संदिग्ध दृष्टि से देखती हुई खड़ी रही। काबुली ने झोली में से किसमिस और खूबानी निकालकर मिनी को देना चाहा, परन्तु उसने कुछ भी नहीं लिया बल्कि वह दूने संदेह के साथ मेरे घुटनों से चिपक गयी। पहला परिचय इस तरह हुआ।

कुछ दिन बाद एक दिन सवेरे किसी जरूरी काम से मैं बाहर जा रहा था। देखूं तो मेरी बिटिया दरवाजे के पास बेंच पर बैठी हुई काबुली से खूब बातें कर रही है। काबुली उसके पैरों के पास बैठा-बैठा मुस्कराता हुआ ध्यान से सब सुन रहा है और बीच-बीच में प्रसंगानुसार अपना मतामत भी खिचड़ी भाषा में व्यक्त करता जाता है। मिनी को अपने पांच साल के जीवन में 'बाबूजी' के अलावा ऐसा धीरज वाला श्रोता शायद ही कभी मिला हो। देखा तो उसका छोटा-सा आंचल बादाम-किसमिस से भरा हुआ है। मैंने काबुली से कहा, "इसे यह सब क्यों दे दिये ? अब मत देना।" कहकर जेब से एक अठन्नी निकालकर

मैंने उसे दे दी। उसने बिना किसी सकोच के अठन्नी लेकर अपनी झोली में डाल ली।

घर लौटकर मैंने देखा कि मेरी उस अठन्नी ने बड़ा भारी उपद्रव खड़ा कर दिया है।

मिनी की मा एक सफेद चमकीला गोलाकार पदार्थ हाथ में लिये उलटकर मिनी से पूछ रही है, "तूने यह अठन्नी पाई कहां से, बता?"

मिनी ने कहा, "काबुलीवाले ने दी है।"

"काबुलीवाले से तूने अठन्नी ली क्यों, बता?"

मिनी ने रोने की तैयारी करते हुए कहा, "मैंने मांगी नही थी, उसने अपने आप दी है।"

मैंने आकर मिनी की उस आसन्न विपत्ति से रक्षा की और उसे बाहर ले आया।

पता चला कि उस काबुली के पास मिनी की यह दूसरी ही मुलाकात हो सो बात नही है। इस बीच वह रोज आता रहा है और पिस्ता-बादाम की रिश्वत दे-देकर मिनी के छोटे-से हृदय पर उसने काफी अधिकार जमा लिया है।

देखा कि इन दोनो मित्रो मे कुछ बधी हुई बातें और हसी प्रचलित है। जैसे रहमत को देखते ही मेरी बेटी हंसती हुई पूछती, "काबुलीवाला, ओ काबुलीवाला, तुम्हारी झोली मे क्या है?"

रहमत एक अनावश्यक चन्द्रबिन्दु जोड़कर हसता हुआ उत्तर देता, "हाथी।" उसके परिहास का मर्म अत्यन्त सूक्ष्म हो, ऐसा तो नही कहा जा सकता, फिर भी इससे दोनो को जरा विशेष कौतुक होता लगता। और शरद् ऋतु के प्रभाव मे एक सयाने और एक बच्चे की सरल हसी देखकर मुझे भी बड़ा अच्छा लगता।

उनमें और भी एक-आध बात प्रचलित थी। रहमत मिनी से कहता, "तुम ससुराल कभी नही जाना, अच्छा!"

हमारे यहा की लड़किया जन्म से ही 'ससुराल' शब्द से परिचित हैं किन्तु हम लोग जरा कुछ नये जमाने के होने के कारण छोटी-सी बच्ची को ससुराल के सम्बन्ध मे विशेष ज्ञानी नही बना सके थे, इसलिए रहमत का अनुरोध वह साफ-साफ नही समझ पाती थी किन्तु फिर भी किसी बात का जवाब बिना दिए चुप रहना उसके स्वभाव के बिलकुल विरुद्ध था। उलटे वह रहमत से ही पूछती, "तुम ससुराल जाओगे?"

रहमत काल्पनिक ससुर के लिए अपना जबरदस्त मोटा घूंसा तानकर कहता, "हम ससुर को मारेगा।"

यह सुनकर मिनी किसी 'ससुर' नामक अपरिचित जीव की दुरावस्था को

कल्पना करके खूब हंसती।

देखते-देखते शुभ्र शरद्ऋतु आ पहुंची। प्राचीनकाल में इसी समय राजा लोग दिग्विजय के लिए निकलते थे। मैं कलकत्ता छोड़कर कभी कहीं भी नहीं गया, शायद इसलिए मेरा मन पृथ्वी-भर मे घूमा करता है। यानी, मैं अपने घर के कोने मे चिर प्रवासी हू, बाहर की दुनिया के लिए मेरा मन सर्वदा चंचल रहता है। किसी विदेश का नाम सुनते ही मेरा चित्त वही के लिए दौडने लगता है। इसी तरह विदेशी आदमी को देखते ही तुरन्त मेरा मन नदी-पर्वत-वन के बीच मे एक कुटीर का दृश्य देखने लगता है और एक उल्लासपूर्ण स्वाधीन जीवन-यात्रा की बात कल्पना मे जाग उठती है।

दूसरी तरफ मैं ऐसा स्थावर प्रकृति हूं कि अपना कोना छोडकर घर से बाहर निकलने के नाम से मेरा शरीर कापने लगता है। यही वजह है कि सवेरे के वक्त अपने छोटे-से कमरे मे टेबुल के सामने बैठकर उस काबुली से बातें करके मैं बहुत कुछ भ्रमण का आनन्द ले लिया करता हू। मेरे सामने काबुल का पूरा चित्र खिंच जाता। दोनो तरफ ऊबड-खाबड जले हुए लाल रग के ऊचे दुर्गम पहाड़ हैं और रेगिस्तानी संकरा रास्ता—उसपर लदे हुए ऊटो की कतार जा रही है। साफा बांधे हुए सौदागर और मुसाफिर है। कोई ऊट पर सवार है तो कोई पैदल ही जा रहा है। किसी के हाथ मे बरछा है तो कोई बाबा आदम के जमाने की पुरानी बन्दूक लिए हुए है। मेघ गर्जन के स्वर मे काबुली लोग अपनी खिचड़ी भाषा मे अपने देश की बातें कर रहे है।

मिनी की मा का स्वभाव बड़ा वहमी है। रास्ते मे कोई शोरगुल हुआ नही कि उसने समझ लिया कि दुनिया-भर के सारे मतवाले-शराबी हमारे ही मकान की तरफ दौड़े आ रहे हैं। उसकी समझ से यह दुनिया इस छोर से लेकर उस छोर तक चोर-डकैत, मतवाले-शराबी, साप-बाघ, मलेरिया, सूआ, तिलचट्टे और गोरों से भरी पडी है। इतने दिन हुए (बहुत ज्यादा दिन नही हुए) इस दुनिया मे रहते हुए भी उसके मन की यह विभीषिका दूर नही हुई।

खासकर रहमत काबुली की तरफ से वह पूरी तरह निश्चिन्त नही थी। उसपर विशेष दृष्टि रखने के लिए मुझसे वह बार-बार कहती रहती। जब मैं उसका संदेह हंसी में उडा देना चाहता तो वह मुझसे एकसाथ कई सवाल कर बैठती, "क्या कभी किसी का लड़का चुराया नही गया?" "क्या काबुल मे गुलाम नही बेचे जाते?" "एक लम्बे-मोटे-तगड़े काबुली के लिए एक छोटे से बच्चे को चुरा ले जाना क्या बिलकुल असम्भव बात है?" इत्यादि।

मुझे मानना पड़ता कि यह बात बिलकुल असम्भव हो सो बात नही, परन्तु विश्वास-योग्य नही। विश्वास करने की शक्ति सब में समान नहीं [illegible] इसलिए मेरी पत्नी के मन मे डर रह ही गया, लेकिन सिर्फ इसलिए बिना [illegible]

दोष के रहमत को अपने मकान मे आने से मैं मना नहीं कर सका।

हर वर्ष माघ महीने के लगभग रहमत देश चला जाता है। इस समय वह अपने ग्राहकों से रुपये वसूल करने के काम में बड़ा उद्विग्न रहता है। उसे घर-घर घूमना पड़ता है, मगर फिर भी वह मिनी से एक बार मिल ही जाता है। देखने मे तो ठीक ऐसा ही लगता है कि दोनो मे मानो कोई षड्यंत्र चल रहा हो। जिस दिन वह सवेरे नही आ पाता उस दिन शाम को हाजिर हो जाता। अंधेरे मे घर के कोने मे उस ढीले-ढाले जामा-पायजामा पहने झोला-झोली-वाले लम्बे-तगड़े आदमी को देखकर सचमुच ही मन मे सहसा एक आशंका-सी पैदा हो जाती।

परन्तु, जब देखता हू कि मिनी 'काबुलीवाला, ओ काबुलीवाला' पुकारती हसती-हसती दौड़ी आती है और दो अलग-अलग उम्र के असम मित्रो मे वही पुराना सरल परिहास चलने लगता है तब मेरा सम्पूर्ण हृदय प्रसन्न हो उठता है।

एक दिन सवेरे मैं अपने छोटे कमरे मे बैठा हुआ अपनी नई पुस्तक का प्रूफ देख रहा था। जाडा, विदा होने के पहले, आज दो-तीन दिनो से खूब जोरो से पड़ रहा था। जहा देखो वहा जाडे की ही चर्चा है। ऐसे जाडे-पाले में खिड़की में से सवेरे की धूप टेबुल के नीचे मेरे पैरो पर आ पडी तो उसकी गरमी मुझे आनन्द-विभोर कर गयी। करीब आठ बजे होगे। सिर से गुलूबन्द लपेटे प्रातः भ्रमण करने वाले अपना भ्रमण समाप्त करके अपने-अपने घर की तरफ लौट रहे थे। ठीक इसी समय सडक पर एक बडे जोर का हल्ला सुनाई दिया।

देखू तो, अपने उस रहमत को दो सिपाही बाधे लिए चले जा रहे हैं। उसके पीछे बहुत-से कुतूहली लडको का झुण्ड चलता रहा है। रहमत के कुर्ते पर खून के दाग हैं और एक सिपाही के हाथ में खून से सना हुआ छुरा। मैंने दरवाजे के बाहर निकलकर सिपाही को रोक लिया। पूछा, "क्या बात है?"

कुछ सिपाही से और कुछ रहमत के मुंह से सुना कि हमारे पड़ोस मे रहने वाले एक आदमी ने रहमत से रामपुरी चादरें खरीदी थी। उसके कुछ रुपये उसकी तरफ बाकी थे, जिन्हें वह देने से नट गया। बस, इसी पर दोनो मे बात बढ़ गई और रहमत ने छुरा निकालकर उसको भोंक दिया।

रहमत उस झूठे बेईमान आदमी के लिए तरह-तरह की अश्राव्य गालियां सुना रहा था। इतने मे 'काबुलीवाला, ओ काबुलीवाला' पुकारती हुई मिनी घर से निकल आयी।

रहमत का चेहरा क्षण-भर मे कौतुक-हास्य से प्रफुल्ल हो उठा। उसके कंधे पर आज झोली नही थी, इसलिए झोली के बारे में दोनों मित्रों मे अभ्यस्त परिहास न चल सका। मिनी ने आते ही उससे पूछा, "तुम ससुराल जाओगे?"

रहमत ने हंसकर कहा, "हां, वहीं तो जा रहा हूं।"

रहमत ताड़ गया कि उसका यह उत्तर मिनी के चेहरे पर हंसी न ला सका और तब उसने हाथ दिखाकर कहा, "ससुर को मारता, पर क्या करूं, हाथ बंधे हुए हैं।"

छुरा चलाने के कसूर में रहमत को कई साल की सजा हो गई।

काबुली का खयाल धीरे-धीरे मन से बिलकुल उतर गया। हम लोग जब अपने घर में बैठकर हमेशा की आदत के अनुसार नित्य का काम-धन्धा करते हुए आराम से दिन बिता रहे थे तब एक स्वाधीन पर्वतचारी पुरुष जेल की दीवारों के अन्दर बैठा कैसे साल पर साल बिता रहा होगा, यह बात हमारे मन में कभी उदित ही नहीं हुई।

और चंचल-हृदया मिनी का आचरण तो और भी लज्जाजनक था, यह बात उसके बाप को भी माननी पड़ी। उसने सहज ही अपने पुराने मित्र को भूलकर पहले तो नबी सईस के साथ मित्रता जोड़ी, फिर क्रमशः जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ने लगी वैसे-वैसे सखाओं के बदले एक के बाद एक उसकी सखियां जुटने लगीं। और तो क्या, अब वह अपने बाबूजी के लिखने के कमरे में भी नहीं दिखाई देती। मेरा तो एक तरह से उसके साथ सम्बन्ध ही टूट गया है।

कितने ही साल बीत गये। सालों बाद आज फिर एक शरद् ऋतु आयी है। मिनी की सगाई पक्की हो गई है। पूजा की छुट्टियों में ही उसकी शादी हो जायेगी। कैलासवासिनी के साथ-साथ अबकी बार हमारे घर की आनन्दमयी मिनी भी मां-बाप के घर में अंधेरा करके सास-ससुर के घर चली जायेगी।

प्रभात का सूर्य बड़ी सुन्दरता से उदित हुआ। वर्षा के बाद शरद् ऋतु की यह नई धुली हुई धूप मानो सुहागे में पिघले निर्मल सोने की तरह रंग दे रही है। कलकत्ता की गलियों के भीतर परस्पर सटे हुए पुराने ईंट झरे गन्दे मकानों के ऊपर भी इस धूप की आभा ने एक तरह का अनुपम लावण्य फैला दिया है।

हमारे घर पर आज अंधेरे से ही शहनाई बज रही है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे वह मेरे कलेजे की पसलियों में से रो-रोकर बज रही हो। उसकी करुण भैरवी रागिनी मानो मेरी आसन्न विच्छेद-व्यथा को शरद् ऋतु की धूप के साथ सम्पूर्ण विश्व जगत् में व्याप्त किये दे रही हो।

मेरी मिनी का आज ब्याह है।

सवेरे से झमेला शुरू है। हर वक्त लोगों का आना-जाना जारी है। आंगन में बांस बांधकर मण्डप छाया जा रहा है। हर एक कमरे में और बरामदे में झाड़ लटकाये जा रहे हैं और उनकी टन-टन आवाज मेरे कमरे में आ रही है।

'चलो रे', 'जल्दी करो', 'इधर आओ' की आवाजें गूंज रही हैं।

मैं तब अपने लिखने-पढ़ने के कमरे मे बैठा हुआ खर्च का हिसाब लिख रहा था। इतने मे रहमत आया और सलाम करके खड़ा हो गया।

पहले तो मैं उसे पहचान ही न सका। उसके पास न तो झोली थी, न वैसे लम्बे-लम्बे बाल थे और न चेहरे पर पहले जैसा तेज ही था। अन्त में उसकी मुस्कराहट देखकर पहचान सका कि वह रहमत है।

मैंने पूछा, "क्यो रहमत, कब आये ?"

उसने कहा, "कल शाम को जेल से छूटा हू।"

सुनते ही उसके शब्द मेरे कानों मे खट से बज उठे। किसी खूनी को मैंने कभी आखों से नहीं देखा, उसे देखकर मेरा सारा मन एकाएक सिकुड़-सा गया। मेरी यही इच्छा होने लगी कि आज के इस शुभ दिन मे यह आदमी यहां से चला जाय तो अच्छा हो।

मैंने उससे कहा, "आज हमारे घर में एक जरूरी काम है, सो आज मैं उसमें लगा हुआ हू। आज तुम जाओ—फिर आना।"

मेरी बात सुनकर वह उसी समय जाने को तैयार हो गया। पर दरवाजे के पास जाकर कुछ इधर-उधर करके बोला, "बच्ची को जरा नही देख सकता ?"

शायद उसे यही विश्वास था कि मिनी अब तक वैसी ही बच्ची बनी है। उसने सोचा कि मिनी अब भी पहले की तरह 'काबुलीवाला, ओ काबुलीवाला' चिल्लाती हुई दौडी चली आयेगी। उन दोनों के उस पुराने कौतुक जन्य हास्यालाप मे किसी तरह की रुकावट नही होगी। यहां तक कि पहले की मित्रता याद करके वह एक पेटी अगूर और एक कागज के दोने मे थोड़ी-सी किसमिस और बादाम, शायद अपने देश के किसी आदमी से माग-मूगकर लेता आया था। उसकी पहले की वह झोली उसके पास नहीं थी।

मैंने कहा, "आज घर में बहुत काम है। आज किसी से मुलाकात न हो सकेगी।"

मेरा जवाब सुनकर वह कुछ उदास-सा हो गया। खामोशी के साथ उसने एक बार मेरे मुंह की ओर स्थिर दृष्टि से देखा, फिर "सलाम बाबू साब," कहकर दरवाजे के बाहर निकल गया।

मेरे हृदय मे न जाने कैसी एक वेदना-सी उठी। मैं सोच ही रहा था कि उसे बुलाऊ, इतने मे देखा तो वह खुद ही आ रहा है।

पास आकर बोला, "ये अंगूर और कुछ किसमिस-बादाम बच्ची के लिए लाया था—उसको दे दीजिएगा।"

मैंने उसके हाथ से सामान लेकर उसे पैसे देने चाहे, पर उसने मेरा हाथ थाम लिया, कहने लगा, "आपकी बहुत मेहरबानी है बाबू साब, हमेशा याद

रहेगी···पैसे रहने दीजिए।" जरा ठहर कर फिर बोला, "बाबू साब, आपकी जैसी मेरी भी देश में एक लडकी है। मैं उसकी याद कर-करके आपकी बच्ची के लिए थोड़ी-सी मेवा हाथ में ले आया करता हूं। मैं तो यहा सौदा बेचने नही आता।"

कहते-कहते उसने अपने ढीले-ढाले कुरते के अन्दर हाथ डालकर छाती के पास से एक मैला-कुचैला कागज का टुकडा निकाला और बडे जतन से उसकी तह खोलकर दोनों हाथो से उसे फैलाकर मेरी टेबिल पर रख दिया।

देखा कि कागज पर एक नन्हें से हाथ के छोटे-से पंजे की छाप है। फोटो नही, तैलचित्र नही, सिर्फ हाथ मे थोडी-सी कालिख लगाकर कागज के ऊपर उसी का निशान ले लिया गया है। अपनी लडकी की इस याददाश्त को छाती से लगाकर रहमत हर साल कलकत्ता की गली-कूचो मे सौदा बेचने आता है, और तब यह कालिख-चित्र मानो उसकी बच्ची के हाथ का कोमल स्पर्श उसके बिछुडे हुए विशाल वक्षस्थल मे सुधा उडेलता रहता है।

देखकर मेरी आखें भर आयी। और फिर इस बात को मैं बिलकुल ही भूल गया कि वह एक काबुली मेवावाला है और मैं एक उच्च वश का रईस हूं। तब मैं महसूस करने लगा कि जो वह है, वही मैं हू। वह भी बाप है, मैं भी बाप हू। उसकी पर्वतवासिनी छोटी-सी पार्वती के हाथ की निशानी ने मेरी ही मिनी की याद दिला दी। मैंने उसी वक्त मिनी को बाहर बुलवाया। हालाकि इस पर भीतर बहुत आपत्ति की गयी, किन्तु मैंने उस पर कुछ भी ध्यान नही दिया। ब्याह की पूरी पोशाक और जेवर-गहने पहने हुए बेचारी वधू-वेशिनी मिनी मारे शर्म के सिकुडी हुई-सी मेरे पास आकर खडी हो गयी।

उसे देखकर रहमत काबुली पहले तो सकपका गया, उससे पहले जैसी बात-चीत करते न बना।

बाद में वह हसता हुआ बोला, "लल्ली, सास के घर जा रही है क्या ?"

मिनी अब सास के मानी समझने लगी है, लिहाजा अब उससे पहले की तरह जवाब देते न बना। रहमत की बात सुनकर मारे शरम के उसका मुह लाल हो उठा। उसने मुह फेर लिया। मुझे उस दिन की बात याद आ गयी जब कि काबुली के साथ मिनी का प्रथम परिचय हुआ था। मन में एक व्यथा-सी जाग उठी।

मिनी के चले जाने पर एक गहरी उसास भरकर वह जमीन पर बैठ गया। शायद उसकी समझ मे यह बात एकाएक स्पष्ट हो उठी कि उसकी लड़की भी इतने दिनों मे बडी हो गई होगी, और उसके साथ भी उसे अब फिर से नयी जान-पहचान करनी होगी। शायद उसे अब वह ठीक पहले की-सी वैसी की वैसी न पायेगा। इन आठ वर्षों मे उसका क्या हुआ होगा, कौन जाने। सवेरे के वक्त

शरद् की स्निग्ध सूर्यकिरणों में शहनाई बजने लगी और रहमत कलकत्ता की एक गली के भीतर बैठा हुआ अफगानिस्तान के मरु-पर्वत का दृश्य देखने लगा।

मैंने एक नोट निकालकर उसके हाथ में दिया और कहा, "रहमत, तुम अपने देश चले जाओ, अपनी लड़की के पास। तुम दोनों के मिलन-सुख से मेरी मिनी सुख पायेगी।"

रहमत को रुपये देने के बाद ब्याह के हिसाब में से मुझे उत्सव-समारोह के दो-एक अंग छांटकर निकाल देने पड़े। जैसी मन में थी वैसी रोशनी नहीं करा सका, अंग्रेजी बाजे भी नहीं आये, घर में औरतें बड़ी नाराजी दिखाने लगीं। सब कुछ हुआ, फिर भी, मेरा खयाल है कि आज एक अपूर्व मंगल प्रकाश से हमारा शुभ उत्सव उज्ज्वल हो उठा।

शरीफजादे

अनातोले फ्रांस

जन्म · 1844 मृत्यु : 13 अक्तूबर, 1924.

अनातोले फ्रांस का वास्तविक नाम जैक्स अनातोले थिबाल्ट था। इनको सन् 1921 मे नोबेल पुरस्कार मिला। इन्होंने अपने अस्सी वर्ष के लम्बे जीवन मे साहित्य को अनेक रचनाएं दी है। जहां ईश्वर ने इन्हे अवसर, धन, बुद्धि, इच्छा सभी कुछ दिया था वहा इन्होने भी इन सब चीजो तथा सुविधाओ का पूरा-पूरा उपयोग किया था। इन्होने उपन्यास, जीवनी, लेख, ऐतिहासिक पुस्तकें इत्यादि बहुत-सी साहित्य विधाओ मे रचनाएं लिखकर साहित्य का कोष भरा। इनकी रचनाओ मे शैली की मौलिकता व सामर्थ्य, मानवता के लिए सहानुभूति व विशाल हृदयता, सच्चा फ्रांसीसी मिजाज विशेष उल्लेखनीय है।

पुरस्कृत कृति : थाया

इनकी अन्य प्रमुख रचनाएं हैं : दि क्राइम आफ सिल्वेस्त्रे बोनार्ड, दि गाड्स आर आथर्स्ट, लाइफ आफ जोन आर्क, रवेलायस आदि।

मैं भीतर आया तो पाओलिन दे लुजी ने हाथ हिलाकर मेरा स्वागत किया। फिर कुछ देर चुप्पी छायी रही। उसका स्कार्फ और तौलियों का बना टोप आरामकुर्सी पर लापरवाही से पड़े थे।

"मादाम," मैंने अपनी बात जरा खोलकर कही, "क्या आपको याद है कि ठीक दो साल पहले, आज ही के दिन पहाड़ी की तली में बहती नदी के किनारे, वहीं जहां आपकी आंखें इस समय देख रही हैं, आपने क्या कहा था? क्या आपको याद है कि पैगंबरी मुद्रा में अपने हाथ हिलाते हुए आप मेरे पास तक आयी थीं? मेरे प्रेम की स्वीकारोक्ति आपने मेरे होंठों के भीतर ही रोक दिया था और मुझे न्याय तथा स्वतन्त्रता के लिए जीने और लड़ने के लिए छोड़ दिया था। मादाम, आपके जिस हाथ को मैं चूमते हुए अपने आंसुओं से भिगो देना चाहता था, उसी से आपने मुझे बाहर का रास्ता दिखाया था और मैं बिना कहे लौट गया था। मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया। दो सालों से मैं बेवकूफ कंगलों के साथ रहा हूं जिनके लिए लोगों के मन में घृणा और अरुचि ही होती है। जो दिखावे की सहानुभूति के हिंसक प्रदर्शन से लोगों को बहकाते हैं और जो चढ़ते सूरज को ही सलाम करते हैं..."

अपने हाथ के एक इशारे से उसने मुझे चुप कर दिया और संकेत किया कि मैं चुप हो जाऊं और उसकी बात सुनूं। फिर बगीचे से सटे उस सुगंधित कमरे में पक्षियों के कलरव के बीच दूर से आती चीखें सुनाई दीं, "मारो! इन शरीफजादों को फांसी पर चढ़ा दो। इनकी गर्दनें उतार दो?"

उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

"कोई खास बात नहीं है।" मैंने कहा, "किसी कमीने को सबक सिखाया जा रहा होगा। ये लोग चौबीस घंटे पेरिस में घर-घर जाकर गिरफ्तारियां कर रहे हैं। यह भी हो सकता है कि वे लोग यहां घुस आयें। तब मैं कुछ नहीं कर पाऊंगा। हालांकि फिर भी मैं अब एक खतरनाक मेहमान होता जा रहा हूं।"

"रुको।" उसने मुझे रोक दिया।

दूसरी बार चीखों ने शाम की शांत हवा को चीरा। फिर एक आवाज चीखी, "रास्ते बंद कर दो, वह बदमाश भागने न पाये!"

खतरा जितना करीब आ गया था, उस अनुपात से मादाम दे लुजी कुछ अधिक ही शान्त दिख रही थी।

"आओ, दूसरे माले पर चलते है।" उसने कहा। डरते हुए हमने दरवाजा खोला तो सामने से एक व्यक्ति अधनंगा-सा भागता हुआ आता दिखा। आतंक उसके चेहरे पर बुरी तरह फैला हुआ था। उसके दात कसे हुए थे और घुटने आपस मे टकरा रहे थे, घुटे गले से वह चीख-सा रहा था, "मुझे बचा लो ! कही छिपा लो ! वे वहा है···उन्होने मेरा दरवाजा और बगीचा उजाड़ दिया है। अब वे मेरे पीछे हैं···"

मादाम दे लुजी ने उस व्यक्ति को पहचान लिया था। वह प्लाचो था; एक बूढ़ा दार्शनिक जो पडोस मे ही रहता था। मादाम ने फुसफुसाते हुए उससे पूछा, "कही मेरी नौकरानी की नजर तो तुम पर नही पड़ गयी ? वह भी जैकोबिन है।"

"नही, मुझे किसी ने नही देखा।"

"सब ईश्वर की कृपा है।"

वह उसे अपने सोने के कमरे में ले गयी। मैं उन दोनों के पीछे-पीछे चल रहा था, सलाह-मशविरा जरूरी हो गया था। छिपने की कोई ऐसी जगह ढूढनी ही पड़ेगी, जहा प्लाचो को कुछ दिन नही तो कुछ घटों के लिए ही छिपाया रखा जा सके।

इतजार के क्षणो में वह अपने को खडा न रख सका।

आतंक से उसे जैसे लकवा मार गया था।

वह हमे समझाने की कोशिश करता रहा कि उस पर मारयो दे कजोत के साथ मिलकर संविधान के विरुद्ध षड्यंत्र करने का आरोप है। साथ ही 10 अगस्त को उसने पादरी तथा सम्राट् के शत्रु को बचाने के लिए एक दल का गठन किया। यह सब आरोप गलत थे, सच्चाई यह थी कि ल्यूबिन अपनी घृणा उस पर निकाल रहा था। ल्यूबिन एक कसाई था, जिसे वह हमेशा ठीक तौलने के लिए कहता रहा। कल का वह दुकानदार आज इस गिरोह का मुखिया है।

और अभी सीढियो पर किसी के चढने की आवाजें आने लगी थी। मादाम दे लुजी ने जल्दी से चटखनी चढायी और उस बूढ़े को पीछे धकेल दिया, दरवाजे पर थपथपाहट और आवाज से पाओलिन ने पहचान लिया कि वह उसकी नौकरानी थी, वह दरवाजा खोलने के लिए कह रही थी और बता रही थी कि बाहर गेट पर नगर पालिका के अधिकारी नेशनल गार्ड्स के साथ आये हैं और अहाते का निरीक्षण करना चाहते हैं।

"वे कहते हैं" वह औरत बता रही थी, "प्लाचो इस घर के भीतर है। मैं अच्छी तरह जानती हू कि वह यहां नही है, मैं जानती हूं कि आप ऐसे धूर्त को शरण नही देंगी, पर ये लोग मेरे शब्दो पर यकीन नही करते।"

"ठीक है, उन्हें आने दो।" दरवाजा खोले बिना मादाम दे लुजी ने कहा, "और घर का एक-एक कोना दिखा दो।"

यह बात सुनते ही कायर प्लाचो पर्दे के पीछे ही बेहोश होकर गिर पड़ा। उसे होश मे लाने मे काफी दिक्कत हुई। उसके चेहरे पर पानी छिडका तब कही जाकर उसने आखें खोली।

जब वह होश मे आ गया तो वह युवती अपने बूढ़े पडोसी के कानो में फुस-फसायी, "दोस्त, मुझ पर भरोसा रखो, मत भूलो कि औरत बडी पहुंच वाली है।"

फिर उसने बड़ी शान्ति से जैसे वह रोज का घर का काम कर रही हो, पलग को थोडा-सा खिसकाया और तीन गद्दो को उस पर इस तरह रखा कि बीच मे एक आदमी की जगह बन जाये।

जब वह ये सारे इतजाम कर रही थी, सीढियो पर से जूतो और बदूको की खट-खट की आवाजे सुनाई दी। हम तीनो के लिए ये भयानक क्षण थे। और फिर यह शोर ऊपर चढता हुआ हल्का हो गया। वे ऊपर की मजिल पर आ गये थे। हम जान गये कि जैकोबिन नौकरानी के मार्गदर्शन से पहले वे अटारी को छान मारेंगे। छत चरमरायी। डरावने ठहाके गूज उठे थे, जूतो और सगीनो की चोटो की आवाजें हम तक आ रही थी। हमने राहत की सास ली। पर हमारे पास बरबाद करने के लिए एक भी क्षण नही था। मैंने प्लाचो को गद्दो के बीच की खाली जगह पर घुसने मे मदद दी।

हमें यह करते देख मादाम दे लुजी ने नकारात्मक मुद्रा मे सिर हिलाया। बिस्तर इस तरह से ऊबड-खाबड़ हो गया कि कोई भी शक कर सकता था।

उसने खुद जाकर ठीक करना चाहा पर फिजूल। वह स्वाभाविक-सा नही लग रहा था। "मुझे खुद ही बिस्तर पर लेटना पड़ेगा।" उसने कहा। कुछ क्षणो के लिए वह सोचती रही फिर बड़ी शांति और शाही लापरवाही से उसने मेरे सामने ही अपने कपडे उतारे और बिस्तर पर लेट गयी। फिर उसने मुझसे भी अपने जूते और टाई आदि को उतारने के लिए कहा।

"कोई खास बात नही है, बस तुम्हे मेरे प्रेमी का अभिनय करना होगा। इसी तरह हम उन्हें धोखे मे डाल सकेंगे।" हमारा इंतजाम पूरा हो गया था और उन लोगो के नीचे उतरने की आवाजें आने लगी थी। वे चीख रहे थे — "हरपोक! चूहा!"

अभागे प्लाचो को जैसे लकवा मार गया हो। वह इतनी बुरी तरह कांप रहा था कि पूरा बिस्तर हिल रहा था।

उसकी सांसें इतनी जोर से चल रही थी कि बाहर से कोई भी आदमी सुन सकता था। "कितने खेद की बात है।" मादाम दे लुजी ने हल्की आवाज में

में कहा, "अपनी थोड़ी-सी चालाकी से मैं समझती थी कि काम बन जायेगा। फिर भी कोई बात नहीं। हिम्मत तो हम नही छोड़ेंगे। ईश्वर हमारी रक्षा करे।"

किसी ने दरवाजे पर जोर से घूंसा मारा।

"कौन है ?" पाओलिन से पूछा।

"राष्ट्र के प्रतिनिधि।"

"क्या थोड़ी देर रुक नही सकते ?"

"जल्दी खोलो। नही तो हम दरवाजा तोड़ डालेंगे।"

"जाओ दोस्त दरवाजा खोलो।"

अचानक एक जादू-सा हुआ। प्लाचो ने कापना और लबी सांसें लेना बन्द कर दिया।

सबसे पहले ल्यूबिन अदर आया। वह रुमाल बाधे हुए था। उसके पीछे-पीछे एक दर्जन लोग हथियार और बरछे लिये अदर घुस आये। पहले मादाम दे लुजी और फिर मुझे घूरते हुए वे जोर से चीखे। "शी ! लगता है हम आशिकों के एकान्त मे बाधक बन रहे है ! खूबसूरत लडकी, हमे माफ कर देना।"

फिर वह बिस्तर पर आकर बैठ गया और प्यार से उस ऊची नस्ल की औरत की ठुड्डी ऊपर उठाते हुए बोला, "यह तो साफ है कि इतना सुन्दर चेहरा रात-दिन भगवान् की प्रार्थना करने के लिए नही होता। ऐसा होता तो कितने खेद की बात होती। लेकिन पहले अपने गणतंत्र का काम बाकी काम बाद में। अभी तो हम देशद्रोही प्लाचो को ढूढ रहे हैं। वह यही है। मैं निश्चित रूप से कह सकता हू। मैं उसे ढूढ़ कर रहूंगा। मैं उसे फांसी पर चढ़ा दूगा। इससे मेरा भाग्य सुधर जायेगा।"

"तो फिर उसे ढूढो।"

उन्होंने मेजों और कुर्सियो के नीचे झांका। पलंग के नीचे अपने बरछे चलाये और गद्दो पर संगीनें घोंपीं।

मैं उन्हें तहखाने मे ले गया। वहा उन्होने लकड़ी के ढेर को बिखेर दिया और शराब की कई बोतलें खाली कर दीं। काफी देर तक शराब पीते ऊधम मचाते रहे। जब वे पीते-पीते थक गये तो बाकी बची शराब की बोतलों को बंदूक के हत्थो से तोड़ते हुए ल्यूबिन ने तहखाने में शराब की बाढ़-सी लगा दी। उनके बाहर निकलते ही मैंने लपककर गेट बन्द कर दिया। फ़िर मैं दौड़ता हुआ मादाम दे लुजी के पास आया और उसे बताया कि खतरा टल गया है।

यह सुनते ही उसने गद्दे को पलटा और पुकारा, "मोस्यो प्लांचो, मोस्यो प्लांचो !"

जवाब मे एक हल्की-सी सिसकी सुनाई दी।

"ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है।" वह चीख-सी पडी, "मोस्यो प्लांचो, मैं तो समझी कि आप मर गये।"

फिर मेरी ओर मुड़कर बोली, "देखो दोस्त, तुम हमेशा यह कहकर खुश होते हो कि तुम्हें मुझसे प्यार है पर आइन्दा तुम ऐसा नही कहोगे।"

फटा हुआ बूट

ग्रेजिया डेलेडा

जन्म : 1875. मृत्यु : 1936.

इटली की ग्रेजिया डेलेडा को सन् 1926 में नोबेल पुरस्कार मिला। इन्होंने अपनी शुरू की जिन्दगी में बहुत दुख-भरे दृश्य देखे थे, जिनका उनके ऊपर काफी गहरा और अमिट प्रभाव पड़ा था। इनकी रचनाओं में दुखद अनुभवों का जो इतना अधिक उल्लेख और चित्रण मिलता है उसका कारण यह प्रभाव ही है। परन्तु इन्होंने अपनी सभी रचनाओं में अपनी जन्म भूमि सार्डीनिया का किसी न किसी रूप में चित्रण अवश्य किया है। अपने देश के लोगों, वहां के रीति-रिवाजों तथा कथाओं का चित्रण व वर्णन इन्होंने बहुत ही मार्मिक व सजीव ढंग से किया है। इन्होंने जो कुछ लिखा है वह अपने मन की शान्ति और सुख के लिए ही लिखा है। इन्होंने यह भी कहा था कि मन की शान्ति पहली चीज है, पाठक और सफलता तो बाद में आती है।

पुरस्कृत कृति : रीड्ज इन दि विण्ड।

इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं : आफ्टर दि डाइवोर्स; दि मदर आदि।

अनुवाद : सुधवीर

एलिया कचहरी मे बेकार-सा रहता था। उन दिनों लोग कचहरी मे दूर ही रहना पसन्द करते थे। बड़े-से-बड़े वकील भी छोटे-छोटे मुक्दमे लेने के लिए मजबूर थे। एलिया के पास तो कोई भी मुकदमा न आता, फिर भी, वह कचहरी मे जाता और वहा एकान्त मे बैठकर अपनी पत्नी को सम्बोधित करके कविताएं लिखा करता।

एक दिन रास्ते मे एक परिचित गाड़ीवान ने एलिया को रोकते हुए कहा, "मैं अभी-अभी तेर्सनोवा मे आ रहा हू, वहा मैं तुम्हारे चाचा से मिला था। वे सख्त बीमार हैं ..." एलिया घर लौटा तो उसकी पत्नी घर के सामने धूप मे खड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। एलिया ने अपने चाचा की बीमारी की खबर उसे सुनायी तो उसके शान्त-गम्भीर चेहरे पर बेचैनी की बजाय रहस्यमयी मुस्कराहट आयी। उसे देखकर एलिया के होठो पर भी मुस्कराहट आयी।

"तो मैं जाता हूं", एलिया ने कहा। आगे वह कुछ न बोला। पत्नी उसके मन की बात समझ गयी। चाचा मरने पर अपनी सारी सम्पत्ति उसे दे जाने वाला था। तभी उसने पति के फटे हुए बूट की ओर देखते हुए पूछा, "रास्ते के खर्च का भी कुछ खयाल किया है?"

"इसकी चिन्ता न करो। मेरे पास थोड़े-से पैसे हैं।"

एलिया अपने चाचा के शहर के लिए रवाना हो गया। रास्ते मे वह तेजी से चलता हुआ अपने फटे बूट के बारे मे सोच रहा था कि वह उसे किसी-न-किसी तरह चाचा के घर तक पहुचा दे तो बहुत अच्छा हो।

रात हुई तो ठण्ड बढने लगी। एलिया को लगा कि उसके पांव उस ठण्ड को जैसे छूने लगे हों। उसने अपने खस्ता बूट की तरफ देखा, जो अब मरम्मत करने लायक नहीं रह गया था। उसे पहनकर चलने मे बड़ी तकलीफ हो रही थी। फिर यह खयाल भी तकलीफ दे रहा था कि ऐसा बूट पहनकर चाचा के घर में जाना बेइज्जती वाली बात होगी, लेकिन कोई चारा नहीं था। तब वह बूट की ओर से ध्यान हटाकर चाचा की सम्पत्ति पाने और भविष्य मे सुखी जीवन बिताने के बारे मे सोचने लगा।

एक गांव आने पर वह रात बिताने के लिए एक धर्मशाला में ठहरा। कम किराये मे उसे एक गन्दी, छोटी-सी कोठरी मिली। वहा दो व्यक्ति पहले से ठहरे हुए थे। वे दोनों ही सोये हुए थे।

एलिया अपने उन्हीं कपड़ों में लेट गया, लेकिन उसे नींद न आयी। उसने अपने खयालों में संसार की सभी सड़कों पर और सभी घरों में अनगिनत बूट देखे, फिर तो उसे हर जगह बूट-ही-बूट दिखाई देने लगे। आखिर उसे लगा कि जैसे उस कोठरी में भी बूट बिखरे पड़े हों। तभी वह अचानक उठ बैठा और सर्दी से कांपता हुआ नंगे पांव बड़ी नर्मी से चलता हुआ अपने बगल वाले मुसाफिर की खटिया के पास गया। उसका एक बूट उसने पहना ही था कि उसके तपते हुए पांव में कोई चीज चुभी। उसने बूट उतार डाला तभी कोठरी के बाहर उसे अस्पष्ट-सी आवाज सुनायी दी तो डर के मारे उसके पांव वहीं के वहीं जम गये। और उसी समय उसने अपनी आत्मा की फटकार सुनी कि वह पतन के रास्ते पर जा रहा है। बाहर की आवाज जब बन्द हो गयी तो वह कोठरी में से निकला। वहां कोई नहीं था। एक तरफ लटकी हुई लालटेन मद्धिम-सी रोशनी कर रही थी। एलिया ने इधर-उधर देखा तो पास ही एक बूटों का जोड़ा पड़ा दिखाई दिया। उसी समय उसने बिना कुछ सोचे एक बूट उठाकर अपने कोट में छिपा लिया। फिर वह एक नजर वहां सोये पड़े चौकीदार की तरफ देखकर चुपके से फाटक खोलकर बाहर निकल गया।

लगभग आधा घण्टा नंगे पांव चलने के बाद उसे बूट पहनने का खयाल आया। एक पत्थर पर बैठकर वह बूट को कुछ क्षण देखता रहा। आखिर जब वह बूट पहनकर खड़ा हुआ तो उसके अन्दर से आवाज आयी, "पतन! घोर पतन!" लेकिन आवाज की तनिक भी परवाह किये बिना वह चल पड़ा, अब वह पहले की तरह तेजी से नहीं चल रहा था। उसके कदम लड़खड़ा रहे थे और वह बार-बार पीछे मुड़कर देखता था कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है।

प्रातःकाल का प्रकाश फैलने लगा तो एलिया का डर और बढ़ गया। उसके दिमाग में विचारों ने हलचल मचा दी। उसे लग रहा था कि राह चलते लोग उसकी चोरी भांप लेंगे और फिर उसके चोर होने की खबर चारों ओर फैल जायेगी। आखिर पकड़े जाने के डर से उसने फिर अपना पुराना बूट पहन लिया और चुराया हुआ बूट सड़क के एक तरफ फेंक दिया। तो भी, उसका मन शान्त न हुआ। रात की घटना रह-रहकर उसके सामने आने लगी। उसे बार-बार लग रहा था कि उस कोठरी के दोनों मुसाफिर उसके पीछे आ रहे होंगे। फिर, इस खयाल से उसका दिल कांप उठा कि उसके चोर होने की खबर उसकी पत्नी तक पहुंच गयी तो अनर्थ हो जायेगा। सम्पत्ति पाने के पहले ही वह किस अधःपतन को पहुंच गया है!

चलते-चलते वह रुक गया और फिर लौट पड़ा। उसका फेंका हुआ बूट वहीं पड़ा था। उसे देखते हुए उसके मन में हलचल होने लगी। अगर वह उसे छिपा दे या जमीन में गाड़ दे तो भी वह चोरी उसकी आत्मा से तो छिपी नहीं रहेगी। और वह चोरी उसके पूरे जीवन को कलंकित करती रहेगी···

अचानक उसने बूट उठाया और धर्मशाला की ओर चल पड़ा। वह धीरे-धीरे चल रहा था ताकि अन्धेरा होने पर धर्मशाला में पहुंचे। दिन-भर उसने कुछ नहीं खाया था और बड़ी थकान महसूस कर रहा था। उसके कदम डगमगा रहे थे।

धर्मशाला में खामोशी थी। उसने रात काटने के लिए जगह ली। फिर मौका पाकर उसने वह बूट वहीं रख दिया, जहां से उठाया था और अपनी खटिया पर जाकर लेट गया। लेटते ही वह नींद में डूब गया। सुबह उठने पर उसने बचे-खुचे पैसों से डबल रोटी खरीदी और वहां से चल दिया।

बड़ा सुहाना मौसम था। एलिया अपना फटा हुआ बूट पहने स्वस्थ मन से चला जा रहा था। आखिर जब वह अपने चाचा के घर पहुंचा तो पता लगा कि कुछ ही घण्टे पहले वह चल बसा था। नौकरानी ने उसे बताया, "मालिक ने आपका बहुत रास्ता देखा। तीन दिन पहले उन्होंने आपको तार भी भेजा था। वे कहा करते थे कि आप अकेले ही उनके वारिस हैं, लेकिन आपने उन्हें भुला दिया था। वे आपसे बहुत नाराज थे। जब आज सुबह भी आप नहीं आये तो उन्होंने अपनी सारी दौलत मछेरों के अनाथ बच्चों को दे दी।"

एलिया लौटकर अपने घर आया। उसकी पत्नी ने सारा हाल सुनकर कहा, "अच्छा ही हुआ जो सम्पत्ति हमें नहीं मिली। जिस सम्पत्ति के मिलने से पहले ही आदमी अपनी ईमानदारी खो बैठे, उसका न मिलना ही अच्छा है।"

एक सपने की मौत

सीग्रिद उण्डसेत

जन्म : 20 मई, 1882. मृत्यु · 1940.

नार्वे की सीग्रिद उण्डसेत को नोबेल पुरस्कार सन् 1928 मे प्राप्त हुआ। इन्होने दस वर्ष तक एक दफ्तर मे काम किया, जिससे इनको दफ्तरो मे काम करने वाली लडकियों के जीवन के विषय मे अच्छा-खासा ज्ञान प्राप्त हो गया था। इन्होने अपने इस ज्ञान का उपयोग अपनी कई कृतियो में किया है। यह अपने पात्रो को अपने जीवन का अग बना लेने के बाद ही उनको अपनी रचनाओ में आने देती थीं। इसी कारण इनके पात्रों के छोटे-मोटे दुख-सुख भी अत्यन्त वास्तविक और सजीवता के साथ चित्रित किए गए हैं। इनके पात्र अधिकतर नार्वे के चौदहवी तथा पन्द्रहवी शताब्दी के मध्यवर्ग के होते है।

पुरस्कृत कृति . क्रिस्टन लव्रान्स्ट्र' (तीन भागो मे)
इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं . मास्टर आफ हेस्टविकेन (चार भागों मे), जेनी, गुन्नार्स, डाटर, इमेजिज इन ए मिरर, दि वाइल्ड आर्चिड, दि बर्निगबुश, इडा एलिजाबेथ, स्टेजिज आन दि रोड, दि लागेस्ट ईअर्स, दि फेथफुल वाइफ, सागा आफ सेण्ट्स, मेन वीमेन एण्ड प्लेसिज, मैडम डोरोथी आदि।

मठ के दरवाजे पर, हाथो में जलती मोमबत्तिया लेकर भिक्षुणियां आदमियों की कतार की अगवानी करने के लिए पहुच गयी थी। भय ने क्रिस्तिन की पूरी चेतना को अपने कब्जे मे कर लिया था। उसे लगा, जैसे चलते हुए वह कुछ तो खुद अपने को ढो रही है और कुछ दूसरो के सहारे पर है। दरवाजे से गुजरकर वे सफेद दीवार वाले कमरे मे पहुच गये, जहां मोमबत्ती और लाल देवदार की मशाल की मिली-जुली पीली रोशनी दिपदिपा रही थी और कदमो की आहटें समुद्र की लहरो जैसी आवाजें पैदा कर रही थी। उस मरणासन्न औरत को लग रहा था जैसे उस रोशनी की ही तरह उसके जीवन की लौ भी बस बुझने ही वाली है और उन कदमो की आवाजो के साथ जैसे मौत उसके करीब आती जा रही है।

मोमबत्ती की रोशनी फिर खुले मे फैल गयी थी। अब वे बरामदे मे आ गये थे। चर्च की भूरे पत्थरों की दीवारो और ऊंची विशालकाय खिड़कियो से अब मोमबत्ती की रोशनी खेलने लगी थी। इस समय वह किसी की बाहों के सहारे पर थी। यह उल्फ ही था, पर इस समय तो वह उन सब लोगों जैसा दिख रहा था जो उसे सहारा देते आये है। जब क्रिस्तिन ने अपनी बांहें उसके गले में डाल दी और अपना गाल उसकी गर्दन से सटा लिया तो लगा जैसे वह फिर बच्ची बन गयी है और अपने पिता के साथ है। साथ ही उसे ऐसा भी लगा, जैसे वह किसी बच्चे को अपने वक्ष से लगा रही है। उसके काले सिर के पीछे मे लाल रोशनी दिख रही थी, जो लगता था जैसे उस अग्नि की लपट हो, जो हर प्रेम को पोषित करती है।

थोडी देर बाद उसने आखें खोली। अब उसका मस्तिष्क निर्विकार और शान्त था। वह शयनागार मे अपने बिस्तर पर तकिये के सहारे बैठी थी। एक भिक्षुणी कपड़े की पट्टी लिये उस पर झुकी हुई थी। उसमे से सिरके की गंध आ रही थी। वह सिस्टर एग्नेस थी। क्रिस्तिन उसे उसकी आंखो और माथे के लाल मस्से से पहचान गयी थी। दिन ऊपर चढ आया था और खिड़की के छोटे-से काच मे से छनकर पूरी रोशनी कमरे मे आ रही थी।

वह भयानक दर्द अब नही था, पर वह पसीने से पूरी तरह भीगी हुई थी। सांस लेते हुए उसकी छाती बहुत जोर से आगे और पीछे हो रही थी। जो दवाई

सिस्टर एग्नेस ने उसके मुह में डाली, चुपचाप गटक गयी। उसका शरीर बिल्कुल ठंडा था।

क्रिस्तिन ने पीठ तकिये से सटा ली। अब उसे याद आया कि पिछली रात को क्या-क्या घटा था। वह मायाजाल-भरा दुःस्वप्न गुजर गया है, लेकिन वह थोडा चकित भी थी। फिर भी यह ठीक ही हुआ कि काम हो गया। उसने बच्चे को बचा लिया और उन बेचारे लोगों की आत्माओ को उस घृणित काम के अपराध के भार से मुक्त रखा। वह समझती थी कि इससे उसे खुश होना चाहिए, क्योंकि मरने से ठीक पहले उसे यह अच्छा काम करने की अनुकंपा प्राप्त हुई थी। दिन-भर का काम करने के बाद सांझ को योरनगार्द के घर में, अपने बिस्तर पर लेटते हुए उसे जितनी संतुष्टि मिलती थी, इस समय उससे अधिक मिल रही थी। इसके लिए उसे उल्फ का आभारी होना चाहिए। जब वह उल्फ का नाम ले रही थी तो शायद वह दरवाजे के पास ही कही बैठा था, क्योंकि तभी वह भीतर आया और बिस्तर के पास आकर खडा हो गया। क्रिस्तिन ने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। उसने हाथ को अपने हाथ मे लिया और कसकर पकड़ लिया।

अचानक वह मरणासन्न औरत बेचैन हो गयी और उसके हाथ अपने गले पर बधी पट्टी से उलझ गये।

"क्या हुआ क्रिस्तिन ?" उल्फ ने पूछा।

"यह क्रॉस।" वह फुसफुसायी और बड़े दर्द के साथ अपने पिता का सोने का पानी चढ़ा क्रॉस खीचकर बाहर निकाल दिया। तभी उसे याद आया कि उसने कल बेचारी स्तीनन की आत्मा की शान्ति के लिए कोई उपहार देने का वादा किया था। तब उसे कहा पता था कि दुनिया मे उसके लिए अब अधिक समय शेप नही रह गया है, उसके पास देने के लिए अब कुछ नही बचा था, सिवाय इस क्रास के, जो उसके पिता का था और उसकी शादी की अंगूठी के जो अब भी उसकी उगली मे पड़ी थी।

उसने अगूठी को उंगली से बाहर निकाला और गौर से देखने लगी। उसके कमजोर हाथो को यह काफी भारी लग रही थी, क्योंकि यह शुद्ध सोने की थी और बडा लाल पत्थर इस पर जुड़ा हुआ था। बेहतर होगा कि इसे ही वह किसी को दे दे। देना तो चाहिए पर किसे ? उसने अपनी आखें बन्द कर ली और अंगूठी उल्फ की ओर बढ़ा दी।

"तुम यह किसे देना चाहती हो ?" उसने पूछा और जब क्रिस्तिन ने कोई जवाब नही दिया तो खुद ही कहने लगा, "तुम्हारा मतलब है कि मैं इसे कुले को…"

क्रिस्तिन ने इनकार मे गर्दन हिलायी और फिर आखें कसकर बन्द कर ली…!

"स्तीनन···मैंने वादा किया था कि···उसके लिए अर्पित करूंगी···"

उसने अपनी आखें खोल दी और उस अगूठी को अपनी नजरो से तलाश करने लगी, जो उल्फ की भारी-भरकम हथेली पर रखी थी। उसकी आखो से आसुओं की एक अविरल धारा बह निकली। उसे लगा, जैसे वह पहली बार उस प्रतीक का अर्थ समझी हो। जो विवाहित जीवन इस अगूठी ने उसे दिया, जिसके खिलाफ उसे इतनी शिकायतें रही हैं, जिस पर वह हमेशा बुदबुदाती रही, जिस पर उसे इतना गुस्सा रहा है और जिसका वह विरोध करती रही है—बावजूद इस सबके जिसे उसने प्यार किया है, जिसमें इतना आनन्द लिया है, चाहे वे सुख के दिन रहे हो या दुख के दिन···

उल्फ और भिक्षुणी ने कुछ बात की, जिसे वह सुन न सकी और फिर वह कमरे से बाहर निकल गया। क्रिस्तिन ने चाहा कि वह अपना हाथ उठाकर उससे अपनी आखें पोछ ले, पर वह ऐसा कर न सकी और हाथ उसकी छाती पर ही पड़ा रहा। भीतर की पीड़ा ने उसके हाथ को इतना भारी बना दिया था, जैसे लगता था कि वह अगूठी अभी उसकी उगली मे ही है। उसका दिमाग फिर धुंधलाने लगा—उसे यह जानना ही चाहिए कि अगूठी वास्तव में चली गयी है और उसका जाना उसने सपने में नही देखा है। अब सब कुछ अनिश्चित-सा लग रहा था। कल रात भी जो कुछ घटा, उसके बारे में वह निश्चित नही थी कि वास्तव में घटा था या उसने केवल सपना देखा था। अपनी आखें खोलने की ताकत भी अब उसमे शेष नही थी।

"सिस्टर।" भिक्षुणी ने उससे कहा, "अब आपको सोना नहीं चाहिए। उल्फ आपके लिए पादरी को बुलाने गया है।"

एक झुरझुरी लेकर क्रिस्तिन फिर से पूरी तरह जाग गयी। अब वह निश्चित थी कि सोने की अगूठी जा चुकी थी और उसकी बीचवाली उगली पर अंगूठी पहनने की जगह पर सफेद निशान बन गया था।

उसके दिमाग मे एक और अंतिम स्पष्ट विचार था कि इस निशान के मिटने से पहले उसे मर जाना चाहिए। यह विचार आने से वह खुश थी। उसे लगा कि यह उसके लिए एक ऐसा रहस्य है, जिसकी वह थाह नही ले पायी है, पर वह यह निश्चित रूप से जानती थी कि ईश्वर उसके ऊपर प्रेम की वर्षा करता हुआ, उसकी जानकारी के बिना ही अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए उसकी स्वेच्छा के विरुद्ध, वस्तुओं के प्रति उसके मोह के विरुद्ध उसे जल्दी ही बुला रहा है। वह ईश्वर की दासी तो रही है, पर जिद्दी और निरंकुश, जिसके दिल मे कोई आस्था नही थी, काहिल और बेपरवाह, अपने काम मे मन न लगाये रखने वाली। फिर भी, ईश्वर ने उसे अपनी सेवा से कभी मुक्त न किया और चमकदार सोने की अंगूठी के नीचे अपना पवित्र निशान बनाये रखा। यही

निशान तो जाहिर करता है कि वह ईश्वर की, सारी दुनिया के स्वामी की दासी रही है और वही ईश्वर अब पादरी के अभिषिक्त हाथों के रूप में आ रहा है ताकि उसे मुक्ति और मोक्ष दे सके।

पादरी सिरा ईलिव के हाथो से तेल तथा दिव्य पाथेय लेने के थोड़ी ही देर बाद क्रिस्तिन लेवरँसदात्तेर फिर बेहोश हो गयी।

खून की उल्टियों के दौरों और तेज बुखार ने उसे बेसुध कर दिया था। उसके पास खड़े पादरी ने भिक्षुणियो को बताया कि वह जल्दी ही कूच करने वाली है।

उस मरणासन्न औरत को एक-दो बार हल्का-सा होश आया और उसने एक-दो चेहरो की ओर देखा। उसने सिरा ईलिव को पहचाना, फिर उल्फ को भी पहचान लिया। उसने यह जाहिर करने की कोशिश की कि वह उल्फ को पहचान रही है और उसके पास आने तथा उसके प्रति शुभकामनाएं प्रकट करने के लिए वह उनकी आभारी है, पर जो लोग आसपास खडे थे, उन्हें लग रहा था, जैसे मृत्यु की वेदना में वह अपने हाथ छटपटा रही है।

एक बार उसे अधखुले दरवाजे में से झाकता अपने छोटे बेटे मुनन का चेहरा दिखाई दिया। फिर उसने अपना चेहरा पीछे कर लिया और मा खाली दरवाजे को घूरती रह गयी। इस आशा से कि लडका फिर से वहा दिखेगा। पर उसके बदले एक भिक्षुणी कमरे मे आयी और एक गीले कपडे से उसका चेहरा पोंछने लगी। यह भी उसे अच्छा लगा। फिर सब चीजें काले-लाल कोहरे में खो गयी और एक गुर्राहट पहले बडे डरावने ढग से शुरू हुई और मन्द पडती चली गयी। लाल कोहरा भी हल्का होता चला गया और अन्त मे वह सूर्योदय से पहले के झीने कोहरे मे बदल गया। सारी आवाजें बन्द हो गयी और वह जान गयी कि वह मर रही है।

सिरा ईलिव और उल्फ हाल्दरसन उस मौत वाले कमरे से साथ-साथ बाहर निकल आये। थोड़ी देर के लिए वे मठ के अहाते मे रुके।

बर्फ पड़ गयी थी। जिस समय वह औरत मौत के साथ जूझ रही थी, उसके आसपास खडे लोगों को पता ही नही चला कि बर्फ कब पड़ी। चर्च की ढलवां छत से आने वाली सफेद चमक से चौंधियाते दो लोग। हल्के भूरे रंग के आकाश के बीच मे चर्च का बुर्ज सफेद चमक रहा था। खिड़कियों के छज्जों पर बर्फ महीन और एकसार पड़ी थी। लगता था जैसे वे दोनो लोग इसलिए रुक गये कि वे नयी पड़ी हुई बर्फ के आवरण को अपने पाव के निशानो से तोडना नही चाहते थे।

उन्होंने हवा में गहरी सांसें लीं। किसी भी बीमार के कमरे में भरी रहने वाली बदबूदार हवा की अपेक्षा यह ठण्डी और मीठी थी।

बुर्ज का घंटा फिर से बजने लगा था। दोनों ने ऊपर की ओर देखा। हिलते हुए घंटे पर से बर्फ के कतरे नीचे गिरते हुए छोटी-छोटी गेंदों में तब्दील हो रहे थे और गोल चक्कर काटते हुए नीचे आ रहे थे।

तुम मुझे पसंद हो

सिक्लेयर लेविस

जन्म : 7 फरवरी, 1885; मृत्यु : 10 जनवरी, 1951.

युनाइटेड स्टेट्स आफ अमेरिका के लेखक सिक्लेयर लेविस को साहित्य का नोबल पुरस्कार सन् 1930 में मिला। कुछ समय तक पत्रकार रहने के अलावा इन्होंने देशाटन भी खूब किया और अनेक पत्रिकाओं मे इनके लेख भी प्रकाशित हुए। परन्तु इनकी ख्याति एक उपन्यासकार के रूप मे ही हुई। अपने उपन्यासो मे शक्ति शाली तथा सजीव चित्रण करने के अतिरिक्त नए प्रकार के पात्रों को व्यंग्य तथा हास्य-रस के साथ रचने के लिए ये प्रसिद्ध रहे है।

पुरस्कृत कृति : बैनिट

इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं : अवर मिस्टर रेन्; दि ट्रेन आफ ए हाक्; दि इन्नोसेंट्स; दि जाब; फ्री एयर; मेन स्ट्रीट; ऐरोस्मिथ; मैन ट्रैप, डाड्सवर्थ आदि।

मडेलिन के साथ जेनिथ तक की यात्रा मे लगभग आधा घण्टा लगा, पर मार्टिन को इतना समय किसी तूफानी बादल के समान भयावह और बोझिल जान पडा। उसे आने वाले एक-एक क्षण से अलग-अलग नही जूझना था बल्कि तीस मिनट लम्बा समय एक साथ उसके सामने खडा था। दो मिनट बाद कहने वाली बात जब वह मन ही मन याद कर रहा होता तो दो मिनट पहले कही हुई अपनी भोडी बात उसके कानो मे सुनाई दे जाती। वह पूरी कोशिश कर रहा था कि मैडेलिन का ध्यान अपने इस 'घनिष्ठ मित्र' पर से हटाये रख सके जिससे वे मिलने जा रहे थे।

"कौन है यह आदमी जिससे हम मिलने जा रहे है? तुम उसके बारे मे छिपा क्यो रहे हो? मार्टिन, सच बताना, तुम कही मुझसे मजाक तो नही कर रहे?"

"खैर, मैं तुम्हें बता ही दू, वह मर्द नही, औरत है।"

"ओह!"

"तुम जानती ही हो अपने काम से मुझे अक्सर अस्पतालो मे जाना पडता है, और जेनिथ के सार्वजनिक अस्पताल की कुछ नर्सों ने मेरी बहुत मदद की···" इतना कहते-कहते वह हाफने लगा, "खास तौर से, वहा एक नर्स है, जो विलक्षण है, वह रोगी-परिचर्या के सम्बन्ध मे बहुत कुछ जानती है। मुझ को उसने इतनी कुछ काम की बातें सिखाई हैं कि मैं बता नही सकता। वह एक नेक लड़की है···मिस टोजर, उसका पहला नाम शायद 'लो' या कुछ ऐसा ही है। उसके पिता उत्तरी डकोटा के एक बडे आदमी हैं, काफी धनी हैं। मेरा खयाल है कि इस लडकी ने समाज सेवा की भावना मे प्रेरित होकर ही नर्सिंग का पेशा अपनाया होगा। मैंने सोचा तुम दोनो एक-दूसरे से परिचित होना पसन्द करोगी।"

"हां···आ।" मैडेलिन की निगाहें बहुत दूर किसी चीज पर टिक गयी थी। अरुचि की रेखाए उसके चेहरे पर फैल गयी थी, "बेशक, मैं उससे मिलकर बहुत खुश होऊगी। तुम्हारी कोई मित्र है वह···पर मार्ट, कही तुम उसके साथ इश्क तो नही लडा रहे हो? इन नर्सों के साथ ज्यादा मेलजोल बढाना अच्छा नही है। मैं इनके बारे में कुछ भी नही जानती, लेकिन मैंने सुना है कि इनमे से कुछ नर्सें एक के बाद दूसरे मर्द की तलाश करती रहती है।"

"हो सकता है, लेकिन मैं तुम्हें अभी बता दू कि ल्योरा ऐसी नही है।"

"मैं भी ऐसा ही सोचती हूं, लेकिन···मार्टिकिस, कही ऐसा न हो कि ये

वस तुममे केवल अपना दिल बहलाती रहें। मैं तुम्हारे भले के लिए ही कहती हूं, उनके पास दिल बहलाने के ऐसे कई साधन होंगे। तुम समझते हो कि तुम्हें औरतो के मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञान है, लेकिन मार्ट, सच कहती हूं, कोई भी तेज औरत तुम्हें अपनी उंगली पर नचा सकती है।"

"खैर, मेरा खयाल है, मैं अपनी हिफाजत खुद कर सकता हूं।"

"ओह, मेरा मतलब है'''मेरा मतलब यह नही है'' लेकिन मुझे उम्मीद है कि मै इस टोजर नाम की लडकी को पसन्द कर सकूगी, क्योंकि तुमको वह पसन्द है, लेकिन यह मत भूल जाना कि मैं ही तुम्हारी सच्ची प्रियतमा हूं। मैंने सदा तुम्हें अपने अन्तरमन से प्यार किया है।"

यह सच है कि उसने किया था। इसलिए जब उसने मार्टिन के हाथ को अपने हाथो में थाम लिया, तो उसने आसपास बैठे मुसाफिरो की निगाहो की अपेक्षा कर दी। ल्योरा के विषय मे उसने जो कुछ कहा था उससे मार्टिन को गुस्सा तो आया था, पर अब वह इतनी हारी-सी लग रही थी कि उसका क्रोध हवा हो गया।

ग्राड 1907 मे जेनिस का सर्वोत्तम होटल था। अब तो विशाल होटल पार्नेली की शान-शौकत के आगे इसका रंग फीका पड गया है। अब मोजेक के काम वाले इसके फर्श गंदे पडे रहते हैं। रंग-रोगन और मुलम्मों पर खरोचें पड़ गई हैं और वे बदरंग हो गए हैं। चमडे की भारी-भारी कुर्सियो की सीवनें उधड़ गयी है। उनमें सिगरेट की राख झडी रहती है और घोडा बेचने वाले उनका उपयोग करते है। लेकिन अपने दिनो मे यह शिकागो और पिटसबर्ग के बीच एक-मात्र ऐसी शरणगाह थी जिस पर सबको गर्व था। यह होटल वस्तुत: पश्चिमी स्थापत्य कला का एक नमूना है। इसके प्रवेश-मार्ग पर मूरिश शैली के बीच के लगभग मेहराब बने हुए है।

मार्टिन ने देखा कि ल्योरा उस दिन बहुत ही बेढंगे कपडे पहनकर आयी थी। उसने अपने बालों को अनाडी की तरह अपने हैट के भीतर खींच रखा था। हैट भी क्या था, हैटनुमा चटाई की टोपी थी। लेकिन मार्टिन को उसके हैट और बालो की उतनी परवाह न थी। उसे तो जो चीजें अखरीं वे थी उसकी शर्टवेस्ट जिसका तीसरा बटन ही गायब था। मार्टिन मन ही मन उसके इस पहनावे से खीझ गया था, क्योंकि मैडेलिन के नीले सर्ज की चमकदार पोशाक के आगे यह उसकी पोशाक बहुत साधारण और भद्दी लग रही थी। ल्योरा को अधिक अच्छी तरह वस्त्राभूषण से सज-धजकर आना चाहिए था। यह बात उसके मन मे केवल इसलिए उठी क्योंकि वह ल्योरा को मैडेलिन की अपेक्षा तनिक भी घटा-कर नही देखना चाहता था। उसका स्नेह ल्योरा को अपने आचल में समेटकर, अपने सरक्षण मे लेने के लिए आतुर हो उठा।

यह सोचने के साथ-साथ वह मन ही मन कह रहा था, "मैंने सोचा, तुम दोनों लडकियों को एक-दूसरे से परिचित हो ही जाना चाहिए। मिस फाक्स, मैं मिस टोजर से तुम्हारा परिचय कराना चाहता हू···"

ल्योरा और मैंडेलिन ने एक-दूसरे से कोई विशेष बात नही की। मार्टिन उनको मार्ग दिखाता ग्राड के प्रसिद्ध भोजन-कक्ष मे ले गया। उसमें मखमली कुर्सियां और चांदी के भारी बर्तन रखे थे। हरे तथा सुनहले रंग के वास्केट पहने हुए प्रौढ़ नीग्रो बैरे इधर से उधर दौड-भाग रहे थे।

"कितना शानदार कमरा है!" ल्योरा ने चहकते हुए कहा। मैंडेलिन ने ऐसे देखा, मानो वह भी इसी बात को अधिक लम्बे शब्दो में कहने का इरादा रखती हो, लेकिन उसने भित्तिचित्रो पर एक बार फिर अपनी दृष्टि डाली और कहा, "हा, लेकिन यह बहुत बडा है···"

वह बैरे को खाने की चीजो का आर्डर दुराते हुए जी के साथ दे रहा था। उसने इस ऐय्याशी के लिए किसी तरह चार डालर का इंतजाम किया था। और इसी मे बैरे को 'टिप' भी देनी थी। अच्छे भोजन का उसका स्टैंडर्ड यही था कि उसे चार के चार डालर इस मद मे खर्च कर देने हैं। मीनू कार्ड को देखता हुआ वह सोच नही पा रहा था कि क्या मंगवाये, जबकि घिनौना-सा बैरा उसके कंधो के पीछे ऑर्डर की प्रतीक्षा मे खडा था। तभी मैंडेलिन बोल पड़ी। वह अति औपचारिक नम्रता के साथ बोली, "मिस्टर एरोस्मिथ ने मुझे बताया है कि आप नर्स हैं, मिस टोजर।"

"हा, नर्स का ही काम कर रही हू।"

"क्या आपको नर्सिंग का पेशा दिलचस्प लगता है?"

"हाँ, यह दिलचस्प तो है।"

"मेरा खयाल है कि दूसरो को कष्ट मे राहत पहुंचाना एक अच्छा काम है। जहा तक मेरे काम का सवाल है, मैं अंग्रेजी साहित्य मे डाक्टर आफ फिलासफी की डिग्री के लिए शोधकार्य कर रही हू···" उसने इसको कुछ ऐसे लहजे में कहा मानो वह पी-एच० डी० नही लेने जा रही, किसी अर्ल का पद प्राप्त करने जा रही है। "बहुत रूखा और निष्पक्ष भाव से किया जाने वाला काम है। मुझे अंग्रेजी भाषा के उद्‌भव और विकास का सांगोपांग अध्ययन करना है और कुछ इसी तरह के अन्य काम करने हैं। आप तो प्रायोगिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं, इसलिए आपको यह काम बेतुका-सा लगेगा।"

"हां, हो सकता है ऐसा—नही, यह जरूर बहुत ही दिलचस्प होगा।"

"क्या आप जेनिथ की रहने वाली हैं, मिस···टोजर?"

"नही, मैं एक छोटे-से कस्बे···उसे मुश्किल से ही कस्बा कहा जा सकता है—उत्तरी डकोटा की रहने वाली हूं।"

"ओह्...उत्तरी डकोटा !"

"हां...पश्चिम की ओर।"

"अच्छा, अच्छा...आप क्या इधर पूरब में कुछ समय तक रुकेंगी ?" ठीक यही बात मैडेलिन के एक चचेरे भाई ने उससे कही थी और मैडेलिन को उसकी यह बात पसंद नही आयी थी।

"जी नही...हा, लेकिन कुछ समय तक तो मै यहा हू ही।"

"आप...आपको क्या यह जगह अच्छी नही लगी ?"

"क्यों नही, यह काफी खूबसूरत है, बडे शहरों मे तो देखने के लिए ज्यादा कुछ नही होता।"

"बडा ? खैर, यह तो अपने-अपने दृष्टिकोण पर निर्भर है, मैं तो न्यूयार्क जैसे शहर को बडा कहती हू, लेकिन आपके उत्तरी डकोटा के मुकाबले तो यह बडा ही है। अपने कस्बे से बडा और आकर्षक होने के कारण ही शायद यह आपको अच्छा लगता है।"

"जी हां, इससे उसकी तुलना ही क्या !"

"बताइए तो सही, आपका उत्तरी डकोटा है कैसा ? इन पश्चिमी राज्यो के बारे मे मेरे मन मे सदा से कुतूहल रहा है।" मैडेलिन ने यह दूसरी बार अपने चचेरे भाई की नकल की थी, इसको देखकर आप क्या सोचती हैं ?

"आपका आशय मैं ठीक से समझी नही।"

"मेरा मतलब है कि इस नगर को देखकर आपको कैसा लगा ?"

"यहा पर गेहूं और स्वीडिश शलजम काफी पैदा होता है।"

"लेकिन मेरा मतलब है...मेरा अनुमान है आप पश्चिमी लोग हम पूर्वी लोगों की तुलना में बहुत ही शक्तिशाली और स्फूर्तिमय होते है।"

"मैं नही कह सकती...हा, सभव है, ऐसा होता हो ?"

"जेनिथ मे तो आप काफी लोगों को जानती होगी।"

"नही, मेरा परिचय बहुत कम लोगों से है।"

"क्या आप डा० बिचहाल से मिल चुकी हैं ? वे आपके अस्पताल में आपरेशन करते हैं, बहुत नेक आदमी है। सर्जन तो उतने अच्छे नही हैं किन्तु हैं बड़े प्रतिभाशाली। गायक तो वे गजब के है, उनका खानदान भी बहुत इज्जतदार माना जाता है।"

"नही, उनसे मिलने का सुअवसर अभी तक मुझे नही मिल पाया है।" ल्योरा ने मिमियाती-सी आवाज में कहा।

"आप उनसे जरूर मिलिए, वे टेनिस के बहुत शानदार खिलाडी हैं, लखपतियो की ओर से दी जाने वाली दावतों मे उनको बराबर निमन्त्रित किया जाता है। वे बहुत फुर्तीले और चुस्त-दुरुस्त आदमी है।"

मार्टिन ने अब पहली बार टोका, "क्या कहा, चुस्त-दुरुस्त ? और वह ? उस आदमी के पास तो दिमाग नाम की कोई चीज है ही नहीं।"

"मैंने 'चुस्त' उस अर्थ में नहीं कहा जिस अर्थ में तुमने समझा।" यह कहकर मैडेलिन फिर ल्योरा की ओर उन्मुख हो गयी और मार्टिन अकेला पड़ गया। मैडेलिन ने पहले से भी अधिक उत्सुकता और उल्लास के साथ ल्योरा से पूछा कि क्या वह कारपोरेशन के वकील के लड़के को, अमुक हैट की दूकान को और अमुक क्लब को जानती है ? काउक्मसे, वान ऐंटिप और डाइसवर्थ जैसे लोगों के विषय में जो जेनिथ के सामाजिक नेता माने जाते थे और 'एडवोकेट टाइम्स' के सामाजिक कालमों में जिनके नाम प्रायः नित्य ही चर्चित होते थे। मैडेलिन ऐसे बात कर रही थी, जैसे वह उन्हें काफी नजदीक से जानती हो। बड़े लोगों से उसकी इस घनिष्ठता का परिचय पाकर मार्टिन भी आश्चर्यचकित था। निश्चय ही ल्योरा ने इन बड़े-बड़े लोगों का नाम तक नहीं सुन रखा था, न उसने कभी ऐसी संगीत-गोष्ठियां, ऐसे भाषणों और ऐसी कवि-गोष्ठियों में भाग ही लिया था, जिनमें मैडेलिन की सारी शानदार शामें बीतती थीं।

कुछ क्षण सोचने के बाद मैडेलिन फिर बोली, "खैर, यह बताइए, अस्पताल में आकर्षक और मोहक डाक्टरों तथा दूसरे लोगों से मिलने-जुलने के बाद आप लोगों को लेक्चर तो फीके लगते होंगे !" इसके बाद उसने ल्योरा से बात करना छोड़कर प्रोत्साहन देने की भंगिमा के साथ मार्टिन को देखा और कहा, "तुम क्या बना रहे थे—खरगोशों पर कोई और प्रयोग करने की योजना बना रहे हो ?"

मार्टिन गंभीर था, यही मौका था जब वह अपनी बात कह सकता था, "मैडेलिन ! तुम दोनों को मैंने इसलिए मिलाया, क्योंकि, मैं—मैं अपने को दोषमुक्त सिद्ध करने के लिए कोई बहाना नहीं बनाना चाहता। मैं ऐसा किये बिना रह न सका। मैं तुम दोनों से प्रेम करता हूं। और मैं जानना चाहता हूं···"

मैडेलिन सहसा उठ खड़ी हुई। इतनी गर्वीली और इतनी सुन्दर वह कभी नहीं दिखाई दी थी। उसने उन दोनों की ओर स्थिर दृष्टि से कुछ क्षणों तक देखा, और फिर बिना एक शब्द बोले, पीठ फेरकर वहां से चल दी। फिर तुरंत ही लौट आयी, ल्योरा के कंधे को उसने छुआ और चुपचाप ल्योरा को चूम लिया। "मुझे तुम्हारे लिए दुख है, अब तुम्हें एक काम मिल गया है ! मेरी प्यारी बच्ची !" इतना कहकर वह चल दी। जाते समय उसके कंधे गर्व से सीधे थे।

शंकित, भयभीत मार्टिन सकते में आ गया। वह आंख उठाकर ल्योरा की ओर देख न सका।

उसने अपने हाथ पर ल्योरा के हाथ का स्पर्श अनुभव किया। उसने आंखें

ऊपर उठायीं, वह मुस्करा रही थी। उसकी आंखें प्रसन्न थी और उसका उपहास-सा कर रही थी।

"सैंडी, मैं तुम्हें चेतावनी देती हूं कि मैं तुम्हें त्याग नही रही हूं। मैं मान लेती हूं कि तुम उतने ही बुरे हो जितना वह कहती है। मैं यह भी मानती हूं कि मैं मूर्ख और उद्धत हूं, लेकिन तुम मेरे हो! मै तुम्हें बता देना चाहती हूं कि अगर तुम अब किसी ओर से फंसे, तो तुम्हारे हक में ठीक न होगा। मै उस चुडैल की आखें बाहर निकाल लूगी। समझे? अब तुम अपने बारे में भी मुगालते में मत रहो, मै जहां तक समझ पायी हूं तुम्हें, तुम काफी स्वार्थी हो, लेकिन मुझे इसकी परवाह नही, तुम मेरे हो, केवल मेरे!"

मार्टिन ने अस्फुट स्वर में कई बातें कही जो उस अवसर पर कही जा सकती थी।

कुछ सोचकर ल्योरा ने कहा, "मैं जरूर यह महसूस करती हूं कि तुम और वह जितने निकट थे, मैं और तुम उससे अधिक निकट हैं, शायद तुम इसलिए मुझे ज्यादा पसद करते हो, क्योंकि तुम डरा-धमकाकर मुझसे काम करा सकते हो। मुझ पर तुम्हारी धौंस चल सकती है—क्योंकि मैं तुम्हारी पिछलग्गू बन सकती हूं और वह कभी नही बन सकती थी। मैं यह भी जानती हूं कि तुम्हारे कार्य तुम्हारी दृष्टि में मुझसे भी अधिक महत्त्व रखता है, संभव है, तुम्हारा काम खुद तुमसे भी ज्यादा महत्त्व रखता हो। लेकिन मैं गवार हूं, सीधी-सादी हूं, और वह ऐसी नहीं है। मैं तुम्हारी अनन्य प्रशंसिका हू क्यों, यह तो ईश्वर जाने, पर मैं तुम्हारी प्रशसा करती हू। जबकि उसमे इतनी समझदारी है कि वह तुमसे अपनी प्रशसा कराने और तुम्हें अपना पिछलग्गू बनाने की सोच सके।"

"नही। मै सौगंध खाकर कहता हूं ल्योरा। मै तुम्हें इसलिए पसद नहीं करता कि तुम पर अपनी धौस जमा सकता हू और उस पर नही—मैं सौगंध खाता हूं, यह बात नही है, बिलकुल नही। और तुम अभी यह मत सोचना कि वह तुमसे अधिक चतुर और समझदार है, वह कैंची की तरह जबान जरूर चलाना जानती है लेकिन—ओह, उसका जिक्र अब बंद करो। तुम मुझे मिल गयी हो। मेरा नया जीवन आज से शुरू हुआ।"

वह असफलताओं से खेलता रहा

जान गाल्सवर्दी

जन्म : 14 अगस्त, 1867 मृत्यु : 31 जनवरी, 1933

इगलैण्ड के जान गाल्सवर्दी को नोबेल पुरस्कार सन् 1932 में मिला। ये थे तो विक्टोरिया के समय के, और इसलिए इन्हें विक्टोरियन भी कहा जा सकता है, परन्तु इन्होंने विक्टोरियन आदर्शों का ही अपनी रचनाओं में मजाक उड़ाया था। ये स्वयं धनी थे परन्तु इन्होंने बड़ी सुन्दरता से धनी व्यक्तियों तथा श्रेणियों के ऊपर धन का कुप्रभाव चित्रित किया है। इन्होंने सतरह उपन्यास, छब्बीस नाटक, कहानियां (12 भागों में प्रकाशित), लेख तथा कुछ कविताएं लिखी हैं। लेकिन इनकी ख्याति मुख्यत. इनके उपन्यासों पर आधारित है किन्तु अपने समय में इनके नाटकों ने भी कुछ कम यश नहीं कमाया था। बल्कि इनके नाटकों का प्रभाव वहां के समाज पर ज्यादा ही पड़ा था।

पुरस्कृत कृति . दि फारसाइट सागा।

इनकी अन्य प्रमुख रचनाएं हैं दि आइलैण्ड फैरिसीज; दि मैन आफ प्रापर्टी; दि डार्क फ्लोअर; दन चान्सरी, टु लेट, स्वायल्टीज; दि ह्वाइट मंकी; दि सिल्वर बाक्स आदि।

अनुवाद मुरजीत

ऋतु गर्म हो या ठण्डी, अच्छी हो या बुरी, इससे अधिक निश्चित बात और कोई न थी कि वह लगड़ा आदमी शहतूत की टेढ़ी-मेढी छडी के सहारे चलता हुआ यहा से अवश्य गुजरेगा। उसके कधे पर लटकती हुई खपच्चियों की बनी हुई टोकरी मे एक फटी-पुरानी बोरी से ढके हुए ग्रोडसोल के बीज पडे हुए थे। ग्रोडसील घास की तरह एक छोटा-सा पौधा है, जिसमे पीले रग के फूल लगते हैं। पालतू पक्षी इसके बीज शौक से खाते है। खुबियो के मौसम मे वह खुबिया भी अखबार मे लपेटकर टोकरी के अन्दर रख लेता था। उसका चेहरा सपाट, मजबूत था। उसकी लाल दाढ़ी की रगत भूरी होती जा रही थी और झुर्रियों भरे चेहरे से उदासी टपकती थी, क्योकि उसकी टाग मे हर समय टीसे उठती थी। एक दुर्घटना मे उसकी यह टाग कट गयी थी। और अब सही-सलामत टाग से कोई दो इंच छोटी थी। टाग की पीडा और काम मे असमर्थता उसे हर समय इनसान के नश्वर होने का अहसास दिलाती थी। शक्ल से वह सम्पन्न न सही, सम्मानित अवश्य दिखाई देता था। क्योकि उसका नीला ओवरकोट बहुत पुराना था। जुराबें, सदरी, और टोपी निरन्तर उपयोग से घिस-पिट गयी थी और बदलती हुई ऋतुओ ने उन पर स्पष्ट निशान छोड़े थे। दुर्घटना से पूर्व वह गहरे पानी मे मछलिया पकड़ा करता, लेकिन अब वेस-वाटर के कस्बे मे एक स्थान पर फुटपाथ के किनारे सुबह दस बजे से शाम सात बजे तक पालतू पक्षियो का खाजा बेचकर जीवन के बुरे-भले दिन काट रहा था। राह चलती हुई सम्मानित महिलाओ मे से किसी के मन में अपने पालतू पक्षी की सेवा का खयाल आता तो वह उससे एकाध पिनी के बीज खरीद लेती।

जैसाकि वह बताता था, कई बार उसे बीज प्राप्त करने मे बहुत कठिनाई होती थी। वह सुबह पाच बजे बिस्तर से उठता। भाग-दौड़ मे लन्दन से देहात की ओर जाने वाली गाड़ी पकड़ता और उन खुले मैदानो में पहुच जाता जहा केनरी और अन्य पालतू पक्षियो की खूराक मिलने की सम्भावना होती थी। वह बड़ी कठिनाइयो से अपनी असमर्थ टागें धरती पर घसीटता था। प्रकृति का अत्याचार देखिए कि धरती जिस पर वह घास के बीज ढूढ़ता था, बहुत कम शुष्क होती थी। प्राय. उसे सिर झुकाकर कीचड और कुहरे में पीली छतरियों वाले छोटे-छोटे पौधे इकट्ठे करने होते। वह स्वय कहा करता कि कम पौधो के बीज सही-सलामत मिलते थे। अधिकाश हिमपात के कारण नष्ट हो जाते थे। बहरहाल, जो भाग्य मे होता, मिल जाता। वह उसे लेकर गाड़ी के द्वारा लन्दन वापस आता और फिर दिन भर के अभियान पर निकल खडा होता। सुबह से शाम तक परिश्रम के बाद रात के नौ-दस बजे तक वह लड़खड़ाता घर की ओर

चल देना। ऐसे अवसरों पर विशेषत अनुपयुक्त परिस्थितियों में, उसकी आंखें जो अभीतक समुद्र की अज्ञात विशालताएं देखने की विशेषता से वंचित न हुई थीं आत्मा की गहराइयों में छुपे हुए स्थायीदुख का पता देती। उसकी यह स्थिति उस पक्षी से मिलती-जुलती थी जो पख कटने के बावजूद बार-बार उड़ने का प्रयत्न कर रहा हो।

कभी-कभार जब ग्रोंडसील के बीज न मिलते, असमर्थ टांग में शिद्दत की पीड़ा उठती, या कोई ग्राहक नजर न आता तो बरबस उसके मुख से निकलता, "कितना कठिन है यह जीवन।"

टांग की पीड़ा तो उसे सदा रहती थी, फिर भी वह अपने दुख, ग्रोंडसील बीज की कमी या ग्राहकों की लापरवाही की शिकायत बहुत कम करता था। इसलिए कि वह जानता था, उसकी शिकायत पर कान धरने वाले बहुत कम होंगे। वह फुटपाथ पर चुपचाप बैठा या खड़ा रहकर गुजरने वालों को देखता रहता था। बिल्कुल उसी प्रकार जैसे कभी वह उन लहरों को देखा करता था जो उसकी नाव से आकर टकराती थीं। उसकी कभी न रुकने वाली तहदार नीली आंखों से असाधारण धैर्य व सहनशीलता की भावनाएं प्रकट होती थीं। अवचेतन रूप में ये भावनाएं एक ऐसे व्यक्ति के धर्म को प्रकट करती थीं जो हर बड़ी से बड़ी कठिनाई में कहता हो, "मैं आखिरी दम तक लड़ूंगा।"

यह बताना बहुत कठिन है कि दिन-भर फुटपाथ पर खड़े-खड़े वह क्या सोचता था। मगर उसकी सोच पुराने युग से सम्बन्धित हो सकती थी। हो सकता है, वह गडोन के रेतीले किनारों के बारे में विचार करता हो या ग्रोंडसील की कलियों के बारे में चिन्तातुर हो जो अच्छी तरह खिलती न थीं। कभी टांग उसकी चिन्ता का विषय बन जाती, तो कभी वह कुत्ते जो उसकी टोकरी देखते ही सूंघते हुए आगे बढ़ते और बहुत बदतमीजी का प्रदर्शन करते थे। संभवतः उसे अपनी पत्नी की चिन्ता भी थी जो गठिये के पीड़ाजनक रोग से ग्रस्त थी। कभी वह भी मछेरा था। इसलिए अभी तक चाय के साथ हेरिंग मछली खाने की इच्छा होती थी। संभव है, वह यही सोचता हो कि मछली कैसे प्राप्त करें! या मकान का किराया भी देना था, इसकी चिन्ता भी उसे पागल करती होगी। या ग्राहकों की संख्या भी तो दिन ब दिन कम होती जा रही थी और एक बार फिर टांग की पीड़ा की तीव्रता का अहसास! उफ्!

राह चलने वालों में से किसी के पास इतना समय न था कि एक क्षण रुककर उसकी ओर देखें। कभी-कभार कोई महिला अपने चहेते मियां मिट्ठू के लिए एकाध पैनी के बीज खरीदती और लपक-झपक आगे बढ़ जाती। सच बात तो यह है कि लोग उसकी ओर देखने भी क्यों! उसमें कोई खास बात तो थी नहीं। बेचारा सीधा-सादा भूरी दाढ़ीवाला आदमी था। जिसके चेहरे की झुर्रियां बहुत गहरी और स्पष्ट थीं और जिसकी एक टांग में नुक्स था। उसके बीज भी

इतने खराब होते थे कि लोग अपने पक्षियो को खिलाना पसन्द न करते और साफ कह देते कि आजकल तुम्हारे ग्रोडसील बीज अच्छे नही होते और फिर साथ ही क्षमापूर्वक कहते "ऋतु भी खराब हैं।"

ऐसे अवसरो पर वह कुछ इस प्रकार उत्तर दिया करता था "जी—जी हा मादाम ! मौसम बड़ा खराब है। आप शायद नही जानती। यहा इस जगह मेरी टाग की पीड़ा बढ गयी है।"

उसकी यह बात शत-प्रतिशत सच थी, लेकिन लोग उस पर अधिक ध्यान न देते और अपने काम से आगे बढ़ जाते। शायद वे समझते हो कि लगड़े का हर बात मे अपनी टाग का जिक्र करना शोभा नही देता। प्रकटत. यही नजर आता था कि वह अपनी जख्मी टांग का हवाला देकर दूसरो की हमदर्दी प्राप्त करना चाहता है, पर असल बात यह है कि उस व्यक्ति मे वह शर्म-लिहाज और शराफत मौजूद थी जो गहरे पानी के मछेरो की विशेषता है किन्तु टाग का जख्म इतना पुराना हो चुका है कि हर समय उसकी चिन्ता लगी रहती थी। यह दु.ख और पीड़ाएं उसके जीवन का अभिन्न अंग बन गयी थी और वह चाहता तो भी उसके जिक्र से बाज नही आता। कई बार जब मौसम अच्छा होता और उसके ग्रोडसील खूब फलदार होते तो उसे ग्राहको की ओर से ऐसे सांत्वनाओ की जरूरत न पड़ती थी। ग्राहक भी खुश हो उसे आधी पिनी के बजाय एक पिनी दे डालते। हो सकता है इस 'टिप' के कारण उसे अवचेतन रूप मे अपनी टाग का जिक्र करने की आदत हो गयी थी।

वह कभी छुट्टी न करता था, पर कभी-कभार अपनी जगह से गायब हो जाता। ऐसा उस समय होता था जब उसकी टाग की पीडा बहुत बढ जाती। वह इस स्थिति को कुछ इस प्रकार बयान करता, "आज तो तकलीफो का पहाड़ आ पडा है।"

बीमार पड़ता तो उसके जिम्मे खर्च बढ जाते। फिर जो काम पर लौटता तो पहले से अधिक परिश्रम करता। अच्छे बीजों की खोज मे दूर-दूर निकल जाता और रात गये तक फुटपाथ पर खड़ा रहता ताकि बिक्री अधिक हो और छुट्टियो की क्षतिपूर्ति हो सके।

उसके लिए खुशी का अवसर केवल एक था, और वह था क्रिसमस का त्यौहार। कारण यह था कि क्रिसमस पर लोग अपने पालतू पक्षियो पर कुछ अधिक ही कृपालु हो जाते थे और उसकी खूब बिक्री होती थी। बड़े दिन का कोई विशेष ग्राहक उसे छह पेंस की रकम भी दे डालता। फिर भी वह बात अधिक सुखद न थी, क्योंकि आर्थिक परिस्थितिया अच्छी हो या बुरी, इन्ही दिनों हर साल उसे दमे का रोग दबोच लेता था। रोग के दौरे के बाद उसका चेहरा और पीला पड़ जाता और नीली आखो में अनिद्रा की धुंध दिखाई देती, यों लगता जैसे वह किसी ऐसे मछेरे का भूत हो जो समुद्र मे डूब गया हो। ऐसे समय

में प्रातःकाल के धुंधले प्रकाश में वह अधपके ग्रेंडसील के बीज टटोलता, जिन्हें पक्षी शौक से खा सकें, तो उसके पीले खुरदरे हाथ कांप-कांप जाते थे।

वह प्राय: कहा करता था, "आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि शुरू में इस मामूली-से काम के लिए अपने-आपको तैयार करने में कितनी कठिनाई पेश आयी। उन दिनों टांग का जख्म नया था और कई बार चलते हुए यों महसूस होता था जैसे मेरी टांग पीछे रह जायेगी। मैं इतना दुर्बल था कि कीचड़ में उसे घसीटना संसार का सबसे कठिन काम नजर आता। ऊपर से पत्नी की बीमारी ने परेशान कर रखा था। उसे गठिया है। देखा, आपने मेरा जीवन सिर से पांव तक दुखों से भरा है।"

यहां वह एक अविश्वसनीय अन्दाज में मुसकराता और फिर अपनी इस टांग की ओर देखते हुए, जो पीछे घिसट रही होती थी, गर्वीले ढंग से कहता, "आप देखते हैं न। अब इसमें कोई जान नहीं रही। इसका मांस तो मर चुका है।"

उसे देखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह जानना बहुत कठिन था कि आखिर इस गरीब अपंग को जीवन में क्या दिलचस्पी थी। स्थायी असहायता, दुःख और पीड़ा के स्याह पर्दों के नीचे वह थके-हारे अपने जर्जर पर हिलाता रहता था। जीवन के प्रकाश को देखना बहुत कठिन था, इस व्यक्ति का जीवन से लिपटे रहना बिल्कुल अस्वाभाविक दिखाई देता था, भविष्य में उसके लिए आशा की कोई किरण न थी और यह बात तय थी कि भविष्य उसके वर्तमान से कहीं अधिक खराब और सस्ता होगा। रही अगली दुनिया तो वह उसके बारे में बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से कहता, "मेरी पत्नी का विचार है कि दूसरी दुनिया इस दुनिया से बहरहाल बुरी नहीं हो सकती और यदि वस्तुतः इस जीवन के बाद दूसरा जीवन है तो मैं समझता हूं कि उसकी बात सही है।"

फिर भी एक बात विश्वास से कही जा सकती है कि उसके मस्तिष्क में कभी यह विचार न आया था कि वह ऐसा जीवन क्यों व्यतीत कर रहा है; क्यों कष्ट उठा रहा है। यों अनुभव होता था, जैसे अपने कष्टों के बारे में सोच-कर और अपनी सहनशीलता की इन कष्टों से तुलना करके इसे कोई आतंरिक प्रसन्नता प्राप्त होती है। यह बात सुखदायक बहुत थी। वह मानवता के भविष्य का पालक था। दर्पण था। और ऐसी आशा थी जो और कहीं दिखाई नहीं देती।

इस भरी-पूरी दुनिया में कोलाहल से आबाद सड़क के किनारे टोकरी के पास छड़ी के सहारे वह अपना निढाल किन्तु संकल्पपूर्ण चेहरा लिये इस महान और असाधारण मानवीय गुण के एक जर्जर प्रतिमा की तरह खड़ा है जिससे अधिक आशापूर्ण और उत्साहजनक भावना दुनिया में कोई नहीं। वह आशा के बिना प्रयत्न का एक जीवंत उदाहरण है। जीता-जागता प्रतिबिम्ब है।

सैनफ्रांसिस्को के महाशय

इवान बुनिन

जन्म : 22 अक्टूबर, 1870; मृत्यु : 8 नवम्बर, 1953.

रूसी कथाकार बुनिन को सन् 1933 में नोबेल पुरस्कार मिला। पूरा नाम इवान एलेक्स्येविच बुनिन। इनकी रचनाएं बहुत ही कम उम्र में छपने लगी थी परन्तु तब भी इनके शब्दों में, "मुझे ख्याति प्राप्त करने के लिए काफी इन्तजार करना पड़ा। इसके कई कारण थे। मैं राजनीति से दूर किसी विषय पर कुछ नहीं लिखता था। मैं किसी भी साहित्यिक स्कूल का नहीं था—मैं न तो अपने को पतनशील कहता था और न प्रतीकवादी, न रोमांटिक, न यथार्थवादी और न मैंने कोई नकाब लगाया न कोई झण्डा ही फहराया···।" इनकी रचनाएं संख्या में थोड़ी हैं परन्तु गुणों की दृष्टि से वे उच्चकोटि की मानी जाती हैं।

पुरस्कृत कृति : दि विलेज।

इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं: दि ड्रीम्स आफ चेंग; दि जेन्टिलमैन फ्राम सैन-फ्रान्सिस्को; दि वेल आफ डेज; मेमोरीज एण्ड पोर्ट्रेट्स आदि!

अनुवाद : महेश दर्पण

वह सैनफ्रांसिस्को के. जिस तबके का आदमी था उसके लोग ज्यादातर अपने मनबहलाव की शुरुआत यूरोप, भारत और मिस्र की यात्रा से करते थे। उसने भी यही ठीक समझा और दौरे की समूची रूप-रेखा बना डाली।

नवम्बर के अन्तिम दिनों में खराब मौसम के बावजूद जहाज समुद्र की लहरों को चीरता जिब्राल्टर की ओर बढ़ा जा रहा था। स्टीमर 'एटलांटिस' और तमाम यात्री यूरोप के बेहद खर्चीले होटल में पहुंचे। यह होटल तमाम आधुनिक साधनों से सम्पन्न था।

शाम की पोशाक पहने वह बहुत कम उम्र का लग रहा था। उसके पास ही जोहान्सबर्ग का एक आदमी अपनी पत्नी के साथ खड़ा था। उसकी पत्नी महंगी पारदर्शी पोशाक पहने हुए थी। जब-जब वह सांस लेती, लगता सुगन्ध उड़ रही है।

पूरे दो घण्टे में जाकर कहीं रात का भोजन समाप्त हुआ। साथ ही डांस-हॉल में डांस भी शुरू हो गया। वह भी लोगों के साथ रिफ्रेशमेंट बार की ओर बढ़ लिया जहां लाल जैकिट पहने बड़ी-बड़ी आंखों वाले नीग्रो उनका इन्तजार कर रहे थे। मेजों पर पैर रखे हुए होंठों में हवाना का सिगार दबाए, वे ताजा-तरीन राजनीतिक घटनाओं से लेकर स्टाक एक्सचेंज पर बहसों में खोये हुए थे।

जिब्राल्टर पहुंचकर सूरज की रोशनी देख सभी लोग बहुत खुश हुए। मौसम बसन्त के शुरुआती दिनों-सा था। यहां एक नया यात्री आया जिसने आते ही अन्य यात्रियों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। शायद वह किसी एशियन राजघराने का राजकुमार था। नाटे कद का यह आदमी उम्रदार होते हुए भी किसी युवक-सा लग रहा था।

सैनफ्रांसिस्को से आये परिवार की लड़की राजकुमार से कुछ फासले पर खड़ी थी और गौर से उसकी हरकतें देख रही थी। पिछली शाम दरअसल उसका परिचय राजकुमार से हो चुका था।

नेपल्स अब नजदीक आ रहा था। बैण्डवालों ने अपने चमचमाते पीतल के वाद्य यन्त्रों समेत डेक पर घेरा-सा बना लिया था। तभी लम्बा-चौड़ा जहाज

का कप्तान ब्रिज पर पहुंचा और अपना हाथ उठा-उठाकर यात्रियों को सम्बोधित करने लगा। सैनफ्रांसिस्को के उस आदमी को लगा कि कप्तान अकेले उसे ही सम्बोधित कर रहा है। उसने सफर के आराम से खत्म होने पर कप्तान को बधाई भी दी।

सुबह-सुबह डायनिंग रूम में नाश्ता दिया गया। डायनिंग रूम की खुली खिड़कियो से आकाश मे छाये घने बादल और उदास मौसम साफ नजर आ रहा था···पर थोड़ी देर बाद सूरज की पहली किरण के साथ समूचा मौसम बदल गया।

दोपहर को वे लोग ऊंची-ऊची इमारतो के बीच से होकर गुजरे जिनमे खिड़कियो की बहुतायत थी। वे संग्रहालयो मे गए जहां सफाई और प्रकाश-व्यवस्था देखते ही बनती थी। इसके बाद सभी चर्च गए। दोपहर का भोजन सैन मारटियम की पहाड़ी पर किया। यहा कुछ गण्य मान्य लोग ही इकट्ठे हुए। तभी सैनफ्रासिस्को के परिवार की लड़की तो खुशी के उत्साह मे करीब-करीब बेहोश ही हो गयी। असलियत यह थी कि उसने अखबार मे राजकुमार के रोम रवाना होने की खबर पढ़ ली थी।

पाच बजे होटल के रिवाज के मुताबिक वहीं चाय ली गयी···धीरे-धीरे भोजन का वक्त भी आ पहुचा।

चलने वाला दिन इस परिवार के लिए बहुत यादगार साबित हुआ। इस दिन सूरज निकला ही नही। समूचा केपरी अंधेरे मे खोया हुआ था, लगता था जैसे वह कभी इस जमीन का हिस्सा रहा ही नही। स्टीमबोट के परेशानी-तलब केबिन के सोफे पर वे पाव सिकोड़कर बैठ गए···उबकाई आने के कारण ज्यादातर लोग अपनी आखें बन्द ही किए हुए थे। परिवार की औरत इस लम्बी समुद्री यात्रा से ऊब चुकी थी।

छोटी लड़की डरी-सी लग रही थी···वह लगातार पीली पड़ती जा रही थी। अक्सर वह अपने दांतो के बीच नीबू का टुकड़ा फंसाए रहती। ओवरकोट और बड़ा-सा टोप पहने हुए उस परिवार का आदमी लड़की से पीछे लेटा हुआ था।

उसके चेहरे का रंग गहरा, मूछे सफेद और सिर का दर्द तेज होता जा रहा था। दरअसल, पिछली कुछ शामो से वह ज्यादा ही पी रहा था।

कैपरी के टापू पर शाम को काफी धुंध छायी हुई थी। सैनफ्रासिस्को से आए आदमी के स्वागत के लिए कुछ लोग खड़े थे। किसी और को इनकी पर-वाह भी नही थी।

जवान और सुन्दर नजर आने वाला होटल का मालिक मुस्कराते हुए,

वह सैनफ्रांसिस्को के, जिस तबके का आदमी था उसके लोग ज्यादातर अपने मनबहलाव की शुरुआत यूरोप, भारत और मिस्र की यात्रा से करते थे। उसने भी यही ठीक समझा और दौरे की समूची रूप-रेखा बना डाली।

नवम्बर के अन्तिम दिनो में खराब मौसम के बावजूद जहाज समुद्र की लहरों को चीरता जिबराल्टर की ओर बढ़ा जा रहा था। स्टीमर 'एटलांटिस' और तमाम यात्री यूरोप के बेहद खर्चीले होटल मे पहुचे। यह होटल तमाम आधुनिक साधनो से सम्पन्न था।

शाम की पोशाक पहने वह बहुत कम उम्र का लग रहा था। उसके पास ही जोहान्सबर्ग का एक आदमी अपनी पत्नी के साथ खडा था। उसकी पत्नी महंगी पारदर्शी पोशाक पहने हुए थी। जब-जब वह सांस लेती, लगता सुगन्ध उड़ रही है।

पूरे दो घण्टे में जाकर कही रात का भोजन समाप्त हुआ। साथ ही डास-हॉल में डास भी शुरू हो गया। वह भी लोगों के साथ रिफ्रेशमेंट बार की ओर बढ लिया जहा लाल जैकिट पहने बडी-बड़ी आंखो वाले नीग्रो उनका इन्तजार कर रहे थे। मेजों पर पैर रखे हुए होंठो मे हवाना का सिगार दबाए, वे ताजा-तरीन राजनीतिक घटनाओं से लेकर स्टाक एक्सचेंज पर बहसों में खोये हुए थे।

जिबराल्टर पहुचकर सूरज की रोशनी देख सभी लोग बहुत खुश हुए। मौसम बसन्त के शुरुआती दिनों-सा था। यहा एक नया यात्री आया जिसने आते ही अन्य यात्रियों का ध्यान अपनी ओर खीच लिया। शायद वह किसी एशियन राजघराने का राजकुमार था। नाटे कद का यह आदमी उम्रदार होते हुए भी किसी युवक-सा लग रहा था।

सैनफ्रांसिस्को से आये परिवार की लडकी राजकुमार से कुछ फासले पर खड़ी थी और गौर से उसकी हरकतें देख रही थी। पिछली शाम दरअसल उसका परिचय राजकुमार से हो चुका था।

नेपल्स अब नजदीक आ रहा था। बैण्डवालों ने अपने चमचमाते पीतल के वाद्य यन्त्रों समेत डेक पर घेरा-सा बना लिया था। तभी लम्बा-चौड़ा जहाज

का कप्तान ब्रिज पर पहुंचा और अपना हाथ उठा-उठाकर यात्रियों को सम्बोधित करने लगा। सैनफ्रांसिस्को के उस आदमी को लगा कि कप्तान अकेले उसे ही सम्बोधित कर रहा है। उसने सफर के आराम से खत्म होने पर कप्तान को बधाई भी दी।

सुबह-सुबह डायनिंग रूम में नाश्ता दिया गया। डायनिंग रूम की खुली खिड़कियों से आकाश में छाये घने बादल और उदास मौसम साफ नजर आ रहा था'''पर थोड़ी देर बाद सूरज की पहली किरण के साथ समूचा मौसम बदल गया।

दोपहर को वे लोग ऊंची-ऊंची इमारतों के बीच से होकर गुजरे जिनमें खिड़कियों की बहुतायत थी। वे संग्रहालयों में गए जहां सफाई और प्रकाश-व्यवस्था देखते ही बनती थी। इसके बाद सभी चर्च गए। दोपहर का भोजन सैन मारटियम की पहाड़ी पर किया। यहां कुछ गण्य मान्य लोग ही इकट्ठे हुए। तभी सैनफ्रांसिस्को के परिवार की लड़की तो खुशी के उत्साह में करीब-करीब बेहोश ही हो गयी। असलियत यह थी कि उसने अखबार में राजकुमार के रोम रवाना होने की खबर पढ़ ली थी।

पांच बजे होटल के रिवाज के मुताबिक वहीं चाय ली गयी'''धीरे-धीरे भोजन का वक्त भी आ पहुंचा।

चलने वाला दिन इस परिवार के लिए बहुत यादगार साबित हुआ। इस दिन सूरज निकला ही नहीं। समूचा केपरी अंधेरे में खोया हुआ था, लगता था जैसे वह कभी इस जमीन का हिस्सा रहा ही नहीं। स्टीमबोट के परेशानी-तलब केबिन के सोफे पर वे पांव सिकोड़कर बैठ गए'''उबकाई आने के कारण ज्यादातर लोग अपनी आंखें बन्द ही किए हुए थे। परिवार की औरत इस लम्बी समुद्री यात्रा से ऊब चुकी थी।

छोटी लड़की डरी-सी लग रही थी'''वह लगातार पीली पड़ती जा रही थी। अक्सर वह अपने दांतों के बीच नींबू का टुकड़ा फंसाए रहती। ओवरकोट और बड़ा-सा टोप पहने हुए उस परिवार का आदमी लड़की से पीछे लेटा हुआ था।

उसके चेहरे का रंग गहरा, मूंछें सफेद और सिर का दर्द तेज होता जा रहा था। दरअसल, पिछली कुछ शामों से वह ज्यादा ही पी रहा था।

केपरी के टापू पर शाम को काफी धुंध छायी हुई थी। सैनफ्रांसिस्को से आए आदमी के स्वागत के लिए कुछ लोग खड़े थे। किसी और को इनकी पर-वाह भी नहीं थी।

जवान और सुन्दर नजर आने वाला होटल का मालिक मुस्कराते हुए,

अतिथियों के सामने झुका-झुका ही अभिवादन कर रहा था। सैनफ्रांसिस्को के आदमी ने एक नजर उसे देखा, और सोचा, यह वही शख्स है जिसने उसे कल रात कल्पना में सोने नहीं दिया था, "एकदम वैसा ही है वह आदमी", उसने सोचा "वही फ्रॉक कोट, वही सिर···एकदम वही बाल···वह कॉरीडोर पार करता हुआ, तेजी से अपनी पत्नी और बेटी को कल्पना और यथार्थ के इस अद्भुत संयोग के बारे में बताने को चल दिया।

उसकी तबीयत ठीक नहीं थी। धीरे से···लेकिन कुछ बेहूदे ढंग से उसने खिड़की बन्द कर दी। तभी होटल का एक आदमी आ पहुंचा। उसके पूछने पर उसने दोपहर के भोजन का आदेश दिया···कि उनकी मेज दरवाजे से खासे फासले पर होनी चाहिए···वे लोकल वाइन और शेंपेन लेंगे।

सैनफ्रांसिस्को का आदमी अब तैयारियां करने लगा जैसे किसी शादी में जाना हो।

इस शाम इस आदमी ने क्या सोचा और महसूसा यह बताना बहुत जरूरी है। यह भी कहा जा सकता है कि इसमें कुछ भी अजीबोगरीब नहीं था। परेशानी तो यही है कि इस जमीन पर हर चीज, बड़ी आसानी के साथ उतर आती है···पर, क्या उसके जेहन में कोई चीज गहराई से उतरी थी?

दाढ़ी बनाने के बाद वह शीशे के सामने खड़ा हो गया। देर तक गौर से देखता रहा कि उसके मोती-से रंगवाले बालों में कुछ छूट तो नहीं गया है!

"कितना भयानक है यह!" उसके मुंह से निकला···बगैर यह सोचे-समझे कि 'भयानक' क्या होता है। उसने अपने हाथों की उंगलियों के जोड़ों को गौर से देखा। फिर नाखूनों के रंग को देखते हुए एक बार फिर बड़बड़ाया।

उसने अपने टार्च को कालर के गिर्द कसा और फिर डिनर कोट पहनते हुए कफों को सेट किया, उसने आखिरी बार फिर अपना रूप शीशे में निहारा। फिर खुशी से अपना कमरा छोड़ते हुए वह अपनी पत्नी के कमरे की ओर चल दिया। पत्नी के कमरे के पास पहुंचकर ऊंची आवाज में पूछा, "अभी ज्यादा देर लगेगी क्या?"

"पापा, सिर्फ पांच मिनट!" बेटी ने जवाब दिया।

···इसके बाद वह लाल दरी पर चलता हुआ धीरे-धीरे लाइब्रेरी की ओर बढ़ लिया। हल्के स्लेटी रंग की स्कर्ट पहने एक बूढ़ी औरत तेजी से उसके आगे से निकल गयी···उसे शायद डिनर के लिए तैयार होने में देर हो गयी थी। होटल के नौकर भी तेजी से इधर-उधर आ-जा रहे थे···वह इस तरह चलता रहा जैसे उसे इन सबकी कोई परवाह ही न हो।

शीशे के दरवाजे वाले डाइनिंग रूम मे मेहमान पहले ही इकट्ठे हो चुके थे। कुछ ने भोजन शुरू भी कर दिया था। वह इजिप्शियन सिगरेट और माचिसों वाली मेज के सामने रुका और एक महिला से सिगार लेते हुए उसने तीन लीरा मेज पर उछाल दिए। अब वह लाइब्रेरी की ओर चल दिया।

लाइब्रेरी में एक जर्मन अखबार पढने में तन्मय था। उसने जर्मन पर एक टेढ़ी नजर डाली और चमड़े की आर्मचेयर पर बैठ गया। कसी हुई कॉलर उसके गले को घोटे दे रही थी। उसने अपना सिर झटका और अखबार के शीर्षक पढने लगा। कुछ पंक्तियां बाल्कन युद्ध के विषय में पढकर उसने अपनी आदत के मुताबिक पेज पलट दिया। धीरे-धीरे उसे लगा कि आंखों के आगे धुंधलका-सा छाता जा रहा है। उसके गले की नसें भी फूलने लगीं...और आंखे बाहर निकलने को हो आयीं। उसने हवा लेने की गर्ज से आगे की ओर बढने की कोशिश की और...फिर अचानक उसके मुंह से अजीबोगरीब आवाज निकलने लगी। कन्धे ढीले छोडते हुए उसने कांपना शुरू कर दिया...उसकी कमीज बाहर निकल आयी। आखिरकार संभलने की काफी कोशिश करने के बावजूद वह फर्श पर गिर ही पडा। जर्मन उसकी यह हालत देखकर तेजी से बाहर की ओर पलटा और अलार्म बजा डाले।

सभी लोग अपना-अपना खाना छोडकर तेजी से लायब्रेरी की तरफ भागे और 'क्या हुआ-क्या हुआ' करने लगे। तभी होटल का मालिक मेहमानों के बीच मे रास्ता बनाता हुआ बमुश्किल वहां आ पहुचा, "कुछ नही हुआ, सैनफ्रांसिस्को के महाशय बेहोश हो गए हैं, बस।"

निचले कॉरीडोर मे ले जाकर छोटे किन्तु ठडे कमरे मे बिस्तर पर उसे अभी लिटाया ही था कि उसकी बेटी बेतहाशा भागती हुई आयी। उसके बाल कन्धों तक झूल रहे थे। उसकी स्कर्ट और ड्रेसिंग गाउन करीब-करीब अधखुले-से थे। इसके बाद उसकी पत्नी वहा पहुंची जो डिनर के लिए लगभग तैयार थी। उसके चेहरे पर आतंक छाया हुआ था।

कुछ लोग वापस डायनिंग हॉल मे आकर भोजन करने लगे थे। वे सभी अपने-आपमे खामोश थे।

उधर *सैनफ्रांसिस्को का आदमी एक सस्ते लोहे के पलंग पर गुमसुम पडा* था। मद्धम रोशनी का बल्ब हल्का प्रकाश फेंक रहा था। और माथे पर बर्फ रखकर ठंडक पहुंचाने की कोशिश की जा रही थी। पर धीरे-धीरे उसका चेहरा पीला पडने लगा...

...और अब वह खत्म हो चुका था।

तभी होटल का मालिक वहां आ पहुंचा। उसने डाक्टर से कुछ बातचीत की और खामोश हो गया। मृतक की पत्नी ने कहा कि लाश पहले उसके

कमरे में पहुंचायी जानी चाहिए।

"नहीं मैडम, यह एकदम नामुमकिन है!" उसने विनम्रता से जर्मन भाषा में कहा।

लड़की जो अब तक भौचक्क-सी अपने पिता के शव को देखे जा रही थी, जमीन पर पसर गयी और मुंह पर रूमाल ढापे जोर-जोर से रो पड़ी। उसकी मां के आंसू एकदम सूख गए और वह अपने हाथ उठाकर कहने लगी कि अब मेरी इज्जत नहीं की जा रही।

रात को जब होटल सो चुका था, एक वेटर ने रूम न० 43 की खिड़की खोली, खिड़की बगीचे के कोने की तरफ थी। वेटर ने रोशनी का रुख मोड़ा और दरवाजे की ओर नजर मारकर लौट गया। शव अंधेरे में पड़ा रहा।

कॉरीडोर में बैठे होटल के नौकर कुछ बना रहे थे। तभी स्लीपर पहने लुइजी ने प्रवेश किया। उसने फुसफुसाते हुए कुछ पूछा और कमरे की ओर हाथ का इशारा किया। फिर वह फुसफुसाने के अन्दाज में ही चीखा'''नौकरों के गले जैसे घोट ही दिए गए थे। उसने इसके तुरन्त बाद एक-दूसरे के कन्धों पर एक-दूसरे के सिरों को टिकाया और कमरे की ओर बढ़ लिया, दरवाजा खोला और कुछ पूछा, फिर कुछ क्षण बाद वह खुद ही दुखी स्वर में बोला, "हां, अन्दर आ जाओ!"

और जब रूम नं० 43 की खिड़कियों का रंग सफेद हो गया, केले के पेड़ के पत्ते हवा में फड़फड़ाने लगे, केसरी के आस पास का रंग पीला होने लगा, सभी घुमंतू अपने-अपने कामों में लग गए तो एक बड़ा सन्दूक लाया गया।

छोटी बांहों का पुराना कोट पहने लाल आंखों वाला गाड़ीवान लगातार चाबुक मारते हुए अपने छोटे लेकिन शक्तिवान घोड़े को दौड़ाये चला जा रहा था। उसके सर में काफी दर्द था। इसी वजह से वह खामोश था। पर उसकी बगल में रखे सन्दूक में पड़े सैनफ्रांसिस्को के आदमी के शव ने उसे अचानक होने वाली आमदनी से खुश कर दिया था।

घाट के पास हेड डोरमैन गाड़ीवान से आगे निकल गया। वह मृतक की पत्नी और बेटी को ऑटो में लेकर आया था।

मृतक का शव अपने गंतव्य के रास्ते पर था। एक नयी दुनिया का समुद्र-तट, जहां एक कब्र उसके इन्तजार में थी। संयोग की बात यह थी कि यह वही जहाज था जो सैनफ्रांसिस्को के उस परिवार को पूरी शान से लेकर आया था।

विलासमय केबिनों, डाइनिंग रूम और हॉलों में प्रकाश और उल्लास फैला हुआ था। लोग बढ़िया और चुस्त कपड़े पहने और ऑरकेस्ट्रा की धुनों में

मस्त थे। सभी इस बात से बेखबर थे कि संगीत की लहरों के साथ-साथ एक दूसरे में खोये हुए प्रेमी युगल आनन्ददायी आदान-प्रदान कर रहे थे। वे सभी बेखबर थे कि दूसरी तरफ समुद्र के बीचोबीच जहाज ने समुद्री तूफान और अंधेरे के साथ कितना संघर्ष किया है!

बन्दी

लुइजी पिराण्डेलो

जन्म : 28 जून, 1867; मृत्यु : 10 दिसम्बर, 1936.

इटली निवासी लुइजी पिराण्डेलो को नोबेल पुरस्कार सन् 1934 में मिला। पारिवारिक और सामाजिक क्षेत्र में ही नहीं साहित्यिक क्षेत्र में भी पिराण्डेलो का जीवन बड़ा विचित्र रहा है। सोलह वर्ष की अल्प अवस्था में ही इन्होंने कविता लिखना शुरू कर दिया था। इनकी रचनाओं में स्थानीय रंग को, जिसका मुख्य सम्बन्ध सिसिली से है, प्रधानता मिली है। परन्तु इन्होंने कुछ ही समय बाद मनोवैज्ञानिक रचनाएं लिखना आरम्भ कर दिया। इसका कारण इनका खुद का जीवन था जिसमें बहुत-सी अप्रिय घटनाएं घटने लगी थीं— इनके पिता का दिवालिया होना, पत्नी का पागलपन, पुत्रों का लड़ाई में जाना, पुत्री की आत्महत्या की कोशिश और गरीबी। इनके नाटकों ने इनको अधिक प्रसिद्धि दी। इनकी नाट्य-कला, जो सदैव ही मनुष्य के व्यक्तित्व की समानता से सम्बन्धित रही है, वास्तव में दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रश्नों को अद्भुत रूप से तथा बार-बार प्रस्तुत करने में समर्थ और सफल है।

इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं : दि लेट माटिया पैस्कल; दि ओल्ड एण्ड दि यंग; लव विदाउट लव; स्कामाण्ड्रा; राइट यू आर; दि प्लेजर्स आफ ऑनेस्टी; हेनरी फोर्थ; सिक्स कैरेक्टर्स इन सर्च ऑफ एन ऑथर आदि।

अनुवाद : सुरजीत

बूढा ग्रनोटा गधे पर बैठा हुआ घर लौट रहा था। उसकी अनुभूतियों का केन्द्र उसकी पत्नी थी—झगडालू और कंजूस। कजूस होने के बावजूद उसने पिछले दिनो उसके लिए तीन काले रंग के सूट सिलवाये थे, पर बूढ़े ने वह सूट कभी न पहने थे। जब उसका बेटा मरा तो भी वह रीति के अनुसार अपने-आपको काली वेशभूषा पहनने पर विवश न कर सका। वह विस्मित था कि उसके पास जो सम्पत्ति और जमा पूजी है वह किसके काम आयेगी। उसका वह बेटा मर गया था, जो उसकी पहली पत्नी के गर्भ से था और अब सारे संसार में बूढ़े का दूसरी पत्नी के सिवा अन्य कोई न था।

धीरगति गधे पर सवार ग्रनोटा सड़क के उस स्थान पर पहुचा जहा कच्ची सड़क बल खाती थी। सहसा तीन आदमी झाडियों के पीछे से लपके। उनके चेहरो पर नकाब और हाथो मे पिस्तौल थे। एक ने आगे बढ़कर गधे की रस्सी पकड ली और दूसरे ने बूढ़े को घसीटकर गधे से नीचे गिरा दिया। एक ने बूढे को पकड़ रखा और दूसरे ने पलक झपकते मे बूढ़े के हाथ-पैर जकड़-कर आंखो पर पट्टी बाध दी। वह अपनी स्वाभाविक कोमलता और विनम्रता से बोला—"मेरे बेटो, आखिर तुम क्या चाहते हो ?"

एक आदमी ने उसे पकडकर खडा कर दिया और कठोरता से बोला, "चुप रहो, नही तो तुम्हें जान से मार दिया जायेगा। वह उसे ढकेलते हुए आगे ले गये।

. . . .

अगली सुबह जब उसे होश आया तो उसने अपने-आपको एक अंधेरी गुफा में लेटे हुए पाया। उसके देखते-देखते प्रातःकाल का प्रकाश गुफा के अन्दर प्रवेश करने लगा। बूढ़े ने यों अनुभव किया जैसे उसकी पीड़ा कम हो गयी हो। बाहर उसको पकड़ने वाले वाद-विवाद मे व्यस्त थे और अभी तक कोई निर्णय नही हो सका था। बूढा जानता था कि पलायन का कोई रास्ता नहीं है और उसके पकड़ने वाले भी इस सत्य को जानते थे। बूढे के भाग्य पर मोहर लग चुकी थी। वह उस समय अपने कस्बे से कुछ मील दूर स्थित गहरी घाटी में बन्दी होकर सबसे दूर हो चुका था। उसे पकड़ने वाले उसकी ओर बढ़ रहे

थे। उनके चेहरे काली नकाबो मे छुपे हुए थे। एक व्यक्ति के हाथ में एक नयी अनगढी पेंसिल थी। सस्ती-सी पेंसिल जो बाजार से एक पैसे मे मिल जाती है। दूसरे हाथ मे कागज का तुड़ा-मुडा टुकडा और एक लिफाफा···एक आदमी आगे बढा और उसने बूढ़े के हाथ खोल दिये। दूसरा बड़े शुष्क स्वर मे बोला, "अब होश मे आओ। हम जो चाहते हैं, वह तुम्हे लिखना पड़ेगा।"

ग्रनोटा को यो लगा जैसे उसने उस आवाज वाले व्यक्ति को पहचान लिया है। निस्सन्देह यह मनोजा था। वह, जिसकी एक बाह दूसरी से स्वाभाविक रूप मे छोटी थी। बूढ़े ने एक दृष्टि बाहो को देखा और उसे विश्वास हो गया कि वह शेष दो आदमियो को भी पहचान लेगा। तनिक निश्चितता के बाद उसने कहा, "लडको! तुम्हे होश मे आना चाहिए। तुम मुझसे क्या लिखवाना चाहते हो और किसके नाम और मैं किससे लिखूगा?"

"इस पेंसिल से। क्या यह पेंसिल नही?"

"हा, यह है तो पेंसिल, पर तुम इतना नही जानते हो कि जब तक उसे बनाया नही जायेगा, उससे लिखा नही जा सकता?"

"कैसे बनायें इसे?"

"पेंसिल बनाने वाले चाकू से।"

"पेंसिल बनाने वाला चाकू···वह हमारे पास तो नही है।" वह तीनो गहरी सोच मे डूब गये। बूढा कोमलता और विनम्रता से बोला, "मनोजा, क्या सोच रहे हो?"

"ओह मेरे भगवान, तुमने मुझे पहचान लिया!" वह यो चौंक गया, जैसे किसी ने उसे कोड़ा मारकर नीद से जगा दिया हो।

"हा, मैंने तुम्हे पहचान लिया है।"

"अब तुम्हारी मौत निश्चित हो गयी है। मैं जो कुछ कहता हूं, वह लिखो या अपने प्राणों से हाथ धोने के लिए तैयार हो जाओ।"

"हां! हां! मैं लिखने के लिए तैयार हू।" ग्रनोटा ने कहा, "मेरे बच्चो, पहले पेंसिल बनाओ। फिर मुझे बताओ कि तुम मेरे प्राणो के बदले में क्या लेना चाहते हो?"

"तीन हजार फ्लोरन।"

"तीन हजार, यह छोटी रकम तो नही।"

"हां! पर तुम इससे भी अधिक धनी हो।"

"तुम ठीक कहते हो, पर इतनी रकम मेरे घर मे कहां रखी है। उसके लिए तो मुझे अपना एकाध मकान और खेत बेचने पड़ेगे। क्या तुम्हारे विचार से मेरी अनुपस्थिति मे धन उपलब्ध हो सकता है? यदि तुम धन चाहते हो तो यह केवल मैं ही दे सकता हूं, पर उसको उपलब्ध करने के लिए मेरा घर

जाना आवश्यक है।"

"क्या तुम हमें पागल समझते हो कि तुम्हे स्वतन्त्र कर दें?" एक बोला, "मैंने जिस प्रकार कहा है, इस कागज पर लिख दो, पर ओ मेरे भगवान्! यह पेंसिल कैसे बनेगी?"

मनोजा ने बूढ़े से कहा, "तुम लिखना-पढ़ना जानते हो। क्या तुम्हारी जेब मे अपनी कोई पेंसिल नही है?"

"मेरे बच्चे, मेरे पास कोई पेंसिल नहीं है और अगर होती भी तो तुम्हें कोई लाभ न पहुंचा सकती। तुम नही जानते हो कि मेरी पत्नी और उसके सम्बन्धी मेरे पत्र पर भी धन नही देंगे। उनसे तुम एक ही अवस्था मे धन ले सकते हो। यदि तुम उनके साथ जाकर मेरी मृत्यु का सौदा करो तो शायद तुम्हें कुछ धन मिल जाये। वह मेरे जीवन के लिए तुम्हे एक पैसा न देंगे। मेरे बच्चे! इसके बावजूद मैं इस प्रकार मरने के लिए तैयार नहीं हूं। मैं सौगन्ध खाता हूं कि तुम मुझे छोड दो तो तीन दिनो के अन्दर तुम्हारे लिए धन लेकर वहां पहुचा दूगा, जहां तुम कहोगे।"

"हम खूब जानते हैं, तब तक तुम पुलिस को सूचना दे चुके होगे। हमे तुम पर विश्वास नही।"

"मैं सौगन्ध खाता हूं। इस दुर्घटना के बारे मे किसी को एक शब्द भी नही बताऊगा। मुझ पर विश्वास करो। कुछ सोचो, क्या मैं तुम्हारे साथ एक पिता की तरह प्रेम नही करता रहा हूं? क्या सदा मेरे सामने तुम्हारी आखे आदर से झुकी नही रहती थी?"

वे कुछ न बोले और चुपचाप गुफा से बाहर निकल गये।

जब गुफा मे अंधेरा फैल गया तो वह अपने बंधे हुए हाथों और पैरों के साथ घिसटता हुआ गुफा से बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने लगा। जब उसने इर्द-गिर्द नजर डाली और आस-पास का निरीक्षण किया तो उसने देखा कि उससे कुछ दूर उन तीनो मे से एक आदमी बैठा हुआ है।

वह अपने संघर्ष मे मग्न था कि उसे आवाज सुनायी दी, "मैं तुम्हें देख रहा हूं..."

"मैं बाहर की ताजा हवा के लिए आया हूं।" बूढ़े ग्रनोटा ने बहाना बनाया।

"अच्छा! तुम बाहर की हवा से आनंदित हो सकते हो।" पहरेदार ने कुछ सोचते हुए कहा, "पर एक शर्त है, तुम शोर नही मचाओगे।"

बूढ़ा ग्रनोटा रात की उदास चादनी मे निश्चल लेटा रहा।

उसे बन्दी करने वाले अजीब द्वन्द्वग्रस्त हो गये थे। वे न तो उसे मारने पर तैयार हो रहे थे, और न उसे रिहा करने के लिए तैयार हो रहे थे। वे चाहते थे कि जब तक हो उसे अपनी हिरासत में रखा जाये और बूढ़ा अपनी मौत

कर सारी समस्याओं को समाप्त कर देगा।

समय बीतता गया। वे बूढ़े का अधिक-से-अधिक खयाल रखते, पर उनके नित्यनियम में कोई परिवर्तन न हुआ। वह उससे कस्बे की बातें करते। उसे नवीनतम समाचार बताते। उससे बातें सुनते और सांसारिक मामलों के बारे में बहुत कुछ सीखते। बूढ़े को भी अब अहसास हो चुका था कि वह अपने कस्बे के लोगों और अपनी बीवी के लिए मर चुका है और शायद लोग उसकी खोज में असफल होकर उसके बारे में सोचना भी बन्द कर चुके हैं।

तीनों नवयुवक अब उसे हंसमुखता और प्रसन्नता से सहन कर रहे थे। अपनी भूल के दंड को वह भली भांति भुगत रहे थे। अब उनके अंत:करण ने उन्हें जिस अनुभूति में ग्रस्त कर दिया था, वह उससे छुटकारा प्राप्त करने के लिए बूढ़े के बहुत समीप हो चुके थे। उनके हृदयों में दिन-ब-दिन उसका आदर बढ़ने लगा। वे अब उसे किसी प्रकार भी खोने के लिए तैयार न थे।

एक दिन फ्लेस्को अपनी बीवी को अपने साथ गुफा में लाया। उसकी छोटी बच्ची ने उसकी उंगली थाम रखी थी और एक बच्चा गोद में था। बच्ची ने घर का बना हुआ केक पकड़ा हुआ था, जिसे वह 'दादा जी' के लिए लायी थी। बच्ची उसके झाड़ियों की तरह अनकटे बालों को देखकर कुछ भयभीत नजर आ रही थी। ग्रनोटा ने बड़ी नम्रता से कहा, "मेरी प्यारी बच्ची, डरो नहीं। आगे आ जाओ। शाबाश! अच्छा तो यह केक तुम्हारी मम्मी ने बनाया है? वाह! वाह!"

"हां! मम्मी ने बनाया है।" बच्ची ने कहा।

"वाह! भई! यह तो बहुत उम्दा है। हां! तो तुम्हारे कितने भाई-बहन हैं?"

"तीन।"

"ओह बेचारा फ्लेस्को! इसी उम्र में चार बच्चे! हां! इन बच्चों को मेरे पास लाना। मैं उनसे मिलना चाहता हूं। अगले सप्ताह ठीक है, भगवान् करे, मैं अगले सप्ताह तक जिंदा रहूं।"

अगला सप्ताह आ गया। फिर दूसरा सप्ताह, और बूढ़ा ग्रनोटा उस घटना के बाद दो महीने तक जिंदा रहा। वह रविवार की शाम को मर गया। शाम अभी अंधेरी नहीं हुई थी। उस दिन फ्लेमको और मनोजा के बच्चे बूढ़े दादा से मिलने आये हुए थे। उसकी मौत उस समय हुई जब वह बच्चों के साथ एक बच्चे की तरह खेल-कूद में मग्न था। जब वह अपनी बचकाना हरकतों पर जोर-जोर से हंस रहा था कि सहसा धरती पर गिर गया। तीनों पुरुष उसे गिरता देख कर उसकी ओर लपके और जब उन्होंने उसे उठाया तो उसके प्राण निकल चुके थे।

उन्होंने जल्दी से छोटे बच्चों और स्त्रियों को वहां से भेज दिया और फिर शव पर झुककर फफक-फफककर रोने लगे।

उन तीनों के शेष जीवन में जब भी किसी ने भूले-विसरे से ग्रनोटा की रहस्यपूर्ण गुमशुदगी का जिक्र किया तो वे कहते, "वह एक नेक आदमी था और सीधा स्वर्ग में गया होगा।"

सात नारियां

पर्ल बक

जन्म : 26 जून, 1882

अमेरिका की प्रथम लेखिका जिन्हें सन् 1938 में नोबेल पुरस्कार मिला। इनके माता-पिता मिशनरी थे इसलिए इनका बचपन एकदम रसहीन रहा था। बचपन में यह चीन चिकियाग नामक शहर में रहती थी। ये अपने चीनी पड़ोसियों के यहां खूब जाती थी और इनकी चीनी आया इनको चीन के क़िस्से बराबर सुनाया करती थी। सन् 1922 से इन्होंने लेख लिखना शुरू किया। परन्तु इनका सम्मान एक उपन्यासकार, कथाकार के रूप में ही है।

पुरस्कृत कृति : दि गुड अर्थ।

इनकी अन्य प्रमुख रचनाएं हैं : ईस्ट विण्ड : वेस्ट विण्ड; सन्स; दि यग रेवोल्यु-शनिस्ट; दि मदर; दिस प्राउड हर्ट, ए हाउस डिवाइडेड; दि पैट्रियाट; अदर गाड्स; टुडे एंड फार एवर; आफ मेन एंड वीमेन; फार एंड नीयर आदि।

अनुवादक : सुरजीत

रात काफी बीत चुकी थी। चारों ओर नीरवता थी। वह थकन और भय से अधमरी-सी हो रही थी। सडक का रास्ता छोड़कर वह खेतों, क्यारियों और पगडंडियों के रास्ते नगर मे पहुची थी। इस अंतराल में वह कई बार गिरी थी। जब काउंट का दरवाजा खुला तो एक विदेशी स्त्री हाथ में लालटेन लेकर आयी और उसे अंदर ले गयी, तब कही उसकी जान मे जान आयी। अकस्मात् उसे हृदय पर एक आघात का अनुभव हुआ, क्योकि उसका सबसे बड़ा बेटा उसे वही छोड़कर अपने गांव वापस जा रहा था। अचानक वह अज्ञात भय से कांप उठी। पता नही बेटे के साथ क्या गुजरेगी ?

वह विदेशी स्त्री उसे सांत्वना देते हुए कहने लगी, "घबडाओ नही, ईश्वर तुम्हारे बेटे की रक्षा करेगा।"

किंतु उस पर इन शब्दों का कोई प्रभाव न पडा। वह उसी प्रकार चुपचाप खडी रही। जब वह स्त्री उसे लेकर आंगन में पहुंची तो वहां उसकी दो बेटियां, बहू, बेटे और दो पोते भी थे। सबको गहरी नीद में सोते हुए उसने देखा और कुछ देर के लिए वह अपने पति और बेटियों को भूल गयी। उसने देखा, बहुत-सी स्त्रिया बोरियो की तरह ढुलकी हुई पडी हैं। वह चाहती थी कि अपनी बेटियो और बहू को जगाकर बातें करे, लेकिन विदेशी स्त्री ने कहा, "मां जी, आप इस समय सो जाये। कल सबसे मिलकर बातें कर लें।"

यह कहकर वह चली गयी। लिमाऊ भी अन्य स्त्रियों की भांति धरती पर लेट गयी। एक-एक कर के सभी घटनाएं उसके मस्तिष्क में घूमने लगी। कैसे एक दिन उसके पति ने बताया था कि उत्तर में लड़ाई शुरू हो गयी है। शत्रु के पास नये से नये अस्त्र हैं जिनसे चीनी उनका मुकाबला करने से असमर्थ हैं। फिर समाचार मिला कि शत्रु की सेना बाढ की तरह बढती चली आ रही है। एक दिन उसने अपनी आंखो से देखा कि चमकीली बत्तखें उड़ती हुई आयी और अंडे फेंककर चली गयी। एक अंडा उनके खेत मे भी आ गिरा। भयानक धमाका हुआ। उसके घर से तीन मील दूर नगर के मकानों को आग लग गयी और उसी रात नगर से उसकी बेटी, दामाद और दामाद की बूढ़ी मां प्राण बचाने के लिए भागकर उनके घर आ गये।

इसके पश्चात जो घटनाएं हुईं उन्हें उसने स्वयं देखा था। दिन-भर में एकाध बार चार-छह विमान बम फेंककर चले जाते थे। नागरिक जीवन तहस-नहस हो गया था। प्रतिदिन हजारों लोग नगर छोड़कर गांव से गुजरते हुए प्राण बचाते फिरते थे। भागने वालों के हृदय पर शत्रु का भय बुरी तरह सवार था और वे शीघ्रातिशीघ्र दूर, बहुत दूर भाग जाना चाहते थे। जो इक्का-दुक्का वहां बच रहे थे वे यही सोच कर वहां रुके हुए थे कि जो होगा देखा जायेगा। लिक्षाउ का पति भी उन लोगों में से था जिन्होंने अपना घर न छोड़ने का निश्चय कर लिया था। जब वह उन भगोड़ों को देखता तो हंस देता था—ऊंह! यह कैसे लोग हैं जो अपने घरों को छोड़कर भाग रहे हैं!

जब नगर से भाग कर आने वाले विद्यार्थियों ने उससे कहा कि वह भी अपने बाल-बच्चों के साथ दूर चला जाये और जाने से पूर्व अपनी सारी खेती बरबाद कर जाये ताकि वह शत्रु के काम न आ सके तो उसे उन पढ़े-लिखे विद्यार्थियों की बुद्धि पर दया आयी। यह कैसे आदमी हैं जो एक किसान से कह रहे हैं कि खेती तबाह कर दे। उसने पत्नी से बार-बार यही कहा था कि उसे भागने की क्या जरूरत है? वह तो किसान है। उसे सरकार बदलने से क्या मतलब? जो भी राज करेगा, वह उसे लगान देगा और खेती-बाड़ी करके आराम से जीवन बितायेगा। हां, उसका मंझला बेटा और उसकी पत्नी और उनके बच्चे अवश्य उन विद्यार्थियों के साथ कहीं दूर चले गये थे। उन्हें उसने जाने की अनुमति इसलिए दे दी थी कि उसकी मझली बहू सुन्दर थी और गर्भवती भी थी। वह दोनों का वहां रहना ठीक नहीं समझते थे।

उसके बाद नगर में शत्रु का राज हो गया। आज शत्रु की सेना उसके गांव से होकर गुज़री। लोगों ने अपने नये अफसरों का स्वागत किया। उन्हें खाने की वस्तुएं और गर्म चाय दी। किन्तु वे तो स्त्रियां मांगते थे जिससे गांव के सभी लोग भयभीत हो गये और बच्चों और स्त्रियों की रक्षा के लिए अपने-अपने घरों से भाग गये। उसके पति लिंतान ने भी घर आकर सारा हाल सुना दिया। उसकी आवाज में थरथराहट थी और सारा शरीर कांप रहा था। उसने पिछले दरवाजे से बच्चों को निकालने के बाद दोनों बेटों को दामाद के सुपुर्द कर दिया ताकि वह उनको लेकर खेतों में छुप जाये।

उसकी समधिन मोटे-भारी बदन के कारण छोटे दरवाजे में से बाहर न जा सकी। उसे अंगूर की घनी बेल में छिपाकर वे दो पति-पत्नी मोटे छप्पर में छुपकर पड़ रहे। देखते ही देखते राक्षस आ धमके। तूफान-सा आ गया। जापानी सिपाही भूखे कुत्तों की तरह घर में घुसे और स्त्रियों को ढूंढते रहे। जब वह न मिलीं तो घर की वस्तुओं को तोड़ने-फोड़ने और ध्वंसित करने लगे। फिर वे अंगूर की बेल की ओर भी बढ़े। एक धीमी-सी चीख सुनाई दी और फिर

खामोशी छा गयी। वे दोनों गुमसुम होकर छप्पर मे पड़े रहे।

यह तूफान देरतक रहा। यों लगरहा था जैसे राक्षस इस घर से चिढ़ गये हैं। उन्हे रोकने वाली कोई शक्ति नही थी, दोनो डर रहे थे कि कही यह राक्षस क्रोध में भडककर घर को आग ही न लगा दे। काफी देर तक ऊधम करते रहने के बाद आखिर वे चले गये तो पति डरते-डरते धीरे से छप्पर के नीचे उतरा। जब उसे विश्वास हो गया कि अब कोई खतरा नही है तो पत्नी को भी नीचे उतार लिया। फिर वे दोनो उस छोटे दरवाजे की ओर गये जिससे उन्होंने बच्चो को भगाया था। ओह, कितना भयानक दृश्य था! उसकी समधिन, जिसकी आयु 100 वर्ष के लगभग थी, मुरदा पड़ी थी।

लगता था कि उस बूढी स्त्री के साथ सिपाहियो ने वही ज्यादती की है जैसी कि वह एक सुन्दर स्त्री के साथ करते। इस विचार से ही लिसाऊ कांप उठी, यह भी शुक्र है कि वह स्वय छप्पर मे छिप गयी थी।

शत्रु की सेना के चले जाने पर पति-पत्नी दिन-भर इसी चिंता मे खोये रहे कि बेटियों, बहू और दामाद के साथ न जाने क्या-क्या बीत रही होगी। शाम होते ही उनका बडा बेटा वापस आ गया। उसने बताया कि वह उन सबको एक सुरक्षित स्थान मे किसी विदेशी स्त्री के पास छोड आया है। उस स्त्री ने कुछ बच्चो और स्त्रियो की रक्षा की है। उसका घर बहुत बडा और मजबूत है, जिसके चारो ओर ऊची दीवारे और लोहे का बडा मजबूत दरवाजा है।

यह सुनते ही लितान ने कहा, "बेटा, तुम अपनी मां को भी वही छोड आओ।"

लिसाऊ पति से पृथक नही होना चाहती थी, पर जो कुछ समधिन के साथ हुआ था, वह सब उसे अच्छी तरह याद था। इसलिए वह विवश हो गयी और जल्दी से वहा से चली गयी।

प्रातः जब लिसाऊ की आंखे खुली तो वातावरण कुछ विचित्र-सा था। बच्चो के रोने-चिल्लाने की आवाजें और माओ की झिडकिया। कोई स्त्री हाथ-पांव धो रही थी और कोई रो रही थी। बड़ी बेटी ने जब अपनी सास के बारे में पूछा तो उसने केवल इतना ही कहा, "वह बहुत बूढी और मोटी है इसलिए नही आ सकी।" बेटी इस उत्तर से आश्वस्त हो गयी। लिसाऊ ने सभी से एक ही कहानी सुनी, "वह राक्षस हैं। उनका एक ही काम है, स्त्री की तलाश।"

लिसाऊ कांप उठी। यदि वह उनके पंजे में फंस जाती तो···?

यहां सात अन्य स्त्रिया भी बैठी थी। वे बहुत सुन्दर थी। उन्होने काफी भडकीले कपडे पहन रखे थे। उनके रग-ढग, चाल-ढाल और कपड़ों से उसे यह विश्वास हो गया था कि वे अच्छी स्त्रिया नही हैं। उसने सुना था कि यह गिरजा विदेशियो का है। हाय, यहा भी बाजारू स्त्रियां!

कुछ देर वह सोचती रही। हो सकता है कि ये किसी अच्छे परिवार की स्त्रियां हों। उसने सोचा, क्यों न तसल्ली कर ले ?

उसने एक स्त्री से पूछा, "आपके बच्चे कहां हैं ?"

"हमारा कोई बच्चा नहीं है। संसार में हमारा कोई नहीं है।"

और लिसाऊ समझ गयी कि वास्तव में ये सभी ही स्त्रियां बाजारू हैं। उसने कुछ विस्मित होकर पूछा, "आप सभी यहां क्यों आयी हैं ? आप अपने जलील शरीर यहां किस लिए लायी हैं ?"

और वह स्त्री रोने लगी। वे छह लड़कियां भी उसके पास आ गयीं। उनके उदास और दुख-भरे चेहरे मुरझा गए थे। लिसाऊ को खेद हुआ कि उसने उनके हृदय क्यों दुखाए हैं। थोड़ा दिलासा देते हुए कहा, "बहन, आप यहां आ कैसे गयीं ?"

उस स्त्री ने उत्तर दिया, "हम मौदाऊ की रहने वाली हैं। जंगली जापानियों ने नगर पर कब्जा कर लिया तो स्त्रियों को ढूंढने लगे, पर हम सात बहनें प्राण बचाकर भाग आयीं। नहीं तो हम भी कब की उन भेड़ियों के हाथों मारी गयी होतीं।" इतना कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसकी वे बहनें भी रो पड़ीं। लिसाऊ का दिल भर आया। वह उन्हें सांत्वना देने लगी। वह अपनी समधिन की दुर्दशा देख चुकी थी। इतने में वह विदेशी स्त्री वहां आ गयी। उसने लिसाऊ के पास बैठी हुई उन सात बहनों को रोते हुए देखा।

"ईश्वर तुम्हारा दुख अवश्य दूर करेगा। वह तुम सबको शीघ्र ही फिर शांति प्रदान करेगा।" यह कहकर उसने दूध और दलिया बांटना शुरू किया।

लिसाऊ को यह देखकर बड़ा दुख हुआ कि इतनी सुन्दर और सभ्य स्त्रियों को यह बुरा जीवन बिताना पड़ रहा है।

सारा दिन बहुत बुरी तरह बीता। हर घण्टे, दो घण्टे बाद कई स्त्रियां आतीं और अपने साथ हुई ज्यादतियों की दुख-भरी कहानियां सुनातीं। सुनकर सभी स्त्रियां कांप उठतीं। कभी-कभी विदेशी स्त्री हंस-हंसकर सांत्वना देती। वह शुद्ध चीनी भाषा बोलती थी। उसने बताया कि बहुत दिन से वह 'फादर' की सेवा कर रही है।

शाम को लिसाऊ से रहा न गया, "क्या सचमुच आपका फादर शक्तिशाली है ? क्या इसी कारण जापानी राक्षस इस ओर नहीं आये ?"

विदेशी स्त्री ने फीकी-सी मुस्कराहट होंठों पर लाते हुए कहा, "नहीं, वह जापानी डरते हैं तो केवल अंग्रेजी सेना से जो····"

लिसाऊ उसका मुंह देखती रह गयी।

रात का खाना सभी ने मिल-जुलकर खाया। उसके बाद लालटेन के मद्धिम प्रकाश में विदेशी स्त्री अपनी दुख-भरी कहानी सुनाती-सुनाती सो गयी। सहसा

बाहर फाटक पर कोलाहल सुनाई दिया। इतने में चौकीदार दौड़ता हुआ आया और कहने लगा, "आप सभी अपनी-अपनी रक्षा करें। बाहर दरवाजे पर जापानी सिपाही आ गये हैं। वे दरवाजा तोड़कर अंदर आना चाहते हैं।"

हलचल मच गयी। बच्चे चिल्ला-चिल्लाकर उठ बैठे। विदेशी स्त्री हाथ में लालटेन थामे हुए आयी और सबको सान्त्वना देने लगी, "घबराओ नहीं", और वह लालटेन लेकर जल्दी से फाटक की ओर गयी। सभी कान लगाकर मौन बैठी रहीं।

वह विदेशी स्त्री वापस आ गयी। उसका चेहरा उतरा हुआ था और आंखें सजल थीं। वह बोली—दरवाजे पर पचास-साठ जापानी खड़े हैं। उन्हें पता चल गया है कि यहां चीनी स्त्रियां हैं और वे स्त्रियां ही चाहते हैं। लेकिन मैं··· मैं किस स्त्री को कैसे कह सकती हूं कि वह चली जाये ? हे ईश्वर ! मुझे क्षमा कर। विवश होकर कहना पड़ रहा है कि सभी स्त्रियों को बचाने के लिए पांच-सात को बलिदान करना ही पड़ेगा।" कुछ क्षण और बीत गये। दरवाजे पर फिर शोर सुनाई दिया। चौकीदार भागता हुआ आया, "वे दरवाजा तोड़ रहे हैं !"

विदेशी स्त्री दरवाजे की ओर दौड़ी। बड़े कमरे में फिर हलचल मच गयी। वह बड़े-बड़े कदम उठाती हुई वापस आयी और घबरायी हुई आवाज में बोली, "वे नहीं मानते। जन्तु है, जन्तु ! जल्दी निर्णय कर लें। सभी की रक्षा के लिए कुछ न कुछ करना आवश्यक है।"

फिर कोलाहल मच गया और अकस्मात् वातावरण मुरझा गया। दरवाजा तोड़ने की आवाज और तेज होती गयी।

इतने में वह लड़की आगे बढ़ी जो सोचाऊ से भाग आयी थी। वह बोली, "मां, उन्हें कितनी स्त्रियों की आवश्यकता है ?"

विदेशी स्त्री ने गरदन झुकाए हुए उत्तर दिया, "छह-सात मिलने पर शायद वापस चले जायें।"

उसने तत्काल कहा, "मां, हम सात बहनें बलिदान होने के लिए तैयार हैं।'

वह आगे बढ़ी और साथ ही उसकी छह बहनें भी। विदेशी स्त्री ने कहा, "आपने सबको लाज रखी है। ईश्वर आपकी सहायता करेगा।"

वह हंसकर बोली, "ईश्वर ? आपका ईश्वर हमारी क्या सहायता कर सकता है ? राक्षसों से निपटना उसके बस का नहीं है।"

और वे सातों बहनें फाटक की ओर चल पड़ीं। लालटेन के मद्धिम प्रकाश में वे आगे बढ़ती गयीं। लिसाऊ उन्हें देखती रही। जब वे आंखों से ओझल हो गयीं तो उसे यों लगा जैसे उन राक्षसों से रक्षा करने के लिए ये सुन्दर देवियां नीले आकाश से उतरी थीं।

बूढ़ी हवेली

फ्रान्ज एमिल सिलापा

जन्म : 16 सितम्बर, 1888

फिनलैण्ड निवासी फ्रान्ज सिलापा को सन् 1939 में नोबेल पुरस्कार मिला। सिलापा ने अपनी रचनाओं में अपने देश फिनलैण्ड के किसानों के जीवन के बड़े जीवन्त और मार्मिक चित्र उभारे हैं। इनकी रचनाओं में कविता का आभास भी मिलता है। इनको मनुष्य के सामाजिक जीवन के लिए बहुत दुख है, क्योंकि इनका विश्वास है कि मनुष्य अपने ही कर्मों द्वारा दुखी होता है। इन्होंने बालोपयोगी छोटे-छोटे लेख भी लिखे है। इनकी पुस्तक 'फिफ्टीन्थ' से इनके दार्शनिक, कवि, ज्ञानी तथा फिनलैण्ड की संस्कृति के प्रतिनिधि होने का प्रमाण मिलता है।

पुरस्कृत कृति : फिफ्टीन्थ।

इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ है : लाइफ एण्ड सन, मीड हेरीटेज, चिल्ड्रेन ऑफ मैनकाइण्ड इन दि मार्च आफ लाइफ, माई डियर फादरलैण्ड, फ्राम दि लेविल आफ दि अर्थ, वन मैन्स वे, पीपुल इन दि समर नाइट, टालिन्मकी, दि मेड सिल्जा आदि।

सेल्मा कोल्जास को उसके साथी अच्छी तरह से समझते नही थे। विशेष रूप से वे लोग जो युवा थे और रोमाच पसन्द करते थे। उसने कुछ ऐसा प्रभाव बना लिया था जैसे वह दुनिया की सबसे निपुण लड़की है। अपनी सम्मोहक आंखों से वह ऐसा जादू फेंकती कि कोई कवि भी सॉनेट लिखने लगता।

लोगो को आश्चर्य था कि उसने विवाह क्यो नही किया, उसके बारे में गांव में किसी भी तरह के किस्से नही फैले। हर दृष्टि से वह बहुत आकर्षक थी। वह बड़ी सादगी से नृत्य करती और सुरुचिपूर्ण वस्त्र पहनती। इन सारे गुणो के अतिरिक्त उसकी निश्चल आखे कुछ ऐसी मोहक थी कि किसी का भी दिल जीत सकती थी।

एक शाम, एक नृत्य मे एक बडी आश्चर्यजनक घटना घटी। सेल्मा भी वहां उपस्थित थी। ऐसे कार्यक्रमो मे युवतिया अपनी माओं या पारिवारिक मित्रो के संरक्षण मे आती थी। ऐसी ही एक संरक्षिका मादाम लितुका, जो एक अमीर व्यापारी की पत्नी थी, अपनी बेटी एल्मा और संभावित दामाद के साथ वहा आती थी। वह लडका एक निर्धन छात्र था, जो समय-समय पर उस व्यापारी की मदद से गुजारा करता था और समाज उसे नीची नजरो से देखता था।

जब एल्मा अपने भावी पति के साथ नाचती तो कई परिचित निगाहे और फुमफुमाहटें उसकी मा से टकराती, पर आज लग रहा था कि एल्मा की वह पूरी शाम अकेले मे ही कटेगी, क्योकि उसके भावी पति का कही नामोनिशान नहीं था। व्याकुलता-भरे एक अन्तराल के बाद अचानक वह प्रकट हुआ। सेल्मा उसके साथ थी और वह उसी के साथ नाचने लगा।

गुस्से से लाल-पीली हुई व्यापारी की पत्नी झटके से उठी और मारे शिष्टाचार भूलकर दरवाजे के बाहर निकल गयी। उसकी बेटी एल्मा, जो प्यार के बारे में सिर्फ उतना ही जानती थी जितना उसकी मां ने उसे बताया था, अपनी मां को उठते देख उठी और हिचकती हुई-सी पीछे-पीछे चल पड़ी। उस अपमानजनक स्थिति को लेकर अपनी मा के तीखे शब्द उसके कानों में पड रहे थे।

इसी बीच एक दयालु मित्र ने छात्र के कानों में फुसफुसाकर मादाम लितुका की नाराजगी के बारे में बताया।

उस अभागे युवक ने कई तरह से अपनी सफाई देने की कोशिश की पर उसकी क्षमा याचना पर मादाम लितुका ने कोई ध्यान न दिया।

दूसरी ओर सेल्मा ने इल्मारी सेलोने के साथ नाचना शुरू करने के बाद से अपने इस नये सम्बन्ध को लेकर पुनर्विचार नहीं किया। इस तरह के सम्बन्धों को लेकर वह ज्यादा सोच-विचार नहीं करती थी। वह सुबह होने तक नाचती रही और उसके बाद अपने भाई और छोटी बहन के साथ, उस शाम के आनन्द से सन्तुष्ट घर चली गयी।

कोल्जास परिवार का घर बहुत ही रमणीक जगह पर बना हुआ था। पास से गुजरते लोग कई दृष्टियों से उसकी प्रशंसा करते थे। अपने उपभवनों के साथ यह एक बड़ा ही मोहक आकार बनाता था। बारिश के बाद तो यह और भी मोहक लगता था। सफेद दीवारों के ऊपर लाल रंग की ढलवां छत, आसपास सब जगह हरियाली और ऊपर नीला आसमान, इस पर आते-जाते काले बादल उसकी रूप छटा को द्विगुणित कर देते थे।

कोई भी छात्र (ऊपर वर्णित छात्र नहीं) जब पास से गुजरता तो वह दरवाजे के बिलकुल पास से गुजरने के मोह से थोड़ा लम्बा रास्ता लेने में सकोच न करता। वह स्कूल जाने वाली सेल्मा कोल्जास और उसकी छोटी बहन को शक्ल से पहचानता था और गेट से भीतर झांकते हुए वह यह अनुमान लगा लेता कि वे इस पुरानी हवेली के भीतर किसी न किसी कमरे में चहलकदमी कर रही होंगी। वह उनके भाई उर्तो काल्जास को थोड़ा-सा जानता था। वह डॉक्टरी पढ़ रहा था।

उस विशेष दिन वहां कोई नहीं दिखाई दिया। यहां तक कि गुलाब तथा अंगूर की बेलें, जो बालकनी तक चली गयी थी, भी बड़ी बेरुखी दिखा रही थी।

दूर घर के पिछवाड़े से चिराबेल के विशाल झुरमुट झील तक चले गये थे। एक छोटी-सी घटना ने घटनाओं की एक कड़ी को जन्म दे दिया था। जैसे एक कली खिलकर फूल बनती है तो पूरी फिजां में ही अपनी सुगन्ध देती है।

ऊपर की एक खिड़की पर सेल्मा एक क्षण के लिए दिखाई दी। पर वह एक क्षण ही खिड़की पर पड़ी उसकी लम्बे बालों वाली छायाकृति को पहचानने के लिए काफी था। हवा से उड़ रहे नीले और सफेद पर्दे को उसने ठीक किया और एक क्षण के लिए विचारपूर्ण दृष्टि से बाहर बिखरी शान्ति

और सौन्दर्य को देखा।

इसी एक घटना की उम्मीद से ही तो छात्र कोल्जास निवास के बाहर आकर ठहरता था।

वायनो कोल्जास के सोलहवे जन्मदिन के बाद तो दो दिन और बीत गये है, पर इस अवसर पर दी गयी पार्टी के निशान अभी तक दिख रहे थे।

हालाकि घर मे फिर से रोज वाले काम शुरू हो गए थे फिर भी सेल्मा पर वे प्रभाव अभी बाकी थे जो उत्सव ने उस पर छोडे थे।

उसके भाई समेत सारे मेहमान जा चुके थे। बाहर से बुलाया गया हलवाई अपने सारे कारीगरों के साथ लौट गया था। रसोई मे चिरपरिचित गंध उठने लगी थी और रसोइये ने अपना काम सभाल लिया था।

वायनो पहले की तरह दूर पार्क मे बने गुडियाघर मे घण्टो बैठे रहने की अपनी आदत पर चलने लगी थी।

जुलाई की उस गर्म दोपहर को उस पुरानी हवेली मे हर चीज सो रही प्रतीत हो रही थी।

समय एक भार-सा लटका हुआ था और बेआवाज आगे खिसक रहा था। सेल्मा कुर्सी के हत्थे पर बैठ गयी और सोचने लगी, "वायनो सोलह साल की हो गयी है—काफी बडी हो गयी वह। और मैं अट्ठाइस की हू इसका क्या मतलब है? याने इतने वसत मैंने देख लिए है और दो साल बाद मैं तीस की हो जाऊगी। मैं कितनी खुश हू। क्या यही पर बूढा हो जाना सभव है? नही। मैं नही समझती कि ऐसा होगा।" उसने खुद से कहा।

जब भी वह अपने बारे मे सोचने बैठती, ऐसे विचार उसके दिमाग मे भर जाते। उसके विचार अधिकाधिक अस्पष्ट हो जाते, जैसे उसका दिमाग चीजो को अपने कोटरों मे छिपाता जा रहा हो। वह अपने जीवन की खुशियों का महत्त्व समझती थी। वह जो कुछ चाहती, उसे मिल जाता। वह सुन्दर थी, लोकप्रिय थी, पर एक छोटी-सी चीज कही ऐसी थी जो नही थी'''वह क्या है, वह नही जानती थी।

वायनो का जन्मदिन बीत गया था पर बड़ी बहन अभी कुछ आस लगाये बैठी थी। किसी असामान्य-सी घटना की एक अस्पष्ट-सी प्रतीक्षा उसे थी।

घर की मालकिन होने के नाते उसे पार्टी की सफलता से खुश होना चाहिए था। पर इसके विपरीत वह निरुद्देश्य घर के एक कमरे से दूसरे कमरे में भटक रही थी और घर के रोजाना के काम को वह जैसे टाल रही थी। वह पार्टी मे बाधा पडने और किसी चीज के अभाव से रोमांचित थी।

वहां बैठी-बैठी सेल्मा एक पुरानी वाल्ज धुन गुनगुनाने लगी। हालांकि

पार्टी में वह धुन नही बजी थी।

फिर उसे एक सपने ने आ घेरा जो इतना सजीव था कि वास्तविकता जैसा ही लग रहा था। उसे लगा जैसे वह जुलाई के आखिरी दिनो में दोपहर को एक पार्क मे है।

हर चीज उसे वास्तविक लग रही थी। संगीत की तरह की सनसनी उस पर ऊपर से नीचे तक छा रही थी। उसका मस्तिष्क उससे सराबोर था और लगता था कि प्रकृति की हर चीज इसे प्रतिध्वनित कर रही हो।

अपने सारे प्राकृतिक उपहारो के साथ जुलाई का महीना बहुत खूबसूरत होता है। मध्य ग्रीष्म का यह समय वर्ष का सबसे अधिक समृद्ध महीना होता है। फूलो, फलों और फसलों की बहार छायी रहती है। सूरज अपनी पूरी गर्मी से तपता है और दिन सबसे लम्बा होता है (सूरज का तपना भारत जैसे गर्म देश में कष्टकर होता है पर फिनलैण्ड जैसे ठंडे देश में यह वरदान है।) फिर भी दिन ऐसे बीत जाता है जैसे हमारा जीवन बीत जाता है और साल खिसकते चले जाते है।

जुलाई के उस दिन एक अजनबी कोल्जास निवास पर आया, आसपास कोई नही था। विशालकाय प्रवेशकक्ष खाली था और उसके स्वागत के लिए वहां कोई नही था। फिर भी उस बूढी हवेली की स्वागत की भावना ही उसके लिए पर्याप्त थी। वह हवेली को अच्छी तरह से पहचानता था और इसके भीतर की खुशनुमा यादें उसके दिमाग मे घूम रही थी।

वह एक कमरे से दूसरे कमरे मे भटकता हुआ बैठक के कमरे मे आ गया। वह खड़ा होकर अपने सामने के दृश्य को प्रशसा-भरी नजरो से देखने लगा। घडी की टिक-टिक के साथ बहुत पुराने दिनो की यादें ताजा हो आयी। उसने मेज पर बिछे कढे हुए मेजपोश और पियानो के संगीत को छुआ। हर चीज शान्त थी। आगतुक को लगा जैसे उसके हृदय की धड़कन इस शान्त जीवन के साथ एकस्वर हो गयी है। हर चीज वैसी ही है जिसकी उसने कल्पना की थी।

अचानक दरवाजा खुला और वह युवक तथा उसकी चाहत मे बसी युवती आमने-सामने थे।

एक छोटे-से क्षण के लिए प्यार बीच मे लटका रह गया। वे अकेले साथ-साथ थे। इस युवती के अलावा सभी लोग खेतो पर गए हुए थे।

अधखुले दरवाजे की देहरी पर खड़ी मेलमा इल्मारी सेलोने का हाथ थामे अवचेतन मे उसके चुम्बन की प्रतीक्षा करने लगी। धीरे से उसने उसे अपनी बांहों मे लिया और पुरानी हवेली के इस शान्त कोने में उसे चूम लिया। उस

क्षण से वे एक-दूसरे के हो गए। सेल्मा के जीवन की खुशियां गर्मियो के किसी फूल या फसल की तरह सचमुच खिलने लगी थी।

यह क्षण उसके सपने का वास्तवीकृत रूप था।

प्यार ने सेल्मा के दिल पर काबू कर लिया था, वह इसके पूरे अस्तित्व पर छा गया था। उसके जीवन की सबसे बडी इच्छा पूरी हो गयी थी।

यह सेल्मा के जीवन का सबसे महान क्षण था। जब वह रोजाना के काम करने लगी, तब भी लगा, जैसे वह सपने में चल रही हो।

देहरी पर इल्मारी से मुलाकात होने से पहले उसे लग रहा था जैसे वह घर मे अकेली है और पिता की बनाई हुई इस छत के नीचे वह पूरी तरह से सुरक्षित है। पर अब वह अकेली नही थी और उसे किसी भी तरह की असुविधा नही हो रही थी।

जब वह मेज पर चाय रख रही थी तो उसे एक नयी तरह की सनसनी महसूस हुई। यह क्या भावना थी—क्या नवागंतुक उसके लिए स्वीकृति योग्य नही रह गया था? सेल्मा उस परिवर्तन को अनुभव न कर सकी जो उसके भीतर आ गया था। उसका यह सपना दूसरे सपनो मे विलीन होता जा रहा था। बिना अपने सम्बन्धो की पूर्णता पाए, वे अतीत मे विचरण करने लगे थे। वह इल्मारी सेलोने को पसन्द करती थी पर वह अभी उसे अजनबी लग रहा था। जल्दी ही वह कमरे मे वापस आ गया। बैठक के कमरे मे बैठकर दोनो कॉफी पीते हुए तब तक प्यार-भरी बाते करते रहे, जब तक सेल्मा के पिता खेतो से लौट नही आए। शाम तक उनकी बातचीत ने मोस्यो कोल्जास और इल्मारी के बीच सवाद का रूप ले लिया था। इल्मारी अपने मेजबान को अपने भविष्य की योजनाओ और सफलताओ के बारे मे बताता रहा। उसका खयाल था कि सभी लोग उसकी बात को सहानुभूतिपूर्वक सुन रहे हैं और उसके उत्साह के भागीदार हैं।

जो कुछ वह कह रहा था, सबसे ज्यादा सेल्मा ही सुन रही थी। हालांकि साथ ही साथ वह घर का कामकाज भी कर रही थी। वह महसूस कर रही थी कि यह व्यक्ति, जो कुछ ही घंटो पहले उसे इतना प्रिय हो गया था, कितने काम का आदमी था और कितना प्रेमी था···

दिन गुजरने के साथ ही साथ उस पुराने भोजनकक्ष मे भी शाम का झुटपुटा सीधे-सादे ढंग से प्रवेश कर गया था। खाना खत्म होने के बाद नौकरानियो को छुट्टी दे दी गयी और थोड़ी देर बाद ही मेहमान ने भी अपने मेजबान से शुभ रात्रि कहकर विदा ली।

उस शाम सेल्मा अपना दरवाजा अधखुला छोड़कर बाहर चल

का आनन्द ले रही थी। इल्मारी पास से गुजर रहा था। दरवाजे को खुला देख वह भीतर आ गया।

"वह आ रहा है," वह अपने से फुसफुसायी, "अब वह मुझे अपनी बांहों में ले लेगा। तब मैं क्या करूंगी ?" जवाब वह जानती थी और वह उसे ऐसा करने देगी। वह जानती थी कि वह उसी के लिए है। उसे लगा कि कुछ नया और सुकुमार उसके दिल के भीतर जन्म ले रहा है और जब तक वह पूरी तरह से आकार नहीं ले लेता, उसे दबाया नहीं जाना चाहिए।

इल्मारी सेलोने सोचता था कि वह औरतों को समझता है, पर उस शाम उसने महसूस किया कि इस मामले में उसे बहुत कुछ सीखना है। काफी समय से वह सेल्मा की अपनी भावी साथी के रूप में कल्पना करता आ रहा था। आज शाम जब वह सीढ़िया चढ़ रहा था तो वह जानता कि उसके जीवन का वह उदात्त क्षण आ गया है। जिस हवा में वह सांस ले रहा था, लगता था, वह भावना उसमें व्याप्त है। उसे लगा जैसे, वह हवा में उड़ रहा हो।

इसी मनःस्थिति में उसने अपनी प्रियतमा को बाहों में भरकर चूम लिया। वह उसके ऊपर झुकी मुस्करा रही थी। फिर उसने भी इल्मारी को आलिंगन में लिया, इल्मारी ने मुस्कराते हुए कहा, "उस दोस्ती और जादू के नाम जो उस शानदार शाम ने हम पर कर दिया है।"

अपने प्रेमी की बाहों में झूलते हुए सेल्मा अस्फुट स्वरों में कुछ बुदबुदायी, उन वाक्यों का अर्थ कुछ न था। बस जैसे भीतर के आवेग को बाहर निकाल रही हो, जैसे बहुत देर की इन्तजार के बाद मिलने वाली दावत का मजा ले रही हो।

जब इल्मारी वहां से चला गया तो सेल्मा पिछले घण्टों की घटनाओं के सपने लेती, उन पर पुनर्विचार करती, बैठी रही। वह समय उसके लिए कितना प्रबल था। उसे लगा कि उस थोड़े-से अंतराल में वह बहुत बड़ी हो गयी है। पर जैसे ही उसे नींद आयी तो वह उनींदे में भी आश्चर्य कर रही थी कि वह इन सबसे खुद को कितना उदासीन पा रही है।

वहमी

हरमन हेस

जन्म : 1877; **मृत्यु** : 1962.

स्विटजरलैण्ड के साहित्यकार हरमन हेस को सन् 1946 मे नोबेल पुरस्कार मिला। अपनी युवावस्था मे बहुत-से देशो का भ्रमण करने के साथ ही ये सन् 1911 मे भारत मे भी रहे थे। इनके पितामह को भारत के विषय मे धुरन्धर विद्वान समझा जाता था। प्राचीन हिन्दुओ तथा प्राचीन चीनियो के अध्ययन का इनके ऊपर बहुत असर पडा था। इनकी पुस्तको मे कई पूर्णतः गीता-सम्मत है। नये इतिहास के व्यक्तित्व को बहुमत के सुख के नीचे दबाने से इन्हे तीव्र घृणा थी। इनका विश्वास था कि एक व्यक्ति को अपना जीवन शान्तिमय ढंग से व्यतीत करने का पूर्ण अधिकार है। शान्तिप्रिय होने के साथ-साथ ये अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता के उपासक भी थे।

पुरस्कृत कृति : सिद्धार्थ।

इनकी अन्य प्रमुख रचनाएं हैं : पीटर कैमेन्जिण्ड; गर्ट्रुड; अन्टर्म राड; राशल्डे; नल्प; डेमियन; मार्चेन; डास ग्लास्परलेन्स्पायल आदि।

अनुवाद : सुरजीत

मार्टिन सिड ने अपने पिता की स्टडी के दरवाजे पर दस्तक दी। तत्काल एक गुर्राहट उभरी और उसके पिता की आवाज आयी, "अन्दर आ जाओ!"

आम तौर पर मार्टिन अपने पिता के आराम या अध्ययन मे हस्तक्षेप नही करता था। उसका पिता किताबो का कीड़ा था और उसे यह बात बिलकुल पसन्द नही थी कि कोई उसे अध्ययन के समय परेशान करे, किन्तु आज समस्या दूसरी ही थी। कर्नल टाउन सिड ने नौकर को भेजकर उसे बुलाया था, क्योंकि वह उससे किसी महत्त्वपूर्ण मामले पर बातचीत करना चाहता था।

"आओ मार्टिन!" कर्नल सिड ने कहा, "बैठ जाओ!" उसने एक कुर्सी की ओर सकेत किया और मार्टिन चुपचाप कुर्सी पर बैठकर जिज्ञासु दृष्टि से अपने पिता की ओर देखने लगा। उसके चेहरे से प्रकट होता था कि वह इस प्रकार बुलाए जाने पर परेशान है।

"कहिए डैडी!" मार्टिन ने अन्ततः कहा।

मार्टिन सोच रहा था कि कोई विशेष बात अवश्य है जो उसके पिता ने उसे बुलाया है। वह अभी किसी निष्कर्ष पर न पहुंच सका था कि कर्नल की आवाज उसके कानो से टकरायी। "मैं तुमसे एक महत्त्वपूर्ण मामले पर बातचीत करना चाहता हू।" मार्टिन की बायी आंख की पलक जिज्ञासु अन्दाज में कमान का रूप धारण कर गयी। वह मन ही मन सोच रहा था कि गत कई दिनों के अन्तराल मे उससे ऐसी कौन-सी गलती हुई है, जो इस समय सामने आने वाली है।

"तुम इन दिनों स्नेडरा मैक्स टेड से बहुत मिलते रहे हो!" कर्नल की आवाज अधिकारपूर्ण थी।

"जी हा!···वास्तव मे···"मार्टिन ने स्वीकार किया, "पर वह तो एक *ठीक-ठाक लडकी है!"*

"ठीक-ठाक से तुम्हारा क्या मतलब है?" कर्नल ने पूछा।

"मेरा मतलब है, वह अच्छी लडकी है। वह मार्डलिंग नही करती, शो-गर्ल नही है। इसके अतिरिक्त···इस प्रकार की कोई अन्य खराबी भी उसमे नही है।"

"शटअप!" कर्नल गुर्राया, "यह सब बातें मुझे भी पता है कि वह ऐसी

लड़की नही है, क्या मैं उसे या उसकी मां को अच्छी तरह नही जानता ? जो कुछ मैं कहना चाहता हूं, वह यह है कि तुम कुछ समय से उस लड़की के साथ बहुत अधिक दिखायी दे रहे हो !"

"जी हां !" मार्टिन ने कहा, "मैं उसके बहुत समीप रहा हूं, पर अन्य भी बहुत-सी लडकियां मेरे आस-पास मौजूद हैं डैडी !"

"मुझे अन्य लड़कियो मे कोई दिलचस्पी नही है।" कर्नल का स्वर अधिक कठोर हो गया, "मैं केवल तुमसे यह पता करना चाहता हूं कि क्या तुम स्नेडरा से प्रेम करते हो ?"

"मैं इस सम्बन्ध में कुछ नही कह सकता।" मार्टिन ने गुद्दी सहलायी और सिर झुकाकर कहा।

"क्या वह तुमसे प्रेम करती है ?" कर्नल ने पता करना चाहा।

"उसने अब तक तो ऐसी कोई बात नही कही है।"

"इन सब बातो को मस्तिष्क से झटक दो।" कर्नल का मूड खराबी की चरम सीमा तक पहुंच गया, "क्या तुम दोनो मे चुंबन-आलिंगन होता रहा है या इस प्रकार की अन्य बातें ?"

"आखिर इन बातो से आपका क्या मतलब है ? क्या आप मेरी और स्नेडरा की शादी करना चाहते हैं ? मैं जानता हूं कि वह एक अच्छी लडकी है, इसके अतिरिक्त वह एक ऊंचे परिवार से सम्बन्ध रखती है और···"

"मैं तुम्हारी शादी के लिए प्रयत्न कर रहा हूं। इसके प्रतिकूल मैं यह परामर्श देना चाहता हूं कि स्नेडरा से शादी करना मूर्खता है, पागलपन है।"

"वह क्यो डैडी ?" मार्टिन ने विस्मय से पिता की ओर देखा।

"एक शाप का चक्कर है !" कर्नल ने कहा।

"शाप ?" मार्टिन ने विस्मय से पलकें झपकायी।

"आज से दो सौ वर्ष पूर्व टाउन सिड परिवार का एक नवयुवक स्नेडरा के परिवार की एक लड़की के प्रेम मे फंस गया था। उन्होने सभी के विरोध के बावजूद शादी कर ली। बाद में स्थिति खराब हो गयी। लड़के ने विष खाकर आत्महत्या कर ली थी। उसने मृत्यु-शय्या पर यह शाप दिया कि यदि हमारे परिवार के किसी नवयुवक ने स्नेडरा परिवार की किसी लड़की से शादी की, तो उनका गृहस्थ जीवन कटु हो जाएगा। इस सम्बन्ध में एक उदाहरण मिसेज मैक्स टेड से मुझे मिल चुका है।"

"देखिए डैडी !" मार्टिन हाथ उठाकर बोला, "मैं जानता हूं कि कई वर्ष तक आप पुरातत्व विशेषज्ञ रहे हैं, पर मुझे आशा है कि आप इस प्रकार की गलत धारणाओ पर विश्वास नही रखते होंगे। क्या मैं ठीक कह रहा हूं डैडी ?"

"यदि तुम चाहो, तो इसे वहम भी कह सकते हो, पर अतीत में ऐसा हो चुका है। वह लडका बेहद असहायावस्था मे मौत का शिकार हुआ था। इसके अतिरिक्त दुलहिन एक महीने के अन्दर-अन्दर मर गयी थी। संभवतः उसे किसी घोडे ने कुचल दिया था। इसलिए मैं इस मामले में अपनी भावनाओं को स्पष्ट रूप मे प्रकट कर देना चाहता हूं।" कर्नल ने गहरी गंभीरता से कहा।

"और वे भावनाए क्या है डैडी ?"

"तुम्हे इस लड़की स्नेडरा से मिलना-जुलना छोड़ देना चाहिए। यदि तुम उसे बहुत अधिक पसन्द करने लगे, तो सम्भव है, तुम्हारे मस्तिष्क मे उससे शादी करने का उन्माद समा जाए, ऐसा किसी भी अवस्था में नही होना चाहिए। मैं कठोरता से इस बात का विरोध करूगा।"

"लेकिन यह एक अजीब बात है डैडी, कि स्नेडरा की मा का खयाल है कि मैं उसकी बेटी के लिए उपयुक्त लडका नही हू। वह अपनी बेटी से भी यह बात कह चुकी हू, लेकिन मै हैरान हूं। वह कि···" मार्टिन ने मुसकराकर अपना वाक्य अधूरा छोड दिया।

"क्या हैरानी है ?" कर्नल गुर्राया।

"इसका साफ मतलब है कि स्नेडरा मेरे बारे मे अपनी मा से विचार प्रकट कर चुकी है। यदि ऐसा न होता, तो उसकी मा को इतनी अजीब बात कहने की जरूरत क्यो पेश आती ?" मार्टिन ने छत को घूरते हुए उत्तर दिया उसके होठों पर अब तक मुसकराहट थी।

"खैर, मैं इस शाप का प्रभाव इस परिवार पर देखता चला आया हूं। इसलिए मैं गंभीरता से सोच रहा हू कि तुम्हे इस लड़की से दूर रहने का निर्देश दे दूं। मेरी यह बात हृदयगम कर लो कि यह शादी हरगिज नही हो सकती।" यह कहते हुए कर्नल की त्योरिया चढ गयी।

"आपका मतलब है कि मैं स्नेडरा से बिलकुल सम्बन्ध विच्छेद कर लूं ?"

"मैं यह बात तुम्हारी इच्छा पर छोड रहा हूं।" कर्नल ने गहरी गंभीरता से कहा। 'मैं केवल यह चाहता हूं कि इस लडकी के बारे मे गभीरता मत अपनाना, नही तो मैं बहुत नाराज हो जाऊगा। इस सम्बन्ध मे तुम्हें मेरी ओर से किसी प्रकार की सहायता की आशा नही रखनी चाहिए।"

मार्टिन ने एक लम्बी सांस ली और कहा, "बहुत अच्छा, डैडी !"

"तुम अब जा सकते हो।" कर्नल ने कहा, "सावधान रहना !"

मार्टिन पुस्तकालय से बाहर निकला और कुछ देर तक चुपचाप खड़ा सोचता रहा। उसके बाद वह चिन्तातुर अन्दाज मे अपने कमरे की ओर बढ़ गया। कुछ देर बाद उसने रिसीवर उठाया और स्नेडरा का नम्बर मिलाया।

दूसरी ओर से स्नेडरा की मां ने कॉल रिसीव की।

मार्टिन जल्दी से बोला, "क्या स्नेडरा बाहर गयी हुई है, मिसेज मेक्स टेड ?"

"मुझे खेद है कि तुम्हारा अनुमान ठीक है।" मिसेज मेक्स टेड ने बेहद रूखे स्वर में कहा और बातचीत का सिलसिला काट दिया। मार्टिन चुपचाप खड़ा फोन को घूरता रहा। फिर उसने भी रिसीवर रख दिया। कुछ देर बाद उसने अपना हैट उठाया और तेजी से सीढ़िया उतरता हुआ नीचे आया और स्नेडरा के घर की ओर चल दिया। वह इस मामले को साफ करना चाहता था। उसे विस्मय था कि इन बडो के दिमाग मे न जाने कहा से वहम बैठ गया है।

अभी स्नेडरा के घर से आधे रास्ते मे था कि रुक गया। सामने से तेज-तेज चलती हुई एक लड़की आ रही थी। यह लड़की स्नेडरा ही थी। वह निकट आयी तो सीधे उसकी बाहों मे समा गयी। स्नेडरा ने अस्त-व्यस्त सांसो के बीच पूछा, "क्या अभी कुछ देर पहले फोन पर तुम्ही मम्मी से बाते कर रहे थे ?"

"हा, मैंने ही फोन किया था !"

"मेरा भी यही खयाल था। मम्मी टाल रही थी। पर मेरा अनुमान था कि दूसरी ओर से तुम ही बोल रहे हो। मैं इस समय यही पता करने के लिए तुम्हारे घर जा रही थी।"

"सुनो स्नेडी।" मार्टिन ने प्रेम से कहा, "आखिर तुम्हारी मा को यह हरकत करने की क्या जरूरत थी ? आखिर मुझसे क्या गलती हुई है ?"

"कम से कम मेरी जानकारी मे तो ऐसी कोई बात नही है।" स्नेडरा ने कहा, "मेरा खयाल है, यह सब उसी शाप का सिलसिला है। मम्मी को भी उसके बारे मे अचानक कही से पता चला है। क्या तुम इस शाप के बारे मे कुछ जानते हो ?"

"हां ! मुझे पता है !" मार्टिन ने कहा, "दुर्भाग्य से मैं अभी-अभी डैडी के साथ इसी विषय पर बातचीत करके आया हूं, वह भी इस वहम के शिकार हैं। वह पुरातत्व विशेषज्ञ रह चुके हैं।"

"बिलकुल यही बात मेरी मम्मी भी कहती है", स्नेडरा ने कहा, "वह रहस्यपूर्ण विद्याओ मे रुचि रखती है। ज्योतिष विद्या और शुभ नक्षत्रो आदि पर उन्हे बहुत विश्वास है।"

"मेरा भी यही खयाल है।" मार्टिन ने विवशता से कहा, "आओ, कही बैठकर चाय पियें।"

दोनों एक कैफे में जा बैठे। चाय की प्यालियों मे चमचा हिलाते हुए वे दोनो गहरी सोच मे डूबे हुए थे।

"मुझे आशा है कि कम से कम तुम इस वहम को कोई महत्व नहीं दे रही हो।" कुछ देर बाद मार्टिन ने स्नेडरा को सम्बोधित करते हुए पूछा। स्नेडरा ने जल्दी से नजर उठाकर मार्टिन की ओर देखा।

"मेरे बारे में यह खयाल तुम्हारे मस्तिष्क में कैसे आया?" स्नेडरा ने रूखेपन से कहा, "मैं तो इन बातों को सरासर बकवास समझती हूं।"

"खैर!" मार्टिन ने एक लम्बी सांस ली, "जहां तक मेरा खयाल है, तुम्हारी मां मुझे एक चंचल नवयुवक समझती हैं, ठीक है न?" स्नेडरा ने उसकी ओर देखा। उसकी आंखों में असीम प्रेम की भावनाएं करवटें ले रही थीं।

"नहीं मार्टिन, मैंने इस बारे में कभी नहीं सोचा, बस कोई महत्त्वपूर्ण निश्चय करने से पहले तुम्हें चाहिए कि कोई कारनामा दिखाकर यह यकीन दिला दो कि तुम कोई नाकारा लड़के नहीं हो।"

"ओह, तो मानो तुम मेरे बारे में कभी गलतफहमी का शिकार नहीं हुई!" मार्टिन ने निश्चिन्तता की सांस ली, "हमारे घर में तो मेरे डैडी मुझसे ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे मैं उनका बेटा नहीं, बल्कि उनका कोई जूनियर अफसर हूं, वह सदा हुक्म देने के आदी रहे हैं।"

"क्या तुम्हारा अपना दिमाग काम नहीं करता?" स्नेडरा ने बुरा-सा मुंह बनाया।

मार्टिन ने सीधे स्नेडरा की आंखों में झांका और उसकी नजर कुछ देर तक वहीं जमी रही। "तुम ठीक कहती हो! मेरा अपना दिमाग मौजूद है। और मैं सदा उसका ही उपयोग करने का आदी रहा हूं। मैं सोच रहा हूं स्नेडी··· कि क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

स्नेडरा ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। उसकी आंखें सामान्य से अधिक फैली हुई थीं। यह इस बात पर निर्भर है, मार्टिन कि क्या तुम सचमुच मुझसे शादी करना चाहते हो? कहीं ऐसा तो नहीं कि कर्नल और मेरी मम्मी की बात को गलत सिद्ध करने के लिए ही शादी का पक्का इरादा कर बैठे हो?" स्नेडरा बोली।

"फिलहाल तो तुम इन दोनों ही बातों को सामने रख सकती हो।" मार्टिन ने मुसकराकर कहा, "मेरी मुलाकात बहुत-सी लड़कियों से रही है पर उनकी स्थिति मेरी दृष्टि में इतना महत्त्व नहीं रखती। खैर, मैं तुमसे बहुत अधिक प्रभावित हूं स्नेडी!"

यह कहकर मार्टिन कुछ देर चुपचाप सोचता रहा। फिर उसने कहा, "तुम शायद इस बात पर यकीन न करो, पर यह सत्य है, तुमसे शादी की प्रार्थना करने का विचार पहले भी कई बार मेरे मस्तिष्क में आ चुका है। मैंने

अपने इस विचार को प्रकट नही किया, क्योकि मैं फिलहाल स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना चाहता था'''खैर, मुझे आशा है कि तुम मेरे दिमाग मे यह विचार अधिक दृढ कर सकती हो।"

"यदि तुम मुझसे पूछो तो मैं तुमसे यह आशा कर रही हू कि तुम मेरे इरादे को दृढ बनाने मे मेरी मदद करोगे।"

मार्टिन के जाते ही कर्नल भी सीधा स्नेडरा के घर पहुचा। उसकी मां ने कर्नल का गरिमापूर्वक स्वागत किया, वे दोनो बैठक मे जा बैठे।

"मैंने आज लडके को हतोत्साहित किया है !" कर्नल ने कहकहा मारकर कहा, "मुझे यकीन है कि वह अब तुम्हारे घर की ओर नही आएगा।"

"लेकिन कर्नल", मिसेज मैक्स टेड ने गभीरता से कहा, "हम पारिवारिक परम्पराओं के विरुद्ध एक-दूसरे को चाहते हैं, और इस वहम को गलत सिद्ध करना चाहते है, जो एक अवधि से दोनो परिवारो मे दीवार बना हुआ है, मेरा विचार है, हमे अब शादी करने मे देर नही करनी चाहिए।"

"तुम्हारा विचार ठीक है। मैं कल ही एक दावत मे शादी की घोषणा कर दूगा।" कर्नल ने कहा और विजयपूर्ण अन्दाज मे बायी मूंछ को बल देने लगा। उसने प्रेम से मिसेज मैक्स टेड का हाथ थाम लिया और मिसेज मैक्स टेड, जिसके पति का निधन हुए छह वर्ष हो गए थे, उसकी बांहो मे गिर गयी।

भालू

विलियम फाकनर

जन्म: 25 सितम्बर, 1890; मृत्यु : 6 जुलाई, 1961.
अमरीका के विलियम फाकनर को सन् 1949 में नोबेल पुरस्कार मिला। इनको जिन्दगी का बहुत ही गहरा अनुभव था और इसका कारण एकमात्र यही था कि ये विविध प्रकार के कार्यों से जुड़े रहे। सैनिक रहे, किताबों की दुकान में नौकरी की। इसके अलावा बढ़ई, घर में सफेदी करने वाला और पोस्ट मास्टर भी रहे। कई देशों का इन्होंने भ्रमण भी किया। इनकी सभी महत्त्वपूर्ण रचनाएं सन् 1929 से सन् 1939 के बीच के समय की देन है। फ्रांस में इनकी रचनाओं की परख अमरीका से पहले की गई। इन्होंने हालीवुड के लिए भी काम किया था। समकालीन अमरीकी उपन्यास के क्षेत्र में ये शक्तिशाली और कला की दृष्टि से सर्वथा अनूठे माने जाते हैं।

पुरस्कृत कृति : सैन्क्चुअरी।
इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं : दि मारबल फान; सोल्जर्स पे; मास्क्विटोज; दि साउण्ड एण्ड फ्यूरी; एज आई ले डाइंग; ऐब्सलाम-ऐब्सलाम; दि अन् वैन्क्विश्ड; दि हैमलेट आदि।

अनुवाद : हरि

उसकी आयु अब सोलह वर्ष थी । पिछले छह वर्षों से वह शिकारियों के साथ शिकार पर जाता था, उनके सहायक के रूप में । इन छह वर्षों में उसे जंगल और उसके जंगली पशुओ के बारे में सब कुछ ज्ञात हो गया था ।

उसे उस लंगड़े भालू के बारे में भी ज्ञात था, जो 100 वर्ग मील के क्षेत्र में निर्द्वन्द्व विचरा करता था, और उसे कोई भी शिकारी पकड़ नहीं पाया था ।

वह जिन शिकारियो के साथ शिकार पर जाता था, उनमें एक बुजुर्ग भालू के साथ क्या किया जाए, इस बारे में दो मत थे । एक मत के अनुसार, उस भालू को देखकर भी नही मारना चाहिए, और दूसरे मत के अनुसार, उसे देखते ही मार डालना चाहिए; आखिर उसमें और दूसरे भालुओं में क्या फर्क है ? हम जब उन्हे नही छोड़ते, तो उसे ही क्यो बख्शें ?

वह उन सब शिकारियों का सहायक था, और उसका अपना कोई मत न था । वह, बस, उसे देखना-भर चाहता था ।

एक दिन उसे शिकारियो का एक ऐसा दल मिला जो जंगल के गहरे भाग में जाने को तैयार था ।

चारों ओर घना अंधेरा छाया था, मूक और डरावना । ऐसे घने जंगल में अपने हाथ की बन्दूक पर भी कोई भरोसा नहीं किया जा सकता ।

...सहसा, सैम नाम के एक बूढ़े शिकारी ने उसके कान में फुसफुसाकर कहा, "सुनो !" वह सुनने की कोशिश करने लगा । उसे किसी के छिपके हुए, अनिश्चय से भरे डगों की हल्की-सी चाप सुनाई दी । उसे सैम की फुसफुसाहट सुनाई दी, "यह वही लंगड़ा भालू है । वही सुपरिचित गंध ।" बूढ़ा सैम वर्षों से इसी जंगल में शिकार करने आता था और लंगड़े भालू की गंध और उसकी आदतों से भली भांति परिचित था ।

"हां, उसके चलने की हल्की-सी आवाज सुनाई तो दे रही है !"

मगर, बहुत कोशिश करने पर भी उस लंगड़े भालू के दर्शन नहीं हुए थे ।

अगली बार वह उन्हीं दिनों जंगल के इस भीतरी भाग में आया, तब उसके पास अपनी बन्दूक थी ।

इस बार वह अकेला ही था और बहुत तड़के ही कैंप से निकल पड़ा था । उसे बूढ़े सैम की नसीहतें याद थीं, "बेटा, घने जंगल में सबसे बड़ी गु-

मिलती है निर्भय होने से। दूसरी बात यह याद रखना कि जंगल के पशु तुम पर तभी आक्रमण करेंगे, जब तुम उन पर हमला करने के इरादे से वहां गए हो। जंगली पशु न जाने किस अलौकिक शक्ति से आदमी के इन इरादों और डरपोकपन को भाप जाते हैं!"

"'तभी, उसे लगा, जैसे लगड़ा भालू उसे देख रहा है।

वह चुपचाप खडा रहा हाथ में उस बेकार बन्दूक को लिए, जिसका उपयोग, वह जानता था, वह भालू के खिलाफ कभी नही करेगा।

उसकी इस कोशिश के बावजूद कि वह निर्भय रहे, एक अज्ञात भय उसमे समाता जा रहा था। कही भालू ने उस पर हमला कर दिया तो'''?

'''और सहसा, उसे लगा कि भालू जैसे आया था, वैसे ही चला गया।

उसका अज्ञात भय तब न जाने कहा खो गया, जब उसने एक झाडी से निकलते सैम को अपनी ओर आते देखा। उसने सैम को देखकर कहा, "मैं उसे नही देख पाया, सैम! हालांकि, उसने शायद मुझे देख लिया है।"

"शायद नहीं, निश्चित देख लिया है। मैं उसे तुम्हें देखते देख रहा था।"

जून के महीने की एक तपती दोपहर मे आखिर उसने उस लंगड़े भालू को देख ही लिया।

इस बार वह उसे देखने के इरादे से नही आया था। वहा एक हिरण का पीछा करते-करते चला आया था।

दौड़ते-दौड़ते वह थक गया था, और जमीन पर पड़े एक पेड़ पर बैठकर सुस्ता रहा था'''कि वह उसे दिखाई पडा। उसे शान्त और अविचल देखकर उसे लगा, जैसे वह उसे नही, उसकी तस्वीर को देख रहा हो। वह ठीक वैसा ही था, जैसी कल्पना उसने कर रखी थी। उतना ही बड़ा और शात।

वह उसे देख रहा था कि न जाने कब और कैसे, वह चुपचाप न जाने कहां चला गया? चला नहीं गया, विलीन हो गया। अब उसे सिर्फ उसके पदचिह्न दिखाई दे रहे थे।

यही है वह

पार लागरक्विस्त

जन्म . 23 मई, 1891

स्वीडन के लेखक पार लागरक्विस्त को सन् 1951 में नोबेल पुरस्कार मिला। पूरा नाम पार फेबिअन लागरक्विस्त। इनकी कुछ कविताएं सबसे पहले 1912 में प्रकाशित हुई थी। उसी वर्ष इनका पहला उपन्यास 'पीपुल' भी प्रकाशित हुआ था। मुख्यतः ये कविता लिखते थे किन्तु कभी-कभी इन्होंने नाटक भी लिखे हैं। नोबेल पुरस्कार के लिए इनका नाम सर्वप्रथम सन् 1919 में प्रस्तावित किया गया था परन्तु स्वीडिश अकादमी के सदस्य होने के कारण इन्होंने यह अस्वीकार कर दिया था।

पुरस्कृत कृति : ऐग्विश।

इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं : दि मैन विदाउट ए सोल; लेट मैन लिव, बरबस; दि ड्वार्फ; दि एटर्नल स्माइल एण्ड अदर स्टोरीज; दि मैरेज फीस्ट एण्ड अदर स्टोरीज; दि सिबिल आदि।

बरबास बार-बार अपने-आपमे पूछ रहा था कि वह जेरुसलम मे क्यो ठहर गया। विशेषकर उस समय, जब उसे यहा कुछ भी नही करना। वह नगर में एक स्थान से दूसरे स्थान बिना किसी काम के घूम रहा था और कोई भी काम करने की नही सोच पा रहा था। वह यह भी सोच रहा था कि पर्वतो पर उसकी प्रतीक्षा करने वाले साथी चिन्तित होगे कि आखिर उसे इतनी देर क्यो हो रही है। वह क्यो रुका हुआ है, वह खुद नही जानता था।

उस मोटी औरत ने पहले तो सोचा कि बरबास उसकी वजह से ठहरा है, लेकिन वह शीघ्र ही इस नतीजे पर पहुंच गयी कि वह उसकी वजह से शहर मे नही रुका। उसे यह बात कुछ बुरी लगी, लेकिन ईश्वर जानता है, यह पुरुष जाति सदैव अपनी काम और क्षुधा की वासनाएं शान्त कर लेने के बाद और भी कृतघ्न हो जाती है। पता नही, वह क्यो बरबास को इतना अधिक प्यार करने लगी थी कि वह उसका साथ अधिक से अधिक समय के लिए चाहती थी। बरबास उसी के पास सोता था और उसे यह अच्छा लगता था। केवल खाने-पीने-कपड़े का इन्तजाम कर देने-भर से इतना अच्छा पुरुष मिल जाये तो इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है! और बरबास के साथ एक बात यह भी थी कि यदि वह उसकी परवाह नही करता था तो किसी दूसरी औरत की भी चिन्ता उसे नही थी। उसने ऐसा कभी किया ही नही था। और एक हद तक वह इस बात से खुश भी थी कि बरबास उसकी बहुत अधिक परवाह नही करता। कुछ भी हो, फिलहाल तो दोनों का प्रेम सम्बन्ध चल ही रहा था।

लेकिन बरबास जेरुसलम मे पागलो की तरह क्यो घूमता फिर रहा है—यह बात उसकी समझ में बिलकुल नही आ रही थी। दिन-भर वह क्या करता रहता है? कम से कम वह उन व्यक्तियों में तो नही ही था, जो सड़कों पर आवारा की तरह चक्कर लगाते रहते हैं। वह तो उन आदमियों मे से था जो सदैव सक्रिय रहते हैं और खतरो से भरे साहसिक जीवन का स्वागत करते हैं। ऐसे फालतू घूमना उसके स्वभाव के विपरीत था।

नही, जब से वह सूली से बचकर लौटा है, तब से वह सामान्य नही हो

सका। ऐसा लगता है जैसे उसे सचमुच ही फासी लग गयी है। कभी-कभी बरबास को ऐसा अनुभव करने मे भी कठिनाई होती थी कि सचमुच उसे ही सूली पर नही चढा दिया गया है। दोपहर मे जब वे दोनो लेटते थे तो वह औरत बरबास के सम्बन्ध में बार-बार यह बात दोहराती थी कि उसे सूली पर नही चढाया गया है। और इसके बाद वे दोनो खूब हंसते थे।

बरबास कभी-कभी उस शहीद व्यक्ति के शिष्यो के बीच भी चला जाता था। यह तो कोई नही कह सकता कि वह ऐसा जान-बूझकर किया करता था। दरअसल शिष्यों की सख्या इतनी अधिक थी कि वे सडको पर या बाजारो मे अथवा इधर-उधर कही न कही झुण्ड के रूप में मिल ही जाते थे। यदि इस प्रकार के भक्तो से उसकी कभी भेट हो जाती तो वह उनके पास रुक जाता था और शहीद के बारे मे पूछताछ करता। उसकी शिक्षाए जानने की कोशिश करता, हालाकि उसकी समझ में उन शिक्षाओ का एक शब्द भी न आता था—एक-दूसरे से प्रेम करो ?···वह एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता। रास्ते मे उसे दुकानें मिलती। सौदागर मिलते। कारीगर मिलते, जो अपने-अपने स्थानों मे बैठे-बैठे काम कर रहे होते। खोमचे वाले फेरियां लगाते हुए मिलते। इन सामान्य और अतिसाधारण लोगो मे उसकी शिक्षाओ में विश्वास करने वाले बरबास को मिल जाते। इन लोगो को बरबास व्यावसायिक रूप से प्रचार करने वालों से कही अधिक चाहता था। वह हर तरह से शिक्षाओ को समझने की कोशिश करता, लेकिन वह ठीक-ठीक ढग से कुछ भी नही समझ पाता था।

कैसे अजीब थे वे लोग ?

वे लोग यह भी देखते थे कि बरबास उन्ही की तरह प्रभु मे विश्वास नही करता—इसलिए वे उससे सतर्क भी रहते थे। कुछ लोग तो साफ-साफ अपना अविश्वास प्रकट करते हुए बरबास से यह कह भी देते थे कि वे उससे कोई सम्बन्ध नही रखना चाहते। बरबास को ऐसी बातें सुनने की आदत पड़ गयी थी, लेकिन इस बार उसे बहुत बुरा लगा। लोग प्रायः उसके रास्ते मे आड़े न आते थे और यह प्रकट करते कि वे उससे कोई वास्ता नही रखना चाहते। सम्भवतः ऐसा उसकी शक्ल-सूरत की वजह से होता था—या आंख के नीचे छुरे के घाव का जो निशान उसके चेहरे पर था—उसकी वजह से ऐसा होता था—या फिर उसकी गड्ढे मे धंसी आंखो की भयानकता की वजह से लोग दूर ही रहना चाहते थे। बरबास यह सब भली-भाति जानता था, लेकिन उसके बारे मे लोग क्या सोचते हैं, इसकी उसे बहुत कम परवाह रहती थी।

अभी तक इस तरह की बातें सुनकर उसे किसी प्रकार का दु.ख नही होता था, लेकिन अब स्थिति दूसरी थी।

वे लोग अपने धार्मिक विश्वासो द्वारा पारस्परिक एकता और जीवन-

यापन सम्बन्धी सामजस्य बनाये रखते थे। वे अपने बीच किसी ऐसे व्यक्ति को न आने देते थे, जो उनके सम्प्रदाय से भिन्न हो। उनका अपना एक पारस्परिक भ्रातृत्व भाव था और उसके प्रसार के लिए वे प्रीतिभोजों का भी आयोजन करते रहते थे। यद्यपि उनका सिद्धान्त सबको प्रेम करना सिखाता था, लेकिन यह कहना कठिन था कि वे अपने समूह से बाहर अन्य किसी को भी प्यार करते थे।

बरबास को उनके प्रीतिभोजो मे भाग लेने की तनिक भी इच्छा न होती थी। उसे अपनी स्वतन्त्रता मे बाधा डालने वाले विचार तक से अरुचि थी। वह अपने आपको किसी भी चीज से जरा-सा भी बाधना नही चाहता था। वह अपनी स्वतन्त्रता का सबसे बडा प्रेमी था।

तब भी वह उनसे किसी न किसी प्रकार बात करने का समय निकाल ही लेता था।

कभी-कभी वह यह दिखलाने का बहाना भी करता था कि वह भी उनके सम्प्रदाय मे दीक्षित हो जाना चाहता है, लेकिन उसकी शर्त यही रहती थी कि वह सम्प्रदाय मे दीक्षित होने से पहले उनके धार्मिक सिद्धान्तो को समझ लेना चाहता है। यह बाते सुनकर वे प्रकटतः खुश होते, लेकिन उनका अन्तर हर्षित नही होता था। यह बड़ी अजीब बात थी। वे अपने-आपको धिक्कारते और कहते थे कि वे बरबास से आगे बढने पर भी क्यो नही प्रसन्न होते है—वे अपने सम्प्रदाय की सख्या मे वृद्धि करने वाले एक व्यक्ति के आगमन पर हर्षित क्यो नही होते—जितना उनको होना चाहिए। इसका क्या कारण हो सकता है? लेकिन बरबास इसका कारण जानता था। वह अचानक उनके बीच से उठता और तेजी से एक ओर चला जाता। उसके चेहरे के घाव का निशान गहरा लाल हो जाता था।

विश्वास! उस आदमी पर वह कैसे विश्वास कर ले, जिसे उसने अपनी आंखो से सूली पर लटका हुआ देखा है। वह शरीर, जो बहुत पहले प्राणहीन हो चुका है, जिसे अपनी आखो से उसने मरते हुए देखा है, उसकी बातों पर वह कैसे विश्वास कर ले। यह सब कपोल कल्पना के अतिरिक्त कुछ भी नही था। ऐसा कोई व्यक्ति नही था—जो मृत होकर जीवित हो उठा हो—वह चाहे उनका 'प्रभु' हो अथवा अन्य कोई। लोग कहते हैं, उन्होने कहा था:

"इस आदमी को छोड दो और मुझे इसकी जगह सूली दे दो।"

स्पष्ट है कि वह ईश्वर पुत्र नही था।

उसने अपनी शक्तियो का सर्वाधिक असाधारण ढग से प्रयोग किया था। यह प्रयोग ऐसा नही था, जिसे शक्तियों का प्रयोग कहा जा सके, बल्कि ऐसा था, जिसमे अन्य व्यक्ति जैसा चाहे, वैसा सोच सके और उसके सम्बन्ध मे

अपनी धारणा बना सकें। वे हस्तक्षेप करने से बराबर बचे थे, यद्यपि हुआ सब कुछ वैसा ही था, जैसा उन्होने चाहा था। यह बात इसी मे प्रकट थी कि वे बरवास के स्थान पर सूली पर चढ गये थे।

वे लोग कहते थे कि प्रभु ने उन लोगों के लिए अपने प्राणो का विसर्जन किया है। ऐसा हो सकता है, लेकिन बरवास के ही स्थान पर वे सूली पर चढे—इससे कोई इन्कार नही कर सकता। वस्तुतः बरवास उन लोगो की अपेक्षा प्रभु के अधिक समीप था। वह प्रभु से बिलकुल दूसरी तरह से सम्बद्ध था, हालाकि वे लोग कहते थे कि उससे वे कोई सम्बन्ध नही रखना चाहते। लेकिन कोई यह भी तो कह सकता है कि उसे कष्ट भोगने के लिए स्वतन्त्र छोड दिया गया। असलियत यह थी कि वही सबमे चुना हुआ व्यक्ति था। उसे छोड दिया गया—देवपुत्र की आज्ञा से—क्योकि वह ऐसा ही चाहता था, यद्यपि उन लोगो को कोई सन्देह नही हुआ।

लेकिन उसे उनके 'भ्रातृत्व' और 'प्रीतिभोजो' की जरा भी परवाह न थी। उसका अपना एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व था। वह उन लोगो की भांति दास न था। वह उन लोगो मे न था जो गहरी सासें भरते-निकालते जायं और उनकी प्रार्थना करते जायें।

नही, वह मरना नही चाहता था। वह मौत को नही मानता था और सोचता था कि वह शायद अमर रहेगा। यही कारण है कि शायद वह सूली तक जाकर भी नहीं मरा। नही तो उसे छोड़ने की ही क्या आवश्यकता थी? एक क्षण के लिए यदि यह मान भी लिया जाए कि सूली पर चढ़ा वह व्यक्ति देवपुत्र ही था—तब भी उसे यह कैसे मालूम हो गया कि वह न तो मरना चाहता है और न कष्ट ही भोगना चाहता है। और इस प्रकार उसने उसके स्थान पर अपने प्राण दे दिए और सूली का कष्ट भी झेला। इतने पर वह मौत से समझौता करने के लिए तैयार न था।

हां, वह सचमुच देवपुत्र ही रहा होगा, क्योकि उसने उसके स्थान पर अपनी जान दी थी। यह बात केवल उसी के लिए कही गयी थी।

जेरुसलम की एक बडी सड़क से गली में जाते समय बरवास के मस्तिष्क मे तेजी के साथ ऐसे विचार घूम रहे थे। कुछ ही देर पहले कुछ लोगो ने स्पष्ट शब्दों में उससे यह कहा कि वे उसे पसन्द नही करते और न यही चाहते हैं कि बरवास उनके बीच आया-जाया करे।

बरवास ने उन लोगों से बिलकुल ही न मिलने का निश्चय कर लिया था। लेकिन दूसरे दिन बरवास उधर से जब पुनः गुजरा तो उन्ही लोगों ने उससे यह पूछा कि उनके धर्म की ऐसी कौन-सी बात है, जो उसकी समझ मे

नहीं आती। उन लोगों ने यह स्पष्ट कर दिया कि उसके अपमान के लिए वे दुखी हैं और उन्हें इसका भी खेद है कि वे लोग उसका वैसा स्वागत न कर सके, जैसा उन्हें करना चाहिए। उन्होंने इस पर भी दुख प्रकट किया कि वे अभी तक उसे वह ज्ञान नहीं दे पाये हैं, जिसके लिए वह इतना प्यासा है।

बरबास अपने कंधों को उचकाते हुए यह कहना ही चाहता था कि उसके लिए सभी कुछ रहस्यमय है और वस्तुतः अब उस रहस्य के तथ्यों को भी जानने के लिए अधिक उत्सुक नहीं है, लेकिन वह कह बैठा कि उसे मरे व्यक्ति के जीवित हो जाने की कल्पना में विश्वास नहीं है। उसकी समझ में ही नहीं आता—वह कैसे यह बात मान ले।

वे लोग कुम्हार के चाक पर बैठे मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए उसे घुमा रहे थे। उन्होंने अपनी दृष्टि उस चाक पर से उठाकर उस पर डाली। इसके बाद उनमें जो व्यक्ति सबसे अधिक बुजुर्ग था, वह बोला, "क्या तुम ऐसे व्यक्ति से मिलना चाहोगे—जो मर गया था, लेकिन बाद में प्रभु ने उसे जीवित कर दिया? यदि तुम चाहो तो उस व्यक्ति से मिलाया जा सकता है, लेकिन यह मुलाकात संध्या के बाद ही सकेगी। इसलिए अपना काम खत्म करने के बाद ही उस व्यक्ति के पास चल सकेंगे। वह आदमी नगर से कुछ दूर एक स्थान पर रहता है।"

बरबास अब भयभीत हो गया। उसे इसकी आशा न थी। वह समझता था कि वे लोग तर्क द्वारा उसे समझाने की चेष्टा करेंगे। यह सच है कि वह घटना शिष्यों की कल्पना से अधिक कुछ नहीं है। वह व्यक्ति वस्तुतः मरा ही नहीं होगा। फिर भी वह मिलने से डर रहा था।

जिस व्यक्ति से इन दोनों को मिलना था, वह पहाड़ी ढाल पर बसे एक गांव के छोर पर रहता था। जब कुम्हार युवक ने उस व्यक्ति की झोंपड़ी के दरवाजे की चिक उठायी तो वह व्यक्ति कुर्सी पर बैठा दरवाजे से बाहर की ओर देख रहा था, लेकिन ऐसा लगता था कि जब तक युवक ने अपने मधुर कंठ से नमस्कार नहीं किया, तब तक उसने इन लोगों में से किसी को भी नहीं देखा। युवक ने अपने आने का कारण बतलाते हुए अपनी बस्ती के मुखिया का सन्देश सुनाया। सन्देश सुनने के बाद युवक तथा बरबास को उस व्यक्ति ने बैठ जाने का संकेत किया।

बरबास उस व्यक्ति के ठीक सामने बैठा और इसके बाद उसने उस व्यक्ति का चेहरा-मोहरा भली भांति देखने का प्रयत्न किया। उस व्यक्ति का वर्ण गेहुंआ था और चेहरा इतना कठोर था जैसे हड्डी। खाल बिलकुल चिपकी हुई थी। बरबास ने कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसे चेहरे वाले व्यक्ति से उसकी जिन्दगी में कभी मुलाकात होगी। उसके मुंह पर एक भी भाव न था। चेहरा ऐसा

उजाड़ दिखलायी दे रहा था, जैसे रेगिस्तान हो।

युवक के प्रश्न का उत्तर देते हुए उस व्यक्ति ने कहा, "यह बिलकुल सत्य है कि मैं एक बार मर चुका हूं, लेकिन प्रभु ने कृपा कर मुझे पुनः जीवन दान दिया। मैं चार दिन और चार रात कब्र में दबा पड़ा रहा, लेकिन मेरी शारीरिक और मानसिक शक्तियों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इससे महाप्रभु ने अपनी असीम शक्ति का परिचय दे दिया और उनका यश चारों ओर फैल गया। इससे प्रभु ने अपने देवपुत्र होने की बात भी सिद्ध कर दी।" वह व्यक्ति मन्द स्वर में बिना किसी उतार-चढ़ाव के बोल रहा था। जितनी देर वह बोला, अपनी पीली और बिना चमक वाली आखों से लगातार बरबास की ओर देखता रहा।

जब उस व्यक्ति ने अपनी बात कह दी, तब वे लोग थोडी देर अपने प्रभु और भगवान् की बातें करते बैठे रहे। इसके बाद वह युवक उठकर खड़ा हो गया और उसने जाने की आज्ञा मांगी। उस युवक के माता-पिता भी उसी गांव मे रहते थे। वह उन्ही से मिलने जा रहा था।

बरबास यह नहीं चाहता था कि वह उस आदमी के साथ अकेला रह जाये, लेकिन वह ऐसा कोई बहाना न खोज सका, जिसकी वजह से वह तुरन्त विदा ले सके।

वह आदमी थोड़ी देर तो कुछ भी न बोला, लेकिन थोडी देर बाद उससे पूछा, "क्या तुम्हें उनके देवपुत्र होने मे विश्वास है?" पहले तो बरबास उत्तर देने में थोडा-सा हिचकिचाया, लेकिन बाद मे उसने इनकार कर दिया। वह उस व्यक्ति से झूठ नहीं बोलना चाहता था।

बरबास के उत्तर से वह व्यक्ति तनिक भी रुष्ट नही हुआ और थोड़ा-सा सिर हिलाते हुए बोला :

"नही? हा, ऐसे बहुत-से लोग है, जो विश्वास नही करते। मेरी मां भी इस बात मे विश्वास नही करती। वह कल तक तो यहां थी, लेकिन प्रभु ने मुझे मृत से जीवित कर दिया और ऐसा इसलिए किया, जिससे मैं उनका प्रमाण बन सकूं।"

बरबास ने कहा, "ऐसी अवस्था मे मेरे लिए प्रभु मे विश्वास करना बिल्कुल स्वाभाविक है। यही नही, मुझे सदैव जीवन दान प्राप्त करने के लिए उनका कृतज्ञ होना चाहिए।"

उस आदमी ने उत्तर दिया, "मैं इसके लिए अपने प्रभु को प्रतिदिन धन्यवाद देता हूं—इसलिए कि उसने मुझे मृतकों के संसार से बचा लिया।"

"मृतकों का संसार?" बरबास के मुंह से अकस्मात् निकल पड़ा। उसका स्वर कांप उठा था, यह स्वयं उससे भी छिपा न था। "मृतकों का संसार?…

वह कैसा है ? तुम तो वहा हो आये हो । बताओ, वहा कैसा लगता है !"

"क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें मृतको के ससार के सम्बन्ध मे कुछ बताऊं ? तो सुनो, सच्ची बात यह है कि मै कुछ भी नही बतला सकता। मृतकों के संसार में कुछ भी नही होता।"

बरवास अब भी केवल उसकी ओर घूरता ही रहा। उसे वह चेहरा बडा डरावना प्रतीत हो रहा था। लेकिन वह अपनी दृष्टि उस व्यक्ति पर से हटा नही सका।

कमरे मे क्रमशः अंधेरा बढता जा रहा था। वह व्यक्ति उठा। उसने दीया जलाया। इसके बाद वह रोटी और नमक उठा लाया। उसने मेज पर दोनो के बीच नमक की कटोरी और रोटियों की तश्तरी रख दी। रोटी का एक टुकडा तोडकर उसे नमक से स्पर्श कराते हुए उस आदमी ने बरबास से भी वैसा ही करने को कहा। बरवास मना तो न कर सका लेकिन रोटी का टुकडा तोड़ते समय उसके हाथ काप रहे थे। वे दीये के मद्धिम प्रकाश मे बैठे नमक के साथ रोटी खाते रहे।

बरवास ने देखा कि वह आदमी भोजन मे इस बात का कोई ध्यान नही रखता कि वह किसे अपने साथ खिला रहा है। उसे मनुष्य-मनुष्य के बीच अन्तर करना नही आता।—जैसा कि जेरुसलम की कुम्हार गली में रहने वाले उसके बन्धु-बाधवों को बरबास ने करते देखा था। लेकिन जब उसने देखा कि उस आदमी की पीली मृत उगलियो मे छुआ हुआ भोजन वह भी कर रहा है तो उसको लगा जैसे सडी लाश की बदबू उसके मुह मे भर गयी है।

जब भोजन समाप्त हो गया तो वह आदमी दरवाजे तक बरबास को पहुचाने आया और उससे शान्तिपूर्ण अपने निवास-स्थान तक जाने के लिए कह-कर विदा कर गया। बरबास ने मन्द स्वर मे कुनमुनाकर कुछ कहा और जल्दी से उमसे विदा लेकर चल दिया। वह तेज कदम बढाता हुआ अंधेरे में जाकर खो गया और पहाडी ढाल पर से नीचे उतरकर शहर में आ गया। लेकिन इस बीच उसके मस्तिष्क मे तरह-तरह के विचार बराबर चक्कर काट रहे थे।

जब वह अपने डेरे पर पहुच गया तो उसने मोटी औरत को अपने सीने से लगा लिया। उसका यह व्यवहार देखकर वह औरत विस्मय मुग्ध हो गयी। उसे बरबास के इस व्यवहार का कोई कारण मालूम नही था। लेकिन उस रात उस औरत ने महसूस किया कि बरबास को नियन्त्रित करने की भी आवश्यकता है। और यदि कोई बरबास को नियन्त्रित कर सकता है—उसे अपने हाथ मे ले सकता है तो केवल वही है। वह रात-भर अपने प्रेम-विभोर सपनों में ही डूबी रही। वह पुनः तरुणी हो गयी थी और कोई उससे प्रेम करता था।•••

दूसरे दिन बरबास जेरुसलम के दक्षिणी भाग मे नही गया और अपने-आपको कुम्हार गली की ओर जाने से भी बचाता रहा। लेकिन शहर के उत्तरी भाग मे उसे एक आदमी ने पकड़ ही लिया। वह उसकी निगाहो से बच न सका। उसने बरबास से उसके पास आकर पिछले दिन के अनुभव के बारे मे प्रश्न किया। बरबास ने कह दिया, "मुझे इसमे सन्देह है कि वह व्यक्ति मर गया था और उसे प्रभु ने पुन. जीवन दे दिया।" उस व्यक्ति का चेहरा बरबास के इस उत्तर के कारण राख की तरह सफेद हो गया। अपने प्रभु के अपमान का यह धक्का उसे बड़े जोर से लगा था। कुम्हार एकदम स्तब्ध रह गया था। बरबास ने उसकी तरफ अपनी पीठ करते हुए मुह फेर लिया और उसे चला जाने दिया।

ऐसी प्रतिक्रिया केवल कुम्हार गली मे ही नही, तेलियों, चमारो तथा बुनकरो के मुहल्लो मे भी अवश्य हुई होगी, क्योकि कुछ दिन बाद जब वह उन मुहल्लो मे गया तो उससे किसी ने सीधे मुह बात नही की। सबने अपनी मुख-मुद्रा से स्पष्टत: अविश्वास का भाव प्रकट कर दिया। एक आदमी ने तो उससे यहां तक कह दिया कि अब वह उन लोगों के बीच आना बन्द कर दे। बरबास वहा चुपचाप खड़ा रहा। जिस आदमी ने उससे यह सब कहा वह गजा और बूढा था। उसका चेहरा एकदम लाल था। बरबास उसे जानता नही था। उसे यह भी ज्ञान न था कि वह कौन हो सकता है। इसके पहले बरबास ने उस बूढ़े को पहले कभी नही देखा था।

बरबास समझ गया कि उसने इन लोगों को रुष्ट कर दिया है और इन सब का भाव अब उसके प्रति बिलकुल बदल गया है। वह जहां जाता, वहा कठोर मुखमुद्राए और झिड़कियां उसका स्वागत करती। और एक दिन ऐसा हुआ कि यह खबर चारो ओर दावाग्नि की भाति फैल गयी कि यही वह व्यक्ति है जिसके स्थान पर देवपुत्र को फासी दी गयी थी। यही है वह! यही है वह !!

रोष-भरी कनखियों से उसे देखा जाता। हर एक की दृष्टि से घृणा बरसती। लोगो का क्रोध इतना बढ गया था कि बरबास के सामने न होने पर भी वह कम न होता।

हत्यारे

अर्नेस्ट हेमिंग्वे

जन्म : 21 जुलाई, 1899; **मृत्यु :** 2 जुलाई, 1961.

अमेरिकी साहित्यकार अर्नेस्ट हेमिंग्वे को सन् 1954 में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। इन्होंने अनेक कहानियों तथा उपन्यासों की रचना की है। अपनी रचनाओं में इन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को ही समेटा है। इनकी कई रचनाओं पर फिल्में भी बनी हैं। कुछ समय तक संवाददाता के रूप में कार्य करने के अतिरिक्त करीब आठ साल तक मछली मारने का कार्य भी किया और इस काल के अनुभवों को ही इन्होंने अपने सर्वाधिक चर्चित-प्रशंसित और पुरस्कृत उपन्यास में चित्रित किया। कहानी कहने की कला पर इनका प्रबल अधिकार था, जिसने समकालीन शैली को भी प्रभावित किया।

पुरस्कृत कृति : 'दि ओल्ड मैन एंड दि सी'।

इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं : इन अवर टाइम; दि सन आल्सो राइजिज; मेन विदाउट वीमेन; ए फेयरवेल टू आर्म्स; डैथ इन दि आफ्टरनून; विनर टेक नथिंग; ग्रीन हिल्स आफ अफ्रीका; टु हैव एण्ड हैव नाट; फार हूम दि बैल टोल्स आदि।

अनुवाद : तारा राय

हेनरी के ढाबे का दरवाजा खुला और दो आदमी अन्दर आये। वे काउण्टर पर जा बैठे।

"आप लोग क्या खायेंगे…?" जार्ज ने उनसे पूछा।

"मुझे नही मालूम।" उनमें से एक ने कहा, "तुम क्या खाना चाहते हो एल ?"

"मुझे नही मालूम।" एल ने कहा, "मैं नही जानता कि मैं क्या खाना चाहता हूं।"

बाहर अंधेरा छा रहा था। खिड़की के बाहर से सड़क की रोशनी भीतर आ रही थी। काउण्टर पर बैठे दोनो आदमी 'मीनू' देखने लगे। काउण्टर की दूसरी तरफ से निक एडम्ज उनको देख रहा था। जब वे अन्दर आये थे, तब वह जार्ज से बातें कर रहा था।

"मुझे तंदूरी पोर्क, सेव की चटनी और आलू का भरता चाहिए।" पहले आदमी ने कहा।

"वह अभी तैयार नही है…"

"फिर तुमने उसे फेहरिस्त मे क्यो डाल रखा है…?"

"वह रात के खाने के लिए है…" जार्ज ने समझाया।

"आपको शाम छह बजे के बाद वह मिल सकता है।" जार्ज ने काउण्टर के पीछे दीवार पर लगी घडी को देखा।

"पांच बजे हैं…"

"लेकिन घड़ी तो पांच बजकर बीस मिनट बता रही है…" दूसरे आदमी ने कहा।

"वह बीस मिनट तेज है।"

"गोली मारो घड़ी को, घड़ी जाये जहन्नुम मे…" पहले आदमी ने कहा, "तुम्हारे पास खाने को क्या है…?"

"मैं आपको किसी भी तरह का सैंडविच दे सकता हूं", जार्ज ने कहा, "आप अण्डे और हैम, अण्डे और बेकन, कलेजी और बेकन या स्टेक खा सकते हैं…"

मलाई और आलू का भरता दे दो।"

"मुझे चिकन-क्राकेट, हरी मटर, मलाई और आलू का भरता दे दो।"

"वह रात का खाना है, अभी नहीं मिल सकता···।"

"जो भी हम चाहे, वही रात का खाना है, अंय ! यही है तुम्हारा काम करने का तरीका !"

"मैं आपको हैम और अण्डे, बेकन और अण्डे, कलेजी···दे सकता हूं···।"

"मैं हैम और अण्डे लूंगा···" एल ने कहा। वह ऊंची टोपी और काला ओवरकोट पहने हुए था, जिसमें ऊपर छाती तक बटन लगे हुए थे। उसका चेहरा छोटा और सफेद था और उसके होंठ भिंचे हुए थे। वह रेशमी मफलर और दस्ताने पहने था।

"मुझे बेकन और अण्डे दे दो।" दूसरे आदमी ने कहा। वह कद में एल के बराबर ही रहा होगा। उनके चेहरों में फर्क था, लेकिन वे जुडवां भाइयों की तरह कपड़े पहने हुए थे। दोनों के कोट कुछ ज्यादा ही कसे थे। वे आगे झुककर बैठे थे, कोहनियों को काउण्टर पर टेके हुए।

"पीने के लिए कुछ है···?" एल ने पूछा।

"सिल्वर बियर, बीवा और जिंजर-एल है।" जार्ज बोला।

"मेरा मतलब तुम्हारे पास पीने के लिए कुछ है ?"

"वही, जो मैंने कहा···।"

"यह गर्म शहर है।" दूसरे ने कहा, "इसे क्या कहते हैं ?"

"समिट।"

"क्या कभी नाम सुना है ?" एल ने अपने दोस्त से पूछा।

"नहीं।" दोस्त ने कहा।

"तुम लोग रात को यहां क्या करते हो ?" एल ने पूछा।

"सब लोग खाना खाते हैं।" उसके मित्र ने कहा, "सब यहां आकर शानदार खाना खाते हैं।"

"ठीक कहते हैं···।" जार्ज ने कहा।

"तो तुम सोचते हो कि यह ठीक है ?" एल ने जार्ज से पूछा।

"बिलकुल···।"

"तुम काफी तेज लड़के नजर आते हो, है न ?"

"बिलकुल···।"

"लेकिन तुम तेज नहीं हो···" दूसरे छोटे-से आदमी ने कहा, "है क्या एल··· ?"

"यह बेवकूफ है···।" एल ने कहा। वह निक की ओर मुखातिब हुआ, "तुम्हारा नाम क्या है ?"

"एडम्ज।"

"एक और तेज लड़का !" एल ने कहा, "यह भी काफी अक्लमंद दिखाई देता है। है न मैक्स ?"

"यह शहर ही अक्लमद लड़को से भरा पड़ा है।" मैक्स बोला।

जार्ज ने दोनों प्याले, एक हैम और अण्डे का और दूसरा बेकन और अण्डे का मेज पर रख दिये। उसने अलग से दो प्लेट तले हुए आलू भी रख दिये और रसोई का दरवाजा बन्द कर दिया।

"इनमे से तुम्हारा कौन-सा है ?" मैक्स ने एल से पूछा।

"तुम्हें याद नही ?"

"हैम और अण्डे।"

"मैं भी काफी तेज लडका हू।" मैक्स ने कहा। उसने आगे झुककर हैम और अण्डे ले लिये। दोनो ने दस्ताने पहनकर ही खाया। जार्ज उनको खाते हुए देखता रहा।

"तुम इधर क्या देख रहे हो ?" मैक्स ने जार्ज की ओर देखते हुए कहा।

"कुछ नही।"

"तुमने बिलकुल देखा। तुम मेरी ओर ही देख रहे थे।"

"शायद वह यूं ही मजाक कर रहा था मैक्स···" एल बोला।

जार्ज हसा।

"तुम्हे हंसने की कोई जरूरत नही है।" मैक्स ने उससे कहा, "तुम्हे जरा भी हंसने की जरूरत नही है, समझे।"

"अच्छा।" जार्ज ने कहा।

"तो वह सोच रहा है कि यह सब ठीक है···।" मैक्स एल की ओर मुड़-कर बोला, "वह सोचता है कि यह सब बिलकुल ठीक है, यह भी खूब बात हुई।"

"फिलास्फर दिखाई देता है···कुछ न कुछ सोचता ही रहता है···" एल ने कहा। वे खाने में लगे रहे।

"अच्छा, उस तेज लड़के का क्या नाम है ?" एल ने मैक्स से पूछा।

"ए लड़के।" मैक्स ने निक से कहा, "तुम अपने दोस्त को लेकर काउण्टर के दूसरी तरफ चले जाओ।"

"क्या इरादा है ?" निक ने पूछा।

"कोई इरादा नही है।"

"लड़के, तुम पीछे चले जाओ तो अच्छा है।" एल ने कहा। निक उठकर काउन्टर के दूसरी तरफ चला गया।

"क्या करने वाले हो ?" जार्ज ने पूछा।

"तुमसे क्या मतलब ?" एल ने कहा, "वहां रसोई मे कौन है···?"

"एक हब्शी।"

"हब्शी से तुम्हारा क्या मतलब।"

"वह हब्शी खाना पकाता है।"

"उससे कहो, अन्दर आये।"

"क्या बात है ?"

"उससे कहो अन्दर आये।"

"क्या तुम्हे पता है कि तुम लोग कहां हो ?"

"हम लोग अच्छी तरह जानते हैं कि हम कहा हैं।" मैक्स नाम के आदमी ने कहा, "क्या हम लोग तुम्हें बेवकूफ दिखाई देते हैं ?"

"तुम बेवकूफी की बातें करते हो..." एल ने उससे कहा।

"आखिर तुम इससे इतनी बहस क्यों कर रहे हो ?"

"सुनो", उसने जार्ज से कहा, "उस हब्शी से कहो, यहां आये।"

"तुम उसका क्या करोगे ?"

"कुछ नहीं। जरा दिमाग से काम लो अक्लमन्द लड़के, हब्शी को हम क्या करेंगे ?"

जार्ज ने रसोई के दरवाजे का पट थोड़ा-सा खोला।

"सैम", उसने पुकारा, "एक मिनट इधर आना।" रसोई का दरवाजा खुला और हब्शी अन्दर आया।

"क्या है ?" उसने पूछा। मेज पर बैठे दोनों आदमियों ने उसे देखा।

"अच्छा हब्शी, तुम यहीं खड़े रहो।" एल ने कहा। हब्शी सैम अपनी एप्रन पहने खड़ा-खड़ा काउण्टर पर बैठे दोनों लोगों को देखता रहा। "अच्छा साहब !" वह बोला। एल अपने स्टूल पर से उतरा।

"हब्शी और उस लड़के के साथ मैं रसोई में जा रहा हूं।" रसोई में वापस जा वह बोला, "हब्शी, तुम भी जाओ उसके साथ।"

छोटा आदमी निक और खानसामा सैम के पीछे रसोई में चले गये। दरवाजा उनके पीछे बन्द हो गया। मैक्स जार्ज के सामने काउण्टर पर बैठा रहा। वह जार्ज की ओर नहीं, बल्कि उस आईने की ओर देख रहा था, जो काउण्टर के पीछे लगा हुआ था।

"क्यों, लड़के," शीशे में देखता हुआ मैक्स बोला, "तुम कुछ बोलते क्यों नहीं ?"

"यह सब क्या हो रहा है ?"

"अरे एल !" मैक्स ने पुकारा, "यह लड़का जानना चाहता है कि यह सब क्या हो रहा है।"

"तो तुम बताते क्यों नहीं ?" एल रसोई से बोला।

"तुम क्या सोचते हो, यह क्या हो रहा है ?"

"मुझे नही मालूम।"

"पर क्या सोचते हो ?" मैक्स बोलते हुए पूरे वक्त शीशे मे देखता रहा था।

"कह नही सकता।"

"अरे एल ! यह कहता है कि वह कह नही सकता कि क्या हो रहा है।"

"मैं सब सुन रहा हूं।" एल ने रसोई मे से कहा। उसने एक बोतल से उस छोटी-सी खिड़की को खोल डाला था, जिसमें से बर्तन रसोई मे ले जाये जाते थे।

"सुनो, लड़के !" उसने जार्ज से कहा, "जरा और दूर जाकर खड़े हो जाओ। तुम जरा बायें हटकर खड़े हो जाओ मैक्स !" वह किसी फोटोग्राफर की मुद्रा मे बात कर रहा था, मानो ग्रुप-फोटो खीचने की तैयारी कर रहा हो।

"मुझसे बोलो लड़के !" मैक्स ने कहा, "तुम क्या सोचते हो कि यहां क्या होने वाला है ?"

जार्ज कुछ नही बोला।

"मैं तुम्हें बताता हू," मैक्स बोला, "हम लोग एक स्वीडी को मारने जा रहे हैं। क्या तुम एडरसन नाम के किसी स्वीडी को जानते हो ?"

"हा, वह रोज रात को यहां खाना खाने आता है, है न···?"

"कभी-कभी आता है।"

"वह यहां छह बजे आता है, है न ?"

"हां, यदि वह आता है।"

"वह तो हम जानते हैं।" मैक्स बोला, "कुछ दूसरी बातें करो। क्या कभी सिनेमा देखने जाते हो ?"

"कभी-कभार।"

"तुम्हे सिनेमा अधिक देखना चाहिए। तुम्हारे जैसे होशियार लड़के के लिए सिनेमा अच्छी चीज है।"

"तुम लोग बूढे एंडरसन को क्यो मारने जा रहे हो ? उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?"

"हमारा कुछ बिगाड़ने का उसे मौका ही नही मिला। उसने हमें देखा तक नही।"

"और वह हमे सिर्फ पहली बार और आखिरी बार देखेगा।" एल ने रसोई से कहा।

"तब तुम लोग उसे क्यो मारने जा रहे हो ?" जार्ज ने पूछा।

"हम लोग उसे एक दोस्त के लिए मार रहे हैं···एक दोस्त पर एहसान करने के लिए।"

"चुप रहो !" एल रसोई से बोला, "तुम बहुत ज्यादा बात करते हो।"

"पर मुझे इस लड़के का मन बहलाना है, क्यों लड़के ?"

"तुम हद से ज्यादा बातें करते हो।" एल बोला, "हब्शी और यह लड़का तो अपने-आप ही खुश हैं।" जार्ज ने घड़ी की ओर देखा।

"कोई अगर आये तो उससे कह देना कि खानसामा छुट्टी पर है, और अगर वह ज्यादा इसरार करने लगे तो कह देना कि तुम्हीं खाना पका दोगे। समझे लड़के।"

"अच्छी बात है।" जार्ज बोला, "पर उसके बाद तुम हमारे साथ क्या करोगे ?"

"कह नहीं सकते···" मैक्स ने कहा, "यह तो एक ऐसी बात है, जो पहले से नहीं कही जा सकती।" जार्ज ने घड़ी की ओर देखा। सवा छह बज रहे थे। सड़क की ओर का दरवाजा खुला, कोई मोटर चलाने वाला अन्दर आया।

"हैलो जार्ज," वह बोला, "मुझे खाना मिलेगा···?"

"सैम कहीं गया है।" जार्ज ने कहा, "वह करीब आधे घण्टे में लौटेगा।"

"तब तो मुझे कहीं और जाना चाहिए।" मोटर चलाने वाला आदमी बोला। जार्ज ने घड़ी देखी। छह बजकर बीस मिनट हो रहे थे।

"उससे यह कहकर तुमने अच्छा किया, लड़के!" मैक्स बोला, "तुम सच-मुच बहुत अच्छे हो।"

"वह जानता था कि मैं उसे गोली से उड़ा दूंगा···" एल रसोई में से बोला।

"नहीं···" मैक्स बोला, "ऐसा नहीं है। यह अच्छा लड़का मुझे पसन्द है।"

छह बजकर पचपन मिनट पर जार्ज ने कहा, "एंडरसन अब नहीं आयेगा···"

दो लोग और आ चुके थे। एक बार जार्ज ने रसोई में जाकर हैम और अंडे का सैंडविच बना दिया था, जो वह आदमी अपने साथ ले जाना चाहता था। रसोई के अन्दर उसने एल को देखा। उसकी टोपी खिसक गयी थी। वह एक स्टूल पर बैठा हुआ था। कोट की बगल से एक पुरानी बन्दूक की नोक दिखाई दे रही थी। निक और खानसामा एक-दूसरे की तरफ पीठ किये हुए एक कोने में बंधे हुए थे। दोनों के मुंह में कपड़ा ठूंसा हुआ था।

जार्ज ने सैंडविच तैयार किया, उसे कागज में लपेटा, झोले में रखा और बाहर ले आया। आदमी उसके पैसे देकर चला गया।

"यह लड़का तो सब कुछ कर लेता है···" मैक्स बोला।

"खाना भी पका लेता है···"

"तुम किसी लड़की की अच्छी-सी बीवी बनोगे लड़के!"

"हां !" जार्ज बोला, "लेकिन तुम्हारा बुड्ढा एंडरसन अब नहीं आने वाला।"

"दस मिनट और देते हैं उसे···" मैक्स ने कहा। वह शीशे और घडी की ओर देखता रहा। घड़ी की सुई सात बजा रही थी, फिर सात बजकर पांच मिनट।

"चलो एल !" मैक्स बोला, "अब एंडरसन नहीं आयेगा।"

"चलो, पांच मिनट और रुक जाते हैं···" एल ने किचन से कहा।

उसी पांच मिनट में एक आदमी आया। जार्ज ने उसे बताया कि खानसामा बीमार है।

"तुम आखिर एक नया रसोइया क्यों नहीं रखते ?" वह बोला, "तुम्हें यह ढाबा चलाना है या नहीं ?" कहकर वह बाहर चला गया।

"चलो एल···" मैक्स ने कहा।

"इन दोनों लड़कों और उस हब्शी का क्या करें ?"

"ये ऐसे ही ठीक है।"

"क्या तुम ऐसा सोचते हो ?"

"और क्या, हमारा काम तो खत्म हो गया।"

"मुझे इस तरह इन्हें छोड़कर जाना अच्छा नहीं लग रहा है।" एल ने कहा, "यह फूहड़ और बेढंगा काम है। तुम बहुत ज्यादा बोलते हो···"

"अरे जायें जहन्नुम में !" मैक्स बोला, "हम लोगों को अपना मन बहलाये रखना है कि नहीं ?"

"वैसे भी तुम ज्यादा बातें करते हो।" एल बोला। वह रसोई से बाहर आ गया। उसके कसे हुए कोट के नीचे से बन्दूक का उभार दिखाई पड़ रहा था। दस्ताने से ढके हुए हाथ से उसने अपना कोट खींचकर सीधा किया।

"अच्छा लड़के, हम चले !" उसने जार्ज से कहा, "तुम बहुत किस्मत वाले हो।"

"यह सच बात है···" मैक्स बोला, "तुमको तो जुआ खेलना चाहिए।"

दोनों दरवाजे के बाहर चले गये। जार्ज उनको खिड़की से जाते हुए देखता रहा। वे सड़क पर जलती बत्ती के नीचे से होते हुए सड़क पार कर गये। कसे हुए ओवरकोट और ऊंची टोपी में वे किसी नौटंकी में काम करने वाले जैसे दिखाई दे रहे थे। जार्ज रसोई का दरवाजा खोलकर अन्दर गया। उसने निक और खानसामा की रस्सियां खोल दीं।

"मुझे यह एकदम पसन्द नहीं···" खानसामा सैम बोला।

"फिर यह कभी नहीं होना चाहिए।"

निक खड़ा हो गया। मुंह में कपड़ा ठूंसे जाने का उसे पहले कभी अनुभव

नहीं था।

"बताओ…" वह बोला, "उनकी यह मजाल!" वह बात को यूं ही उड़ा देना चाहता था।

"वे लोग बूढ़े एंडरसन को मारना चाह रहे थे।" जार्ज ने कहा।

"वे लोग उस पर गोली चलाने वाले थे, जब वह खाना खाने आता।"

"बूढ़ा एडरसन…?"

"हां…!"

खानसामे ने अपने मुह के कोरो को अगूठे से खुजलाया।

"वे चले गये?" उसने पूछा।

"हां," जार्ज बोला, "वे जा चुके हैं।"

"मुझे यह सब अच्छा नही लग रहा है।" खानसामा बोला।

"जरा भी अच्छा नही लग रहा है।"

"सुनो।" जार्ज निक से बोला, "तुम्हे बूढे एडरसन से सब कुछ बता देना चाहिए।"

"अच्छी बात है।"

"तुमको इसमे अपनी टांग हरगिज नही फसानी चाहिए।" सैम बोला, "ऐसी बातों से दूर ही रहो तो अच्छा है।"

"तुम नही जाना चाहते तो न जाओ…" जार्ज बोला।

"ऐसी बातों मे बेकार की दखल देने से तुम्हे कुछ हासिल नही होगा।" खानसामा बोला, "ऐसी बातों से अलग ही रहो।"

"मैं उससे जाकर मिल लूगा।" निक ने जार्ज से कहा।

"वह कहां रहता है?"

खानसामा अलग हो गया। "तुम लोग ही जानो, तुम क्या करना चाहते हो।" वह बोला।

"एंडरसन हर्श के होटल में रहता है।" जार्ज ने निक से कहा।

"तो मैं वहीं चला जाता हूं।"

बाहर रोशनी एक पेड़ की सूखी डालो में से चमक रही थी। निक सड़क पर मोटर के पहियो के निशान के साथ-साथ चलता रहा। फिर वह अगली बत्ती के पास एक लेन में मुड़ गया। सड़क पर तीन घरों के बाद हर्श का होटल था। सीढ़ियां चढ़कर निक ने घण्टी बजायी। एक महिला दरवाजे पर आयी।

"बूढ़ा एंडरसन क्या यहां है?"

"तुम उससे मिलना चाहते हो?"

"हां, अगर वह है तो।"

निक औरत के पीछे-पीछे सीढ़ियो पर हो लिया। एक लम्बा कारीडॉर

पार करके औरत ने दरवाजा खटखटाया।

"कौन है ?"

"एंडरसन साहब ! कोई तुमसे मिलने आया है ।" औरत ने कहा।

"मैं हूं, निक एडम्ज ।"

"अन्दर आ जाओ ।"

निक दरवाजा खोलकर कमरे के अन्दर गया। बूढ़ा एंडरसन पलंग पर लेटा हुआ था। वह किसी जमाने में काफी ताकतवर पहलवान हुआ करता था। उसकी लम्बाई पलग से ज्यादा थी। वह अपने सिर के नीचे दो तकिये लगाये हुए था। उसने निक की ओर नही देखा।

"क्या हुआ ?" उसने पूछा।

"मैं हेनरी के ढाबे मे था।" निक ने कहा, "वहा दो लोगो ने आकर मुझे और खानसामा को रस्सी से बांध दिया। वे कह रहे थे कि तुम्हे मारने वाले है।" यह कहते हुए उसकी बात हास्यास्पद लग रही थी। बूढ़ा एंडरसन कुछ नही बोला। "उन लोगो ने हमे किचन मे बन्द कर दिया..." निक बोलता गया, "वे तुम्हे मारने जा रहे थे। जब तुम रात का खाना खाने वहा जाते।" एंडरसन कुछ नही बोला। वह घडी की ओर देखता रहा।

"जार्ज ने सोचा कि मुझे आकर तुम्हे स्थिति से अवगत करा देना चाहिए। मैं उनके बारे मे तुमको बताता हू।"

"मैं नही जानना चाहता कि वे कैसे थे।" बूढ़ा एंडरसन दीवार की ओर देखते हुए बोला, "तुमने आकर इस सम्बन्ध मे बताने का कष्ट किया, इसके लिए धन्यवाद।"

"वह तो ठीक है।" निक ने पलंग पर लेटे लम्बे-चौड़े आदमी को देखा।

"तुम क्या नही चाहते कि मैं पुलिस के पास जाऊ ?"

"नही", एंडरसन बोला, "उससे कोई फायदा नही होगा।"

"क्या इसके बारे मे मैं कुछ कर सकता हूं ?"

"नही, इस सम्बन्ध में कुछ नही करना है।"

"हो सकता है, उन्होंने मजाक किया हो ?"

"एक ही बात मुझे परेशान कर रही है।" दीवार की ओर मुंह करके वह बोला, "मैं बाहर जाऊं या नही ? दिन-भर से मैं यहीं हूं।"

"तुम क्या शहर के बाहर नही जा सकते ?"

"नही", एंडरसन बोला, "मैं इधर-उधर भागते रहने से थक गया हूं।"

उसने दीवार की ओर देखा।

"अब करने को कुछ नही है।"

"तुम क्या इस मामले में कुछ भी नहीं कर सकते ?"

"नहीं, मैंने शुरू से ही गलत कदम उठाया···" वह बराबर एक ही तरह धीमी आवाज में बोलता रहा, "अब कुछ करने के लिए नहीं है ? कुछ देर बाद मैं बाहर निकलने के बारे में निश्चय करूंगा।"

"मेरे खयाल से मैं वापस जाकर जार्ज से मिल लूं···" निक बोला ।

"अच्छी बात है।" एंडरसन ने कहा। उसने निक की ओर नहीं देखा, "यहां आने के लिए शुक्रिया।"

निक बाहर चला गया। दरवाजा बन्द करते वक्त उसने एंडरसन को पलंग पर पड़े दीवार की ओर एकटक ताकते देखा ।

"वह सारा दिन कमरे में रहा है", मकान मालकिन ने नीचे आकर कहा, "शायद उसकी तबीयत ठीक नहीं है। मैंने उससे कहा, 'एंडरसन साहब, इतने खूबसूरत पतझड के दिन तो तुम्हें अवश्य बाहर जाना चाहिए···' पर उसकी ख्वाहिश नहीं थी।"

"वह बाहर जाना नहीं चाहता।"

"मुझे अफसोस है कि उसकी तबीयत अच्छी नहीं है।" औरत बोली, "वह बहुत अच्छा आदमी है। तुम्हें मालूम है, वह कभी पहलवान हुआ करता था।"

"मालूम है।"

"वह बहुत सौम्य है।" औरत ने कहा ।

"अच्छा मिसेज हर्श, अब मैं चलता हूं।" निक बोला।

"मैं मिसेज हर्श नहीं हूं।" औरत बोली, "वह तो इस जगह की मालकिन है। मैं यहां की देखभाल करती हूं। मैं मिसेज बेल हूं।"

"अच्छा, चलूं मिसेज बेल !" निक ने कहा।

"अच्छा।" औरत बोली ।

निक अंधेरी सड़क पर चला, बत्ती के नीचे उस कोने तक । फिर मोटर के निशान के साथ-साथ हेनरी के ढाबे तक। जार्ज अन्दर था, काउण्टर के पीछे।

"क्या मिले एंडरसन से ?"

"हां···" निक बोला, "वह अपने कमरे में है और बाहर नहीं निकलता।"

निक की आवाज सुनकर खानसामा ने रसोई का दरवाजा खोला, "मैं तो यह सब सुनूंगा भी नहीं।" यह कहकर उसने फिर दरवाजा बन्द कर लिया।

"तुमने उसे सब कुछ बताया ?" जार्ज ने पूछा।

"हां, बताया, पर वह पहले से ही सब कुछ जानता था।"

"अब वह क्या करने जा रहा है ?"

"कुछ नहीं।"

"वे उसको मार डालेंगे।"

"हां, ऐसा ही लगता है।"

"वह निश्चित रूप से शिकागो में इस लफडे में फंसा होगा।"

"यही हुआ होगा।" निक ने कहा।

"काफी परेशानी की बात है।"

"बहुत बुरी बात है।" निक बोला।

वे थोडी देर के लिए चुप रहे। जार्ज ने तौलिये से काउण्टर को पोंछ डाला।

"न जाने क्या किया होगा उसने?" निक बोला।

"किसी को धोखा दिया होगा। इसीलिए तो ये लोग मारे जाते हैं।"

"मैं इस शहर से बाहर जा रहा हूं।" निक ने कहा।

"हां", जार्ज बोला, "ऐसा ही करना अच्छा है।"

"मैं उसके बारे में बहुत देर तक नहीं सोच सकता।" निक बोला।

"कोई जानता हो कि वह मरने वाला है, कुछ लोग उसे मारने आने वाले हैं, और यह जानते हुए भी वह अपने कमरे में पड़ा-पड़ा मौत की प्रतीक्षा कर रहा हो, यह बहुत मारक स्थिति है, बर्दाश्त के बाहर।"

"खैर!" जार्ज बोला, "सोचने से क्या होगा…?"

मेरे पिता

अल्बेयर कामू

जन्म : 7 नवम्बर, 1913; मृत्यु : 4 जनवरी, 1960

फ्रांस के अमर साहित्यकार अल्बेयर कामू को सन् 1957 में नोबेल पुरस्कार मिला। कामू ने अपने 47 वर्ष के अल्पायु में न केवल अपने देश और यूरोप में, वरन् समूचे साहित्य-संसार में बहुत ख्याति अर्जित की थी। इन्होंने लेखों, उपन्यासों, नाटकों और दार्शनिक रचनाओं से विश्व-साहित्य का कोष भरा था। इनकी रचनाओं में कई विशेषताएं हैं परन्तु जो सबसे महत्वपूर्ण है वह है मनुष्य का अकेलापन। कामू बार-बार इस बात को अपनी रचनाओं में दोहराते हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में अधर्म, नास्तिकता, मृत्यु और कष्ट का वर्णन अत्यधिक किया है।

पुरस्कृत कृति : प्लेग

इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं : ला पेस्ट, ला फ्रूट, ले जस्टिस, ल' होम रिवोल्टे आदि।

कुछ सड़कें छोड़कर गीली सड़क पर तेजी से चलती कार की मद्धम लेकिन लम्बी फूत्कार सुनाई दी—फिर वह फूत्कार बन्द हो गई। दूर कहीं अस्पष्ट चिल्लाहटों ने वातावरण की नीरवता को भंग किया। उसके बाद तारों-भरे आसमान से जैसे किसी मोटे आवरण ने इन दोनों जनों को लपेट लिया और खामोशी छा गई। तारो उठकर मुंडेर पर जा बैठा था, उसका मुंह रियो की तरफ था जो अपनी कुर्सी में धंसा बैठा था। टिमटिमाते आसमान की पृष्ठभूमि में रियो के भारी भरकम शरीर की काली रेखाकृति दीख रही थी। तारो को बहुत कुछ कहना था, उसके अपने शब्दों में ही हम सारी बातें बताएंगे।

"मैं चाहता हूं, तुम्हें मेरी बात समझने में आसानी हो, इसलिए सबसे पहले मैं यही कहूंगा कि मेरी जिन्दगी शुरू से ऐसी नहीं थी। जवानी में मैं अपनी मासूमियत के ख्याल पर जिन्दा था, जिसका मतलब है कि मेरे मन में कोई ख्याल ही नहीं था। मैं उन लोगों में से नहीं, जो अपने को यंत्रणा देते हैं। मैंने उचित ढंग से अपनी जिन्दगी शुरू की थी। मैंने जिस काम में हाथ डाला उसी में मुझे सफलता मिली। बुद्धिजीवियों के क्षेत्र में, बेतकल्लुफी से विचरण करता था, औरतों के साथ मेरी खूब पटती थी और अगर कभी-कभी मेरे मन में पश्चात्ताप की कसक उठती थी तो वह जितनी आसानी से पैदा होती थी उतनी आसानी से खत्म भी हो जाती थी। फिर एक दिन मैंने सोचना शुरू किया और अब...

"मैं तुम्हें यह बता दूं कि तुम्हारी तरह जवानी में मैं गरीब नहीं था। मेरे पिता ऊंचे ओहदे पर थे—वे पब्लिक प्रोसीक्यूशनों के डायरेक्टर थे। लेकिन उनकी तरफ देखकर कोई यह अनुमान नहीं लगा सकता था। देखने में वे बड़े खुशमिजाज और दयालु मालूम होते थे, और वे सचमुच ऐसे ही थे। मेरी मां बड़ी सादी और शरमीली औरत थी और मैं हमेशा उन्हें बहुत चाहता था, लेकिन मैं मां के बारे में बात न ही करूं तो अच्छा है। मेरे पिता मुझ पर हमेशा मेहरबान थे, और मेरा ख्याल है कि वे मुझे समझने की कोशिश भी करते थे। वे एक आदर्श पति नहीं थे—इस बात को मैं अब जान गया हूं, लेकिन इस बात से मेरे मन पर कोई विशेष आघात नहीं पहुंचा। अपनी बेवफाइयों में भी वे बड़ी शालीनता से व्यवहार करते थे जैसी कि उनसे उम्मीद की जा सकती थी। आज तक उनकी बदनामी नहीं हुई। कहने का मतलब यह

कि उनमें मौलिकता बिल्कुल नहीं थी और अब उनके मरने के बाद मुझे एहसास हुआ है कि वे पलस्तर के बने संत तो नहीं थे, लेकिन एक आदमी की हैसियत से वे बड़े नेक और शालीन थे। बस, वे बीच के रास्ते पर चलते थे। वे उस किस्म के लोगों में से थे, जिनके लिए मन में हल्की, लेकिन स्थिर भावना उमड़ती है—यही भावना सबसे अधिक टिकाऊ होती है।

"मेरे पिता में एक विशेष बात थी—हमेशा वे रात को सोने से पहले रेलवे का बड़ा टाइम टेबल पढ़ते थे। इसलिए नहीं कि उन्हें अक्सर ट्रेन में सफर करना पड़ता था। ज्यादा-से-ज्यादा वे ब्रिटेन तक जाते थे जहां देहात में उनका छोटा-सा मकान था। हम लोग हर साल गर्मियों में वहां जाया करते थे। लेकिन वे चलते-फिरते टाइमटेबल थे। वे आपको पेरिस-बर्लिन एक्सप्रेसों के आने और जाने का सही टाइम बता सकते थे; ल्यों से वार्सा कैसे पहुंचा जा सकता है, किस वक्त कौन-सी ट्रेन पकड़नी चाहिए, इसका उन्हें पूरा पता रहता था। तुम अगर उनसे किन्हीं दो राजधानियों के बीच का फासला पूछते तो वे तुम्हें सही-सही बता सकते थे। भला तुम मुझे बता सकते हो कि ब्रियान्को से केमोनी कैसे पहुंचा जा सकता है? मेरे ख्याल में तो अगर किसी स्टेशन-मास्टर से यह सवाल किया जाए तो वह भी अपना सिर खुजलाने लगेगा। लेकिन मेरे पिता के पास इस सवाल का जवाब तुरन्त तैयार मिलता था। करीब-करीब हर शाम वे इस विषय में अपने ज्ञान की वृद्धि करते थे और उन्हें इस बात पर बड़ा गर्व था। उनके इस शौक से मेरा बहुत मनोरंजन होता था। मैं यात्रा सम्बन्धी बड़े पेचीदा सवाल उनसे पूछा करता था और उनके जवाबों को रेलवे टाइम टेबल से मिलाकर देखा करता था। उनके जवाब हमेशा बिल्कुल सही निकलते थे। शाम को मैं और मेरे पिता रेलवे के खेल खेला करते थे, जिसकी वजह से हम दोनों की खूब पटती थी। उन्हें मेरे जैसे श्रोता की ही जरूरत थी जो ध्यान से उनकी बातें सुने और पसन्द करे। मेरी दृष्टि में उनकी यह प्रवीणता अधिकांश गुणों की तरह प्रशंसनीय थी।

"लेकिन मैं बहक रहा हूं और अपने आदरणीय पिता को बहुत अधिक महत्त्व दे रहा हूं। दरअसल उन्होंने मेरे हृदय-परिवर्तन की महान घटना में केवल अप्रत्यक्ष योग दिया था, मैं उस घटना के बारे में तुम्हें बताना चाहता हूं। सबसे बड़ा काम उन्होंने सिर्फ यही किया कि मेरे विचार जागृत किये। जब मैं सत्रह बरस का था तो मेरे पिता ने मुझसे कहा कि मैं कचहरी में आकर उन्हें बोलता हुआ सुनूं। कचहरी में एक बड़ा केस चल रहा था और शायद उनका ख्याल था कि मैं उन्हें उनके सर्वोत्तम रूप में देखूंगा। मुझे यह भी शक हुआ कि उनका ख्याल था कि मैं कानून की शान-शौकत और औपचारिक दिखावे से प्रभावित हो जाऊंगा और मुझे यही पेशा अपनाने की प्रेरणा

मिलेगी। मैं जानता था कि वे मेरे वहां जाने के लिए बड़े उत्सुक थे। और हम घर में अपने पिता का जो व्यक्तित्व देखते थे उससे अलग किस्म का व्यक्तित्व देखने को मिलेगा, यह कल्पना मुझे अत्यन्त सुखद मालूम हुई। मेरे वहां जाने के सिर्फ यही दो कारण थे। अदालत की कार्यवाही मुझे हमेशा सहज और कायदे के मुताबिक मालूम होती थी, जैसी कि चौदह जुलाई की परेड या स्कूल के भाषण-दिवस की कार्यवाही। इस सम्बन्ध में मेरे विचार अमूर्त थे और मैंने इस बारे में कभी गम्भीरता से नहीं सोचा था।

उस दिन की कार्यवाही के बाद मेरे मन में सिर्फ एक ही तस्वीर उभरी थी, वह तस्वीर मुजरिम की थी। मुझे इस बात में शक नहीं कि वह अपराधी था—उसने क्या अपराध किया था, यह ज्यादा महत्व की बात नहीं। तीस बरस का वह नाटा आदमी, जिसके बाल बिखरे और भूरभुरे थे, सब कुछ कबूल करने के लिए इतना उत्सुक दिखाई दे रहा था! अपने अपराध पर उसे सच्ची ग्लानि हो रही थी और उसके साथ जो होने वाला था उसके प्रति वह आशंकित था। कुछ मिनट बाद मैंने सिवा अपराधी के चेहरे के, हर तरफ देखना बन्द कर दिया। वह पीले रंग का उल्लू मालूम होता था, बहुत ज्यादा रोशनी से उसकी आंखें अन्धी हो रही हों। उसकी टाई कुछ अस्त-व्यस्त थी। वह लगातार दांतों से अपने नाखून काट रहा था, सिर्फ दाएं हाथ के···क्या इससे भी आगे कुछ कहने की जरूरत है? क्यों! तुम तो समझ ही गए होगे—वह एक जिन्दा इन्सान था।

"जहां तक मेरा सम्बन्ध था—अचानक बिजली की तरह मेरे मन में वह एहसास कौंध गया। अभी तक तो मैं उस आदमी को उसकी उपाधि 'प्रतिवादी' के साधारण रूप में देखता रहा था। मैं ठीक से नहीं कह सकता कि मैं अपने पिता को भूल गया, लेकिन उसी क्षण जैसे किसी चीज ने मेरे मर्मस्थल को जकड़ लिया और कटघरे में खड़े उस आदमी पर मेरे सारे ध्यान को केन्द्रित कर दिया। मुकदमे की कार्यवाही मुझे बिलकुल सुनाई नहीं दी। मैं सिर्फ इतना जानता था कि वे लोग उस जिन्दा आदमी को मारने पर तुले हुए थे और किसी सहज, प्राकृतिक भावना की लहर ने बहाकर मुझे उस आदमी के पक्ष में खड़ा कर दिया था। मुझे उस वक्त होश आया जब मेरे पिता अदालत के सामने बोलने के लिए खड़े हुए।

"लाल गाउन में उनका व्यक्तित्व एकदम बदल गया था। वे दयालु या खुशमिजाज नहीं मालूम होते थे। उनके मुंह से लम्बे दिखावटी वाक्य सांपों की अन्तहीन पांत की तरह निकल रहे थे। मुझे एहसास हुआ कि मेरे पिता कैदी की मौत की पुकार कर रहे थे, वे जूरी से कह रहे थे कि वे कैदी को दोषी सिद्ध करके समाज के प्रति अपने दायित्व को पूरा करें। यहां तक कि वे यह भी कह

रहे थे कि उस आदमी का सर काट देना चाहिए। मैं मानता हूं कि उन्होंने ऐन यही शब्द इस्तेमाल नहीं किये थे। उनका फार्मूला था, 'इसे सबसे बड़ी सजा मिलनी चाहिए।' लेकिन इन दोनों बातों में बहुत कम फर्क था और मतलब एक ही था। मेरे पिता ने जिस सर की मांग की थी वह सर उन्हें मिल गया। लेकिन सर उतारने का काम मेरे पिता ने नहीं किया। मैं अन्त तक मुकदमे को सुनता रहा था, मेरे मन में उस अभागे आदमी के प्रति एक ऐसी भयंकर और नजदीकी आत्मीयता जागृत हुई, जो मेरे पिता ने कभी महसूस नहीं की होगी। फिर भी सरकारी वकील होने के नाते उन्हें उस मौके पर मौजूद रहना पड़ा जिसे शिष्ट भाषा में 'कैदी के अन्तिम क्षण' कहा जाता है; लेकिन जिसे दग-अमल हत्या कहना चाहिए—हत्या का सबसे घृणित रूप।

"उस दिन के बाद से मैं जब भी रेलवे टाइम टेबल देखता तो मेरा मन ग्लानि से कांप उठता। मैं मुकदमों की कार्यवाही में, मौत की सजाओं में और फांसियों में एक हैरत-भरी दिलचस्पी लेने लगा। मुझे यह क्षोभपूर्ण एहसास हुआ कि मेरे पिता ने अक्सर ये पाशविक हत्याएं देखी होंगी—जब वे सुबह बहुत जल्दी उठा करते थे, और तब मैं उनके जल्दी उठने के कारण का अनुमान नहीं लगा पाता था। मुझे याद है कि ऐसे मौकों पर गलती से बचने के लिए वे अपनी घड़ी में अलार्म लगा देते थे। मां के सामने इस प्रसंग को खोलने का मुझमें साहस नहीं था। लेकिन अब मैं अपनी मां को ज्यादा गौर से देखने लगा और देखा कि उनका दाम्पत्य-जीवन अब निरर्थक था और मां ने उसके सुधार की उम्मीद भी छोड़ दी थी। इससे मुझे मां को 'माफ करने' में मदद मिली। उस वक्त मैं यही सोचता था। बाद में मुझे मालूम हुआ कि माफी की कोई बात ही नहीं थी; शादी से पहले वह बड़ी गरीब थी और गरीबी ने उन्हें परिस्थितियों के आगे झुकना सिखाया था।

"शायद तुम मुझसे यह सुनने की उम्मीद रखते हो कि मैंने फौरन घर छोड़ दिया। नहीं, मैंने बहुत महीने, दरअसल पूरा एक साल वहां गुजारा। फिर एक दिन शाम को मेरे पिता ने अलार्म वाली घड़ी मांगी, क्योंकि उन्हें अगले दिन जल्दी उठना था। उस रात मुझे नींद नहीं आयी। अगले दिन पिताजी के घर लौटने से पहले ही मैं जा चुका था।

"संक्षेप में यह हुआ कि मेरे पिता ने मुझे खत लिखा, वे मुझे तलाश करने के लिए तहकीकात करवा रहे थे। मैं उनसे मिलने गया और अपने कारण बताये बगैर मैंने उन्हें शान्त भाव से समझा दिया कि अगर उन्होंने मुझे घर लौटने के लिए मजबूर किया तो मैं आत्महत्या कर लूंगा। उन्होंने मुझे आजादी देकर सारा झगड़ा खत्म कर दिया क्योंकि वे दयालु-हृदय आदमी थे—जैसाकि मैं पहले कह चुका हूं। उन्होंने मुझे 'अपने ढंग से जिन्दगी बसर करने' की

बेवकूफी पर लेक्चर दिया, (उनकी दृष्टि में मेरे उस व्यवहार का यही कारण था और मैंने उन्हें धोखा न दिया हो ऐसा नहीं कह सकता) और मुझे बहुत-सी नेक सलाहें भी दी। मैं देख रहा था कि इस बात ने उनके दिल पर गहरा असर डाला था और वे बड़ी मुश्किल से अपने आंसुओ को रोकने की कोशिश कर रहे थे। बाद में, बहुत अरसे के बाद मैं बीच-बीच मे अपनी मा से मिलने के लिए जाने लगा, ऐसे मौकों पर मैं अपने पिता से भी जरूर मिलता था। मेरा ख्याल है कि कभी-कभी की इन मुलाकातो से मेरे पिता सन्तुष्ट थे। व्यक्तिगत तौर पर मेरे मन मे उनके प्रति जरा भी दुश्मनी नही थी, बल्कि दिल मे कुछ उदासी-सी छा गई थी। पिता की मौत के बाद मैंने मा को अपने पास बुला लिया और अगर वे जिन्दा रहतीं तो अभी मेरे पास ही रहती।

"मुझे अपनी शुरू की जिन्दगी के बारे में ज्यादा इसलिए बताना पड़ा, क्योंकि मेरे लिए यह शुरुआत थी···हर चीज की। अठारह बरस की उम्र में ही मुझे गरीबी का सामना करना पड़ा—उससे पहले मैं आराम की जिन्दगी बसर करता आया था। मैंने बहुत-से काम किये और किसी काम मे मुझे असफलता नही मिली। लेकिन मेरी असली दिलचस्पी मौत की सजा मे थी। मैं कटघरे मे खड़े उस बेचारे अंधे 'उल्लू' के साथ हिसाब चुकता करना चाहता था इसलिए मैं लोगों के शब्दों मे एक आन्दोलनकारी बन गया, बस मैं विनाश नही करना चाहता था। मेरे विचार मे मेरे इर्द-गिर्द की सामाजिक व्यवस्था मौत की सजा पर आधारित थी और स्थापित सत्ता के खिलाफ लड़कर मैं हत्या के खिलाफ लड़ूंगा, यह मेरा विचार था, और लोगो ने भी मुझे यही कहा था और मेरा अभी तक यह विश्वास है कि मेरा वह विचार ठोस रूप मे सही था। मैं उन लोगों के एक दल में मिल गया जिन्हे मैं उस समय पसन्द करता था और दरअसल जिन्हे मैं अभी भी पसन्द करता हूं। यूरोप का कोई ऐसा देश नही जिसके आन्दोलनों मे मैंने हिस्सा न लिया हो। लेकिन वह दूसरी ही कहानी है।

"यह कहने की जरूरत नही कि मौका पड़ने पर हम भी मौत की सजाएं देते थे। लेकिन मुझे बताया गया था कि एक नये संसार के निर्माण के लिए—जिसमे हत्याएं बन्द हो जाएंगी—ये मौतें जरूरी हैं। यह भी कुछ हद तक सच था—और हो सकता है। जहां सच्चाई की व्यवस्था का सवाल है मुझमें डटे रहने की क्षमता नही। इसका कारण चाहे कुछ भी हो, मेरे मन मे हिचकिचाहट पैदा हुई। लेकिन फिर मुझे कटघरे मे खड़े उस अभागे 'उल्लू' का ख्याल आया और उससे मुझे अपना काम जारी रखने का साहस मिला। यह साहस उस दिन तक बना रहा जब मैं एक फांसी के वक्त मौजूद था—हंगरी में और मुझे वैसा ही विक्षिप्त आतंक महसूस हुआ जैसा बचपन में हुआ था। मेरी आंखों के चीजें चकराने लगी।

"क्या तुमने कभी किसी फायरिंग स्क्वैड द्वारा किसी आदमी को गोली से उडाया जाता देखा है। नही, तुमने नही देखा होगा। चुने हुए लोगो को ही यह दृश्य देखने को मिलता है। एक प्राइवेट दावत की तरह इसमे शामिल होने के लिए निमन्त्रण की जरूरत होती है। किताबो और तस्वीरों से आम तौर पर फायरिंग स्क्वैड के बारे में विचार बटोरे जाते हैं। कल्पना की जाती है कि एक खम्भे के साथ एक आदमी बधा है, जिसकी आखों पर पट्टी बधी है और कुछ दूर पर सिपाही खड़े हैं। लेकिन दरअसल नजारा बिल्कुल और ही तरह का होता है। तुम्हे मालूम है कि फायरिंग स्क्वैड मौत की सजा पाये आदमी से सिर्फ डेढ गज दूर खड़ा होता है। क्या तुम्हे मालूम है कि अगर उनका शिकार दो कदम भी आगे बढ आए तो उसके सीने पर राइफल का स्पर्श होगा। क्या तुम जानते हो कि इतने कम फासले पर खड़े होकर सिपाही उस आदमी के दिल पर निशाना लगाते हैं और उनकी बड़ी गोलियां इतना बड़ा छेद कर देती है जिसमे पूरा हाथ जा सकता है? नही, तुम्हे यह नही मालूम। ये ऐसी बाते हैं जिनका जिक्र नही किया जाता। शालीन लोगो की नीद मे खलल नही पड़ना चाहिए न। क्यो! सचमुच यह सब जानते हैं कि ऐसे ब्यौरों पर अधिक समय खर्च करना भयकर कुरुचि का परिचय देना है। लेकिन जहा तक मेरा सवाल है इस घटना के बाद से मुझे कभी ठीक तरह नीद नही आई। उसका कडवा स्वाद मेरे मुह मे बना रहा और मेरा मन उसके ब्यौरे मे उलझा रहा और चिन्तामग्न रहा।

"और इस तरह मुझे एहसास हुआ, बहुत सालो से मैं प्लेग से पीड़ित हूं और यह एक विरोधाभास भी था, चूकि मेरा पक्का विश्वास था कि मैं अपनी समस्त शक्ति से इससे जूझ रहा था। मुझे एहसास हुआ कि हजारो लोगो की मौतो में अप्रत्यक्ष रूप से मेरा हाथ रहा है। मैंने उन कामो और सिद्धान्तो का समर्थन किया है, जिनसे वे मौतें हुई हैं और मौतो के सिवा उनका कोई नतीजा और नही निकल सकता था। और लोगो को इन विचारो से जरा भी परेशानी नही हुई थी, कम से कम वे स्वय इसे व्यक्त नही करते थे। लेकिन मैं उनसे अलग था, मुझे जो एहसास हुआ था वह मेरे गले मे अटक गया था। मैं उन लोगो के साथ होते हुए भी अकेला था। जब मैं इन बातो की चर्चा छेड़ता तो वे कहते कि मुझे इतना अधिक शंकालु नही होना चाहिए। मुझे याद रखना चाहिए कि कितने बड़े सवाल इसके साथ जुड़े हुए हैं। और उन्होने कई दलीलें दीं जो अक्सर बहुत जोरदार थी ताकि मैं उस चीज को निगल सकू जो उनकी दलीलो के बावजूद मेरे मन मे ग्लानि पैदा करती थी। मैंने जवाब मे कहा कि प्लेग से अभिशप्त लोगों मे, विशिष्ट व्यक्तियों के पास भी जो लाल चोगे पहनते हैं— अपने कामो को सही ठहराने की दलीलें हैं और अगर एक बार मैंने अनिवार्यता

और बहुमत की शक्ति की दलील मान ली, जो कि अक्सर कम विशिष्ट लोगो द्वारा पेश की जाती है तो मैं विशिष्ट लोगो की दलीलो को कभी अस्वीकार नही कर सकता। इसके जवाब में उन लोगो ने यह कहा कि अगर मौत की सजा पूरी तरह से लाल चोगे वालो के हाथ मे छोड दी जाए तो हम पूरी तरह से उनके हाथों मे खेलने लगेंगे। इसका जवाब मैंने दिया कि अगर हम एक बार झुक जाते हैं तो फिर हर बार हमें झुकते जाना पड़ेगा। मुझे लगता है कि इतिहास ने मेरी बात को सच साबित किया है। आज इस बात की होड लगी हुई है कि कौन सबसे ज्यादा हत्याएं करता है। सब पागल होकर हत्या करने में लगे हैं और चाहने पर भी वे इसे बन्द नही कर सकेंगे।

"जो भी हो, दलीलो से मुझे ज्यादा सरोकार नही था। मुझे तो उस बेचारे 'उल्लू' में दिलचस्पी थी, जबकि धोखेधडी की कार्यवाही मे प्लेग की बदबू से सडे मुंहों ने एक हथकडी लगे आदमी को बताया था कि उसकी मौत नजदीक आ रही है। उन्होंने इस तरह के वैज्ञानिक प्रबन्ध किये कि कई दिन और रातों तक मानसिक पीडा झेलने के बाद उसे बेरहमी से कत्ल कर दिया जाए। मुझे इन्सान के सीने मे बने मुट्ठी जितने बड़े छेद से सरोकार था और मैंने मन-ही-मन तय कर लिया कि जहा तक मेरा सम्बन्ध है, दुनिया की कोई चीज मुझसे कोई ऐसी दलील को स्वीकार नही करवा सकती जो इन कत्लो को सही ठहराए। हां, मैंने जान-बूझकर अंधे हठ का रास्ता चुना, उस दिन तक के लिए जब मुझे अपना रास्ता ज्यादा साफ दिखाई देगा।

"अभी भी मेरे विचार वही हैं। कई साल तक मुझे इस बात पर शर्मिन्दगी रही, सख्त शर्मिन्दगी रही कि मैं अपने नेक इरादो के साथ, कई स्तर पीछे हटकर भी हत्यारा बना था। वक्त के साथ-साथ मैं सिर्फ इतना ही सीख सका कि वे लोग भी, जो दूसरो से बेहतर हैं, आजकल अपने को और दूसरों को हत्या करने से नही रोक सकते, क्योंकि वे इसी तर्क के सहारे जिन्दा रहते है, और हम इस दुनिया मे किसी की जान को जोखिम में डाले बगैर कोई छोटे से छोटा काम नही कर सकते। हा, तब से मुझे अपने पर शर्म आती रही है; मुझे एहसास हो गया है कि हम सब प्लेग से पीड़ित हैं, मेरे मन की शान्ति नष्ट हो गई है। और आज भी मैं उसे पाने की कोशिश कर रहा हूं; अभी भी सभी दूसरे लोगों को समझने की कोशिश कर रहा हू और चाहता हू कि मैं किसी का जानी दुश्मन न बनू। मैं सिर्फ इतना जानता हू कि इन्सान को प्लेग के अभिशाप से मुक्त होने के लिए भरसक कोशिश करनी चाहिए और सिर्फ इसी तरीके से हम कुछ शान्ति की उम्मीद कर सकते हैं। और अगर शान्ति नही तो शालीन मौत तो नसीब हो सकती है। इसी से और सिर्फ इसी से इन्सान की मुसीबतें कम हो सकती हैं, अगर वे मरने से नही बच सकते तो उन्हें कम से कम

पहुंचे और हो सकता है थोड़ा फायदा भी पहुंचे। इसीलिए मैंने तय किया कि मैं ऐसी किसी चीज से सम्बन्ध नहीं रखूंगा जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, अच्छे या बुरे कारणों से किसी इन्सान को मौत के मुंह में धकेलती है या ऐसा करने वालों को सही ठहराती है।

"इसीलिए महामारी मुझे इसके सिवा कोई नया सबक नहीं सिखा पाई कि मुझे तुम्हारे साथ मिलकर उससे लड़ना चाहिए। मैं पूरी तरह से जानता हूं—हां रियो, मैं कह सकता हूं कि मैं इस दुनिया की नस-नस पहचानता हूं—हममें से हरेक के भीतर प्लेग है, धरती का कोई आदमी इससे मुक्त नहीं है। और मैं यह भी जानता हूं कि हमें अपने ऊपर लगातार निगरानी रखनी पड़ेगी ताकि लापरवाही के किसी क्षण में हम किसी के चेहरे पर अपनी सांस डालकर उसे छूत न दें। दरअसल कुदरती चीज तो रोग का कीटाणु है। बाकी सब चीजें ईमानदारी, पवित्रता (अगर तुम इसे भी जोड़ना चाहो) इन्सान की इच्छा-शक्ति का फल है, ऐसी निगरानी का फल है जिसमें कभी ढील नहीं होनी चाहिए। नेक आदमी, जो किसी को छूत नहीं देता, वह है जो सबसे कम लापरवाही दिखाता है—लापरवाही से बचने के लिए बहुत बड़ी इच्छा-शक्ति की और कभी न खत्म होने वाले मानसिक तनाव की जरूरत है। हां रियो, प्लेग का शिकार होना बड़ी थकान पैदा करता है। लेकिन प्लेग का शिकार न होना और भी ज्यादा थकान पैदा करता है। इसीलिए दुनिया में आज हर आदमी थका हुआ नजर आता है; हर आदमी एक माने में प्लेग से तंग आ गया है। इसीलिए हममें से कुछ लोग, जो अपने शरीरों में से प्लेग को बाहर निकालना चाहते हैं, इतनी हताशापूर्ण थकान महसूस करते हैं—ऐसी थकान जिससे मौत के सिवा और कोई चीज हमें मुक्ति नहीं दिला सकती।

"जब तक मुझे वह मुक्ति नहीं मिलती, मैं जानता हूं कि आज की दुनिया में मेरी कोई जगह नहीं है। जब मैंने हत्या करने से इन्कार किया था तभी से मैंने अपने को निर्वासित कर लिया था, यह निर्वासन कभी खत्म नहीं होगा। 'इतिहास का निर्माण' करने का काम मैं दूसरों पर छोड़ता हूं। मैं यह भी जानता हूं कि मुझमें इतनी योग्यता नहीं कि मैं उन लोगों के कामों के औचित्य पर अपना निर्णय दे सकूं। मेरे मन की बनावट में कोई कमी है जिसकी वजह से मैं समझदार हत्यारा नहीं बन सकता। इसलिए यह विशिष्टता नहीं, बल्कि कमजोरी है। लेकिन इन परिस्थितियों में मैं जैसा हूं वैसा ही रहने के लिए तैयार हूं। मैंने विनयशीलता सीख ली है। मैं सिर्फ यह कहता हूं कि इस धरती पर महामारियां हैं और उनसे पीड़ित लोग हैं और यह हम पर निर्भर करता है कि जहां तक सम्भव हो सके हम इन महामारियों का साथ न दें। हो सकता है इस बात में बचकानी सरलता हो; यह सरल है या नहीं इसका निर्णय तो मैं नहीं कर

सकता, लेकिन मैं यह जानता हूं कि यह बात सच्ची है। तुमने देख ही लिया है कि मैंने इतनी ज्यादा दलीलें सुनी थी जिन्होंने करीब-करीब मेरी मति भ्रष्ट कर दी थी, और दूसरे लोगों की मति भी इतनी अधिक भ्रष्ट कर दी थी कि वे हत्या के समर्थक बन गए थे। मुझे यह एहसास हुआ कि हम स्पष्ट नपी-तुली भाषा का प्रयोग नही करते—यही हमारी सारी मुसीबतों की जड़ है। इसलिए मैंने तय किया कि मैं हमेशा अपनी बातचीत और व्यवहार में स्पष्टता बरतूंगा। अपने को सही रास्ते पर लाने का मेरे पास सिर्फ यही तरीका था। इसीलिए मैं सिर्फ यही कहता हूं कि दुनिया मे महामारियां है और उनका शिकार होने वाले लोग हैं—अगर इतना कहने-मात्र से ही मैं प्लेग की छूत को फैलाने का साधन बनता हू तो कम से कम मैं जान-बूझकर ऐसा नही करता। सक्षेप में यह कहा जा सकता है कि मैं मायूस हत्यारा बनने की कोशिश करता हू। तुमने देख ही लिया होगा कि मैं महत्त्वाकाक्षी आदमी नही हू।

"मैं मानता हूं कि इन दो श्रेणियों मे हमे तीसरी श्रेणी भी जोड लेनी चाहिए—सच्चे चिकित्सकों की श्रेणी, लेकिन यह एक मानी हुई बात है कि ऐसे लोग बहुत विरले होते हैं और निश्चय ही उनका काम बहुत कठिन होगा। इसीलिए मैंने हर मुसीबत में, मुसीबतजदा लोगों की तरफ होने का फैसला किया ताकि मैं नुकसान को कम कर सकू। कम से कम उन लोगो मे मैं यह तलाश कर सकता हूं कि तीसरी श्रेणी तक कैसे अर्थात् शान्ति तक कैसे पहुंचा जा सकता है।"

नीलामी

बोरिस पास्तरनाक

जन्म : 20 फरवरी, 1890, मृत्यु : 30 मई, 1960.
रूसी साहित्यकार पास्तरनाक को नोबेल पुरस्कार सन् 1958 में प्रदान किया गया परन्तु इन्होंने यह पुरस्कार लेने से इन्कार कर दिया। पूरा नाम बोरिस लिवोनदोविच पास्तरनाक। कवि के साथ-साथ ये उपन्यासकार भी थे। इसके अलावा इन्होंने विदेशी लेखकों की रचनाओं का अनुवाद भी रूसी भाषा में किया था। 'डाक्टर जिवागो' इनका एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास है और साधारण तौर पर लोगों को यही भ्रम है कि 'डाक्टर जिवागो' पर ही इनको नोबेल पुरस्कार मिला; पर यह सच नहीं है।

इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं : ट्विन इन दि क्लाउड्स; ओवर दि बैरियर्स; माई सिस्टर, लाइफ; सेफ कण्डक्ट; एरियल वेज; इन अर्ली ट्रेन्स आदि।

अनुवाद : सुमवीर

जिन दिनों की यह घटना है, उन दिनों रूस में आज जैसी ही सामाजिक परिस्थितियां थी और छोटी-छोटी बातों का बतगड बन जाया करता था। एक दिन किसी बड़े शहर में एक अफवाह फैली कि एक नौजवान अपने-आपको नीलामी पर चढा रहा है।

नीलामी वाले दिन लोगों की भीड़ शहर से निकलकर चल पडी। सारी घटना शहर से दूर उस मकान में घटी, जहां इससे पहले कोई नही आया था।

लोग जमा हो गये थे, जो सभी एक ही श्रेणी के थे—अभिजात वर्ग के, धनवान, कलाप्रेमी, वकील आदि। कुर्सियो की कतारें लगी थी। मंच पर एक बडा पियानो रखा था और उसके पास की मेज पर लकड़ी का एक हथौडा पड़ा था। खिड़कियां खुली हुई थी। अन्त में वह नौजवान मंच पर आया। उसकी जवानी मानो अभी फूट ही रही थी। वह कौन है, कहां का है, क्या करता है ? ऐसे सवाल उठने स्वाभाविक ही थे।

बीजगणित की शैली में हम उसे फिलहाल 'क' कहकर पुकारेंगे।

'क' ने अपनी भूमिका में कहा, "मैं अपने आपको बेच डालना चाहता हूं, जो भी सज्जन सबसे बडी बोली देंगे, उन्ही का मुझ पर पूरा अधिकार होगा पर नीलामी के बाद मेरे खरीदार को मुझे चौबीस घंटे की मोहलत देनी होगी, ताकि मैं बिक्री से प्राप्त रकम बाट सकूं। मैं खुद के लिए कुछ नही रखूगा। इसके बाद मेरी गुलामी का दौर शुरू होगा। मेरे मालिक को मुझसे काम लेने का ही नही, मेरी जान लेने का भी अधिकार होगा।"

तब 'क' के मित्रों मे से एक व्यक्ति उठकर मंच पर आया और मेज के पास कुर्सी पर बैठ गया। उसका काम केवल इतना था कि सबसे ऊंची बोली पर रकम वसूल करके 'क' को सौंपकर चला जाये।

कार्रवाई शुरू हुई। 'क' ने घोषणा की, "मैं पहले आप लोगो के सामने संगीत प्रस्तुत करूंगा—ऐसा संगीत जिसे आप लोगो ने आज तक कभी नहीं सुना होगा। यह संगीत आत्मा से उठी सहज रचना होगी।"

तभी बाहर वर्षा होने लगी। खिड़कियों के बाहर हवा सनसनाने लगी। फिर अंधेरा छा गया। बादलों की पहली गड़गड़ाहट के साथ ही 'क' ने संगीत शुरू कर दिया।

संगीत की लय और गीत के स्वरों की प्रेरणा 'क' को उस विशाल नील-गगन से मिल रही थी, जिसमें दूधिया इंद्रधनुषी बादल मंडरा रहे थे। वर्षा ने धुधले सितारों का मुंह धो डाला था, जिससे वे और भी जगमगाने लगे थे।

पियानो पर लहराती हुई अंगुलियों को 'क' ने झटककर अपना हाथ खींच लिया। संगीत रुक गया। पर तभी 'क' की मधुर कंठ-ध्वनि लहरा उठी। खिड़कियों के शीशों पर बूंदें नाच रही थीं। पेड़ों की टहनियां झूम रही थीं, हवा लहरा रही थी, और वह गीत चारों ओर गूंज रहा था।

आखिर 'क' उठ खड़ा हुआ और लोगों को संबोधित करके कहने लगा, "आपके स्नेह के लिए मैं आभारी हूं, पर केवल इतने से ही मुझे सन्तोष नहीं है। मैं अपनी योजना आप पर प्रकट नहीं करूंगा क्योंकि तब आप उसमें हस्तक्षेप करना चाहेंगे, और समस्या के समाधान के लिए कोई दूसरा तरीका अपनाने को कहेंगे। आपकी सहायता चाहे कितनी ही उदार क्यों न हो, मेरे मन के अनुकूल न होगी'''आज के बाजार में मनुष्यरूपी सिक्के का जो व्यावहारिक मूल्य है, उसकी दृष्टि से मेरी कीमत गिर चुकी है। मैं अपने आपको बिक्री की चीज बता रहा हूं।"

फिर, संगीत लहराने लगा और बीच-बीच में बोली दी जाने लगी। अन्त में एक कट्टर सैद्धांतिक, कलाप्रेमी ने 'क' को खरीद लिया।

पर कहानी यहीं खत्म नहीं हो जाती। नीलामी के तीसरे-चौथे दिन वह धनी 'क' से ऊब गया। उसने उसके लिए एक अच्छे स्थान पर निवास की व्यवस्था कर दी। उसको सुखी रखने की चिन्ता में वह परेशान रहने लगा। एक दिन वह उसे बुलाकर कहने लगा, "मैं आज तक यह नहीं समझ पाया हूं कि तुमसे क्या काम लूं। इसलिए मैं तुम्हें आजाद करना चाहता हूं। तुम कहीं भी जा सकते हो।"

'क' ने प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। लेकिन तब यह बात अफवाह बनकर उस इलाके में फैल गयी, जहां 'क' ने अपनी बिक्री के पैसे बांटे थे। वहां उपद्रव फूट पड़े। इससे दोनों को गहरा दुःख हुआ—खासकर 'क' को, क्योंकि उसकी नजर में फिर से आजाद होने का अर्थ था, ठीक पहले जैसी परिस्थितियों में लौट आना। और वह इसके लिए तैयार नहीं था।

सांप

जॉन स्टेनबेक

जन्म : 27 फरवरी, 1902.

अमरीकी कथाकार जॉन स्टेनबेक को सन् 1962 में नोबेल पुरस्कार मिला। अब तक इनकी तीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें उपन्यास, कहानियां आदि हैं। इनकी रचनाओं में दो-तीन बातें बहुत स्पष्ट हैं : एक तो यह मनुष्य के दुखी होने का कारण समझना चाहते हैं, दूसरा यह कि इनकी रचनाओं में विविधता बहुत है। कुछ पुस्तकें अति गम्भीर हैं, जैसे 'दि ग्रेप्स आफ रैथ' और कुछ इसके एकदम विपरीत हल्की-फुल्की, जैसे 'टार्टिल्ला फ्लैट'। कभी-कभी तो यहां तक कह दिया जाता है कि स्टेनबेक दो हैं—एक गम्भीर, और दूसरा एकदम हंसोड़। इनकी कृतियां एक ही साथ यथार्थवादी भी हैं और काल्पनिक भी और जिनमें सहानुभूतिपूर्ण हास्य और सामाजिक बोध सदैव रहता है।

इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं : कप आफ गोल्ड; आफ माइस एण्ड मेन; रशियन जर्नल; ईस्ट आफ ईडन; दि विण्टर आफ डिस्कण्टेण्ट आदि।

अनुवाद : राजेन्द्र यादव

झुटपुटे का-सा समय था। डाक्टर फिलिप्स ने झटके से घुमाकर झोला कन्धे पर लादा और बाढ के पानी से भर जाने वाली पोखर जैसी जगह से चल पडा। पहले पत्थर के ढोके पर चढकर कुछ रास्ता पार किया और फिर रबर के बूटों से छप-छप करता सडक पर निकल आया। मोंटेरी की मछलियों और दूसरी खाद्य-सामग्री को टिन के डिब्बों में भरने वाली सडक पर उसकी अपनी छोटी-सी पेशेवर प्रयोगशाला थी। यहा तक आते-आते सडक की बत्तियां जल चुकी थी। दबा-भिचा-सा छोटा-सा मकान था—इसका कुछ हिस्सा खाडी के पानी के ऊपर लट्ठों के खम्भे और पुल लगाकर बना था और कुछ जमीन पर था। बडे-बडे लहरदार, लोहे की चादरों के बने मछली वाले, गंधाते गोदामों ने इसे दोनों ओर से बुरी तरह घेर और भींच रखा था।

काठ की सीढिया चढकर डा० फिलिप्स ने दरवाजा खोला। सफेद चूहे अपने पिंजरे में तार के ऊपर-नीचे जोर-जोर से उछल-कूद मचाने लगे और छोटे-छोटे बाडों में बन्द कैदी बिल्लिया दूध के लिए म्याऊं-म्याऊं करने लगी। डाक्टर फिलिप्स ने अपनी चीर-फाड की मेज पर तेज चौंधा डालने वाली रोशनी जला दी और उस लिसलिसे झोले को धम्म से धरती पर पटक दिया। फिर वह खिडकी के पास रखे शीशे के पिंजरों के पास आया और झुककर भीतर देखने लगा। इनमें अमेरिकन साप बन्द थे।

साप एक-दूसरे में गुथे हुए कोनों में आराम कर रहे थे, लेकिन सबके सिर अलग-अलग साफ दिखायी देते थे। धूमिल आंखें किसी ओर भी देखती नही लगती थी, लेकिन जैसे ही नौजवान डाक्टर पिंजरे पर झुका कि सिरे पर काली और पीछे से सुर्ख दुहरी जीभें बाहर लपलपा उठीं और धीरे-धीरे ऊपर-नीचे हिलने लगीं। जब सापों ने उस व्यक्ति को पहचान लिया तो जीभें भीतर कर ली।

डॉ० फिलिप्स ने चमडे का कोट एक तरफ फेंका और टीन की अंगीठी पर पानी की केतली चढ़ायी, फिर गिलास-भर मटर उसमें छोड दी। अब वह फर्श पर पडे उस झोले को खडा-खडा घूरता रहा। डॉक्टर दुबला-पतला-नौजवान था। उसकी आंखें धुंधियायी, छोटी और खोयी-खोयी थीं जैसी अक्सर अन्वी-

क्षण-यन्त्र के द्वारा बहुत अधिक देखते रहने वालों की हो जाती हैं। उसके छोटी खूबसूरत-सी दाढ़ी थी। गहरी-गहरी सासो-सी सिसकारी भरती हुई भाप की धारी चिमनी में जा रही थी और अगीठी से गरमाहट का भभका आ रहा था। मकान के नीचे छोटी-छोटी लहरें होले-होले खम्भो को सहला रही थी। कमरे में चारों ओर लकड़ी के खानो में एक के ऊपर एक अजीबोगरीब इमर्तबान सजे थे। इनमें समुद्री वस्तुओं और जीवों के नमूने ढंके रखे थे। यह प्रयोग-शाला भी थी इन्ही सबके लिए।

डा० फिलिप्स ने बगल का दरवाजा खोलकर सोने वाले कमरे मे प्रवेश किया। इसमें चारो ओर किताबों की लाइनें लगी थी। एक फौजी खाट पडी थी। पढ़ने के लिए रोशनी और एक गैर-आरामदेह किस्म की लकड़ी की कुर्सी रखी थी। उसने अपने रबर के बूट खीच-खींचकर उतारे और भेड की खालों के स्लीपर पहन लिये। जब वह बगल वाले कमरे मे वापस लौटा तो केतली का पानी सनसनाने लगा था।

उसने झोला उठाकर मेज पर सफेद रोशनी के नीचे रखा और उसमें से दो दर्जन साधारण तारक-मछलिया उलटकर बाहर निकाली। इन्हे उसने मेज पर फैला दिया। फिर उसकी खोयी-खोयी आंखें पिंजरों मे बन्द उछल-कूद मचाते चूहों की ओर मुडी। कागज के एक थैले से अनाज के दाने निकालकर उसने खाने वाले तसलो मे डाले। चूहे फौरन ही एक-दूसरे को खूदते तारों से नीचे की ओर दौड़े और खाने पर टूट पडे। कांच की एक अलमारी पर केकडे और जेली मछली के बीच दूध की बोतल रखी थी। डाक्टर फिलिप्स ने झुक-कर दूध उठाया और बिल्लियों के पिंजरे की ओर बढा। लेकिन डिब्बो को दूध से भरने से पहले ही उसने हाथ बढ़ाकर आहिस्ता से एक बडी, लम्बे-लम्बे हाथ-पावों वाली मरगिल्ली-सी, चितकबरी बिल्ली को पकडकर बाहर निकाल लिया। पल-भर उसे हाथ से थपथपाया और फिर उसे काले पुते हुए बक्से में डाल दिया। ढक्कन बन्द करके कुडी चढा दी। इसके बाद एक हैंडिल घुमा दिया। अब उस मारने वाले डिब्बे में गैस भरने लगी। काले डिब्बे में हल्की-हल्की उछल-कूद होती रही और वह तसलों को दूध से भरता रहा। एक बिल्ली उसके हाथ से सटकर कमान जैसी दुहरी हो गयी तो वह मुस्करा पड़ा। उसने उसकी गर्दन प्यार से सहला दी।

डिब्बे मे अब शान्ति हो गयी थी। उसने हैंडिल को उलटा घुमा दिया। जरूर उस रंध्रहीन डिब्बे में डटकर गैस भरी होगी।

अंगीठी पर मटर से भरे गिलास के चारो ओर पानी बुरी तरह खौल रहा था। डा० फिलिप्स ने एक संडासी से पकड़कर गिलास बाहर निकाला और उसे खोलकर मटर काच की एक तश्तरी मे उलट दिये। खाते-खाते वह मेज

पर रखी उन तारक मछलियों को देखता रहा। किरणों के बीच मे दूधिया द्रव की छोटी-छोटी बूंदें पसीज-पसीजकर निगल आयी थी। उसने फटकने की तरह बची हुई मटर एक तरफ फेंक दी और जब सब फैल गयी तो तश्तरी धोने वाले नाद मे रखकर अपनी औजारो वाली अलमारी की ओर बढा। यहा से उसने एक अन्वीक्षण-यन्त्र और काच की तश्तरियों की एक गड्डी निकाली। नल द्वारा एक-एक करके इन सारी तश्तरियो को समुद्री पानी से भरा और तारक-मछलियों के पास एक लाइन मे उन्हें सजा दिया। अपनी घडी निकाली और घनी उमड़ती सफेद रोशनी के नीचे मेज पर रख दिया। फर्श के नीचे लहरें उसमें भरती हुई-सी खम्भों को सहला रही थी। उसने एक दराज से आख में दवा डालने वाली काच की एक पिचकारी निकाली और एक तारक-मछली के ऊपर झुक गया।

ठीक उसी समय लकडी की सीढियो पर लपकती, दबे कदमो की आवाज के साथ-साथ दरवाजे पर एक तेज दस्तक सुनायी दी। दरवाजा खोलने जाते हुए नौजवान के चेहरे पर झुझलाहट की हल्की-सल्खी झलक उठी। दरवाजे में एक पतली-दुबली लम्बी-सी स्त्री खडी थी। वह भवर-काला सूट पहने थी। और उसके सीधे-सीधे बाल काले चपटे माथे पर नीचे तक उग आये थे। अब इस तरह अस्त-व्यस्त थे मानो आधी में उडते रहे हो। तेज रोशनी में उसकी काली-काली आंखें चमक रही थी।

उसने मुलायम, रुधी-सी आवाज में पूछा, "मैं भीतर आ जाऊं न? आपसे कुछ बातें करना चाहती हू।"

"इस समय तो मैं बहुत व्यस्त हूं।" उसने बेमन से कहा, "मुझे तो सारे काम वक्त पर ही करने पडते हैं।" लेकिन वह दरवाजे से हटकर खड़ा हो गया था। लम्बी स्त्री तिरछी होकर भीतर आ गयी।

"आपको जब तक मुझसे बात करने की फुरसत नही मिलेगी, मैं चुपचाप बैठी रहूंगी।"

उसने दरवाजा बन्द कर लिया और सोने के कमरे से उस गैर-आरामदेह कुर्सी को उठा लाया, "देखिए", उसने माफी मागते हुए कहा, "कार्य की प्रक्रिया शुरू हो गयी है और मुझे उसमे लगना है।" जाने कितने आदमी यों ही चले आते हैं और दुनिया-भर के सवाल पूछते हैं। साधारण नासमझ लोगो को सारी कार्य-प्रणाली समझाने के लिए उसके पास अलग से कोई साधन या सुविधा नही है। उनसे तो वह बिना सोचे बोल देता है कि "आप यहा बैठिए, दो मिनट बाद मैं आपकी बातें सुनूगा।"

वह लम्बी स्त्री मेज के ऊपर झुक आयी। आख में दवा डालने की पिचकारी से डॉक्टर ने तारक-मछलियों की किरणों के बीचोंबीच से द्रव दरदरा

किया और पिच्च से पानी के प्याले में छोड दिया। इसके बाद उसने कुछ दूधिया द्रव सूता और फिर पिचकारी से पानी को धीरे-धीरे हिलाया। अब उसने अपना वही व्याख्यान-भाषण जल्दी-जल्दी बोलना शुरू किया :

"जब ये तारक-मछलियां अपने पूर्ण विकसित यौवन पर आ चुकती हैं तो हल्के ज्वार का खुला विस्तार पाकर इनके शरीर से वीर्य-कीटाणु और डिम्ब निकलने लगते हैं। कुछ पूर्ण यौवन वाली तारक-मछलियों के नमूने चुनकर और उन्हें पानी से बाहर निकालकर मैं उन्हे हल्के ज्वार की सारी अवस्था और वातावरण में यहां रखता हूं। अब मैंने वीर्य और डिम्बों को मिला दिया है। इस घोल में से थोड़ा-थोड़ा लेकर अब मैं इन सब परीक्षण-गिलासों में रखूंगा। दस मिनट बाद पहले गिलास वालों को सफेद कपूर डालकर मार डालूंगा, फिर बीस मिनट बाद दूसरे वर्ग को मारूंगा। और फिर इसी तरह हर बीस मिनट बाद नये वर्ग को मारता जाऊंगा। इससे मैं सारी प्रक्रिया को अलग-अलग अवस्थाओं में पकड़ सकूंगा और इस सारी प्रक्रिया-माला को माइक्रोस्कोप की कांच की स्लाइडों पर जमाकर जैविक अध्ययन के लिए तैयार कर लूंगा," वह रुक गया, "आप इस पहले वर्ग को अण्वीक्षण-यंत्र से देखेंगी ?"

"नहीं, शुक्रिया।"

तेजी से वह उसकी ओर घूमा। लोग तो हमेशा गिलासों में देखने को उधार खाये रहते हैं। वह मेज की तरफ बिल्कुल न देखकर—देख रही थी, खुद उसकी तरफ। उसकी काली-काली आखें थी तो उसकी दिशा में, लेकिन लगता था उसे देख नही रही। उसने महसूस किया, अरे! इस स्त्री की आखों के तारे तो शेष पुतलियों की तरह ही काले-काले हैं—पुतलियों और तारों के बीच में किसी भी रंग की कोई लाइन नही है। डाक्टर फिलिप्स उसके इस जवाब से झल्ला उठा। यों उसे सवालों का जवाब देने से बड़ी ऊब होती थी—क्योंकि इससे हाथ के काम में दिलचस्पी कम हो जाती थी और इसी से उसे हमेशा बड़ी कोफ्त होती। अब उसके मन में हुआ कि किसी तरह इस स्त्री को उकसाया जाये।

"पहले दस मिनट राह देखने के दौरान ही मुझे एक काम और भी करना है। कुछ लोग इसे देखना पसन्द नही करते। अच्छा हो जब तक मैं इसे खत्म करूं, आप कुछ देर के लिए उस कमरे में चली जायें।"

"नहीं," उसने अपने उसी मुलायम और सपाट लहजे में कहा, "आपकी जो इच्छा हो सो कीजिए। मैंने कहा न, आपको मुझसे बात करने की फुरसत होने तक मैं राह देखूंगी।" उसके हाथ पास-पास उसकी गोद में रखे थे। वह बड़े आराम और इत्मीनान से बैठी थी। उसकी आखें जरूर चमकीली थी, लेकिन बाकी सब कुछ ऐसा था मानो बेजान हो। डाक्टर ने मन ही मन कहा, 'देखने से लगता है कि बहुत ही धीमी रफ्तार से मांस-पेशियां परिवर्तन की

स्थिति में हैं—इतनी धीमी जितनी मेंढक की होती हैं।' स्त्री को उसकी इस मुर्दनी से झंझोड़ने की प्रबल इच्छा ने उसे फिर आविष्ट कर लिया।

उसने लकड़ी का एक पालना-जैसा लाकर मेज पर रखा, चीर-फाड़ करने का चाकू और कैंची, पिचकने वाली नली में लगी पोली सुई संवारकर रखी, फिर मारने वाले डिब्बे से उसने उस बेजान मुर्दा बिल्ली को निकाला और पालने पर रखकर उसकी टांगों को इधर-उधर लगे हुकों से बांध दिया। कनखियों से उसने स्त्री को देखा। उसमें कतई कोई हरकत नहीं थी। वह उसी तरह अब भी आराम से बैठी थी।

रोशनी में बिल्ली मानो दांत निकालकर चिढ़ा रही थी। उसकी सुर्ख जीभ नुकीले दांतों के बीच दबी थी। सधे हुए कुशल हाथों से डाक्टर फिलिप्स ने गले के पास से उसकी खाल काट डाली। चाकू से चीरा-फाड़ी करते हुए उसने हृदय से और भागों तक रक्त ले जाने वाली नली को बाहर निकाल लिया। अपने अचूक और बेझिझक हाथों से फुपफुस में सुई रखकर आंतों से उसे कसकर बांध दिया। "यह मसालेदार है," उसने समझाया, "बाद में मैं इंजेक्शन की सहायता से इसके सारे स्नायु-मंडल में पीला द्रव पहुंचाऊंगा, लाल द्रव हृदय की धमनियों में दूंगा। इससे रक्त-प्रवाह का विश्लेषण किया जा सकेगा, जैसा कि प्राणिशास्त्र की कक्षाओं में…"

उसने फिर उस स्त्री की तरफ घूमकर देखा। उसकी आंखों पर जैसे धूल की एक परत फैली थी। वह भावनाहीन निगाहों से बिल्ली के कटे हुए गले की तरफ देखे जा रही थी। खून एक बूंद भी नहीं गिरा, कटाई बहुत ही साफ हुई थी। डॉक्टर फिलिप्स ने घड़ी देखी: 'पहले वर्ग का समय पूरा हो गया।' उसने सफेद कपूर के कुछ चौकोर चिकने टुकड़े पहले वाले परीक्षण-गिलास में डालकर हिलाये।

स्त्री की उपस्थिति उसके मन में तनाव पैदा कर रही थी। अपने पिंजरे में चूहे फिर तार पर जा चढ़े थे और धीरे-धीरे चूं-चूं कर रहे थे। मकान के नीचे की लहरें खम्भों पर हल्के-हल्के थपेड़े मार रही थीं।

नौजवान डाक्टर के शरीर में शीत की एक झुरझुरी-सी आयी। उसने अंगीठी में कुछ कोयले डाले और आकर बैठ गया। उसने कहा, "अब बीस मिनट तक मुझे कुछ नहीं करना।" उसने देखा, स्त्री के निचले होंठ और चिबुक के सिरे के बीच की ठोडी कितनी जरा-सी है। लगा जैसे वह धीरे-धीरे जागी हो—मानो चेतना के किसी गहरे कुएं से निकलकर बाहर आ रही हो। सिर ऊंचा उठा, काली-काली धूसर आंखें एक बार कमरे में चारों ओर घूमीं, फिर डाक्टर पर आकर टिक गयीं।

"मैं तो राह देख रही थी," वह बोली। हाथ यों ही गोद में पास-पास रखे

रहे, "आपके पास सांप होंगे ?"

"किसलिए ? जी हां, है तो ।" उसने अपेक्षाकृत ऊंचे स्वर से कहा, "मेरे पास करीब दो दर्जन अमेरिकन सांप हैं । उनका जहर सूंतकर मैं विषनाशक प्रयोगशालाओ में भेज देता हू ।"

वह लगातार उसे देखे जा रही थी; लेकिन उसकी आखे जैसे उस पर केन्द्रित नही हो पा रही थी । लगता था जैसे वे उसके चारो ओर एक बड़े दायरे में देख रही हैं—इस तरह उसे चारो ओर से घेरे हुए हैं, "आपके पास नर-साप होगा ? मेरा मतलब अमेरिकन नर-साप ?"

"देखिए, इत्तफाक ही है । मेरा खयाल है मेरे पास होगा । एक दिन सुबह-सुबह आया तो देखा कि एक बड़ा-सा साप एक छोटी नागिन के साथ ऊंऊं··· के साथ सहवास कर रहा था । देखिए, मुझे ठीक पता है कि मेरे पास नर-साप है ।"

"है कहा वह ?"

"देखिए, उस खिड़की के पास काच के पिंजरे के ठीक नीचे ।"

उसका सिर धीमे से उधर घूम गया, लेकिन उसके दोनो शान्त हाथ यो ही निश्चल पड़े रहे । वह फिर उसकी ओर घूमी, "देख सकती हूं न ?"

उठकर वह खिड़की के पास रखे काच के केस के पास आ गया । रेतीले तले पर एक-दूसरे में गुथा सांपो का गुट्ठल पड़ा था, लेकिन उनके सिर अलग-अलग साफ दीखते थे । जीभे बाहर निकल आयी और एक क्षण तक लपलपाती रही । फिर कम्पन के लिए हवा को टटोलती हुई-सी ऊपर-नीचे लहराती रही ।

डाक्टर फिलिप्स ने घबराकर सिर घुमाया । स्त्री उसके पास ही खड़ी थी । वह कुर्सी से कब उठ आयी, डाक्टर को पता ही नही लगा । उसे तो सिर्फ खम्भो के बीच मे पानी की छपक्-छपक् सुनाई दी थी या तारो की जाली पर चूहों का दौड़ना सुनाई दिया था ।

स्त्री ने धीरे से पूछा, "जिस नर-साप के बारे में आप बता रहे थे, वह कौन-सा है ?"

उसने एक पिंजरे के एक कोने मे अकेले पड़े मोटे-से भूरे-भूरे नाग की ओर इशारा किया, "वो वाला । होगा करीब पाच फीट लम्बा । टैक्सास प्रान्त का है । हमारे प्रशान्त सागर के किनारो वाले साप अक्सर छोटे होते हैं । यह सारे चूहे हड़प जाते हैं । जब मुझे दूसरे सांपो को खिलाना होता है तो बाहर निकाल लेता हूं ।"

स्त्री झुककर उस भोंडे भूरे-भूरे भोथरे सिर को घूरती रही । दुहरी जीभ निकल आयी और काफी देर तक थरथराती हुई झूलती रही, "अच्छा, आपको यकीन है कि यह सांप ही है, सांपिन नही ?"

"ये अमेरिकन सांप होते बडे मजेदार है," वह स्निग्ध स्वर में बोला, "इसके बारे में जो सामान्य सिद्धांत निकालिए गलत निकलता है। अमेरिकन सांपो के बारे में निश्चयपूर्वक तो मैं भी नही बता पाऊंगा, लेकिन, जी हां, यह विश्वास दिलाता हूं कि है यह नर-साप ही।"

उसकी निगाहें उस चपटे-से सिर से नही हिली, "आप इसे मेरे हाथ बेचेंगे?"

"बेचूगा?" वह चौंक-सा पडा, "आपके हाथो बेचूगा?"

"आप तो नमूने की चीज बेचते हैं। क्यों, बेचते हैं न?"

"ओह हां, जी हा, बेचता तो हू, बेचता तो हूं।"

"कितने का है? पाच डालर का? दस?"

"अरे, पाच से ज्यादा का नही है। लेकिन—आपको क्या इन अमेरिकन सांपो के बारे में जानकारी है? कही आपको काट-वाट न ले।"

पल-भर वह उसे देखती रही, "मैं इसे साथ नही ले जाना चाहती, मैं तो इसे यही रहने दूगी। लेकिन—चाहती हूं, यह मेरा होकर रहे। चाहती हूं कि मैं यहां आकर इसे देखू, खिलाऊं और मानू कि यह मेरा है।" उसने एक छोटा-सा बटुआ खोलकर पाच डालर का नोट निकाल लिया, "लीजिए यह, अब यह मेरा हुआ।"

डाक्टर फिलिप्स को अब डर लगने लगा, "उसे देखने तो आप बिना इसे खरीदे भी आ सकती हैं!"

"मैं चाहती हूं यह मेरा हो।"

"ओह गॉड!" डाक्टर चिल्ला उठा, "बातो में मुझे तो समय का भी खयाल नहीं रहा," वह मेज की ओर लपका, "तीन मिनट पूरे हो चुके। खैर, कोई खास नुकसान नही हुआ होगा।" उसने सफेद कपूर के टुकड़े दूसरे परीक्षण-गिलास में घोले और फिर जैसे वह खुद-ब-खुद वापस सांपो के पिंजरे के पास खिंच गया। स्त्री अभी भी उसी साप को घूरे जा रही थी।

स्त्री ने पूछा, "खाता क्या है यह?"

"मैं तो इसे सफेद चूहे खिलाता हू। उस तरफ वाले पिंजरे के चूहे।"

"इसे आप दूसरे पिंजरे में रखेंगे? मैं इसे खिलाना चाहती हूं।"

"लेकिन इस समय इसे खाने की जरूरत ही नही है। अपने इस हफ्ते का चूहा यह हजरत पहले ही खा चुके हैं। कभी-कभी तो ये लोग तीन-तीन चार-चार महीनों तक कुछ नही खाते। मेरे पास एक साप था, उसने एक साल से ऊपर तक कुछ भी नही खाया।"

अपने उसी धीमे उतार-चढ़ावहीन लहजे में स्त्री ने पूछा, "आप मुझे चूहा बेचेंगे?"

डाक्टर ने कंधे झटके, "आप अपने साप को खाते देखना चाहती हैं?

अच्छी बात है। मैं दिखाता हूं आपको। एक चूहे का दाम पच्चीस सेंट होगा। एक तरफ से देखें तो सांप का चूहे को खाना सांडो की लड़ाई से भी ज्यादा मजेदार दृश्य है और दूसरी तरफ से देखे तो यह सिर्फ सांप के भोजन करने का एक तरीका है।" उसके लहजे में कड़वाहट आ गयी थी। प्राकृतिक कार्य-कलाप को जो लोग खेल और क्रीडा बना डालते है—उनसे उसे नफरत थी। वह खिलाड़ी नही, जीव-शास्त्री था। ज्ञान के लिए वह हजारो जीवो की हत्या कर सकता है, लेकिन आनन्द के लिए एक कीडा मारना भी उसके लिए मुश्किल है—यह उसके दिमाग में पहले से ही एकदम साफ था।

स्त्री ने धीरे-धीरे अपना सिर उसकी ओर घुमाया और उसके पतले-पतले होंठो पर मुस्कराहट झलक उठी, "मैं अपने साप को खिलाना चाहती हू," वह बोली, "मैं इसे दूसरे पिंजरे में रखूगी।" उसने पिंजरे का ऊपर का ढक्कन खोल लिया था और इससे पहले कि डाक्टर जाने कि वह क्या कर रही है, उसने अपना हाथ भीतर डाल दिया। डाक्टर एकदम छलाग लगाकर उसके पास पहुंचा और झट उसे पीछे खीच लिया। ढक्कन धड से गिरकर बन्द हो गया।

"आपको अक्ल है या नही ?" उसने गुस्से से पूछा, "हो सकता है वह आपको जान से न मारता; आपकी तबीयत जरूर अच्छी तरह दुरुस्त कर देता, फिर मेरी लाख कोशिशो के बाद भी आपको तारे नजर आते रहते।"

वह निरुद्विग्न शात-भाव से बोली, "तो फिर आप ही इसे दूसरे पिंजरे में रख दीजिए।"

डा० फिलिप्स को जैसे किसी ने झकझोर डाला। उसे महसूस हुआ कि जो आंखे किसी को भी देखती नही लग रही हैं—वह उन्हे सीधे देखने से कतरा रहा है। उसे लगा कि पिंजरे में चूहा डालना निहायत ही गलत है—जैसे इसमें कोई घोर पाप है। लेकिन ऐसा सब उसे क्यो लगा, वह खुद नही जान पाया। जब भी किसी ऐरे-गैरे ने चाहा है, उसने पिंजरे मे चूहे डाले हैं; लेकिन आज रात, इस विशेप इच्छा ने उसे इतना अस्वस्थ और असंतुलित बना डाला है कि मन खराब हो गया है। वह खुद अपने लिए इस सारी बात को समझने की कोशिश करता रहा।

"यो इसे देखना है तो बडा अच्छा," वह बोला, "इससे आपको पता चलेगा कि सांप कैसे अपना काम करता है ? इससे यह भी लगता है कि आपके दिल में अमेरिकन सांपो के लिए इज्जत है, लेकिन एक बात और भी है, सांप किस तरह अपने शिकार को मारता है, इसे लेकर हजारो लोगों के अजब-अजब खौफनाक खयालात होते हैं। मुझे लगता है इसका कारण चूहे के साथ अपना तादात्म्य कर लेना है। उस समय चूहा व्यक्ति का अपना प्रतिबिम्ब हो जाता है। लेकिन एक बार आप इसे अपनी आंखो से देख लें, तो सारी चीज

बड़ी ही निरपेक्ष और तटस्थ लगे। चूहा केवल शुद्ध चूहा रह जाता है और सारा खौफ हवा हो जाता है।"

उसने दीवार पर लगी एक लम्बी-सी छड़ी उठा ली, इसमें एक सरकने वाला चमड़े का फन्दा लगा था। जाल खोलकर उसने फन्दा बड़े सांप के सिर पर डालकर खींचा और गांठ को कस दिया। एक कर्णभेदी खड़खड़ाहट सारे कमरे में भर गयी। जब उसने सांप को उठाकर खाने वाले पिंजरे में डाला तो छड़ी की मूठ पर सांप का मोटा-सा शरीर बुरी तरह लिपट गया था। कुछ देर तो उस पिंजरे में वह हमला करने को तैयार तना खड़ा रहा, लेकिन फिर धीरे-धीरे उसकी फुंकारें बंद हो गयीं। सांप रेंगता हुआ कोने में सरक गया और अपने शरीर को हिंदी अंक चार की शक्ल में डालकर चुपचाप लेट गया।

"देखा आपने," नौजवान डाक्टर ने समझाया, "ये सांप काफी पालतू हैं। मेरे पास तो ये काफी दिनों से हैं। मेरा ख्याल है कि अगर मैं चाहूं तो इन्हें ही अपना कार्य-क्षेत्र बना सकता हूं, लेकिन जो भी इन अमेरिकन सांपों को अपना कार्य-क्षेत्र बनाता है, देर-सबेर इनके दांतों का शिकार हो जाता है और इस तरह तकदीर के साथ खिलवाड़ करने का मेरा कतई इरादा नहीं है।" उसने स्त्री को नजर भरकर देखा। पिंजरे में चूहा डालना उसे अच्छा नहीं लग रहा था—जैसे बड़ी वितृष्णा हो रही हो। स्त्री अब नये पिंजरे के सामने जा पहुंची थी। उसकी काली-काली आंखें फिर से सांप के पथरीले सिर को टकटकी लगाये देखे जा रही थीं।

बोली, "चूहा डालिए न भीतर!"

बड़े बेमन से वह चूहों के पिंजरे की ओर बढ़ा। जाने क्यों, उसे चूहे पर बड़ा तरस आ रहा था। इस तरह तो उसने पहले कभी भी महसूस नहीं किया। तार की जाली के पीछे अपनी ओर उलछते सफेद-सफेद शरीरों वाले चूहों के खचपच-खचपच करते ढेर को उसकी आंखें टटोलती-सी देखती रहीं। 'कौन-सा हो?' उसने मन ही मन कहा, 'इनमें से कौन-सा चूहा हो?' अचानक गुस्से से वह स्त्री की तरफ घूम पड़ा, "आप कहें तो चूहे की बजाय एक बिल्ली न रख दूं भीतर? तब आप देखेंगी कि सचमुच की लड़ाई क्या होती है? बिल्ली, हो सकता है जीत भी जाये, लेकिन अगर वह जीत गयी तो हो सकता है सांप का काम तमाम कर डाले। आप चाहें तो मैं आपके हाथ एक बिल्ली बेच सकता हूं।"

स्त्री ने उसकी ओर मुड़कर देखा तक नहीं, "एक चूहा रख दीजिए भीतर," वह बोली, "मैं तो इसे खाना खिलाना चाहती हूं।"

डाक्टर ने चूहों का पिंजरा खोला और अपना हाथ भीतर ठूंस दिया। उंगलियों की पकड़ में एक पूंछ आ गयी तो उसने एक लाल-लाल आंखों वाले

गोल-मटोल चूहे को खींचकर ऊपर उठा लिया। पहले तो वह उसकी उंगलियों को काटने की कोशिश में छटपटाया, पर फिर हारकर चारों हाथ-पांव फैला-कर चुपचाप बेजान की तरह पूंछ से लटका रहा। डाक्टर तेजी से कमरा पार करके आया, खाने वाले पिंजरे का ढक्कन खोला और चूहे को फर्श पर साप के ऊपर फेंक दिया।

"लीजिए, देखिए अब," उसने लगभग चीखकर कहा।

चूहा पावों के बल गिरा, चारों तरफ घूमा और अपनी सुर्ख नगी पूंछ की तरफ सूं-सूं करता रहा। फिर नथुने फुलाकर सूंघते हुए से निहायत तटस्थ भाव से रेत पर दौड़ लगाने लगा। कमरे में एकदम स्तब्धता छायी थी। डॉक्टर फिलिप्स की समझ में नहीं आया कि नीचे के खंभों में पानी ही उसांसें ले रहा है या स्त्री की सांसें गहरी-गहरी चलने लगी हैं। एक कनखी से उसने देखा, स्त्री का शरीर ऐंठ और तन-सा गया है।

बहुत ही आहिस्ता और धीरे-धीरे साप आगे सरका। जीभ बाहर और भीतर लपलपाने लगी। सारी हरकत इतनी नामालूम, आहिस्ता और धीरे-धीरे हो रही थी कि लगता ही नहीं था कि सांप के भीतर कोई हरकत हो भी रही है। पिंजरे के दूसरे सिरे पर चूहा आत्माभिमान से तना हुआ-सा बैठ गया था और सिर झुकाकर अपनी छाती के मुलायम, महीन-महीन बालों को चाटने लगा था। अपनी गर्दन को दृढ़तापूर्वक रोमन अक्षर 'एस' की शक्ल में रखे हुए सांप आगे सरक रहा था।

चुप्पी नौजवान के सिर पर मानो धक-धक बज रही थी। उसे लगा जैसे खून उसके शरीर में सन्नाने लगा है। उसने ऊंचे स्वर में कहा, "देखिए, सांप हमला करने के लिए सिर के मरोड़ को हमेशा तैयार रखता है। ये अमेरिकन साप बड़े ही चौकन्ने होते हैं। कहना चाहिए बड़े ही डरपोक जीव होते हैं। यह सारी कार्यवाही बेहद नाजुक होती है। जैसी कुशलता और चतुराई से सर्जन अपना काम करता है, ठीक उसी तरह सांप का भोजन भी बड़ी कुशलता और सावधानी से होता है। सर्जन जानता है कि किस जगह कौन औजार काम आयेगा—वहां वह इस या उस औजार को प्रयोग करने का जोखिम नहीं उठा सकता।"

अब तक सांप पिंजरे के बीचोबीच सरक आया था। चूहे ने सिर उठाया, साप को देखा और फिर उसी तटस्थता और इत्मीनान से अपनी छाती को चाटने लगा।

"दुनिया की यह सबसे खूबसूरत और आकर्षक चीज है," नौजवान ने बताया। खून उसकी नसों में बजने लगा था, "साप ही यह दुनिया की सबसे खौफनाक चीज भी है।"

सांप अब पास आ गया था। अब उसका सिर रेत से कुछ इंच ऊंचा उठ आया था। दूरी का अंदाज लगाता हुआ सिर घात लगाये हुए आगे-पीछे झूम रहा था। डाक्टर फिलिप्स ने फिर स्त्री की ओर निगाहें घुमायीं। उत्तेजना और भय से वह सिहर उठा। वह भी झूम रही थी"'ज्यादा नहीं, लेकिन बहुत ही हल्के-हल्के बेमालूम-सी, सिर्फ लगती थी।

चूहे ने फिर सिर उठाया और सांप को देखा। वह चारों पांवों के बल गिरा और यों ही सिर सांप की तरफ किये-किये पीछे सरका—कि तभी खट'''एक बिजली-सी कौंधी। कुछ भी देख पाना असंभव था। जैसे किसी अदृश्य झपाटे के नीचे आ गया हो, चूहा इस तरह चिचिया उठा। सांप तेजी से फिर अपने उसी पहले वाले कोने में लौट आया और फिर वहीं लेट गया—हां, उसकी जीभ अभी भी लगातार लपलपा रही थी।

"कमाल है!" डाक्टर फिलिप्स चिल्ला उठा, "ठीक कंधों की हड्डियों के बीचोंबीच चोट की है। दांत करीब-करीब दिल तक पहुंच गये होंगे।"

छोटी-सफेद धौंकनी की तरह चूहा अभी भी खड़ा-खड़ा हांफ रहा था। सहसा वह एकदम ऊपर उछला और करवट के बल गिर पड़ा। एक सेकेंड उसके पांव ऐंठन से हवा में छटपटाते रहे और फिर प्राण-पखेरू उड़ गये।

स्त्री ने सांस की गांस छोड़कर बदन ढीला किया, जैसे नींद में शरीर ढीला छोड़ दिया हो।

"क्यों?" इस बार नौजवान ने पूछा "यह मानसिक उद्वेग के सागर में गहरे स्नान करने जैसा ही लगता है न?"

स्त्री ने अपनी धुंधली-धुंधली आंखें उसकी ओर घुमायी, "अब क्या यह इसे खा जायेगा?" उसने सवाल किया।

"बिल्कुल खायेगा। केवल खिलवाड़ के लिए तो इसने इसे नहीं मारा। मारा इसलिए है कि भूखा था।" स्त्री के मुंह के सिरों पर फिर हल्की-सी ऐंठन आयी। वह फिर सांप को देखने लगी, "मैं इसे खाते हुए देखना चाहती हूं।"

सांप फिर अपना कोना छोड़कर बाहर निकल आया। अब उसकी गर्दन में वह हमला करने वाली मरोड़न नहीं थी। लेकिन वह जैसे फूंक-फूंककर ऊपर सरक रहा था—मान लो अगर चूहा हमला कर भी दे तो वह उछल-कर पीछे आ जाये। अपनी भोथरी नाक से उसने चूहे को कोंचा और फिर पीछे सिमट आया। उसे संतोष हो गया कि चूहा मर गया है। फिर सिर से लेकर पूंछ तक सांप ने उसके शरीर को अपनी ठोडी से सहलाया। लगा जैसे वह शरीर का जायजा लेता हुआ प्यार से उसे चूम रहा हो। आखिरकार उसने अपना मुंह खोला और अपने जबड़ों के सिरों पर जीभ फिरायी।

डा० फिलिप्स अपनी सारी इच्छा-शक्ति लगा कर उस स्त्री की ओर जाने से अपने ध्यान को रोके था। उसने मन ही मन कहा, 'अगर यह भी अपना मुंह खोले होगी तो मेरा भी दिमाग खराब हो जायेगा। मुझे डर लगने लगेगा।' अपनी निगाहें उधर से हटाये रखने में उसे कैसे सफलता मिली, यह वही जानता था।

सांप ने अपना जबडा चूहे के सिर पर अडाया और रुक-रुककर धीरे-धीरे लकवे के झटकों की तरह चूहे को निगलने लगा। जबडे फंसे तो सारा गला आगे सिमट आया। जबडों ने फिर दुबारा अपनी पकड ठीक की।

घूमकर डाक्टर फिलिप्स अपनी काम करने की मेज पर लौट आया। तलखी से बोला, "आपके कारण मेरी प्रक्रिया-माला की एक कडी यों ही निकल गयी न ? अब यह सारा सेट कभी पूरा नहीं होगा।" एक परीक्षण गिलास को उसने कम शक्ति वाले अण्वीक्षण-यंत्र के नीचे रखकर उसे देखा। फिर झल्लाकर उसने सारी तश्तरियों के पदार्थ को बर्तन धोने की नांद में उलट दिया। लहरें अब कम हो गयी थीं, इसलिए अब फर्श के पार से सीला-सीला भभका ही आ पा रहा था। नौजवान डाक्टर ने अपने पांवों के पास ही एक कमानी वाले दरवाजे का पल्ला उठाया और सारी तारक-मछलियां नीचे समुद्र के काले-काले पानी में उलट दीं। पालने की सूली पर बड़ी रोशनी में उपहास से मुंह बिराती दांत चमकाती हुई बिल्ली के पास आकर वह कुछ देर रुका। नली द्वारा प्रविष्ट होने वाले द्रव के कारण उसका शरीर फूलकर कुप्पा हो गया था। उसने नलकी बंद की, सुई निकाली और नस को कसकर बांध दिया।

"आप थोड़ी-सी कॉफी पियेंगी क्या ?" उसने पूछा।

"नहीं धन्यवाद ! मुझे अभी जल्दी ही चले जाना है।"

सांप के पिंजरे के पास वह खडी थी। डाक्टर उसके पास आ गया। चूहा निगला जा चुका था—बस, सांप के मुंह के बाहर उसकी एक इंच लाल-लाल पूंछ इस तरह निकली हुई थी मानो किसी को चिढाने को जीभ निकाल रखी हो। गले ने फिर भीतर की तरफ सांस खींची और पूंछ भी गायब हो गयी। जबडे अपने-अपने स्थानों में सटकर बैठ गये और वह बडा सांप अलसाया-सा रेंगकर कोने में आ गया। बडा-सा चार का अंक बनाया और रेत पर अपना सिर डालकर सो गया।

"इसे तो अब नींद आ गयी," स्त्री ने कहा, "अब मैं जा रही हूं। लेकिन मैं थोडे-थोडे समय बाद आकर अपने सांप को खाना खिलाया करूंगी। चूहों के पैसे दे दूंगी, लेकिन इसे जीभरकर खिलाना चाहती हूं और फिर किसी समय अपने साथ ले जाऊंगी।" एक क्षण को अपने धूसर-धूमिल सपनों से उसकी आंखें पार निकल आयीं, "याद रखिये, यह मेरा है। इसका जहर मत निकालिए

मेरी इच्छा है। जरूर इसमें ही रहे। अच्छा नमस्कार।" तेजी से वह दरवाजे की तरफ बढ़ी और बाहर चली गयी। डाक्टर ने उसके जाते कदमों की आवाज को सीढ़ियों पर सुना, लेकिन फिर नीचे के फर्श पर उसके चलने की आवाज सुनाई नहीं दी।

डाक्टर फिलिप्स ने घुमाकर एक कुर्सी अपनी ओर की और सांप के पिंजरे के सामने ही बैठ गया। उस निश्चल सांप की ओर निगाहें टिकाये हुए वह अपने विचारों की गुत्थी सुलझाने की कोशिश करता रहा। मन ही मन बोला—'मनोवैज्ञानिक यौन-प्रतीकों के बारे में मैंने इतना कुछ पढ़ा है; लेकिन वह सब इसे समझने में मदद करता नहीं लगता। शायद मैं सबसे बहुत ज्यादा अलग पड़ गया हूं। हो सकता है मैं इस सांप को मार डालूं। काश, मैं जान पाता! लेकिन इस सबको जानने के लिए मैं प्रार्थना करने किसी भगवान् के पास नहीं जाऊंगा।'

हफ्तों वह उसके लौटने की राह देखता रहा। उसने निश्चय किया, "इस बार जब वह आयेगी तो मैं उसे अकेला छोड़ बाहर चला जाऊंगा। उस कम्बख्त को दुबारा देखूंगा ही नहीं।"

मगर वह फिर कभी वापस नहीं आयी। वह जब भी बस्ती में बाहर घूमने जाता तो महीनों उसे तलाश करता। कई बार तो किसी भी लंबी-सी स्त्री को वही समझकर उसके पीछे हो लेता, लेकिन वह स्त्री उसे फिर कभी दिखाई नहीं दी।



दीवार

ज्यां पाल सार्त्र

जन्म : 21 जून, 1905; मृत्यु : 16 अप्रैल, 1980

फ्रांस के लेखक ज्यां पाल सार्त्र को सन् 1964 में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया परन्तु इन्होंने इस पुरस्कार को अस्वीकार कर दिया। सार्त्र की रचनाओं का मुख्य आधार है अस्तित्ववाद। अस्तित्ववाद के अनुसार 'होना' 'तत्त्व' के पूर्व है। इन्होंने अपनी रचनाओं में इसी का प्रचार किया है और इस सिद्धान्त के ये मुख्य प्रचारक माने जाते हैं। इनको पुरस्कार प्रदान करते हुए स्वीडिश अकादमी ने कहा था, "इनकी विचारपूर्ण रचनाओं के लिए जिन्होंने अपनी स्वाधीनता की लय और सत्य की खोज के कारण हम लोगों के समय पर बहुत प्रभाव डाला है।" और सार्त्र ने पुरस्कार अस्वीकार करते हुए कहा था, "मैं हमेशा से ही सरकारी सम्मान को अस्वीकार करता रहा हूं। लेखक को स्वतन्त्र होना चाहिए। सरकारी सम्मान से उसकी कला पर प्रभाव और दबाव पड़ता है, और यह उचित नहीं है।"

इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं : साइकालाजी एण्ड इमेजिनेशन, ट्रांसेण्डेंस आफ दि ईगो, बीइंग एण्ड नथिंग, नौसिया, दि वाल एण्ड अदर स्टोरीज, दि एज आफ रीजन, दि रिप्रीव, ट्रबल्ड स्लीप, दि विक्टर्स, नो एक्जिट एण्ड दि फ्लाइज, इन दि मेश, ह्वाट इज लिटरेचर, ल एक्जिस्टेन्शियलिज्म एस्ट अन् ह्यूमेनिज्म, बादलेयर आदि।

अनुवाद : सुरेश उनियाल

उन्होंने हमें एक बड़े सफ़ेद कमरे में धकेल दिया था। मेरी आंखें चौंधियाने लगी थीं क्योंकि वहां का प्रकाश आंखों को चुभ रहा था। तभी मेरी नजर एक मेज पर पड़ी। उसके पीछे चार आदमी बैठे कागजों को देख रहे थे, वे सैनिक नहीं दिख रहे थे। कैदियों का एक जत्था पीछे की तरफ खड़ा था और हमें उनमें शामिल होने के लिए पूरे कमरे को पार करना था। उनमें से कइयों को मैं जानता था और कुछ अजनबी विदेशी थे। जो मेरे सामने थे उनके बाल भूरे थे और सिर गोल, वे एक जैसे लगते थे। शायद वे फ्रांसीसी थे। उनमें से छोटे कद वाला बार-बार अपनी पैंट को ऊपर खींचता। वह काफी नर्वस लग रहा था।

तीन घण्टे बीत गये। मुझे चक्कर आ रहे थे और सिर बिल्कुल खाली-सा हो गया था। कमरा खूब गर्म था और सुखद लग रहा था, क्योंकि पिछले चौबीस घंटों से हम लोग ठंड में कांप रहे थे। गार्ड एक-एक करके कैदियों को मेज तक लाये। चारों आदमियों ने सबसे उनके नाम और व्यवसाय पूछे। अधिकतर समय उन्होंने खास कुछ नहीं किया, बस एक-आध सवाल इधर-उधर पूछते रहे, "शस्त्रखाने पर हुए हमले से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?" या "नौ तारीख की सुबह को तुम कहां थे और क्या कर रहे थे?" वे जवाब बिल्कुल नहीं सुन रहे थे, कम से कम लग तो यही रहा था। वे एक क्षण के लिए चुपचाप सीधे देखते और फिर कुछ लिखने लगते। उन्होंने टॉम से पूछा कि क्या वह इंटरनेशनल ब्रिगेड में था। टॉम कुछ छिपा नहीं सका क्योंकि उसके कोट की जेब में से कागज बरामद हो गये थे। उन्होंने जुआन से कुछ नहीं पूछा, पर उसके नाम बताने के बाद काफी देर तक वे लिखते रहे थे।

"मेरा भाई जोसे अराजकतावादी था।" जुआन कह रहा था, "आप जानते हैं कि अब वह जीवित नहीं है। आप जानते हैं कि मेरा सम्बन्ध किसी दल से नहीं है, राजनीति से तो मुझे कभी मतलब ही नहीं रहा।"

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। जुआन कहता रहा, "मैंने कुछ नहीं किया, मैं किसी दूसरे के किये की सजा नहीं भुगतना चाहता।"

उसके होंठ कांप रहे थे। एक गार्ड ने उसे चुप कराया और वहां से हटा दिया। अब मेरी बारी थी।

"तुम्हारा नाम पाब्लो इब्बीता है?"

"हां।"

उस आदमी ने कागजों पर एक नजर डाली और फिर पूछा, "एमो ग्रिस कहां है ?"

"मैं नही जानता।"

"तुमने छह से उन्नीस तारीख तक उसे अपने घर छिपाए रखा था ?"

"नही !"

वे एक मिनट तक कुछ लिखते रहे फिर गार्ड मुझे बाहर ले आया। गलियारे में टॉम और जुआन दो गार्डों के बीच मे खडे मेरा इतजार कर रहे थे। हम साथ-साथ चलने लगे। टॉम ने एक गार्ड से पूछा, "अब ?"

"अब क्या ?" गार्ड ने गुर्राकर पूछा।

"यह गवाही थी या फैसला ?"

"फैसला।" गार्ड ने कहा।

"अब वे हमारा क्या करेंगे ?"

रूखे स्वर मे गार्ड ने जवाब दिया, "तुम्हारी कोठरियों में शान्ति छा जायेगी।"

दरअसल हमारी कोठरी अस्पताल के तहखाने मे थी। लगातार हवा के झोंके आने के कारण यह भयानक रूप से ठंडी थी। हम रात-भर कांपते रहे थे और दिन में भी हालत कुछ अच्छी नही थी। पिछले पांच दिन मैंने एक प्राचीन चर्च की एक कोठरी में बिताये थे। चूंकि कैदी बहुत अधिक थे और जगह कम, इसलिए जहां भी जगह मिली, हमें बन्द कर दिया। उस कोठरी को छोडने पर मैं खुश इसलिए नही था कि वहां ठंड बहुत थी बल्कि इसलिए कि वहां मैं अकेला था। इस तहखाने में मैं अकेला नही था। जुआन बिल्कुल चुप था। एक तो वह डरा हुआ था और दूसरे अभी उसकी बोलने की उम्र भी नही थी। पर टॉम अच्छी बात करने वाला था और अच्छी स्पेनी जानता था।

इस तहखाने में एक बेंच और चार चटाइयां पड़ी थी। हमें यहां छोड़ने के बाद जब वे लौट गये तो हम बैठ गये और उनके जाने की आहट लेने लगे। एक लम्बे क्षण के बाद टॉम ने कहा, "उन्होंने हमें अपने शिकंजे में कस लिया है।"

"मेरा भी यही ख्याल है," मैंने कहा, "पर मैं नही समझता कि इस लड़के के साथ वे कुछ करेंगे।"

"इसके खिलाफ उनके पास कुछ है भी नहीं," टॉम ने कहा, "सिवाय इसके कि वह एक नागरिक सेना के व्यक्ति का भाई है।"

मैंने जुआन की तरफ देखा, लगा जैसे उसने कुछ सुना ही नही था। टॉम कह रहा था, "तुम्हे पता है वे सरगोसा मे क्या करते हैं ? वे लोगों को सड़क

पर लिटा देते हैं और उनके ऊपर ट्रक चलवा देते हैं। एक मोरस्कोवासी ने हमें यह बताया था। ऐसा वे बारूद बचाने के लिए करते हैं।"

"लेकिन इसमें पेट्रोल तो खर्च होता है।" मैंने कहा।

मुझे टॉम पर गुस्सा आ रहा था, उसे यह सब नहीं कहना चाहिए था।

"इसके बाद कुछ अफसर उस सड़क पर आते हैं," वह कह रहा था, "और इस सबका मुआयना करतेहैं। उनके हाथ अपनी जेबों में ठूसे होते हैं और मुह में सिगरेट दबी होती है। क्या तुम समझते हो कि वे तड़पते लोगों को मार देते होंगे? नही! वे उन्हे चीखने-चिल्लाने देते हैं। घंटों-घंटों। वह मोरस्कोवासी तो बता रहा था कि इन सबसे तो उसे उबकाई आने लगी थी।"

"लेकिन मैं नही समझता कि वे यहा भी वही सब करेंगे," मैंने कहा, "जब तक कि उनके पास कारतूसो की सचमुच ही कमी न हो जाये।"

इस कोठरी मे प्रकाश चार रोशनदानों तथा छत पर बायीं ओर से एक वृत्ताकार छेद से आता था। इस छेद में से ऊपर आकाश भी देखा जा सकता था। इस छेद के जरिये इस तहखाने में कोयला उतारा जाता है, यों अब इस पर ऊपर से दरवाजा लगा दिया गया है। इस छेद के ठीक नीचे कोयले के चूरे का एक बड़ा-सा ढेर था, जो अस्पताल को गर्म रखने के काम आता था। पर लड़ाई शुरू होते ही अस्पताल को खाली कर दिया गया तथा कोयला वही पड़ा पड़ा रहा। कई बार जब वे ऊपर का दरवाजा बन्द करना भूल जाते तो यह कोयला हवा-पानी से खराब हो जाता।

टॉम कांपने लगा था। "हे भगवान, मैं ठंडा हो रहा हूं," वह बड़बड़ाया, "मैं मरा जा रहा हूं।"

वह उठकर व्यायाम करने लगा। उसके शरीर की मरोड़ के साथ ही उसके गोरे बालों से भरे सीने पर से कमीज खुल जाती। वह पीठ के बल जमीन पर लेट गया था तथा टांगें उठाकर साइकिल-सी चलाने लगा था। उसके विशालकाय पुट्ठे थरथरा रहे थे। टॉम काफी भारी और थुलथुला था। मैंने सोचा कि रायफल की गोली उसके मांस में इतनी ही आसानी से घुस जायेगी जैसे मक्खन के लौंदे में संगीन। अगर वह दुबका होता तो यह बात मेरे दिमाग में ही न आती।

मुझे बहुत ज्यादा ठंड तो नहीं लग रही थी। हां, इतना जरूर था कि मेरे हाथ और कंधे सुन्न हो गये थे। कई बार अचानक किसी चीज की कमी खटकती और मैं कोट के लिए नजरें इधर-उधर घुमाता, पर तभी याद आता कि कोट तो उन्होंने मुझे दिया ही नहीं था। मुझे काफी परेशानी हो रही थी। उन्होंने हमारे कपड़े उतरवाकर अपने सैनिकों को दे दिये थे और हमारे पास सिर्फ कमीजें तथा किरमिच की वे पैंटें छोड़ दी थीं जिन्हें अस्पताल के मरीज गर्मियों

में पहना करते थे। कुछ देर बाद भारी-भारी सांसें लेता हुआ टॉम मेरे बगल में आ बैठा।

"गर्मी आयी?"

"नही, पर सर्दी कुछ कम हुई है।"

शाम के करीब आठ बजे एक मेजर दो फालेंगिस्तसों के साथ आया। उसके हाथ में एक कागज था। उसने गार्ड से पूछा, "इन तीनों के नाम क्या है?"

"स्टेनबोक, इब्बीता और मिखल।" गार्ड ने बताया।

मेजर ने चश्मा आंखों पर चढ़ाया और सूची पर नजर दौड़ायी, "स्टेनबोक स्टेनबोक···का हा···तुम्हे मौत की सजा दी गयी है। कल सुबह तुम्हें गोली से उड़ा दिया जायेगा।" उसकी नजर कागज पर ही थी, "और बाकी दोनो को भी।"

"यह नही हो सकता," जुआन चीखा, "मुझे नही।"

मेजर ने चकित होकर उसकी ओर देखा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

"जुआन मिखल।" उसने बताया।

"ठीक है, तुम्हारा नाम इसमें है," मेजर ने कहा, "तुम्हें यही सजा दी गयी है।"

"मैंने तो कुछ नही किया।" जुआन के स्वर मे हताशा थी।

मेजर ने कंधे झटके और फिर टॉम और मेरी तरफ घूम गया।

"तुम बास्क हो?"

"हममें से कोई भी बास्क नही है।"

वह चिढ़-सा गया था। "वे तो बता रहे थे कि तीनों बास्क हैं। खैर, मैं इसके पीछे अपना समय खराब नही करूंगा। तो तुम लोगो को किसी पंडित की जरूरत नही है?"

हमने जवाब देने की जरूरत नही समझी।

वही बोला, "कुछ ही देर बाद एक बेल्जियम डाक्टर आ रहा है। वह पूरी रात तुम्हारे साथ रहेगा।" उसने एक सैनिक सलाम किया और वापस मुड़ गया।

"मैंने क्या कहा था," टॉम बोला, "वही बात हुई।"

"हां," मैंने कहा, "लेकिन इस बच्चे के साथ यह बहुत बुरा हुआ।"

यह बात मैंने शालीनतावश कही थी, पर मुझे वह लड़का बिल्कुल भी अच्छा नही लगा था। उसका चेहरा बहुत पतला तथा आतंकित था, कष्टों ने उसकी शक्ल बिगाड़ दी थी। तीन दिन पहले वह एक स्मार्ट किस्म का लड़का था, पर अब एक बूढ़े भूत की तरह दिख रहा था और लगता था कि अगर उन्होंने उसे छोड़ दिया तब भी उसकी जवानी लौटेगी नही। उसके प्रति दया

उपजना सहज ही था, पर दया से मुझे घृणा थी। उसने कुछ कहा नहीं, पर वह पीला पड गया था। उसका चेहरा और उसके हाथ सभी पीले पड़ गये थे। वह फिर नीचे बैठ गया और अपनी गोल-गोल आखों से जमीन को देखने लगा। टॉम सहृदय था, उसने उसके हाथ पकडने चाहे, पर उस लडके ने उसे बडी बेदर्दी से झटक दिया और चेहरा लटका दिया।

"उसे कुछ देर के लिए अकेला छोड़ दो," मैंने धीमी आवाज मे कहा, "तुम देखना, वह रोने लगेगा।"

टॉम ने मेरी बात मान ली, पर वह इससे खुश नही था। वह उस लड़के को सात्वना देना चाहता था, इससे यह भी था कि उसका अपना समय भी ठीक से कट जाता और उसे अपने बारे मे सोचने की सुध ही न रहती। मैं कुछ खिन्न हो गया था। मैंने मौत के बारे मे कभी नही सोचा, क्योंकि इसका कोई कारण ही नही था, पर चूंकि अब कारण था और मौत के अलावा सोचने के लिए कुछ और था भी नहीं।

टॉम फिर बात करने लगा था। "अच्छा, क्या तुम किसी को श्मशान पहुचाने गये हो?" उसने मुझसे पूछा। मैंने कोई जवाब नही दिया। फिर वह मुझे बताने लगा कि अगस्त के शुरू से अब तक वह छः लोगों को श्मशान पहुचा चुका है। उसे अभी तक हालात का अहसास नही हुआ था। बल्कि मैं तो कहूगा कि वह अहसास करना ही नहीं चाहता था। मुझे भी अभी इसका ठीक तरह से अहसास नहीं हुआ था। जब मैं गोलियों की बात सोचने लगा, उनकी बौछार को अपने शरीर के अन्दर धसने की बात सोचने लगा तो मुझे काफी कष्ट हुआ। ये सब असली सवाल से बाहर की बातें हैं, पर मैं शांत था, ठीक तरह से समझने के लिए हमारे पास पूरी रात थी। कुछ ही देर बाद टॉम चुप हो गया था। मैंने कनखियों से उसकी ओर देखा, उसका चेहरा पीला पड गया था। मैंने खुद से कहा, "अब शुरू हुआ है।"

लगभग अंधेरा हो गया था। रोशनदानों से कोयले के ढेर पर उजास झर रहा था। छत पर बने छेद मे से मैं एक तारे को देख रहा था। रात जरूर निर्मल और बर्फीली होगी।

दरवाजा खुला, दो गार्ड और उनके पीछे भूरी वर्दी पहने एक सुनहरे बालों-वाला व्यक्ति भीतर आये। उसने हमे सलाम किया और बताया, "मैं डॉक्टर हूं। इन दुखद घड़ियों में आपकी सहायता करने का अधिकार मुझे दिया गया है।"

उसकी आवाज रुचिकर और शालीन थी। मैंने उससे पूछा, "तुम यहां क्या चाहते हो?"

"यह तुम्हारी इच्छा पर है। तुम्हारे अन्तिम क्षणों को कम कष्टकारी

बनाने के लिए मैं जो कुछ कर सकूंगा, करूंगा।"

"लेकिन यहा तुम किसलिए आये हो, तुम्हारी जरूरत कुछ और लोगो को है, जिनसे अस्पताल भरे पड़े है।"

"मुझे यहा भेजा गया है," बिना किसी एक की ओर देखे उसने जवाब दिया, "क्या आप लोग सिगरेट पीना पसन्द करेगे? मेरे पास सिगरेट है, और सिगार भी।"

उसने अंग्रेजी सिगरेट हमारी ओर बढ़ायी, पर हमने लेने से इन्कार कर दिया। मैंने उसकी आंखो मे झाका, वह झल्लाया हुआ-सा लग रहा था। मैंने उससे कहा, "तुम यहां आकर हम पर कोई कृपा नही कर रहे हो। और फिर मैं तुम्हे जानता हू। बैरेको के अहाते मे मैंने तुम्हे फासिस्टो के साथ देखा था, उसी दिन जिस दिन मुझे कैद किया गया था।"

मैं अभी और भी कुछ कहना चाहता था पर अचानक मुझे कुछ हो गया। उस डाक्टर के वहा होने से ही मेरी दिलचस्पी खत्म हो गयी। आमतौर पर मैं जिसकी खिचाई करने पर उतर आता हू, उसे बख्शता नही। पर उस समय मेरी बात करने की इच्छा ही मर गयी थी। मैंने कधे उचकाये और अपनी आंखें दूसरी ओर घुमा ली। कुछ ही देर बाद मैंने अपनी गर्दन उठायी, वह उत्सुकता से मेरी ओर देख रहा था। गार्ड चटाई पर बैठे थे। दोनो गार्डों में से एक लम्बा-पतला पैंड्रो मक्खियां मार रहा था और दूसरा ऊघ रहा था। उसका सिर कभी एक ओर झुकता तो कभी दूसरी ओर।

"अंधेरा हो गया है, क्या लैंप ला दू?" अचानक पैंड्रो ने डाक्टर से पूछ लिया। दूसरे ने गर्दन हिलायी, "हा।" पहले तो मै उसे भोदू समझ रहा था, पर वह था नही। उसकी नीली आखो के भीतर झाकने पर मुझे लगा कि अगर उसका कोई कसूर है, तो वह है उसके भीतर कल्पनाशीलता का अभाव। पैंड्रो बाहर गया और फिर एक तेल का लैंप उठा लाया जिसे उसने बेंच के कोने पर रख दिया। इससे उजाला तो नही हुआ, पर अंधेरे से तो अच्छा ही था। पिछली रात तो उन्होंने हमे अंधेरे मे ही रखा था। कुछ देर तक तो मैं लैंप से छत पर बने हुए प्रकाश के घेरे को ही देखता रहा। मैं मंत्रमुग्ध था। अचानक मैं जागा, प्रकाश का घेरा खत्म हो गया था और मुझे लग रहा था जैसे मैं किसी भारी बोझ के नीचे दब गया हू।

यह मृत्यु का विचार या भय नहीं था, इसका कोई नाम नहीं था। मेरे जबड़े जल रहे थे और सिर दर्द कर रहा था।

मैंने अपने आपको झकझोरा और अपने दोनों साथियो की ओर देखा। टॉम ने अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा रखा था। मुझे तो उसकी गर्दन पर गोरी, भारी गुद्दी भर दिखाई दे रही थी। जुआन की हालत तो बहुत खराब

थी। उसका मुंह खुला था और नथुने कांप रहे थे। डाक्टर उसके पास गया और उनके कंधे पर हाथ रखा, जैसे उसे दिलासा दे रहा हो। पर उसकी आंखें ठंडी थीं। फिर मैंने देखा कि डवाटर का हाथ चुपचाप उसकी बांह पर से सरकता हुआ उसकी कलाई तक आ गया। जुआन ने उसकी ओर जरा भी ध्यान न दिया। फिर उसने उसकी कलाइयों को अपनी तीन उंगलियों में पकड़ा और थोड़ा अपनी ओर खींच लिया, साथ ही खुद भी थोड़ा घूमकर मेरी ओर पीठ कर ली। मैंने थोड़ा पीछे झुककर देख लिया था कि उसने उसकी कलाई को पकड़े-पकड़े दूसरे हाथ से अपनी जेब से घड़ी निकाली और कुछ देर के लिए उसे देखता रहा। एक मिनट बाद उसने उसका हाथ छोड़ दिया और खुद पीठ दीवार पर टिका दी। और फिर अचानक जैसे उसे कुछ याद आया हो, उसने झटके से अपनी जेब में एक नोट बुक निकाली और उस पर कुछ लाइनें लिखीं। "हरामी" गुस्से में यही सब मेरे दिमाग में आया। "जरा आकर वह मेरी नब्ज तो देखे, उसके सड़े हुए थोबड़े को ठीक करने के लिए मेरा एक घूंसा ही काफी होगा।"

वह मेरे पास आया तो नहीं पर मुझे लगा, वह मेरी ओर देख रहा था। मैंने अपनी गर्दन उठायी और उसकी ओर जवाबी दृष्टि डाली। फिर यूं ही दिखावे के तौर पर उसने मुझसे पूछा, "तुम्हें यहां ठंड तो नहीं लग रही है?" वह ठंडा और विवर्ण दिख रहा था।

"नहीं," मैंने जवाब दिया।

उसकी कठोर नजरें मुझ पर जमी रहीं। अचानक मेरा हाथ अपने चेहरे की ओर गया, वह पसीने से भीगा हुआ था। इस तहखाने में इन सर्दियों के बीच में हवा के झोंकों के बावजूद मुझे पसीना आ रहा था। मैंने अपने बालों पर हाथ फेरा, जो पसीने से चिपचिपे हो गये थे। मैंने देखा, मेरी कमीज भीग गयी थी और मेरी त्वचा से चिपक गयी थी। मुझे एक घंटे से पसीना आ रहा था पर महसूस नहीं हो रहा था। वह सुअर भी मौका नहीं चूका, उसने मेरे गालों पर फिसलती हुई पसीने की बूंदें देख ली होंगी और सोचा होगा कि यह भय के शरीर में पूरी तरह समा जाने का लक्षण है। इससे उसने गर्व का अनुभव किया होगा। मेरी इच्छा हुई कि खड़ा हो जाऊं और उसके थोबड़े को रौंद डालूं, पर इससे पहले कि मैं उठने की कोशिश करता, मेरा गुस्सा और शर्म जाते रहे थे और मैं फिर बेंच पर गिर गया था, उदासीन।

गर्दन को रूमाल से पोंछते हुए मैंने राहत महसूस की, क्योंकि मैं सिर से बहते हुए पसीने को अपनी गर्दन पर फिसलते हुए महसूस कर रहा था, जो मुझे काफी बुरा लग रहा था, पर रूमाल भी मैं कब तक फेरता रहता। थोड़ी ही देर में वह बिल्कुल भीग गया, जबकि पसीना अपनी रफ्तार से आ ही रहा था।

मेरे चूतड़ों पर भी पसीना आ रहा था और उसकी नमी से मेरी पैंट बेंच से चिपक गयी थी।

अचानक जुआन ने कहा, "तो तुम डाक्टर हो।"

"हां !" बेल्जियन ने जवाब दिया।

"क्या चोट लगती है···देर तक कष्ट होता है ?"

"हुंह ! कब···ओह नहीं," बेल्जियन ने पितृवत् कहा, "बिल्कुल नहीं, जल्दी ही खत्म हो जाता है।" उसने इस तरह कहा जैसे किसी ग्राहक को संतुष्ट कर रहा हो।

'पर मैं···लोग कहते थे कि···कई बार दो बार गोली चलानी पड़ जाती है।"

"कभी-कभी," बेल्जियन ने गर्दन हिलाते हुए कहा, "लेकिन ऐसा तभी करना पड़ता है जब पहली गोली किसी घातक जगह पर नहीं लगती।"

"फिर तो उन्हें राइफल दुबारा भरकर फिर से निशाना साधना पड़ता होगा···" वह कुछ देर कुछ सोचता हुआ रुका, फिर बड़े निरीह स्वर में बोला, 'इसमें तो काफी देर लग जाती होगी ?"

उसके चेहरे पर आने वाले कष्ट का भयानक डर छा गया था, वह सिर्फ मौत के बारे में सोच रहा था। यह उसकी उम्र का कसूर था। मैंने कभी इस बारे में नहीं सोचा, पसीना आने का कारण इस कष्ट का डर बिल्कुल नहीं था।

मैं खड़ा हुआ और धीरे-धीरे चलता हुआ कोयले के चूरे के ढेर तक गया। टॉम उछलकर खड़ा हो गया और मेरी ओर घृणा से देखने लगा। मेरे जूतों की चरमराहट के कारण वह खीज उठा था। कहीं मेरा चेहरा भी तो उसके चेहरे की तरह जड़ नहीं हो गया था ! वह भी तो पसीने-पसीने हो रहा था। आकाश निर्मल था, पर इस अंधेरे कोने में जरा भी प्रकाश नहीं आ पा रहा था। ऊपर के उजले कमरे को देखने के लिए गर्दन उचकाना ही एकमात्र तरीका था। पर इस समय वह वैसा नहीं था जैसे रातों में दिखता था। अपने आश्रम के कमरे में से तो आकाश का एक बड़ा-सा टुकड़ा दिखता था और दिन के हर घंटे यह अलग-अलग दिखता था। सुबह जब आकाश सख्त होता, हल्के नीले रंग का तब मुझे अटलांटिक के सागर तटों की याद आती थी। दोपहर में मुझे सेविले के मदिरालय की याद आने लगती थी, जहां मैंने मंजानिका पी थी और माघ में गोमाग के धीमी आंच में पके कतले और भुनी हुई एंचोवी मछली खायी थी। दोपहर बाद मेरे बैठने की जगह पर छाया आ जाती थी तो मुझे बैलों की लड़ाई का अखाड़ा याद आ जाता, जिसमें आधे में धूप और आधे में छाया आ गयी हो। आकाश में इस तरह से पूरी दुनिया को प्रतिबिंबित देखना वाकई बहुत कष्टकर

है। पर अब मैं आकाश को उतना ही देखता हूं जितना मैं चाहता हूं, और यह मेरे भीतर किसी भी प्रकार की उत्तेजना पैदा नहीं करता। यह मुझे ज्यादा अच्छा लगता है। मैं वापस आकर टॉम के पास बैठ गया। इस प्रकार एक लंबा समय बीत गया।

टॉम हल्की आवाज में कहने लगा। उसे सिर्फ कहना था बिना इस ख्याल के कि वह खुद अपने को भी नहीं पहचान पा रहा था। मैं समझा कि वह मुझसे बात कर रहा था, पर वह मेरी ओर जरा भी नहीं देख रहा था। बेशक वह मुझे इस रूप में देखने से डर रहा था। पीला पड़ा हुआ पसीने-पसीने। हम दोनों की हालत एक-सी थी, हम जैसे दर्पण में एक-दूसरे के प्रतिबिंब से भी बदतर हो गए थे।

उसने उस बेल्जियन की ओर देखा, जो जीवित था।

"तुम क्या समझ रहे हो?" उसने कहा, "मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा है।"

मैं भी धीमी आवाज में कहने लगा था। मैंने बेल्जियन की ओर देखा, "क्यों? क्या बात है?"

"मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि हमें क्या होता जा रहा है?"

टॉम से एक विचित्र-सी गंध आने लगी थी। मुझे लगा कि मैं गंध के प्रति पहले से अधिक संवेदनशील होता जा रहा हूं। मैं मुस्कराया, "थोड़ी देर में सब कुछ समझ जाओगे।"

"कुछ भी स्पष्ट नहीं है।" उसने ढिठाई से कहा, "मैं हिम्मत नहीं हारना चाहता, पर कम से कम मुझे यह तो बता दो···सुनो वे हमें बरामदे में ले जायेंगे। ठीक है। वे हमारे सामने खड़े हो जायेंगे। कितने?"

"मुझे नहीं मालूम। पांच या आठ। ज्यादा तो नहीं होंगे।"

"ठीक है। आठ लोग होंगे। एक आदमी चीखेगा, निशाना लगाओ और मैं देखूंगा कि आठ राइफलें मुझे ताक रही हैं। मैं सोचने लगूंगा कि मैं इस दीवार के भीतर कैसे घुस जाऊं। मैं पीठ से दीवार पर जोर लगाऊंगा···अपनी पूरी ताकत के साथ, पर दीवार एक दुःस्वप्न की तरह अचल रहेगी। मैं इन सबकी कल्पना कर सकता हूं। क्या तुम समझ सकते हो कि कितनी अच्छी तरह से मैं इन सबकी कल्पना कर पा रहा हूं!"

"ठीक है, ठीक है!" मैंने कहा, "मैं भी इन सबकी कल्पना कर सकता हूं।"

"चोट तो बहुत लगेगी। जानते हो। वे आंखों और मुंह पर निशाना साधेंगे, जिससे तुम्हारा चेहरा बिगड़ जाये," अपनी आवाज में हिकारत भरते हुए वह कह रहा था, "मैं उन घावों को अभी से महसूस कर सकता हूं। मेरे

सिर और गर्दन पर पिछले एक घंटे से दर्द हो रहा है। बहुत तेज। कल सुबह भी मुझे ऐसा ही महसूस होगा। और फिर ?"

मैं अच्छी तरह समझ रहा था कि उसका मतलब क्या है, पर मैं ऐसी कोई हरकत नहीं करना चाहता था जिससे लगे कि मैं समझ रहा हूं। दर्द मुझे भी महसूस हो रहा था। पूरा शरीर दर्द कर रहा था जैसे पूरे शरीर पर छोटी-छोटी अनगिन खरोंचें लगी हों। मुझे यह असामान्य लग रहा था, पर उसकी तरह मैं भी इसे कोई महत्त्व नहीं दे रहा था।

वह खुद से ही बातें करने लगा था। वह लगातार बेल्जियन की ओर देखे जा रहा था। बेल्जियन उसकी बात को सुनता लग नहीं रहा था। मुझे पता था कि वह क्या करने के लिए आया था। उसकी रुचि इस बात में बिल्कुल नहीं थी कि हम सोच क्या रहे हैं। वह हमारे शरीरों को देखने के लिए आया था, वे शरीर जो जीवित होते हुए भी त्रास से मरे जा रहे हैं।

"बिल्कुल ख्वाब जैसा," टॉम कह रहा था, "तुम जो भी सोचना चाहते हो, उसका प्रभाव हमेशा ही ऐसा होता है कि जो भी तुम सोच रहे हो, सब ठीक होगा पर फिर तुम्हारी पकड़ से छूट जाता है और धीरे-धीरे लुप्त हो जाता है। मैं खुद से कहता हूं कि बाद में कुछ नहीं होगा। पर मैं खुद ही नहीं समझ पाता कि इसका मतलब क्या है। कभी तो लगभग...और फिर यह धुंधला जाता है और मैं दर्द, गोलियों और विस्फोटों के बारे में सोचने लगता हूं। कसम से, मैं भौतिकवादी हूं, मैं परवाना नहीं हूं, कोई बात है जरूर। मैं अपनी लाश को देखता हूं, यह कष्टकर तो नहीं है, पर मैं वह व्यक्ति हूं जो खुद अपनी आंखों से यह देखता हूं। मुझे सोचना है...सोचना है कि इसके बाद मैं कुछ भी नहीं देख पाऊंगा जबकि बाकी दुनिया सब कुछ देखती रहेगी। हम यह सोचने के लिए तो नहीं हैं पाब्लो। यकीन करो, मैं पूरी रात किसी के इंतजार में रुका रहा हूं, पर यहां वह बात नहीं है, यह हमारे पीछे भी फैलती रहेगी पाब्लो और हम इसके लिए तैयार नहीं रह पायेंगे।"

"चुप हो जाओ।" मैंने कहा, "क्या तुम चाहते हो कि मैं किसी पादरी को बुलाऊं ?"

उसने कोई जवाब नहीं दिया। मैं जान गया था कि वह किसी पैगंबर की तरह लगना चाहता था। मुझे पाब्लो कहकर पुकारते समय उसका स्वर उतार-चढ़ाव से रहित होता था। मुझे यह पसंद नहीं था। पर लगता है, सभी पुरुष इसी तरह के होते हैं। मुझे हल्का-सा आभास हुआ, जैसे उस पर से पेशाब की गंध आ रही थी। शुरू से ही मुझे टॉम के प्रति कोई विशेष सहानुभूति नहीं रही और यह एक साथ मरने की वजह से ही हो। इसका भी कोई कारण मेरी समझ में नहीं आ रहा था। दूसरों के साथ और बात हो सकती है, मसलन रेमों ग्रिस के

साथ। पर टॉम और जुआन के बीच मैं खुद को अकेला महसूस कर रहा था फिर भी मुझे ज्यादा बुरा नहीं लग रहा था। रेमों साथ होता तो ज्यादा बुरा लगता। पर उस समय मेरी स्थिति कम कष्टकर नहीं थी, पर मैं खुद भी तो मृत्यु की स्थिति नहीं चाहता था।

वह अपने शब्दों को अन्यमनस्कता से चबाता रहा। निश्चित रूप से वह इसीलिए बोल रहा था ताकि सोच न सके। उसमें से प्रोस्टेट ग्रंथि के किसी पुराने मरीज की तरह पेशाब की गंध आ रही थी। मैं उसकी बात से सहमत हू, मैं भी वही सब कह सकता था जो वह कह रहा था। मरना कोई स्वाभाविक क्रिया नहीं है। और चूंकि मैं भी मरने जा रहा था, इसलिए मुझे कुछ भी स्वाभाविक नहीं लग रहा था। न यह कोयले के चूरे का ढेर, न बेंच, न पेड़ों का घिनौना चेहरा, फर्क सिर्फ इतना था कि टॉम की तरह यह सब सोचना मुझे पसंद नहीं था और मैं जानता था कि पूरी रात के हर क्षण इस तरह की चीजें सोचने रहेंगे। मैंने कनखियों से उसकी ओर देखा और पहली बार वह मुझे एक अजनबी-सा लगा। उसने अपने चेहरे पर मौत ओढ़ रखी थी। पिछले चौबीस घंटों में मैं टॉम के साथ ही रहा था। मैंने उसे सुना था, उससे बात की थी, उसे जाना था और मैंने जाना कि हमारे बीच कुछ भी सामान्य नहीं था। और अब हम बिल्कुल एक जैसे लग रहे थे, जैसे वे हों, सिर्फ इसलिए कि हम साथ-साथ मरने जा रहे थे। टॉम ने बिना मेरी ओर देखे मेरा हाथ थाम लिया।

"पाब्लो, कितने आश्चर्य की···कितने आश्चर्य की बात है कि सब कुछ सचमुच खत्म होने जा रहा है।"

मैंने उससे अपना हाथ छीन लिया, "सुअर कहीं के, अपने पैरों के बीच में देखो।"

उसके पांवों के बीच में कीचड़-सा हो गया था और उसकी पैंट के पायचों में से बूंदें रिस रही थीं।

"यह क्या है ?" उसने घबराते हुए पूछा।

"तुम अपनी पैंट के अंदर पेशाब कर रहे हो," मैंने उसे बताया।

"यह गलत है," वह चिल्लाया था, "मैं पेशाब कर रहा हूं। मुझे ऐसा कुछ भी महसूस नहीं हो रहा है।"

बेल्जियन हमारे पास चला आया। कृत्रिम चिंता जताते हुए उसने पूछा, "तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न ?"

टॉम ने कोई जवाब नहीं दिया। बेल्जियन ने उसकी बदनुमा चीज को देखा और कुछ बोला नहीं।

"मुझे नहीं मालूम यह क्या है।" टॉम ने करुण स्वर में कहा, "मैं डर नहीं रहा हू। कसम से, मैं डर नहीं रहा हूं।"

बेल्जियन फिर चुप रहा। टॉम उठा और पेशाब करने के लिए कोने में चला गया। आगे के बटन बंद करता हुआ वह वापस आया और बिना कुछ कहे बैठ गया। बेल्जियन कुछ नोट कर रहा था।

हम तीनों ने उसकी तरफ देखा क्योंकि वह जीवित था, वह जीवित आदमी की तरह हरकतें कर रहा था, वह जीवित लोगों की तरह जिम्मेदारी महसूस कर रहा था। वह इस तहखाने की सर्दी में उसी तरह कांप रहा था जैसे कोई भी जीवित आदमी कांप सकता है। उसके पास एक फरमाबरदार, खाया-पिया शरीर था। शेष हम तीनों लोग उस जैसा जरा भी महसूस नहीं कर रहे थे। मैंने पांवों के बीच में अपनी पेंट को महसूस करना चाहा, पर हिम्मत न पड़ी। मैंने बेल्जियन की ओर देखा, वह अपनी दोनों टांगों पर वजन रखे खड़ा था, अपनी मांसपेशियों को मनचाहा हुक्म दे सकता था कल के बारे में सोच सकता था। एक ओर हम थे, तीन रक्तहीन छायाएं। हम उसकी ओर देखते और प्रेत की तरह उसके प्राण सोख लेते।

अंत में वह नन्हे जुआन की तरफ गया। वह उसकी गर्दन को छू रहा था। उसके पीछे उसका कोई व्यावसायिक उद्देश्य था या वह दयावश कर रहा था, पता नहीं। अगर वह दयावश कर रहा था तो यही उपयुक्त समय था।

उसने जुआन के सिर और गर्दन पर हाथ फेरा, लड़का चुपचाप उसे देखता रहा फिर अचानक उसने उसका हाथ पकड़ लिया और आश्चर्य से देखने लगा। उसने अपने दोनों हाथों से बेल्जियन के हाथ को पकड़ा था और यह कोई अच्छा दृश्य नहीं था, कि दो पतली भूरी चिमटियों ने उस मोटे लाल हाथ को थामा हुआ था। मैंने अनुमान लगा लिया था कि क्या होने जा रहा था। टॉम ने भी जरूर अनुमान लगा लिया होगा, पर बेल्जियन ने इस ओर जरा भी ध्यान न दिया। वह पितृवत् मुस्कराया। एक क्षण बाद वह लड़का उस मोटे लाल हाथ को अपने मुंह तक लाया और उसे काटने की कोशिश की। बेल्जियन ने झटके से अपना हाथ खींचा और लड़खड़ाता हुआ दीवार से जा टकराया। एक क्षण के लिए वह घबरा गया, पर अचानक वह समझ गया कि हम उसकी तरह के आदमी नहीं हैं। वह ठहाके लगाने लगा। इस पर एक गार्ड उछल गया। दूसरा सो रहा था, उसकी खुली हुई आंखें सपाट थीं।

मैं आराम और उत्तेजना, दोनों एक साथ महसूस कर रहा था। जो कुछ सुबह होगा, या मौत के बारे में मैं अब कुछ नहीं सोचना चाहता था। इसका कोई अर्थ नहीं था। इसमें शब्द थे और था खालीपन। पर जैसे ही मैं कुछ और सोचने की कोशिश करता, मुझे अपने सामने निशाना साधे राइफल की नालें दिखाई देने लगतीं। अपने इस मृत्युदंड को मैंने बीस बार भोगा। एक बार तो मुझे लगा, यह ठीक ही है। मुझे कुछ देर के लिए नींद भी आ गयी। वे मुझे

दीवार की ओर घसीटते हुए ले जा रहे थे और मैं भरसक विरोध कर रहा था। मैं दया की भीख माग रहा था। मैं झटके के साथ जाग गया और मैंने बेल्जियन की ओर देखा। मैं बहुत डरा हुआ था। मैं नींद में जरूर चीखा होऊंगा। पर वह अपनी मूंछे उमेठ रहा था। उसने इस ओर ध्यान नहीं दिया। मैं समझता हूं कि अगर मैं चाहता तो कुछ देर सो सकता था। मैं पिछले 48 घंटों से जाग रहा हूं। यह मेरा अन्तिम समय था।

पर मैं अपने जीवन के अन्तिम दो घंटे सोना नहीं चाहता था। वे सुबह को आकर मुझे जगायेंगे और मैं उनके पीछे चल पड़ूंगा, उनींदा-सा। और फिर "ओफ्..." करता हुआ टर्राकर खत्म हो जाऊंगा। मैं ऐसा नहीं चाहता। मैं किसी जानवर की तरह नहीं मरना चाहता। मैं समझना चाहता हूं। फिर मुझे ख्वाब देखने में भी डर लगने लगा। मैं उठ खड़ा हुआ और इधर-उधर टहलने लगा। अपने विचारों को बदलने के लिए मैं अपने पिछले जीवन के बारे में सोचने लगा। यादों का एक झुंड गड्डमड्ड-सा मेरे ऊपर आ झपटा। अच्छी यादें भी थी और बुरी भी, कम से कम अब तक तो मैं उन्हें उसी रूप में समझता था। कुछ चेहरे थे, कुछ घटनाएं थी। अपने चाचा का चेहरा, रेमो ग्रिस का चेहरा, मुझे अपना पूरा जीवन याद आया : किस तरह 1926 में तीन महीने मैं बिल्कुल बेकार रहा। कैसी भुखमरी मैंने झेली है, मुझे याद आया कि एक रात मैंने ग्रेनेडा के एक बेंच पर बितायी थी। तीन दिन से मैंने कुछ नहीं खाया था। मुझे गुस्सा आ रहा था, मैं मरना नहीं चाहता था। मुझे हंसी आ गयी। किस तरह पागल होकर मैं खुशियों के पीछे, औरतों के पीछे, आजादी के पीछे दौड़ रहा था। क्यों ? मैं स्पेन को स्वतन्त्र देखना चाहता था। मैं अराजकतावादी आन्दोलन में शामिल हो गया। मैंने जनसभाओं में भाषण दिये। मैं हर चीज को ऐसे गंभीरता से लेता रहा, जैसे मैं अमर हूं।

उस क्षण मुझे लगा जैसे पूरा जीवन मेरे सामने है और मैंने सोचा, "यह अब सब एक घृणित झूठ है।" इसका कुछ भी मूल्य नहीं है, क्योंकि यह खत्म हो गया। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि किस तरह मैं चल सकता था, लड़कियों के साथ हंस सकता था। अगर मैं सोचता कि मैं इस तरह मर जाऊंगा तो मैं अपनी छोटी उंगली को जरा भी न हिला पाता। मेरा जीवन मेरे सामने एक थैले की तरह बंद हो गया था, जिसके भीतर की हर चीज असमाप्त थी। मैं खुद से कहना चाहता था कि यह एक खूबसूरत जीवन है, पर अपना यह निर्णय मैं खुद तक नहीं पहुंचा पाया। यह तो मात्र एक खाका था, मेरा पूरा जीवन तो नकली अमरता को पाने में ही बीता। मैं कुछ भी तो समझ नहीं पाया था। मैंने कुछ सोचा नहीं, बहुत कुछ था जो मैं खो सकता था। मानजानिल का स्वाद, कादिज के निकट छोटी-सी खाड़ी में गर्मियों का स्नान, पर मृत्यु मुझे सारे मायाजाल

से उधार लायी थी।

बेल्जियन को अचानक एक अच्छा विचार सूझ आया। हमसे कहने लगा, "दोस्तो, अगर सैनिक प्रशासन ने अनुमति दी तो मैं तुम्हारे लिए एक काम कर सकता हूं। मैं तुम्हारा अन्तिम सदेश, स्मारिका के रूप मे तुम्हारे प्रिय व्यक्तियो तक पहुचा दूगा।"

टॉम बडबड़ाया, "मेरा कोई नही है।"

मैंने कुछ नही कहा। टॉम एक क्षण चुप रहा फिर उत्सुकता से मेरी ओर देखने लगा। "कोका तक पहुचाने के लिए भी तुम्हारे पास कोई बात नही है ?"

"नही।"

ऐसी कोमल सहानुभूति से मुझे नफरत थी। गलती मेरी ही थी, मैंने ही पिछली रात कोका के बारे मे बताया। मुझे अपने पर नियत्रण रखना चाहिए था। करीब एक साल मैं उसके साथ रहा था। कल रात मैंने अपनी कोहिनी मोडकर उसमे अपना चेहरा छिपा लिया था, ताकि उसे कम से कम पाच मिनट तो देख सकू। इसीलिए मैंने उसके बारे में बात भी की थी। पर अब मेरे मन मे उससे मिलने की कोई इच्छा शेष नही रह गयी थी। मेरे पास उससे कहने के लिए भी कुछ नही रह गया था। अब तो उसे बाहों मे लेने की भी इच्छा मुझमे शेष न रह गयी थी। मेरे शरीर ने मुझमे आतक भर दिया था क्योंकि वह पीला पड गया था और पसीने-पसीने हो गया था और मैं यह भी निश्चयपूर्वक नही कह सकता था कि उसके शरीर ने मुझमें यह आतंक नही भरा था। कोका को जैसे ही पता चलेगा कि मैं मर गया हू, वह बिलख उठेगी। उसके बाद के महीनो मे जीवन उसके लिए बेस्वाद हो जायेगा। पर मैं तो मरने ही जा रहा हूं। मैंने उसकी नर्म, सुन्दर आंखो को याद किया। जब वह मेरी ओर देखती तो उसकी आखों में से निकलकर कुछ मेरी आंखो में आ समाता, पर मैं जानता था कि अब यह कुछ नही है। अगर अब वह मेरी ओर देखे तो वह नजर उसी की आंखों में ठहरी रहेगी, मुझ तक नही पहुंचेगी। मैं अकेला था।

टॉम भी अकेला था, पर इस तरह नही। टागों को एक-दूसरे में फंसाये वह हल्की मुस्कान लिए बेंच की ओर टकटकी लगाये था। वह मुग्ध-सा नजर आ रहा था। उसने हाथ बढ़ाकर सावधानी से लकड़ी को छू लिया, जैसे उसे डर हो कि कोई चीज टूट जायेगी, फिर झटके से अपना हाथ वापस खींच लिया और थरथरा उठा। अगर मैं टॉम की जगह होता तो ऐसे मुग्ध होकर बेंच को कभी न छूता, यह अतिशय मूर्खता थी। मैंने देखा कि चीजें बडी मजाहिया होने लगी थी। मेरे लिए बेंच, लैंप, कोयले के चूरे के ढेर को देखना ही काफी था, यह अनुभव करने के लिए कि मैं मरने जा रहा हूं। स्वाभाविक है कि मैं मौत के बारे में स्पष्टत: नहीं सोच पा रहा था, पर सर्वत्र यह जरूर दीख रहा था कि चीजें

पीछे हटकर मुझसे एक दूरी बना रहो हैं। उन्ही लोगों की तरह, जो मरते हुए आदमी के बिस्तर के पास बैठे चुपचाप बात करते हैं। टॉम ने उस बेंच पर अपनी मौत को ही तो छुआ था।

मेरी हालत यह थी कि अगर कोई मेरे पास आकर कहता कि मैं घर जा सकता हू, उन्होंने पूरा जीवन जीने के लिए मुझे दे दिया है, तब भी मैं भावशून्य ही रहता। अपने अमर होने का भ्रम जब एक बार टूट जाता है तो फिर कुछ घंटों के या कुछ सालो के इंतजार में फर्क ही क्या रह जाता है। मेरी सारी निष्ठाएं खत्म हो गयी थी और मैं शांत था, पर यह एक भयानक शान्ति थी— जिसका कारण था मेरा शरीर; मेरा शरीर क्यों इसीकी आंखों से तो मैंने देखा था, इसीके कानों से सुना था। पर अब यह मैं नही था। यह खुद ही पसीने-पसीने हो रहा था। कांप रहा था और मेरी इसके साथ कोई पहचान शेष नहीं रह गयी थी। यह जानने के लिए कि क्या हो रहा है, मुझे इसे छूना, इसकी ओर देखना पड़ता था, जैसे यह किसी और का शरीर हो। कई बार अब भी मुझे ऐसा लगता जैसे मैं डूबा जा रहा हूं, गिर रहा हू। ठीक वैसे ही जैसे आप सतह पर खड़े होकर सिर के बल डुबकी मार रहे हों। मैं अपने दिल की धड़कनों को साफ महसूस कर रहा था, पर ये बातें मुझे आश्वस्त नही कर पा रही थीं। मेरे शरीर से जो कुछ आ रहा था वह विरूप था। अधिकतर समय मैं चुप रहा और अपने वजन का कम होना, अपने साथ एक घिनौनी उपस्थिति को ही महसूस करता रहा। मुझे लग रहा था जैसे किसी विशाल कीड़े के साथ मुझे बांध दिया गया है। एक बार मैंने अपनी पैंट को महसूस किया और फिर लगा कि वह भीगी हुई है। मालूम नही, यह पसीना था या पेशाब, पर एहतियातन मैं कोयले के ढेर के पास पेशाब करने के लिए चला गया।

बेल्जियन ने जेब से घड़ी निकालकर देखी, फिर कहा, "साढ़े तीन बज गये हैं।"

हरामी! इसके पीछे जरूर उसकी कोई मंशा थी। टॉम उछल पड़ा। यह तो हमने ध्यान ही नहीं दिया था कि समय तेजी से भागा जा रहा है। रात ने हमको एक आकारहीन, धुंधले शिकार की तरह घेर लिया था, मुझे पता भी नहीं चल पाया कि यह प्रक्रिया शुरू कब हुई।

नन्हा जुआन रोने लगा था। वह अपने हाथों को फैलाते हुए दया की भीख मांग रहा था, "मैं मरना नहीं चाहता, मैं मरना नहीं चाहता।"

हवा में अपने हाथों को फैलाता हुआ वह तहखाने के एक कोने से दूसरे कोने तक गया और फिर चटाई पर गिरकर सिसकने लगा। टॉम शोकाकुल नजरों से उसे देखता रहा। उसे सांत्वना देने का कोई उपक्रम वह नहीं कर रहा था। वह इस लायक था भी नहीं, पर लड़का कुछ ज्यादा ही शोर कर रहा था जब-

कि उसपर इसका इतना गहरा प्रभाव नही पडा था। वह उस बीमार आदमी की तरह था जो बुखार की पीडा में अपने को बचाने की कोशिश कर रहा हो। यह बात तब और गंभीर हो जाती है जब बुखार हो ही नहीं।

वह रोने लगा था। मैं साफ देख रहा था कि वह अपने प्रति कारूणिक हो रहा था, मौत के बारे मे वह जरा भी नही सोच रहा था। एक क्षण के लिए मुझे खुद पर रोने की इच्छा हुई। अपने पर दया आने लगी। लेकिन हुआ इसका उलटा। मैंने उस लडके की ओर देखा, उसके सिसकते चेहरे ने मुझे और भी अमानवीय बना दिया था। अब मुझे न तो किसी और पर दया आ रही थी, न खुद पर। मैंने खुद से ही कहा, "मैं सफाई से मरना चाहता हू।"

टॉम उठकर खडा हो गया था और चलता हुआ ऊपर रोशनदान के ठीक नीचे खडा होकर ऊपर की रोशनी को देखने लगा था। मैं सफाई से मरने का दृढ निश्चय कर चुका था और उसी के बारे मे सोच रहा था। पर जब से डाक्टर ने समय बताया था तभी से मुझे लग रहा था कि जैसे समय उडता जा रहा है, एक-एक बूद निचुड़ता हुआ।

अभी अंधेरा ही था कि मुझे टॉम की आवाज सुनाई दी, "क्या तुम्हें उनकी आवाज सुनाई दे रही है?"

"हां।"

बरामदे मे वे लोग मार्च कर रहे थे।

"वे कर क्या रहे हैं? वे हमें अंधेरे मे तो नही मार सकते?"

कुछ देर के लिए चुप्पी छा गयी। मैंने टॉम से कहा, "अब तो दिन है।"

पेंद्रो जभाई लेता हुआ उठ खड़ा हुआ था और लैंप जलाने लगा था। उसने अपने साथी से कहा, "कितनी भयकर सर्दी है!"

भूरा उजाला तहखाने मे फैल गया था। काफी दूर से हमे गोलियां चलने की आवाजें सुनाई दी।

"यह शुरुआत है।" टॉम ने कहा, "यह काम वे पीछे के आंगन में कर रहे होगे।"

टॉम ने डक्टर से एक सिगरेट मांगी। मुझे उसकी जरूरत नही थी। मुझे शराब या सिगरेट की जरा भी जरूरत नही थी। उस क्षण के बाद से गोलियां चलने की आवाज लगातार सुनाई देती रही थी।

"जानते हो क्या हो रहा है?" टॉम ने पूछा।

वह कुछ और कहना चाहता था पर दरवाजे की ओर देखता हुआ चुप ही रहा। दरवाजा खुला और एक लैफ्टीनेंट चार सिपाहियों को लेकर अन्दर आ गया। टॉम के हाथ मे सिगरेट छूट गयी।

"स्टीनबोक?"

टॉम पास रहा, पेड्रो ने उसकी ओर संकेत किया।

"जुआन मिरबल।"

"चढाई पर है।"

"खड़े हो जाओ।" लेफ्टीनेंट ने कहा।

जुआन जरा भी न हिला। दो सिपाहियों ने बगल में हाथ देकर उसे खड़ा कर दिया। पर जैसे ही उन्होंने छोड़ा, वह फिर गिर गया।

"यह कोई पहला आदमी तो है नहीं जो घबरा गया हो", लेफ्टीनेंट ने कहा, "तुम दो लोग उसे उठाकर ले चलो। वहां सब ठीक हो जायेगा।"

वह टॉम की ओर मुड़ा, "आओ चलें।"

टॉम दो सिपाहियों के बीच में चलने लगा। उनके पीछे दो लोग लड़के को उठाये चल रहे थे। एक ने बगल से पकड़कर उठा रखा था और दूसरे ने टांगें। वह बेहोश नहीं था। उसकी आंखें खुली थीं और आंसू गालों पर से होते बह रहे थे। जब मैं भी बाहर निकलने लगा तो लेफ्टीनेंट ने मुझे रोक दिया।

"तुम इब्बीता हो?"

"हां।"

"तुम यहीं रुको। तुम्हें लेने के लिए हम बाद में आयेंगे।"

वे चले गये। बेल्जियन और दोनों गार्ड भी चले गये। मैं अकेला रह गया। मैं समझ ही नहीं पा रहा था कि मेरा वे क्या करेंगे, अगर वे मुझे भी अभी ले जाते तो अच्छा होता। बराबर अन्तराल के साथ गोलियां चलने की आवाज मुझे सुनाई दे रही थी और हर आवाज से मुझे धक्का लग रहा था। मैं चीखना चाहता था। अपने बालों को नोच लेना चाहता था। पर मैंने सिर्फ अपने दांत किचकिचाये और जेबों में हाथ डाल दिये।

एक घंटे बाद वे लोग आये और मुझे पहली मंजिल पर एक छोटे-से कमरे में ले गये। वहां सिगार की गंध फैली हुई थी और दमघोंटू गर्मी थी। आराम कुर्सियों पर बैठे दो आफिसर धुआं छोड़ रहे थे। कागज उनके घुटनों पर रखे थे।

"तुम इब्बीता हो?"

"हां।"

"रामोन ग्रिस कहां है?"

"मुझे नहीं मालूम।"

मुझसे सवाल पूछने वाला व्यक्ति नाटा और मोटा था। चश्मे के पीछे उसकी आंखें बड़ी कठोर लग रही थीं। उसने मुझसे कहा, "इधर आओ।" मैं उसके पास चला गया। वह उठ खड़ा हुआ। मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे ऐसी नजर से घूरने लगा जैसे मुझे जमीन में गाड़ देगा। उसी क्षण उसने भरसक पूरी ताकत से मेरे पेट पर एक घूंसा जड़ दिया। वह मुझे चोट पहुंचाने के

लिए नहीं था, यह तो एक खेल था। वह मुझ पर काबू पा लेना चाहता था। फिर वह खडा अपनी दुर्गंधयुक्त सांस मेरे चेहरे पर छोड़ता रहा। एक क्षण तक हम उसी तरह खड़े रहे, मेरी इच्छा हंसने की होने लगी थी। जो आदमी मरने वाला है उसे डराना काफी मुश्किल काम है। ये लटके वहां काम नहीं देते। उसने मुझे एक जोर का धक्का दिया और फिर बैठ गया। कहने लगा, "उसके बदले तुम्हारी जान दाव पर है। अगर तुम बता दो कि वह कहां है तो तुम्हारी जान बच सकती है।"

घुड़सवार तो अपने चाबुक फटकारते घूम रहे थे और जूते साफ करने वाले मरे जा रहे थे। वे अपने मुचडे हुए कागजो मे नाम ढूंढ रहे थे, वे या तो उन्हें जेल में डाल रहे थे या उनका दमन कर रहे थे। वे स्पेन के भविष्य तथा अन्य विषयों पर बात कर रहे थे। उनकी गतिविधियां मुझे उलझी हुई और विद्रूप लग रही थी। मैं अपने को उनकी जगह रख ही नहीं पा रहा था। मेरे विचार से वे विक्षिप्त थे।

वह नाटा अभी तक अपने जूतो को रगडता और चाबुक फटकारता मुझे ही घूर रहा था। उसकी सारी मुद्राएं उसे एक क्रूर जानवर का रूप दे रही थी।

"तो ? कुछ आया समझ में ?"

"मुझे नही मालूम कि ग्रिस कहां है," मैंने जवाब दिया, "मैं तो समझता था कि वह मेड्रिड मे ही होगा।"

दूसरे आफिसर ने अपना पीला हाथ अलसाये ढंग से ऊपर उठाया। यह अलसायापन भी सुविचारित था। मुझे उनकी सारी संकीर्ण योजनाओं का पता चल गया था और यह देखकर हक्का-बक्का रह गया था कि ये लोग इस तरह से मजा लेते हैं।

"हम तुम्हें सोचने के लिए पन्द्रह मिनट देते हैं।" उसने धीरे से कहा, "इसे धोबीघर ले जाओ और पन्द्रह मिनट बाद वापस ले आना। अगर यह फिर भी मना करे तो तत्क्षण गोली मार दी जायेगी।"

उन्हें पता था कि वे क्या कर रहे हैं। मैं रात-भर इन्तजार ही तो कर रहा था। फिर उन्होंने एक घण्टा और मुझे तहखाने मे इन्तजार करवायी जबकि टॉम और जुआन को गोली मारी जा चुकी थी। और अब ये मुझे धोबीखाने में बन्द कर रहे हैं। जरूर उन्होंने अपना यह खेल रात से पहले ही तैयार कर लिया होगा। वे जानते थे कि ऐसे मे स्नायु जवाब दे देते हैं और उन्हें उम्मीद थी कि वे मुझे धर लेंगे।

पर वे बिल्कुल गलत सोच रहे थे। धोबीघर में मैं स्टूल पर बैठ गया, क्योंकि मैं बहुत कमजोरी महसूस कर रहा था। अब मैं सोचने लगा था। अपनी हालत के बारे में नहीं। मुझे पता था कि ग्रिस कहां है। वह शहर से चार

किलोमीटर दूर अपने चचेरे भाई के घर पर छिपा हुआ था। मैं यह भी जानता था कि अब वे मुझे टॉर्चर नहीं करेंगे (पर मुझे याद नही रहा था वे ऐसा करेंगे)। सब कुछ सुव्यवस्थित था, सुनिश्चित था पर मैंने इसमें कोई दिलचस्पी नही ली। मैं सिर्फ अपने व्यवहार के कारणों को समझना चाहता था। मैं ग्रिस का पता देने के बजाय मरना अधिक पसंद कर रहा हूं। क्यों? रामों ग्रिस के प्रति अब मुझमें जरा भी लगाव नही था। उससे मेरी दोस्ती भोर से पहले उसी समय मर गयी थी जैसे कोंका के प्रति प्यार और मेरी खुद जीने की इच्छा, बेशक मैं उसका आदर करता था। वह बहुत सख्त आदमी था। पर उसके बदले मेरे मरने का यह कारण नही था। उसका जीवन मेरे जीवन से अधिक मूल्यवान नही था। जीवन अमूल्य होता है। उन्हें तो एक आदमी को दीवार के सहारे खड़ा करना है और गोली मारकर उसकी हत्या करनी है। वह आदमी मैं हू, ग्रिस है या कोई और, इससे कोई फर्क नही पडता। मैं जानता था कि स्पेन और अराजकता, कुछ भी महत्त्वपूर्ण नही है। जब तक मैं हूं, मुझे अपनी घमंडी बचानी चाहिए और ग्रिस का पता दे देना चाहिए और मैं इस सबसे इनकार कर रहा हूं।

मुझे लगा यह बहुत हास्यास्पद है, दुराग्रह है। मैंने सोचा, "मैं जिद्दी हो गया हूं!" और एक बड़ी विचित्र-सी प्रसन्नता मेरे शरीर में भर गयी।

वे आये और मुझे उन दो आफिसरों के पास ले गये। एक चूहा मेरे पांवों के बीच में से दौड़ता हुआ निकल गया। इस पर मुझे हंसी आ गयी। मैंने उनमें से एक रखवाले से पूछा, "क्या तुमने चूहे को देखा?"

उसने कोई जवाब नहीं दिया, वह काफी सौम्य था और गंभीर बना रहा। मैं हंसना चाहता था पर मैंने अपने को रोके रखा, क्योंकि अगर मैं हंसने लगा तो फिर रुक नही पाऊंगा। उस रखवाले की मूछें थी। मैंने उससे फिर पूछा, "तुम्हें अपनी मूछें तराश डालनी चाहिए, बेवकूफ!" मुझे यह कल्पना बड़ी हास्यास्पद लगी। उसने बिना कुछ बोले एक ठोकर मुझे जमा दी और मैं चुप हो गया।

"ठीक है।" उस मोटे आफिसर ने कहा, "क्या तुमने इस बारे में सोच लिया है?"

मैंने बड़ी उत्सुकता से उनकी ओर देखा जैसे वे किसी दुर्लभ जाति के जीव थे। मैंने उनसे कहा, "मैं जानता हू वह कहा है। वह कब्रिस्तान मे छिपा हुआ है। वह या तो किसी कब्र मे छिपा बैठा होगा या कब्र खोदने वाले की कोठरी में।"

फिर तो एक तमाशा खड़ा हो गया। मैं चाहता था कि वे उठ खड़े हों, अपनी पेटियां कसें और व्यग्रता से आर्डर देने लगें।

वे एकदम उछलकर खड़े हो गये, "चलो भोले, तुम लेफ्टीनेंट लोले से पन्द्रह आदमी अपने साथ ले लो।" छोटा मोटा आदमी कह रहा था, "तुम अगर सही कह रहे हो तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा। पर तुम अगर हमें बेवकूफ बनाने की सोच रहे हो तो उसका खामियाजा भी तुम्हें भुगतना पड़ेगा।"

खटखटाहट के साथ वे वहां से चले गये और मुझे उन रखवालों की चौकसी में छोड़ गये। वहां जो तमाशा होगा, उसे सोच-सोचकर मुझे हंसी आ रही थी। मैं कल्पना करने लगा कि कैसे वे कब्र के पत्थरों को उखाड़ेंगे, एक-एक कोठरियों के दरवाजों को खोलेंगे। मैं पूरी स्थिति को ऐसे देखने लगा जैसे मैं कोई और हूं और यह कैदी एक हठी नायक की भूमिका में है। और ये मूंछों वाले घृणित रखवाले तथा उनके वर्दीधारी लोग कब्रों के ऊपर से भाग रहे हैं। कितना मजेदार है।

आधे घंटे बाद वह मोटा-नाटा अकेला वापस लौट आया। मेरा ख्याल था कि वह मुझे गोली मार देने का हुक्म देने के लिए आया था। और लोग अभी कब्रिस्तान में ही होंगे।

आफिसर ने मेरी ओर देखा। वह जरा भी स्पेनी नहीं लग रहा था। "इस बड़े आंगन में दूसरे लोगों के साथ रहो।" उसने कहा, "सैनिक अभियानों के बाद नागरिक अदालत ही इसका फैसला करेगी।"

जो बात मैं समझा उसकी तो मैंने कल्पना भी नहीं की थी। मैंने पूछा, "तो क्या···मुझे गोली नहीं मारी जायेगी ?"

"अभी तो नहीं। बाद में क्या होता है इससे मुझे कोई मतलब नहीं है।"

मेरी समझ में अब भी कुछ नहीं आया था। मैंने पूछा, "पर क्यों···?"

उसने बिना कुछ बोले अपने कंधे झटके और सिपाही मुझे अपने साथ ले गये।

शाम को उन्होंने करीब दस नये कैदियों को आंगन में ठूंस दिया। मैंने गार्सिया नानवाई को पहचान लिया। उसने कहा, "तुम्हारा भी दुर्भाग्य है! मैं तो सोच रहा था कि तुम अब तक खत्म कर दिये गये होगे।"

"उन्होंने तो मुझे मौत की सजा दे दी थी, पर फिर पता नहीं क्यों विचार बदल दिया।" मैंने कहा।

"उन्होंने मुझे ठीक दो बजे गिरफ्तार किया।" गार्सिया ने बताया।

"पता नहीं क्यों वे उन सभी लोगों को गिरफ्तार कर रहे हैं जिन्हें अपनी गिरफ्तारी का कारण भी पता नहीं होता।" उसने कहा और फिर आवाज हल्की करके कहा, "उन्होंने ग्रिस को भी गिरफ्तार कर लिया है।"

मैं कांप गया था, "कब ?"

आज सुबह। इसके लिए वह खुद ही जिम्मेदार है। मंगलवार को अपने

चचेरे भाई से उसकी कहा-सुनी हो गयी तो वह उनके घर से चला आया। कई लोग उसे छिपाने के लिए तैयार थे, पर पता नहीं क्यों वह किसी का अहसान नहीं लेना चाहता था। उसने कहा, "मैं जाकर इब्बीता के घर में छिपूंगा। पर इब्बीता को भी तो उन्होंने गिरफ्तार कर लिया है, इसलिए मैं कब्रिस्तान में जाकर छिपूंगा।"

"कब्रिस्तान में ?"

"हां, क्या बेवकूफी है ! आज सुबह वे वहां पहुंच गये, यह तो होना ही था। उन्होंने उसे कब्र खोदने वाले की कोठरी में घेर लिया। उसने उन पर गोली चलायी और उन्हें उसका पता चल गया।

"कब्रिस्तान में !"

सब कुछ घूमने लगा था। मैं सीधा जमीन पर आ गिरा। मैं जोर से हंसा, पर मेरे मुंह से चीख निकली थी।

विवश

मिखाइल शोलोखोव

जन्म : 24 मई, 1905.

रूसी लेखक मिखाइल शोलोखोव को सन् 1965 में नोबेल पुरस्कार मिला। पूरा नाम मिखाइल अलेक्सैण्ड्रोविच शोलोखोव। अपने वृहद उपन्यास 'एण्ड क्वाइट फ्लोज़ दि डान' के प्रकाशन के साथ ही ये काफी चर्चित हो चुके थे। इस उपन्यास का प्रथम भाग सन् 1928 में, दूसरा सन् 1929 में, तीसरा सन् 1933 में और चौथा तथा अन्तिम भाग 1938 में प्रकाशित हुआ। 'दि डान फ्लोज होम टु दि सी', जो कि इसी उपन्यास की अगली कड़ी है, सन् 1941 में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक के प्रकाशन पर मारिस हिण्डस ने लिखा था, "छत्तीस वर्ष की अवस्था में ही शोलोखोव यूरोप के प्रथम श्रेणी के लेखकों में आ गया है। समालोचक के लिए यह एक सुखद कार्य होता है कि वह साहित्य में एक क्लासिक के आने की घोषणा करे।"

पुरस्कृत कृति : एण्डक्वाइट फ्लोज दि डान (चार भागों में)

इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं; टेल्स आफ दि डान, दि डान फ्लोज होम टु दि सी, वर्जिन सायल अप्टर्ण्ड, दि फार फाइ दि फादरलैण्ड।

अनुवाद : सुरजीत

मेरी एक बेटी है नताशा जो इसी महीने सत्रह वर्ष की हो जायेगी। एक दिन वह मुझसे कहने लगी, "बाबा! मैं तुम्हारे साथ एक ही मेज पर नही बैठ सकती। जब-जब मेरी नजरें तुम्हारे हाथों पर पड़ती हैं मुझे याद आ जाता है कि तुमने मेरे दो भाइयों को इन्ही हाथो से मारा है।"

वह बेवकूफ और मूर्ख लड़की इतना नही समझती थी कि मैंने उन्ही की भलाई के लिए ऐसा किया था, उसकी और अपने बच्चों की बेहतरी की खातिर।

मैंने युवावस्था मे विवाह किया था, मेरी पत्नी बेहद उर्वरा सिद्ध हुई और मेरे लिए आठ बच्चे पैदा किये, किन्तु नौवें बच्चे के जन्म के समय वह स्वर्ग सिधार गयी। बच्ची तो खैर उसने पैदा कर दी परन्तु प्रसूति के पांचवें दिन उसे बुखार आया और चल बसी। मैं अकेला रह गया, किसी दलदली प्रदेश में उगे हुए अकेले पेड़ की तरह। उन बच्चों में ईवान सबसे बड़ा था। सावला और सुन्दर। वह मुझसे बेहद मिलता-जुलता था। वह बुद्धिमान और आज्ञाकारी था। मेरा दूसरा बेटा उससे चार वर्ष छोटा था और अपनी मा से साम्य रखता था। छोटा कद और गठा हुआ शरीर। उसके बालों की रंगत लगभग सफेद थी और आंखें भूरी रंगत लिये हुए थी। वह मेरा सबसे लाड़ला बेटा था और उसका नाम डेनीला था। बाकी सात बच्चों में लड़कियां और अन्य छोटे बच्चे शामिल थे। मैंने ईवान की शादी कर दी और उसके हिस्से के खेत उसे दे दिये। उपयुक्त अवसर पर उसके बच्चे हो गये। डेनीला भी शादी करना चाहता था। उन्हीं दिनो कठिनाइयो का दौर शुरू हो गया। हमारे गांव मे सोवियत के विरुद्ध आंदोलन चल पड़ा। दूसरे ही दिन ईवान भागा-भागा मेरे पास आया और बोला, "बाबा, बाबा! चलो हम सुर्ख क्रांतिकारियो से जा मिलें। बाबा, हमें ऐसा ही करना पड़ेगा। यह समय का तकाजा है। सही न्याय पर आधारित एक उचित सरकार हमारी उमंगो और आकांक्षाओं की एकमात्र पुकार है। हमें उस पुकार का स्वागत करना चाहिए!"

डेनीला ने भी बेहद आग्रह किया। वे दोनो काफी देर तक मेरे पीछे पड़े रहे। अन्ततः मैंने अपना निश्चय उन्हें सुना दिया, "तुम लोग जा सकते हो। मैं तुम्हारी राह में बाधक होने का प्रयत्न नहीं करूंगा। पर मैं स्वयं कहीं नहीं जाऊंगा क्योंकि तुम्हारे अतिरिक्त सात और भूखे पेट हैं, जिन्हें भरना मेरा

कर्तव्य है !"

वे दोनों चले गये और हम बाकी बचे कज्जाकियों को सरकार ने सेना में शामिल कर लिया। मुझे श्वेत दस्ते के साथ जोड़कर पहली पंक्ति मे फर्ज-अदायगी के लिए भेज दिया गया।

मैंने बचने का हर संभव प्रयत्न कर डाला। पर सब व्यर्थ। उन्होंने युद्धक्षेत्र मे भेजकर ही दम लिया।

युद्ध हमारे खेतो से कुछ ही दूर ढलान पर जारी था और फिर ईस्टर के त्यौहार की शाम नौ क्रांतिकारी मेरे खेत से पकड़े गये। डेनीला—मेरा प्रियतम और सबसे लाडला बेटा, मेरे जिगर का टुकड़ा—बंदियो के बीच मे मौजूद था। उन सबको शहर के चौक से गुजारकर तोपखाने के कमाडर के पास ले जाया गया।

मैं कंपकपाते घुटनों से उस उत्तेजित जनसमूह के बीच घिरा खड़ा था। लेकिन मैंने किसी प्रकार भी अपनी भावनाओं और अनुभूतियो को लोगों पर प्रकट नही होने दिया। मैंने अपने चेहरे पर संज्ञाहीनता और बेपरवाही का बनावटी मुखौटा चढ़ा लिया और आसपास नजरें दौड़ायी। कज्जाकी लोग आपस में खुसर-पुसर कर रहे थे और साथ ही मेरी ओर इशारे भी करते जाते थे। थोड़ी देर बाद सार्जेण्ट अरकाशका मेरे पास आया। "क्यो मेकीशारा, इन मरदूदों को नरक मे पहुंचाने के बारे मे तुम्हारा क्या विचार है ?" उसने मुझसे प्रश्न किया।

"ठीक है···यह दुष्ट मुअर···!"

"तो फिर यह संगीन लेकर वहा अहाते मे आओ !"

वह संगीन मेरे हवाले करते हुए मुस्कराया, "और यह न भूलना कि हम तुम्हें देख रहे हैं, मेरा खयाल है कि तुम समझ गये होगे।"

मैं कुछ क्षण गुमसुम खड़ा सोचता रहा, "ऐ मेरे भगवान् ! क्या सचमुच मैं अपने जिगर के टुकड़ो को अपने ही हाथो से मारने जा रहा हूं !"

सहसा कमांडर के गरजने की आवाज मेरे कानों से टकरायी। मैंने आवाज की ओर देखा। बंदी बाहर लाये जा रहे थे और उनमे सबसे आगे मेरा बेटा डेनीला था। डेनीला किसी शराबी की तरह झूमता हुआ गलियारे से निकला और मुझे देखते ही अपनी बाहें फैला दी। उसने मुस्कराने का प्रयत्न किया। उसकी आंखें खून में नहायी हुई थीं। उसी क्षण मुझे खयाल आया कि यदि मैंने उसे न मारा तो कज्जाक मुझे मार डालेंगे और मेरे छोटे-छोटे मासूम बच्चे अनाथ और असहाय हो जायेंगे। डेनीला मेरे निकट पहुच चुका था।

"बाबा ! मेरे अच्छे बाबा ! दया ! ईश्वर के लिए दया !"

वह बुरी तरह घिघियाया ! उसकी आंखों से आंसू, रेखा के रूप में बहकर उसके खून-भरे चेहरे को धोने लगे।

मेरा हाथ उठ चुका था। मैं एक क्षण के लिए आतंक से भरकर रह गया। मेरी पकड़ संगीन पर दृढ़ हो चुकी थी। दूसरे ही क्षण मैंने राइफल का दस्ता पूरी शक्ति से उसकी कनपटी पर मारा। वह हृदयविदारक आवाज में चीखा। और दूसरे प्रहार से बचने के लिए अपने चेहरे को हथेलियों से ढकने का प्रयास करता हुआ दूर जा गिरा।

कज्जाक लोगों ने जोरदार कहकहे और आवेशपूर्ण नारे भी लगाये। "इसे कुत्ता हालो मैंकोशारा ? तुम अपने बेटे से रियायत क्यों कर रहे हो ?" डेनीला अहाते में गिरा हुआ तड़प रहा था। अंततः सार्जेण्ट ने आगे बढ़कर संगीन उसके गले के आरपार कर दी। उसके गले से "सर्र-सर्र" की आवाज निकल रही थी। डेनीला के संदर्भ में मेरे कारनामे के बदले मुझे उन्नति देकर सीनियर सार्जेण्ट बना दिया गया।

डान का पानी बह रहा था और बहता रहेगा पर आज भी कभी-कभी रात की भयानक नीरवता में उस बहते हुए पानी से मुझे वैसी ही सरसराहट की आवाज आती लगती है जैसे डेनीला के गले से अंतिम क्षणों में निकल रही थी। मैं जानता हूं कि वह मेरा अंतःकरण है जो मेरा पीछा कर रहा है।

बसंत ऋतु तक उन्होंने मुझे क्रांतिकारियों से लड़ने के लिए युद्धक्षेत्र पर रखा। उसके बाद जनरल सक्रेनेयोफ ने हमारी कमाड संभाल ली और हमने उसके नेतृत्व में डान के उस पार सारातोफ के स्थान तक क्रांतिकारियों का पीछा किया। मैं बाल-बच्चोंवाला आदमी था पर क्योंकि मेरे बच्चे बोलशेविक थे। अतः मुझे इन कर्त्तव्यों को पूरा करने के बदले कोई धनराशि नहीं दी जाती थी। हम निरन्तर आगे बढ़ते हुए कुछ ही दिनों में बालाशोफ पहुंच गये। उस समय तक मुझे अपने बड़े बेटे ईवान के बारे में कुछ भी पता न था कि वह कहां है और किस अवस्था में है, पर भगवान् सत्यनाश करे इन कज्जाकियों का, कि उन्होंने किसी प्रकार इस बात का सुराग लगा लिया कि वह क्रांतिकारियों को छोड़कर छत्तीसवें तोपखाने में शामिल हो गया है।

कुछ दिनों के बाद हमने एक महत्त्वपूर्ण गांव पर अधिकार कर लिया। दुर्भाग्यवश छत्तीसवां तोपखाना वहीं मौजूद था। कोसाक के जो लोग सेना में थे उन्होंने अंत में ईवान को ढूंढ निकाला और उसे रस्सियों से जकड़कर तोपखाने के कमांडर के पास ले आये। उन्होंने ईवान को मार-मारकर अधमरा कर दिया।

कमांडर ने एक कागज मेरे हवाले किया और मुझसे नजरें मिलाये बिना

ही बोला, "मेकीशारा ! यह आदेशपत्र तुम्हारे लिए है, अपने बेटे को रेजीमेंट हेडक्वार्टर ले जाओ। तुम्हारी देखरेख में न वह केवल सुरक्षित रहेगा, अपितु अपने पिता की हिरासत से फरार होने का प्रयत्न भी नहीं करेगा !"

"बंदी को मेरे हवाले कर दो। मुझे इस बंदी को हेडक्वार्टर पहुंचाने के आदेश मिले हैं।" मैंने वहां मौजूद गार्ड से कहा।

"ले जाओ ! हमें इसके हेडक्वार्टर जाने का बिलकुल दुख नहीं !" गार्ड ने रूखे स्वर में उत्तर दिया।

ईवान ने अपना कोट कंधे पर डाल लिया और हाथ में पकड़ी हुई टोपी को भीतरी आवेश के कारण बेतहाशा मरोड़ने लगा। फिर उसे एक ओर उछाल दिया। हम शिविर से बाहर निकल आये और धीमी गति से पहाड़ियों की ओर चलने लगे।

सहसा ईवान मेरी ओर मुड़ा और पीड़ा-भरी आवाज में बोला "बाबा ! मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि ये लोग मुझे हेडक्वार्टर में मार डालेंगे, तुम जानबूझकर मुझे मौत के कुएं की ओर ले जा रहे हो ! क्या तुम्हारा अंतःकरण तुम्हें परेशान नहीं कर रहा ?"

"हां, मेरे बच्चे ! मेरा अंतःकरण मुझे व्याकुल किये दे रहा है !"

"तो फिर बाबा, क्या तुम्हें मेरी इस हालत पर दया नहीं आ रही है ?"

"हां मेरे बच्चे ! मुझे तुम्हारी हालत पर बेहद दया आ रही है और मेरा दिल भीतर से रो रहा है !"

"यदि सचमुच तुम्हें मुझ पर दया आ रही है तो तुम मुझे···मुझे फरार हो जाने दो बाबा। मैं अभी मरना नहीं चाहता। अभी मैं जवान हूं। मैं जवानी की मौत मरना नहीं चाहता। यह मेरे मरने की उम्र नहीं है बाबा !" इतना कहकर वह सड़क के बीच गिर पड़ा और मेरे कदमों में तीन बार झुका।

"उठो मेरे बेटे ! हम इस घाटी के सिरे तक जायेंगे, उसके बाद तुम दौड़ना, मैं तुम्हारे पीछे दो फायर करूंगा !"

वह उठ खड़ा हुआ और हम फिर चुपचाप चल पड़े। हम चलते हुए घाटी के सिरे तक पहुंचकर रुक गये। वह बोला "बाबा ! अब हमें एक-दूसरे को विदा कहना चाहिए ! अब अगर मैं जीवित रहा, तो मरते दम तक तुम्हारा ख्याल रखूंगा और तुम कभी मेरे मुंह से कोई कठोर शब्द नहीं सुनोगे !" इतना कहकर वह मेरे गले लग गया।

"दौड़ो बेटे !" मैं केवल इतना ही कह सका।

ईवान घाटियों में तेजी से दौड़ने लगा। सहसा वह रुककर पलटा और मेरी ओर देखकर अपना हाथ लहराकर, फिर तेजी से मुड़कर भागने लगा। मैंने उसे बीस-पच्चीस गज तक भागने का अवसर दिया, और राइफल कंधे से

वह बुरी तरह घिघियाया ! उसकी आंखों से आंसू, रेखा के रूप में बहकर उसके खून-भरे चेहरे को धोने लगे ।

मेरा हाथ उठ चुका था। मैं एक क्षण के लिए आतंक से भरकर रह गया। मेरी पकड़ संगीन पर दृढ़ हो चुकी थी। दूसरे ही क्षण मैंने राइफल का दस्ता पूरी शक्ति से उसकी कनपटी पर मारा। वह हृदयविदारक आवाज में चीखा। और दूसरे प्रहार से बचने के लिए अपने चेहरे को हथेलियों से ढंकने का प्रयास करता हुआ दूर जा गिरा।

कज्जाक लोगों ने जोरदार कहकहे और आवेशपूर्ण नारे भी लगाये। "इसे कुचल डालो मैकीशारा ? तुम अपने बेटे से रियायत क्यों कर रहे हो ?" डेनीला अहाते में गिरा हुआ तड़प रहा था। अंततः सार्जेण्ट ने आगे बढ़कर संगीन उसके गले के आरपार कर दी। उसके गले से "खर्र-खर्र" की आवाज निकल रही थी। डेनीला के संदर्भ में मेरे कारनामे के बदले मुझे उन्नति देकर सीनियर सार्जेण्ट बना दिया गया।

डान का पानी बह रहा था और बहता रहेगा पर आज भी कभी-कभी रात की भयानक नीरवता में उस बहते हुए पानी से मुझे वैसी ही खरखराहट की आवाज आती लगती है जैसे डेनीला के गले से अंतिम क्षणों में निकल रही थी। मैं जानता हूं कि वह मेरा अंतःकरण है जो मेरा पीछा कर रहा है।

वसंत ऋतु तक उन्होंने मुझे क्रांतिकारियों से लड़ने के लिए युद्धक्षेत्र पर रखा। उसके बाद जनरल सक्रेतेयोफ ने हमारी कमांड संभाल ली और हमने उसके नेतृत्व में डान के उस पार सारातोफ के स्थान तक क्रांतिकारियों का पीछा किया। मैं बाल-बच्चोंवाला आदमी था पर क्योंकि मेरे बच्चे बोलशेविक थे। अतः मुझे इन कर्त्तव्यों को पूरा करने के बदले कोई धनराशि नहीं दी जाती थी। हम निरंतर आगे बढ़ते हुए कुछ ही दिनों में बालासीफ पहुंच गये। उस समय तक मुझे अपने बड़े बेटे ईवान के बारे में कुछ भी पता न था कि वह कहां है और किस अवस्था में है, पर भगवान् सत्यनाश करे इन कज्जाकियों का, कि उन्होंने किसी प्रकार इस बात का सुराग लगा लिया कि वह क्रांतिकारियों को छोड़कर छत्तीसवें तोपखाने में शामिल हो गया है।

कुछ दिनों के बाद हमने एक महत्त्वपूर्ण गांव पर अधिकार कर लिया। दुर्भाग्यवश छत्तीसवां तोपखाना वहीं मौजूद था। कोसाक के जो लोग सेना में थे उन्होंने अंत में ईवान को ढूंढ निकाला और उसे रस्सियों से जकड़कर तोपखाने के कमांडर के पास ले आये। उन्होंने ईवान को मार-मारकर अधमरा कर दिया।

कमांडर ने एक कागज मेरे हवाले किया और मुझसे नजरें मिलाये बिना

ही बोला, "मेकीशारा ! यह आदेशपत्र तुम्हारे लिए है, अपने बेटे को रेजीमेंट हेडक्वार्टर ले जाओ। तुम्हारी देखरेख में न वह केवल सुरक्षित रहेगा, अपितु अपने पिता की हिरासत से फरार होने का प्रयत्न भी नहीं करेगा !"

"बंदी को मेरे हवाले कर दो। मुझे इस बंदी को हेडक्वार्टर पहुंचाने के आदेश मिले हैं।" मैंने वहां मौजूद गार्ड से कहा।

"ले जाओ ! हमें इसके हेडक्वार्टर जाने का बिलकुल दुख नहीं !" गार्ड ने रूखे स्वर में उत्तर दिया।

ईवान ने अपना कोट कंधे पर डाल लिया और हाथ में पकड़ी हुई टोपी को भीतरी आवेश के कारण बेतहाशा मरोड़ने लगा। फिर उसे एक ओर उछाल दिया। हम शिविर से बाहर निकल आये और धीमी गति से पहाड़ियों की ओर चलने लगे।

सहसा ईवान मेरी ओर मुड़ा और पीड़ा-भरी आवाज में बोला "बाबा ! मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि ये लोग मुझे हेडक्वार्टर में मार डालेंगे, तुम जानबूझकर मुझे मौत के कुएं की ओर ले जा रहे हो ! क्या तुम्हारा अन्तःकरण तुम्हें परेशान नहीं कर रहा ?"

"हां, मेरे बच्चे ! मेरा अंतःकरण मुझे व्याकुल किये दे रहा है !"

"तो फिर बाबा, क्या तुम्हें मेरी इस हालत पर दया नहीं आ रही है ?"

"हां मेरे बच्चे ! मुझे तुम्हारी हालत पर बेहद दया आ रही है और मेरा दिल भीतर से रो रहा है !"

"यदि सचमुच तुम्हें मुझ पर दया आ रही है तो तुम मुझे'''मुझे फरार हो जाने दो बाबा। मैं अभी मरना नहीं चाहता। अभी मैं जवान हूं। मैं जवानी की मौत मरना नहीं चाहता। यह मेरे मरने की उम्र नहीं है बाबा !" इतना कहकर वह सड़क के बीच गिर पड़ा और मेरे कदमों में तीन बार झुका।

"उठो मेरे बेटे ! हम इस घाटी के सिरे तक जायेंगे, उसके बाद तुम दौड़ना, मैं तुम्हारे पीछे दो फायर करूंगा !"

वह उठ खड़ा हुआ और हम फिर चुपचाप चल पड़े। हम चलते हुए घाटी के सिरे तक पहुंचकर रुक गये। वह बोला "बाबा ! अब हमें एक-दूसरे को विदा कहना चाहिए ! अब अगर मैं जीवित रहा, तो मरते दम तक तुम्हारा एहसान रखूंगा और तुम कभी मेरे मुंह से कोई कठोर शब्द नहीं सुनोगे !" इतना कहकर वह मेरे गले लग गया।

"दौड़ो बेटे !" मैं केवल इतना ही कह सका।

ईवान घाटियों में तेजी से दौड़ने लगा। सहसा वह रुककर पलटा और मेरी ओर देखकर अपना हाथ लहराकर, फिर तेजी से मुड़कर भागने लगा। मैंने उसे बीस-पच्चीस गज तक भागने का अवसर दिया, और राइफल कंधे से

उतारकर घुटने पर रखी ताकि मेरे हाथ न कांपें और घोड़ा दबा दिया।

गोली ईवान की पीठ पर लगी। वह हवा में उछला और कई गज दूर जा गिरा। फिर पेट पकड़कर उठा और गिर पड़ा। एक बार फिर पीड़ा की तीव्रता से वह दुहरा होकर उठने का प्रयत्न करते हुए मेरी ओर मुड़ा। मैं भागकर उसके निकट पहुंचा, "यह तुमने क्या…क्या…किया बाबा? यह…तुम…ने…" उसका शरीर पीड़ा से ऐंठ गया…और वह गिर पड़ा। मैं उसपर झुक गया। उसकी आंखें गतिशील थी और होंठों के कोनों से खून के बुलबुले उठ रहे थे। मैंने समझा कि वह खत्म हो चुका है पर अचानक ही वह उठ बैठा और शब्द उसके होंठो से टूट-टूटकर निकलने लगे, "बाबा…मेरी…एक…बीवी है…और…और…एक बच्चा…भी…है…वह…"

उसका सिर एक ओर ढुलक गया और वह पीठ के बल ढेर हो गया। फिर उसने अपना एक हाथ जख्म पर रख दिया और खून उसकी उंगलियों के सुराखों से बहने लगा। वह पीड़ा से कराहा और निश्चल नजरों से मेरी ओर देखते हुए कुछ कहने की कोशिश करने लगा। उसके होंठ थरथराये, "बब…बा…बब…" उसकी जीभ ऐंठकर खामोश हो गयी।

मेरी आंखों से आसुओं का दरिया बह निकला। मैं भर्रायी हुई आवाज में बोला, "मेरी ओर से शहीदों का मुकुट स्वीकार करो मेरे बच्चे! मेरे जिगर के टुकड़े! तुम्हारी एक बीवी है और एक बच्चा। जबकि मेरे सात बच्चे हैं और उन सभी का पालन-पोषण मेरे जिम्मे है। मैं तुम्हे फरार होने का अवसर देता पर मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूं कि यदि ऐसा करता तो मेरे बच्चे-तुम्हारे भाई-बहन अनाथ और असहाय हो जाते।"

वह कुछ देर तक उसी प्रकार पड़ा रहा और फिर खत्म हो गया। उसका हाथ अब भी मेरे हाथ में था। मैंने उसका कोट उठाया। जूते उतारे। एक रूमाल से उसका चेहरा ढका और गांव की ओर वापस हो लिया।

मैंने इन बच्चों की खातिर इतने दुःख उठाये हैं। इतनी यातनाओं के तपते मरुस्थलों से गुजरा हूं कि मेरे बाल सफेद हो गये हैं। फिर भी ये बच्चे यहां तक कि बेटी नताशा मुझसे यह कहती है, "बाबा! मैं तुम्हारे साथ एक ही मेज पर नहीं बैठ सकती…तुमने मेरे दो भाइयों को इन्हीं हाथों से मार डाला है!"

लोरी

मिगुएल अस्तूरिआस

जन्म : 10 अक्तूबर, 1899.

गुआतमाला (मध्य अमेरिका) के लेखक अस्तूरिआस को सन् 1967 मे नोवेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। पूरा नाम मिगुएल एन्जेल अस्तूरिआस। इन्होने अपने देश की डिक्टेटरशिप का कड़ा विरोध किया था और फलस्वरूप ये देश निर्वासित कर दिये गये थे। इस काल मे ये आर्जेण्टिना, इटली और फ्रांस मे भ्रमण करते रहे। सन् 1924 से सन् 1933 तक यूरोप के विभिन्न देशो मे समाचार पत्रों के सवाददाता भी रहे। इन्होने बीस वर्ष की उम्र से भी पहले अपनी रचनाएं साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित कराना आरम्भ कर दिया था। इनकी रचनाओ में मनुष्य की स्वाधीनता का सदेश मिलता है। ये न केवल उपन्यासकार हैं बल्कि कवि भी हैं और इनकी कविताए भी काफी प्रसिद्ध हैं।

पुरस्कृत कृति : एल सेनोर प्रेसिडेण्ट।

इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं: लीजेण्ड्स आफ गुआतमाला, पल्स आफ दि स्काइ-लार्क, दि स्ट्रांग विण्ड, दि ग्रीन पोप, दि आइज आफ दि इन्टर्ड आदि।

अनुवाद : सुरेश धींगड़ा

उतारकर घुटने पर रखी ताकि मेरे हाथ न कांपें और घोडा दबा दिया ।

गोली ईवान की पीठ पर लगी । वह हवा में उछला और कई गज दूर जा गिरा । फिर पेट पकड़कर उठा और गिर पड़ा । एक बार फिर पीड़ा की तीव्रता से वह दुहरा होकर उठने का प्रयत्न करते हुए मेरी ओर मुड़ा । मैं भागकर उसके निकट पहुचा, "यह तुमने क्या···क्या···किया बाबा ? यह···तुम···ने ···" उसका शरीर पीडा से ऐंठ गया···और वह गिर पड़ा । मैं उसपर झुक गया । उसकी आंखें गतिशील थी और होठो के कोनों से खून के बुलबुले उठ रहे थे । मैंने समझा कि वह खत्म हो चुका है पर अचानक ही वह उठ बैठा और शब्द उसके होठों से टूट-टूटकर निकलने लगे, "बाबा···मेरी···एक···बीवी है···और···और···एक बच्चा···भी···है···वह···"

उसका सिर एक ओर ढुलक गया और वह पीठ के बल ढेर हो गया । फिर उसने अपना एक हाथ जख्म पर रख दिया और खून उसकी उंगलियों के सुराखो से बहने लगा । वह पीडा से कराहा और निश्चल नजरों से मेरी ओर देखते हुए कुछ कहने की कोशिश करने लगा । उसके होठ थरथराये, "बब···बा···बब ···" उसकी जीभ ऐंठकर खामोश हो गयी ।

मेरी आंखो से आसुओ का दरिया बह निकला । मैं भर्रायी हुई आवाज में बोला, "मेरी ओर से शहीदों का मुकुट स्वीकार करो मेरे बच्चे ! मेरे जिगर के टुकड़े ! तुम्हारी एक बीवी है और एक बच्चा । जबकि मेरे सात बच्चे हैं और उन सभी का पालन-पोषण मेरे जिम्मे है । मैं तुम्हे फरार होने का अवसर देता पर मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूं कि यदि ऐसा करता तो मेरे बच्चे-तुम्हारे भाई-बहन अनाथ और असहाय हो जाते ।"

वह कुछ देर तक उसी प्रकार पडा रहा और फिर खत्म हो गया । उसका हाथ अब भी मेरे हाथ में था । मैंने उसका कोट उठाया । जूते उतारे । एक रूमाल से उसका चेहरा ढका और गाव की ओर वापस हो लिया ।

मैंने इन बच्चों की खातिर इतने दुःख उठाये हैं । इतनी यातनाओं के तपते मरुस्थलो से गुजरा हू कि मेरे बाल सफेद हो गये हैं । फिर भी ये बच्चे यहा तक कि बेटी नताशा मुझसे यह कहती है, "बाबा ! मैं तुम्हारे साथ एक ही मेज पर नही बैठ सकती···तुमने मेरे दो भाइयो को इन्ही हाथों से मार डाला है !"

लोरी

मिगुएल अस्तूरिआस

जन्म : 10 अक्तूबर, 1899.

गुआतमाला (मध्य अमेरिका) के लेखक अस्तूरिआस को सन् 1967 में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। पूरा नाम मिगुएल एन्जेल अस्तूरिआस। इन्होंने अपने देश की डिक्टेटरशिप का कड़ा विरोध किया था और फलस्वरूप ये देश निर्वासित कर दिये गये थे। इस काल में ये आर्जेण्टिना, इटली और फ्रांस में भ्रमण करते रहे। सन् 1924 से सन् 1933 तक यूरोप के विभिन्न देशों में समाचार पत्रों के संवाददाता भी रहे। इन्होंने बीस वर्ष की उम्र से भी पहले अपनी रचनाएं साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित कराना आरम्भ कर दिया था। इनकी रचनाओं में मनुष्य की स्वाधीनता का संदेश मिलता है। ये न केवल उपन्यासकार हैं बल्कि कवि भी हैं और इनकी कविताएं भी काफी प्रसिद्ध हैं।

पुरस्कृत कृति : एल सैनोर प्रेसिडेण्ट।

इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं : लीजेण्ड्स आफ गुआतमाला, पल्स आफ दि स्काइ-लार्क, दि स्ट्राग विण्ड, दि ग्रीन पोप, दि आइज आफ दि इन्टर्ड आदि।

अनुवाद : सुरेश धींगड़ा

बाहर आता। अनेक पौधे बिंध गये। अनेक पूरी तरह नष्ट हो गये।

"मुझे इसाइयों के कपड़ों की तरह ढकने वाला यह पाला नारंगी की इस झाडी के बीजों से महरूम करेगा—तभी तो मुझे दुःख हो रहा है।"

वह हंसी, उसके धूप से तपे चेहरे में उसके दांत चमक उठे—लेकिन कड़वी हंसी। जिसमें अवाज नहीं होती···

दांतों में ठिठकी हंसी, जो शायद चीर-चीर देगी।

वह चांटे मारती रही, क्योंकि सभी पीडित थे। सूरज सिर पर आ चुका था। उसके विनाशक परिश्रम का पसीना उसके आंसुओं में मिल गया था—उन आंसुओं से जो बेकार और गंदा पानी है, जो नमकीन होने के कारण प्यासे हैं, आंसू कभी खुशी भरे नहीं होते, फिर भी, उस बार, जब वे कागजात के साथ खेतों का मालिकाना हक देने आये थे, तो वह खुशी से रोयी थी। हां खुशी से, जिसने उसकी छाती फुला दी थी। उसने प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए हाथ जोड़ दिये थे। वह प्रभु वर्जिन मेरी और संत मातेओ को लाख-लाख धन्यवाद देती रही थी, जिनकी कृपा से उन्हें खेत मिल रहे थे।

और बुएइओन ?

वह अपने पंजों के बल स्थिर खड़ा मग्न होकर सोचता रहा, कौन जानता है रहस्य क्या है।

हे ईश्वर! अचानक उसने दूर आता शोर सुना; कुछ क्षणों में खामोशी छा गयी। भय से कानूना के हाथ से चाकू गिर गया। उसे इतना भी समय नहीं मिला कि वह उसे उठा ले।

बुएइओन को खोजने वह घर से निकली। लेकिन वह अपने स्थान पर स्थिर ठिठकी-सी खड़ी रही। पहली गूंज पर उसका हैट गिर गया था और दूसरी पर चाकू की मूठ से उसका सिर छिल गया था।

दूसरी ओर पानी, झाग और बूंदें खुशी-भरे स्वरों के साथ चीनी मिल के चक्के पर गिरती रहीं—कभी-कभी उसके बडे-बडे चमकदार बुलबुले बनते और इधर-उधर फैल जाते। चक्के की गड़गड़ाती आवाज के बाद पानी की धार प्रचंड शोर करती और फिर नये दांते बूंदों की उस गहन दीवार को काटने के लिए थाम लेते और उड़ते जलकणों से बने इन्द्र-धनुष के बीच उसे ऐसे गायक के स्वर में बदल देते जो रोलरों की खड़खड़ाती आवाज से परेशान हो गया हो।

शाम ढल गयी, रात हो गयी। उसे बुएइओन का कोई चिन्ह नहीं मिला। जब शाम ढल रही थी, रोशनी कम हो रही थी, तो वह बुएइओन को दूर तक तलाशती जिस रास्ते से कई बार गुजरी थी, अब अंधेरा घिर आने पर उसी रास्ते से अंधों की भांति टटोल-टटोलकर चलती हुई बुएइओन को चीख-

चीखकर पुकार रही थी, "नाइके बुएइओन कुइके।" वह उसका पूरा नाम पुकार रही थी, "नाइके बुएइओन कुइके!"

थकान से चूर उसके पांव लड़खड़ा रहे थे, उसके नीचे से बार-बार रेत दरकती और छोटे-छोटे पत्थर लुढक जाते, छोटे-छोटे मेंढक और टिड्डे बार-बार इधर-उधर भागते, गोल पत्थर आवाजों को गुंजाते। "नाइके कुइके।" और फिर "नाइके कुइके।"········"नाइके बुएइओन कुइके।" उसका वास्तविक नाम यही था। बुएइओन नाम तो उसे तब मिला था, जब वह अनिवार्य सैनिक जीवन की अवधि पूरी कर रहा था। तभी साथियों ने उसकी शक्ति और भलमनसाहत को देखते हुए उसे इस नाम से पुकारना शुरू किया था।

उसके गालों पर आंसू फुंसियों की पपड़ियों की तरह सूख गये थे। सुबह की धुंध ने उसका चेहरा मानो गड्ढों से भर दिया था। न उसके बेटे, जो पहाड़ों में खो गये थे, न उसका पति, न उसके मकई के खेत, सिर्फ खाली घर और वह स्वयं। कोई नहीं जानता कि उसने ये दिन कैसे जिये।

पहाड़ों से, जहां भगोड़े जाते है, लोग लौटते हैं—दुबलाये, थके खोये-से बढ़ी दाढ़ियां लिये, चिथड़े पहने, लेकिन लौटते है। सिर्फ वे ही नहीं लौटते, जिन्हें मौत लील गयी हो। कहने के लिए···किसलिए कहने के लिए!···पहाड़ों से लोग लौटते हैं···अब उसके पोते है, उनके बेटों के बेटे···कहा जाता है कि उनके असली पोते नहीं है···लेकिन···लोग क्या जानते हैं?···वे उनके पोते है, असली पोते!···हां···दादाओं को वे जिंदा चित्र फलक पर ऐसे ही लगते हैं। पहाड़ों से लोग लौटते है, सिर्फ वे नहीं लौटते जिन्हें मौत लील गयी··· लेकिन बुएइओन का फटा कपड़ा तक नहीं लौटता···कुछ भी नहीं···जैसे कभी उसका अस्तित्व ही न रहा हो।

·"···दादी कहानी सुनाओ।"

"आह! एक बार की बात है···हम अमीर बन गये, उन्होंने हमें अमीर बना दिया···एक सरकार थी, जिसने लोगों को खेतों की मिल्कियत देकर अमीर बना दिया था। सुन रही हो तुम लोग? हम उससे मांगने नहीं गये थे, उन्होंने तुम्हारे दादा नाइके कुइके को शहर के चौक में बुलाया और वहां एक झाड़ की छाया में···मैं उनके साथ गयी थी, जैसे अगर वे आ जायें, तो आज भी जाऊंगी···तुम्हारे दादा बहुत ताकतवर और सुन्दर थे—मकई की रोटी की तरह···लेकिन सुन्दर किसे कहते हैं···झाड़ की छाया में, चौक में शहर के बहुत-से लोग इकट्ठे थे। उनमें से एक ने कहना शुरू किया। उसने बहुत-सी बातें कहीं। उनमें से काफी हमारी समझ में नहीं आयीं। लेकिन एक बात है······वह व्यर्थ की बात नहीं कर रहा था। अंत में उसने

खेतों के कागजात दिये जिनसे हम संपत्तिशाली बन गये, मालिक बन गये··· असली मालिक, अपनी जमीन के स्वामी···"

"यह तो सपने जैसी बात है दादी," पोती ने कहा जो अब स्कूल जाती थी।

"इसे तो इतिहास में ही रखना होगा···"

"नही, ऐसा कैसे हो सकता है···?"

"सच तो बेटी, उन्होने इतिहास को भुला दिया है। जिसमे उन्हे असुविधा होती है, उसे नही रखते, लेकिन मैं जो कह रही हूं, वह हुआ नही था···"

"सच तो यह है दादी, हमारी टीचर कहती हैं, कि इतिहास घूर अतीत है, जैसे हम बहुत-सी पुरानी चीजे देखते हैं।"

"अगर वह सच कहती है···क्योंकि पुरानी चीजें—इतिहास की तरह, जिसकी तुलना वह किसी भी पुरानी चीज से करते हैं—झूठ को जन्म देती है, लेकिन मैं जो कह रही हूं, वह झूठ को जन्म नही देगा, वह सच है, सच जो घटित हुआ था···उन्होने जमीन गरीबो में बांट दी थी।"

"यही ?"

"हा, यही···आह ! अगर तुम लोगों ने हमे तब देखा होता जब हम जमीन के कागजात लेकर शहर से लौटे थे ! हम लोग इतनी बातें करते रहे थे कि तीन रात सोये तक नही थे···! उन्होने आतंक की डोर ढीली छोड दी··· ओह ! लेकिन काम शुरू हो चुका था, तब तुम्हारे दादा ने सब कुछ ठीक-ठाक करने के लिए कमीज की आस्तीनें चढा ली थी···"

"और वे खेत दादी कहां हैं···?"

"छूट गये। उन्होंने छीन लिये। दूसरो की जमीन की तरह, दूसरी जमीन की तरह, उन पर ऐसा ताप पडा कि···"

"उन्होने छीन लीये अमीरो को देने के लिए···"

एक लम्बे मौन और धीरे-धीरे पलकें उठाने-गिराने के बाद झुर्रियो से भरी काइदूना ने शब्दो को साफ-साफ बोलने की कोशिश में होंठो को मिलाते हुए खरखराती आवाज मे कहा, "न उन्हे, न हमे। सिर्फ विदेशी भाषा बोलनेवालो को देने के लिए···दूसरी दुनिया के लोगो को···इसके लिए उन्होने हम पर आकाश से बम बरसाये···"

"तब वह दादी से ज्यादा नही जानती ?"

"फिर···मेरे बेटे वहा जाकर देखते हैं हर तरफ झाड़-झंखाड़ और कांटे। मैं इस तरह की कल्पना नही करती, मैं वैसे ही देखती हू, जैसा था, जब मैंने देखा—विदेशियों के जहाज द्वारा पलक झपकते ही सब कुछ नष्ट कर दिये जाने से पहले—चीनी मिल, पुल बुइ इओन···सब कुछ मांस···सिर्फ उसे समझने की मनाही थी—जमीन को जवान मास चाहिए था···मास···हमारा मास···जैसे

तुम्हारा···क्योंकि यह जमीन भी किसी का मांस है। यह कुछ-कुछ मां है, जो बेटे के बोने पर बेटी लौटाती है।"

"लेकिन जब उन्हें कुछ बोना नही था तो उन्होने ले क्यों ली ?"

"सिर्फ अपनी सम्पत्ति बनाने के लिए और कुछ नही···यही विदेशी चाहते थे कि हमें बर्बाद कर दें, ताकि हमारी जमीनों को बंजर बनाकर हमें बर्बाद कर दें, ताकि वे निश्चित रूप से हमारी बर्बादी, हमारी गरीबी के स्वामी बन सकें···"

"यह तो सपना-सा है, दादी !"

"हां, यह ऐसा सपना है जैसे खुले में आग लगी हो, जो जल्दी बुझ जायेगी।"

"लेकिन आग फिर लग जायेगी···"

"बेटी !"

"हमारी टीचर यही बताती हैं—एक आग जो सबको अपने में लपेट लेगी, क्योंकि उड़ती हुई चिनगारियां छूट गयी हैं और विचार उन्हें बुझा नही सकते।" कादूइना चुप हो गयी। उसने अपनी पोती अगुस्तीना को गोद में लेकर सहलाते हुए उसके कान में कहा, "और मैं यह सब लोरी की तरह फिर से कहती हूं···"

उसे दूसरे विचारों ने जकड़ लिया। लोग मौत के शिकंजे से लौट आये हैं। एक आग ने सबको जला दिया और कागजात पर दस्तखत करके जमीन उसके असली मालिकों को, धरती के बेटों को—जैसे नाइके बुएइओन कुइके, जो विदेशियों द्वारा आकाश से की गयी बमबारी में मर गये थे या खो गये थे—लौटा दिया। और अब वह देखेगी लोगो की प्रसन्नता के बीच सिर पर बंधे घुघलाते पक्षियों के पंखों का प्रतीक।

पानी पर ठहरा चांद

यासुनारी कावाबाता

जन्म 1899 : मृत्यु 1971

जापान के शीर्षस्थ लेखक यासुनारी कावाबाता को सन् 1968 में नोबेल पुरस्कार मिला था। पुरस्कार की घोषणा पर 'बुक वर्ल्ड' के समीक्षक इवान मारिस ने लिखा था, "नोबेल पुरस्कार समिति ने साहित्य के पुरस्कार के लिए यासुनारी कावाबाता को चुनकर जैसा सुखद निर्णय लिया है वैसा इससे पहले उसने शायद ही कभी लिया हो।" कावाबाता के उपन्यासो को पढने पर इवान की उक्ति मे जरा भी अतिशयोक्ति प्रतीत नही होती। सामान्य जीवन स्थितियो में जीने वाले सामान्य मानव की सुपरिचित संवेदनाओ-अन्तर्व्यथाओं को व्यंग्य पूर्ण प्रतीक के रूप मे निखारकर कावाबाता ने कलात्मक बना दिया है।

पुरस्कृत कृति : 'स्नो कण्ट्री'।

इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं : दि साउंड आफ दि माउंटेन, थाउजेन्ड क्रेन्स, हाउस आफ दि स्लीपिंग ब्यूटीज आदि।

अनुवाद : सरोज वशिष्ठ

"अपना बगीचा इस शीशे में से दिखा सकती हूं।" यों ही बैठे-बैठे किओको ने सोचा, "यह कब से बीमार है। शायद यह दृश्य इसे नया जीवन दे सके।"

यह शीशा उसे दहेज में मिला था—शहतूत की लकड़ी के छोटे-से फ्रेम में जड़ा। शीशे को देखते ही उसे वे दिन याद आते, जब उन दोनों की शादी हुई थी। अपने बालों का पिछला हिस्सा देखते समय उसकी कोहनी से किमोनो हट जाता था। कितनी लाज आती थी उसे। और उसका पति हमेशा उसके हाथ से शीशा छीन लेता था, "तुम कितनी फूहड़ हो! लाओ, मैं दिखाता हूं तुम्हें।"

वह जानती थी कि वह फूहड़ नहीं है। सोचती, इसे मेरी गर्दन में जरूर कुछ नया नजर आता है। और वह अधीर हो उठती।

शीशे का लकड़ी, का रंग नहीं बदला। अभी समय ही कितना बीता है। वह उसे हमेशा दराज में रखती है। लड़ाई शुरू होते ही उन्हें शहर छोड़कर भागना पड़ा था और फिर उसका पति बीमार हो गया था। हां, शीशे के चारों ओर पाउडर और मिट्टी जम गई थी। उसके पति ने बड़ी लगन से—बीमार आदमी की लगन से—शीशा साफ किया था।

घरवालों के बार-बार कहने पर जब किओको ने दूसरी शादी की, तो वह शीशे का फ्रेम साथ ले आयी थी। शीशा तो उसने अपने पहले पति की चिता में जला दिया था। फ्रेम में दूसरा शीशा लगवा लिया था। यह बात उसने अपने दूसरे पति को नहीं बतायी थी।

वह शीशा ही तो उनके वैवाहिक जीवन का आधार था। ससुराल वालों की नजरें बचाकर उसने शीशा अपने मृत पति के ऊपर रख दिया था, और फिर उसे गुलदाऊदी के फूलों से ढंक दिया था। घर वालों ने अगले दिन राख में पिघला हुआ शीशा देखा, तो हैरान रह गए। कहां से आया वह शीशा? कियोको ने वह शीशा हनीमून पर अपने साथ ले जाने के लिए खरीदा था, लेकिन पति के जीते जी कहीं जा ही नहीं सकी'''।

दूसरे पति के साथ वह हनीमून मनाने गयी थी। पहले ही दिन उसने कहा था, "तुम एकदम बच्ची हो।" वह उसका मजाक नहीं उड़ा रहा था। वह खुश था पर किओको का मन पीड़ा से भर उठा। वह सिमट गई। आंखों में आंसू भर आये। यह भी उसे बचपना ही लगा।

उसे रोना क्यों आया? वह नहीं जानती। शायद अपने मृत पति के लिए या शायद अपने ही लिए। वह कुछ नहीं जानती। एकाएक उसे अपने दूसरे

पति पर तरस आया और वह मुस्करा दी।

"सच-सच कहो, क्या मैं तुम्हें बच्ची ही नजर आती हूं ?" कहने को तो वह कह गई लेकिन फिर शरमा गयी।

वह बेहद खुश था—"तुम्हारे कोई बच्चा नहीं हुआ…"

तीर की तरह—यह सवाल उसके शरीर में चुभ गया। क्या यह मेरे साथ खेल रहा है ? "उसे संभालना किसी बच्चे से कम था !" उसने सोचा, और उसे लगा, उसका मृत पति उसी के अन्दर पला एक बच्चा था। मगर उसे मरना ही था, तो मैंने इतना संयम क्यों किया ?

उसके दूसरे पति ने उसे अपने पास खींच लिया, "मौरी गांव मैंने रेल की खिड़की में से देखा है। तुम वहा कब तक रही ?"

"स्कूल खत्म करने तक। फिर मुझे सान्जो में नौकरी मिल गई थी।"

"क्या सान्जो भी नजदीक ही है ? वहां की खूबसूरत लड़कियां तो मशहूर हैं। अब समझा, तुम इतनी सुन्दर क्यों हो ?"

"कहा सुन्दर हू ?" किओको ने अपना हाथ गले पर रख लिया, "तुम्हारे हाथ सुन्दर हैं न ! मैंने सोचा, तुम्हारा शरीर भी सुन्दर होगा।"

"नहीं-नहीं।" उसने हाथ पीछे छिपा लिये।

"अगर तुम्हारा कोई बच्चा होता, तो भी मैं तुमसे शादी कर लेता। लड़की होती तो कितना अच्छा लगता। मैं उसे गोद ले लेता, अपनी बना लेता।"

धीमे-धीमे वह उसके कान में बोल रहा था। वह सोचने लगी, इसका अपना एक बेटा है न, शायद इसीलिए बेटी की तमन्ना है इसे। प्यार जतलाने का यह क्या ढंग है ! बेटे को एकदम न मिलाना पड़े, शायद इसीलिए यह मुझे दस दिन के लिए घुमाने ले जा रहा है।

उसका पहला पति लेटे-लेटे सिर्फ बगीचा ही नहीं, और भी बहुत कुछ देखता था। आसमान, बादल, बर्फ, दूर-दूर तक फैले हुए पहाड़, पेड़, चाद। शीशे से देखता था जगली फूल, पक्षी, सड़क पर चलते हुए आदमी, बाग में खेलते बच्चे।

उस शीशे में एक अनोखा संसार बसा हुआ था। एक शीशा, जो शृंगार के लिए इस्तेमाल किया जाता है, एक शीशा, जिससे गर्दन का पिछला भाग देखा जाता है, उसी शीशे ने एक बीमार के लिए एक नया संसार रच दिया था।

"सलेटी रंग का आसमान शीशे में चांदी की तरह चमकता है।"

"शायद इसलिए कि तुम हर वक्त इसे साफ करते रहते हो।"

"आसमान का जो रंग हम देखते है न, पक्षियों को वह रंग नही दिखता"

"जो रंग शीशे में नजर आता है न वही रंग शीशे को आंखें देखती हैं।"

वह उसे अपने प्रेम की आंखें नाम देना चाहती थी। शीशे में पेड़ और भी हरे, कुमुदिनी के फूल और भी सफेद दिखते थे।

"यह देखो, तुम्हारे दाए अंगूठे का निशान।" किओको ने उस निशान को मिटाना चाहा था।

"नही नही, रहने दो। देखो, मुझे तुम्हारे अंगूठे की हर रेखा याद है। सिर्फ रोगी आदमी ही ऐसा कर सकता है।"

उसका पति बिस्तर पर लेटा रहता बस। वह युद्ध में जाने के लिए फौज में भर्ती हुआ था पर वहां पहुंचते ही बीमार पड़ गया। वह चल भी नहीं सकता था। वह तब अपने मां-बाप के पास रहने लगी थी। जिस घर में उसकी शादी हुई थी, वह जल चुका था। पति के घर लौटने पर एक छोटा सा मकान किराये पर ले लिया गया था।

उसे बागवानी का बेहद शौक था। सब्जी तो वे बाजार से भी खरीद सकते थे, पर बाग में काम करने के बाद उसे लगता, मानो कोई खोयी हुई चीज वापस मिल गई है। दिन-भर की थकावट मिट जाती।

सितम्बर का महीना था। लोग छुट्टिया बिताकर लौट गए थे। वर्षा शुरू हो चुकी थी—गीली और ठंडी।

एक पक्षी के चहकने के साथ-साथ एक दोपहर धूप निकली थी। उसे लगा कि सब्जियों में एक अनोखी चमक आ गई है। पहाडों के पीछे भागते हुए सुर्ख बादलों ने उसे मतवाला-सा बना दिया था। उसका पति उसे बुला रहा है शायद। वह चौंक उठी थी। मिट्टी में सने हाथ लिये ही वह ऊपर भागी थी। उसका पति जोर-जोर से सांस ले रहा था। उसे पीडा हो रही थी।

"मैं तुम्हें कब से बुला रहा हूं। क्या तुम्हें सुनाई नहीं दिया?"

"नही तो। मुझे माफ कर दो।"

"तुम बाग में काम करना छोड़ दो। अगर मैं एक बार और इसी तरह चिल्लाया, तो मर जाऊंगा। तुम थी कहां?"

"मैं बाग में थी। अब नही जाऊंगी।" वह संभल गया था।

"क्या तुमने अभी-अभी उस चिड़िया का गीत सुना? कितना मधुर था।"

बस, उसे यही बात कहनी थी।

"मैं एक घंटी खरीद लाऊंगी। तब तक कुछ फेंककर बुला लिया करो।"

"क्या फेंकूगा प्यालियां? खूब मजा आएगा।"

सर्दियां बीत चुकी थी। शीशे में से बगीचा दिखाने का विचार तभी आया था उसे। कितना असीम आनन्द दिया था उस शीशे ने, मानो कोई खोयी हुई, हरी-भरी दुनिया उसे मिल गयी हो। पतलून पहनकर काम करती किओको भी

तो उसको नजर आती थी। वह जानती थी कि वह उसे देख रहा है। और पहले वह उसकी कोहनी भी देख लेता तो कैसे शरमा जाती थी वह।

दूसरी शादी के बाद, बरसों की बीमारी, पीडा और शोक के बाद उसने फिर शृंगार करना शुरू किया है। अब वह ज्यादा सुन्दर लगती है। उसका पति सच ही तो कहता है। और अब तो उसे लाज भी नहीं आती।

शीशे में नजर आते उसके चेहरे में और उसके असली चेहरे में वह अन्तर क्यों नहीं है, जो आसमान के रंग मे था? क्या वह अन्तर दूरी के कारण होता है? उसे अपना पहला पति याद आया।

बगीचे मे काम करते समय शीशे मे मैं उसे कैसी लगती थी। यह जानने की तीव्र इच्छा उसके मन में जागी। साथ ही उसे याद आयी कुमुदिनी के फूलों की सफेदी की, मैदान में खेलते हुए बच्चो की और उस दुनिया की जो उसने अपने पहले पति के साथ बसायी थी।

अपने दूसरे पति की खातिर वह इस इच्छा को दबाती रहती है; पर अब तो यह एक शारीरिक उत्कंठा बन चुकी है। और इसकी पूर्ति उतनी ही दूर है, जितना स्वर्ग।

मई मास की एक सुबह। रेडियो पर जंगली चिड़ियो के गानों का प्रसारण उन्ही पहाड़ियो से हो रहा है, जहा वह अपने पहले पति के साथ रहती थी।

आजकल वह अपने पति के दफ्तर जाते ही उस शीशे को निकाल लेती है। पहले आसमान देखती है और फिर अपना चेहरा। जब तक वह शीशा नहीं देखती, उसे अपना चेहरा भी नजर नही आता।

लेकिन अपना चेहरा तो सिर्फ महसूस किया जाता है। फिर शीशे में यह किसका चेहरा है? वह खोयी-खोयी-सी बैठी रहती है। अगर अपना चेहरा देखा जा सकता तो क्या इन्सान पागल न हो जाता? अच्छा कीड़े तो अपना चेहरा देख सकते है न? *शायद हमारा चेहरा दूसरे लोग देख सकते हैं। यही* तो प्रेम है।

"पूर्ण प्रेम सिर्फ स्वस्थ मन मे बन सकता है।" जब उसके दूसरे पति ने यह बात कही तो वह *शरमा गई थी, पर कुछ भी बोल नही सकती थी।* पहले वह सोचती थी कि उसका सयम निरर्थक रहा। और अब वही सयम एक मर्म-भेदी याद बन गया है। ऐसी याद जिसमे से प्रेम ही प्रेम झलकता है।

मारे डर के किओको का चेहरा ही बदल गया है। सुबह-सुबह उसका मन घबडाता है। उसे लगता है, वह पागल हो गई है। अपने सौतेले बेटे को वह दो डिब्बे भरकर खाना देती है। नगे पांव बाग में घूमती रहती है। आधी रात को उठकर वह पलंग पर बैठ जाती है। अपने पति को घूरती रहती है।

रह-रहकर उसे एक ही ख्याल आता है—"इन्सान की जिन्दगी कुछ भी

नही।" अपनी पेटी खोलकर सोचती है—"क्यों न मैं इसका गला घोंट दू।"

और फिर अगले क्षण ही फूट-फूटकर रोने लगती है। गर्मी की रात में भी वह कांपती रहती है। उसका पति बहुत ही प्यार से, उसकी पेटी बांध देता है।

"किओको, अपना ख्याल करो। आने वाले बच्चे का ख्याल करो। उसमें विश्वास करो।"

डाक्टरों ने सलाह दी है कि उसे अस्पताल में दाखिल करवा दिया जाये। वह मान तो गई है, पर एक बार अपने घर वालों से मिलना चाहती है।

उसका पति उसे उसके घर ले गया।

अगले ही दिन वह उस पहाडी पर गयी, जहां वह अपने पहले पति के साथ रहती थी। इन्हीं दिनों तो वह वहां रहने आयी थी। रेलगाडी में सफर करते समय उसका दिल कहता था—"कूद पड़ो।" पर उस पहाडी की ठंडी-तीखी हवा ने उसे छूकर स्वस्थ कर दिया। बस सम्भल गयी। उसके अन्दर का शैतान भाग निकला और वह पुराने घर की ओर गयी।

वही सुर्ख शाम, वही पेड, वही मधुर गीत गाती हुई चिड़िया। उस घर मे कोई और रहता है। खिडकियो पर सफेद परदे टंगे हैं। दूर से वह घर को निहारती रही।

"अगर बच्चे की शक्ल तुम्हारे जैसी हुई तो?" अपने ही कहे शब्द सुनकर वह चौक गयी। फिर शान्त मन से लौट आई।

निर्वासित

सेमुएल बैकेट

जन्म : 1906

सेमुएल बैकेट को नोबेल पुरस्कार सन् 1969 में प्राप्त हुआ। वैसे तो बैकेट मूलरूप से आयरिश हैं किन्तु इनकी शिक्षा जर्मनी, इंग्लैण्ड और फ्रांस मे हुई। बाद में ये स्थायी रूप से फ्रांस में ही बस गये और एक फ्रांसीसी साहित्यकार के रूप में ही विख्यात हुए। इनकी प्रसिद्धि एक नाटककार के रूप मे ज्यादा रही है परन्तु इन्होने नाटको के अतिरिक्त कहानियां और उपन्यास भी लिखे हैं। नाट्य-कला को प्रयोग की नई जमीन पर खड़ा करने के कारण इनकी चर्चा विश्व भर मे हुई है।

पुरस्कृत कृति—वेटिंग फार गोडो।

इनकी अन्य प्रमुख पुस्तक है : अन्तिम खेल।

अनुवाद : विनोददास

सीढ़ियां बहुत नही थी। मैंने उन्हें अनेक बार गिना था। ऊपर चढ़ते हुए भी और नीचे उतरते हुए भी, मगर उनकी संख्या मेरे दिमाग से निकल गयी। मुझे यह कभी पता नही चल सका कि पटरी पर पांव रखते समय एक गिना जाये और पहली सीढ़ी पर पांव रखते समय दो-तीन और आगे गिना जाये या पटरी को गिनती में शामिल न किया जाये। जीने के ऊपर पहुंचकर भी मुझे यही दुविधा घेरे रही। दूसरी दिशा मे, अर्थात् ऊपर से नीचे भी वही बात थी. हालांकि 'दुविधा' शब्द बहुत वजनदार नही है। सच बात तो यह थी कि मुझे यह मालूम नही था कि कहां से शुरू करूं और कहां खत्म। नतीजा यह हुआ कि गिनती में बिलकुल भिन्न संख्याएं आयी और मुझे यह कभी पता नही चल सका कि उनमें कौन-सी सही है और जब मैं यह कहता हूं कि वह संख्या मेरे दिमाग से निकल गयी है तो मेरा मतलब यह बताने का है कि उन तीनों संख्याओं में से एक भी मेरे दिमाग में नही रही है। यह सच है कि मुझे इनमें से किसी भी सख्या के लिए अपना दिमाग खोजना पड़ेगा और जाहिर है कि वे संख्याएं वही मिल भी सकती हैं।

बहरहाल सीढ़ियों की संख्या का कोई महत्त्व नही होता। याद रखने को जो बात है और जिसका महत्व है, वह यह कि सीढ़ियां बहुत-सी नही थी और यह मुझे याद था। यहां तक कि किसी बच्चे के लिए भी वे बहुत ज्यादा नही थी—ऐसे बच्चे के लिए जो आमतौर पर सीढियां चढ़ता-उतरता है और रोजाना उन्हे देखने का आदी होता है।

लिहाजा जब मैं गिरा तो मुझे खास चोट नही लगी। जब मैं गिरा तो मुझे दरवाजा बंद होने की आवाज सुनाई दी, जिससे मुझे कुछ राहत मिली। इसका मतलब यह था कि वे डंडे लेकर मेरे पीछे नही आ रहे थे और राहगीरों के सामने मुझे पीटने का उनका कोई इरादा नही था, क्योंकि अगर उनका यही इरादा होता तो वे हरगिज दरवाजा बन्द नहीं करते, बल्कि इसे खुला छोड़ देते ताकि ड्योढ़ी मे जमा लोग मुझे पिटते देखकर सबक लेते। लिहाजा अब उन्होंने मुझे बाहर निकालकर ही तसल्ली कर ली। गटर में जाकर विश्राम करने से पहले मेरे पास इतना समय बच गया था कि मैं अपने इस तर्क पर विचार कर सकता था।

इन हालात में कोई भी बात ऐसी नही थी, जो मुझे एकदम उठ खड़ा

होने पर मजबूर करती। मैंने अपनी कोहनी पटरी पर टिका दी, अपने हाथ कानों पर रख लिये और उस स्थिति पर गौर करने लगा जो मेरे लिए अपरिचित नहीं थी। लेकिन दुबारा दरवाजा बंद होने की आवाज धुंधली होने के बावजूद ठीक-ठीक सुनाई दी। मेरे हाथ पटरी पर टिके थे और टांगें उड़ने के लिए तैयार थीं। लेकिन वह तो मेरा ही हैट था जो हवा में तैरता हुआ मेरी ओर बढ़ रहा था। मैंने उसे पकड़ लिया और पहन लिया। वे जो कुछ कर सकते थे, अपने परमात्मा के आदेश के अनुसार, ठीक ही कर रहे थे। वे इस हैट को अपने पास भी रख सकते थे लेकिन वह उनका नहीं था, लिहाजा उन्होंने मुझे वह लौटा दिया। लेकिन इतने में ही सारा भ्रम टूट गया।

मैं उठा और उठकर चल पड़ा। याद नहीं, उस समय मेरी कितनी उम्र थी। मेरे साथ जो कुछ घट चुका था, उसमें ऐसी कोई बात न थी जो याद रहती। न उससे बचपन का रिश्ता था और न मृत्यु का बल्कि उसे देखकर बहुतों का बचपन और मृत्यु याद आ जाते थे और मैं न जाने कहां खो जाता था। किन्तु यदि मैं कहूं कि उस वक्त मुझ पर शबाब का आलम था तो शायद अतिशयोक्ति न होगा। मेरा खयाल है कि यही वह वक्त होता है, जब आदमी की सारी मानसिक शक्तियां उसके वश में होती हैं। जी हां, मेरा भी यही हाल था। मैंने सड़क पार की और उस मकान की ओर मुड़कर देखा जहां से मुझे निकाला गया था। वहां से निकलते समय मैंने मुड़कर नहीं देखा। कितना खूबसूरत दृश्य था। खिड़कियों में जिरेनियम के पौधे लगे थे। जिरेनियम के पौधों पर मैंने कई साल लगाये थे। जिरेनियम अमूमन चलते-पुर्जे ग्राहकों जैसे होते हैं लेकिन अंततः मेरी उनसे ऐसी पट गयी थी कि मैं उनके साथ जो चाहता था, कर लेता था। इस मकान के दरवाजे का मैं हमेशा से बड़ा प्रशंसक रहा हूं जो इसका जीना खत्म होते ही ऊपर दिखाई देता है। भला उसका चित्र कैसे खींचूं ? एक विशाल-सा हरे रंग का दरवाजा था, जो ऐसा लगता था, मानो गर्मी के मौसम में हरी सफेद धारी वाले मकान में सजाया गया हो। दरवाजा एक ही रंग के दो खंभों के बीच जमाया गया था और घंटी उसके दाहिनी ओर लगी थी। परदे बहुत ही सुरुचिपूर्ण थे। यहां तक कि जो धुआं चिमनी से उठता था और हवा में फैलकर विलीन होता था, तो पड़ोसियों की चिमनियों के धुएं से कहीं अधिक दुखदायी था। मैंने नजर उठाकर तीसरी और अंतिम मंजिल की ओर देखा तो मेरे कमरे की खिड़की चौपट खुली पड़ी थी। चारों तरफ की सफाई जोर-शोर से हो रही थी। कुछ ही घंटे बाद वे खिड़की बंद कर देंगे, परदे खींच देंगे और सारे कमरे में कीटनाशी दवा छिड़क देंगे। मैं उन्हें भली भांति जानता हूं। उस मकान में तो मैं मृत्यु का भी खुशी से स्वागत करता। मैंने अपने कल्पना-चक्षुओं से देखा—दरवाजा खुला

और मेरे पैर बाहर को निकल आये।

मैं उस ओर देखकर डरा नहीं क्योंकि मुझे मालूम था कि वे परदों के पीछे से जासूसी नहीं कर रहे हैं जो वे, यदि चाहते तो, कर सकते थे। लेकिन उनकी रग-रग को पहचानता हूं। वे सब अपने-अपने अड्डों में चले गये थे और अपने कामों में लग गये थे।

इस सबके बावजूद मैंने उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाया। मेरा अपना जन्मस्थान से परिचय बहुत गहरा नहीं था, न ही मुझे अपने बचपन, लड़कपन की घटनाएं याद थी। और वे सब चीजें इतनी अधिक गड्डमड्ड थी कि मैंने सोचा, शायद मेरा कही नाम-निशान भी न रहा हो। लेकिन मैं गलती पर था। मैं बाहर बहुत कम ही निकलता था। कभी खिड़की तक चला गया, परदे हटाये और जरा बाहर झांक लिया। लेकिन वहां से मैं एकदम कमरे के भीतर लौट आता, जहां बिस्तर बिछा होता। समस्त परिवेश से मुझे बड़ी उलझन होती थी। लेकिन ऐसे वक्त में मुझे क्या करना चाहिए, यह मैं अच्छी तरह जानता था। पहले मैंने अपनी निगाहें ऊपर आसमान की ओर उठायी, जहां से असहाय को सहायता की उम्मीद होती है, जहां कोई सड़क नहीं है, जहां कोई भी बेफिक्र घूम-फिर सकता है—जैसे मरुस्थल में, वहां कोई चीज आंख के रास्ते में नहीं आती, जहा चाहे, जो चाहे देख सकते हैं, अलबत्ता हर आदमी की अपनी नजर की सीमा जरूर होती है। जब मैं छोटा था तो मेरा खयाल था कि मैदानी जगहों में जिंदगी अधिक सुखकर होती है, लिहाजा मैं लूनबर्ग नामक बंजर जगह में चला गया। इसी मैदानी जीवन का सुख मेरे मस्तिष्क में बसा हुआ था जो मुझे वहां ले गया।

मैं चल पड़ा। उस वक्त मेरी चाल देखने लायक थी। देह के निचले अवयवों में ऐसी कड़ाई महसूस हुई मानो प्रकृति ने मुझे घुटने दिये ही नहीं। मेरे पैर कुछ अजीब आड़े-तिरछे पड़ रहे थे—कभी दायी ओर कभी बायीं ओर को झुकते हुए। मैंने अकसर अपनी इन खामियों को दूर करने की कोशिश की है—अपना धड़ सीधा रखता और घुटनों में कुछ लचक लाता था [illegible] पैर चलते समय एक दूसरे के ठीक सामने रहते थे। मेरा यह व्यवहार [illegible] खयाल से किसी हद तक ऐसी प्रवृत्ति के कारण बना है, जिसमें मैं [illegible] कभी मुक्त नहीं हो पाया हूं और जैसा कि अपेक्षित था, [illegible] जीवन में मुझ पर अपनी छाप छोड़ी थी। यह वह उम्र होती है [illegible] चरित्र का निर्माण होता है और जहां तक मेरा सवाल है, [illegible] हुई जब मैं कुर्सी के पीछे फुदकता रहता था। यह बात [illegible] जहां मैंने अपनी पढ़ाई खत्म की थी। उस वक्त मुझे [illegible] कर देने की बुरी आदत पड़ गयी थी। और यह [illegible]

से सुबह-सुबह लगभग दस-साढे दस बजे शुरू करता था और सूरज डूबने तक यह काम जारी रहता। मुझे यही महसूस होता जैसे कुछ हुआ ही नही। यह खयाल मेरे लिए असह्य था कि मैं अपने कपड़े बदल लू या अपनी मां से सही बात बता दू जो मेरी मदद कर देती थी और बदले में कभी मुझसे कोई सवाल नहीं करती थी। मैं नही जानता ऐसा क्यो होता था लेकिन सारा दिन मैं अपनी नन्ही-नन्ही जांघो के बीच जलन और दुर्गंध या पिछले भाग में चिपचिपाहट लिये गुजार देता था।

मौसम अच्छा था। मैं सडक पर बढ़ता गया, लेकिन जहां तक संभव हुआ, रहा पटरी पर ही। पटरी चाहे कितनी ही चौड़ी क्यो न हो, एक बार मैं चल पडा तो मेरे लिए उसकी चौड़ाई कभी काफी नही रहती और अजनबियों के लिए असुविधा पैदा करने से मुझे नफरत है। पुलिस के एक सिपाही ने मुझे रोका और कहा, "सड़क वाहनों के लिए है और पटरी पैदल यात्रियो के लिए।" यह उक्ति मुझे वैसी ही लगी जैसी ओल्ड टेस्टामेंट का कोई अंश। लिहाजा मैं पटरी पर चलने लगा, जैसे अपने किये पर पछतावा हुआ हो। फिर कोई बीस कदम चलने पर मुझे एक भयंकर धक्का लगा, किंतु मैं उसी पटरी पर जमा रहा और आखिर मे एक बच्चे को बचाने की कोशिश में मुझे खुद को जमीन पर गिराना पड़ा।

मैं गिरा और अपने साथ एक बूढ़ी महिला को भी लेकर गिरा जो चमकी और गोटे के कपड़े पहने हुए थी। उसका वजन लगभग ढाई मन होगा। गिर-कर जो वह चीखी-चिल्लायी तो भीड इकट्ठा हो गयी। मुझे पूरी उम्मीद थी कि उसकी जांघ की हड्डी टूट गयी होगी, बुढियो की जांघ की हड्डी ही आसानी से टूटा करती है लेकिन उसके साथ सिर्फ इतना ही नहो हुआ। मैंने भीड़ जमा होती देख वहा से खिसक निकलने की सोची और बुदबुदाते हुए न जाने कौन-सी शपथ ली। मानो चोट मुझे ही लगी हो और दरअसल हुआ भी यही था। मगर मैं उसे साबित कैसे करता?

ज्यों ही मैंने वहा से खिसकना चाहा कि एक दूसरे सिपाही ने मुझे रोक लिया। वह हर तरह से पहले जैसा ही था। उसमे पहले से इतना अधिक साम्य था कि मुझे लगा कि कहीं वह पहला ही तो नहीं है, उसने मुझे बताया कि पटरी सभी के लिए है, मानो यह कहना चाहता हो कि मैं उन 'सभी' से अलग हू। मैंने उससे कहा, "क्या आप यह चाहते हैं कि मैं गटर मे गिर जाऊं?" उसने जवाब दिया, "तुम चाहे भाड़ में जाओ लेकिन दूसरो को चलने के लिए रास्ता छोड़ो। अगर तुम दूसरों की तरह ढंग से नहीं चल सकते तो तुम्हें घर से बाहर आने की जरूरत ही क्या है?" और संयोग से मेरा भी यही खयाल था। उसने जो

मेरे घर की बात कही, उसे सुनकर भी मुझे राहत मिली। ठीक उसी समय एक शव-यात्रा गुजरी, जैसा कि कभी-कभी हो ही जाता है। हैटों की जैसे हलचल मच गयी और उसी क्षण अनेक उंगलियां हरकत में दिखाई दीं। निजी रूप से, यदि मैं मजबूरी में भी क्रास का चिह्न बनाता तो मैं उसे ठीक ढंग से काटता। लेकिन जिस भौंडे और भद्दे ढंग से उन्होंने किया, उससे लगा, जैसे यों ही बला टाली हो।

मैं चटपट एक घोड़ागाड़ी में सवार हो गया। जिन लोगों को मैंने अभी-अभी गुजरते देखा था और जो लोगो से बड़े जोर-शोर के साथ बहस कर रहे हैं, उनका मुझ पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। मैं ऊंघ-सा रहा था कि गाड़ीवान की आवाज ने मुझे चौंका दिया। उसने खिड़की बंद होने पर दरवाजा खोला और मुझे पुकारा। मुझे उसकी मूछों के अलावा और कुछ भी नही दिखाई दिया। "आपको जाना कहां है?" उसने पूछा। वह अपनी सीट से उतरकर मुझसे केवल यही पूछने के लिए आया था। जहा तक मेरा अपना सवाल है, मैं शायद काफी आगे निकल आया था। मैंने अपने दिमाग पर जोर दिया और उस सड़क या इमारत का नाम याद करने की कोशिश की। "क्या तुम्हारी गाड़ी बिकाऊ है?" मैंने उससे पूछा और यह भी कहा, "मेरा मतलब है, बिना घोड़े के" मुझे भला घोड़े का क्या करना है? मगर मुझे गाड़ी का भी क्या करना है? ज्यादा से ज्यादा यही ही होगा कि मैं उसमें पैर पसारकर बैठा रहूं। मुझे खाना लाकर कौन देगा? "चलो, चिड़ियाघर ले चलो," मैंने कहा। राजधानी में चिड़िया घर न हो, ऐसा बहुत कम देखा गया है। मैंने उससे जरा धीरे-धीरे चलने केलिए कहा। वह हंस दिया। शायद इस बात पर कि मैं यह भाप गया था कि वह बहुत तेज रफ्तार से मुझे चिड़ियाघर ले जायेगा। हो सकता है, वह इसलिए हंसा हो कि मैं उसकी गाड़ी खरीद रहा था या यह भी संभव है कि वह मुझ पर, मेरे व्यक्तित्व पर ही हंसा हो, जिसकी उपस्थिति ने ही गाड़ी का स्वरूप बदल दिया हो।

जी हां, चाहे आपको अचरज ही क्यो न हो, लेकिन उस समय मेरे पास कुछ पैसे बचे हुए थे। मेरे पिताजी ने मरते समय जो छोटी-सी रकम छोड़ दी थी, उसके सियाह-सफेद का मैं ही मालिक था। मुझे अभी यही खयाल आता है कि कही पिताजी ने ये मेरे पैसो मे हो से तो नही चुराये थे। क्योंकि उस वक्त मेरे पास कानीकौड़ी भी नही थी। मगर इसके बावजूद मेरी जिंदगी खूब मजे से चलती रही और एक हद तक मेरी इच्छानुसार ही चलती रही। इस प्रकार की स्थिति का सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि खरीद शक्ति का नितांत अभाव होता है। जब आपके पास फूटी कौड़ी भी नहीं होती तो जहां भी आप शरण लेंगे, वहा से आपको हफ्ते के भीतर-भीतर निकाल ही दिया जाता है।

ऐसी हालत में आपके घर का निश्चित पता होना तो असंभव ही है, क्योंकि जब पैसा ही नहीं होगा तो घर कहां से आयेगा ? यही कारण है कि मुझे इस बात का पता बहुत देर से चला कि वे किसी मामले को लेकर मेरी तलाश कर रहे हैं। इस बारे में उन्होंने क्या तरीका अपनाया, मैं नहीं जानता। मैं अखबार नहीं पढ़ता, न ही मुझे याद है कि उन वर्षों के दौरान मैंने किसी से कोई बात की हो। अलबत्ता तीन-चार बार भोजन के में मैंने जरूर अपनी जबान खोली थी। कुछ भी हो, मुझे इस बात का किसी न किसी तरह पता चल ही गया, वरना मुझे मिस्टर निहे नामक वकील के यहां जाने की क्या आवश्यकता थी। यह भी कैसी अजीब बात है कि लोग कुछ लोगों के नाम कभी भूल ही नहीं पाते, वरना मुझे वह अपने यहां क्यों आने देते। उन्होंने मेरी शिनाख्त की, जिसमें कुछ वक्त लगा। मैंने अपने हैट के अस्तर में अंकित अपने नाम के धातु के आद्यक्षर दिखाये। लेकिन उनसे कुछ सिद्ध होने के बजाय संदेह और बढ़ गये। उन्होंने मुझसे दस्तखत करने को कहा और खुद एक बेलनाकार रूल से खेलने लगे। रूल ऐसा था कि उससे आप बैल को भी मारकर गिरा सकते हैं। "अब इन्हें गिन लीजिए !" वह बोले। एक युवा महिला, जो शायद भ्रष्ट थी, इस मुलाकात के समय गवाह के रूप में मौजूद थी। मैंने नोटों की गड्डी जेब में ठूंस ली तो उन्होंने मुझे ऐसा करने से रोका। मुझे खयाल आया कि उन्हें मेरे दस्तखत करने से पहले मुझसे नोट गिनने के लिए कहना चाहिए था। यही बात कायदे की भी थी। "जरूरत पड़ने पर मैं आपसे कहां मिल सकता हूं ?" उन्होंने पूछा। जीना उतरने पर मुझे सहसा कुछ सूझा। और तभी मैं लौटकर गया और उनसे पूछा, "ये पैसे आये कहां से ?" मैंने उनसे जोर देकर यह भी कहा कि मुझे यह सवाल करने का पूरा-पूरा हक है। उन्होंने मुझे किसी महिला का नाम बताया जो मैं भूल गया। शायद उसी महिला ने मुझे किसी समय अपने घुटनों पर झूला झुलाया था, जब मैं बच्चों के कपड़े पहनता था और मुझसे कुछ लाड़-प्यार किया जाता था। कभी-कभी यही काफी होता है। बचपन में ऐसा ही होता है। उससे आगे उम्र बढ़ने पर तो वह प्यार-दुलार समाप्त हो जाता है। इसी पैसे का प्रताप था कि मेरे पास अभी कुछ बाकी था। चाहे बहुत थोड़ा ही क्यों न हो।

मैंने विभाजक दीवार पर हाथ मारा और उसे तब तक थपथपाता रहा जब तक कि गाड़ी रुक न गयी। गाड़ीवान मुझे कोसता हुआ अपनी सीट से उतरा। मैंने खिड़की का शीशा नीचे गिरा दिया ताकि वह दरवाजा न खोल सके, "दरवाजा खोलो ! दरवाजा खोलो !" वह चिल्लाया। उसका चेहरा गुस्से से लाल था, बल्कि बैंगनी हो गया था। न मालूम ऐसा उसके गुस्से की वजह से हुआ था या तेज हवा के थपेड़ों ने उसका मुंह लाल कर दिया था।

मैंने उससे साफ-साफ कह दिया कि मैंने गाड़ी दिन-भर के लिए लिए किराये पर ली है। उसने जवाब दिया कि उसे तीन बजे एक अंत्येष्टि में जाना है। काश वह आज न मरा होता! मैंने बताया कि अब मैंने चिड़ियाघर जाने का इरादा बदल दिया है। मैंने उससे पूछा, "तुम किसी होटल में ले जा सकते हो? यदि चाहो तो तुम भी खाना मेरे साथ खा लेना।"

वहां एक लंबी मेज बिछी थी, जिसके दोनों ओर एक ही आकार की दो बेंचें पड़ी थी। हम मेज पर बैठ गये। जब खाना आ गया तो उसने मुझे अपनी पत्नी, अपने घोड़े के बारे में बताया और फिर घूम-फिरकर अपनी जिंदगी के किस्से सुनाने लगा जो बहुत दुखद थे। इसका एकमात्र कारण उसका अपना चरित्र था। उसने मुझसे पूछा, "आप जानते हैं कि हर मौसम में रोटी की खातिर घर से बाहर फिरते रहना कितना कष्टकर होता है?"

मैंने भी अपनी पूरी राम कहानी उसे सुना दी और यह भी बता दिया कि मैंने क्या कुछ खोया है और क्या प्राप्त करने के लिए कोशिश कर रहा हूं। हम दोनों ने अपनी-अपनी हालत एक-दूसरे को समझाने और समझने की भरपूर कोशिश की। उसकी समझ में इतनी बात आयी कि मेरा कमरा छिन गया है और अब मुझे दूसरे कमरे की जरूरत है लेकिन और सब बातें उसके पल्ले नही पड़ीं, बस एक ही बात उसके दिमाग में बैठी कि वहां से निकलना असंभव था और वह यह कि मैं एक शानदार सुसज्जित कमरे की तलाश में हूं। उसने अपनी जेब से दो, दिन पुराना या शायद इससे भी पहले का शाम का एक अखबार निकाला और उसमें विज्ञापन देखने लगा, जिनमें से पांच-छह को उसने पेंसिल के टुकड़े से रेखांकित किया।

अंतिम पते पर पूछताछ कर लेने के बाद गाड़ीवान ने सुझाव दिया कि वह मुझे किसी ऐसे होटल मे ले जायेगा जहां मैं आराम से रह सकूंगा। होटल, गाड़ीवान, आराम—ये सब बातें मुझे विश्वसनीय लगीं। अगर उसकी सिफारिश सही है तो मुझे और कुछ नही चाहिए। मैंने शराब पीने की इच्छा जाहिर की। घोड़े ने दिन-भर कुछ खाया-पिया नहीं था। मैंने यह बात जब गाड़ीवान को बतायी तो उसने जवाब दिया कि घोड़ा जब तक अस्तबल लौटकर नहीं पहुंचता, कुछ खाता-पीता नही है। अगर काम के समय कुछ भी खा ले, चाहे वह सेब हो या शक्कर की डली, तो उससे पेट मे दर्द हो जाता है और कुरकुरी की बीमारी हो जाती है, जिससे कभी-कभी घोड़ा मर भी जाता है।

दो-चार पेग पी चुकने के बाद गाड़ीवान ने मुझे अपने घर चलकर रात गुजारने की दावत दी और कहा, "यह मेरे और मेरी पत्नी के लिए गौरव की बात होगी कि आप हमारे मेहमान बनें।" उसका मकान दूर नहीं था। उसकी

भावनाओं की कद्र करते हुए मुझे लगता है कि उस दिन उसने अपने मकान के इर्द-गिर्द सवारी की तलाश में घूमने के सिवाय और कुछ नहीं किया था। वे एक मकान के पिछवाड़े बने अस्तबल के ऊपर रहते थे। यह अच्छी जगह थी और मैं सहर्ष वहां रात गुजार सकता था। उसने अपनी पत्नी से मेरा परिचय कराया और बाहर चला गया। मेरे साथ अपने को अकेला पाकर उसे शायद कुछ घबराहट हो रही थी। मैं उसकी परेशानी को समझ गया। ऐसे मौकों पर मैं औपचारिकता निभाने के पक्ष में नहीं हूं। कुछ होना हो तो हो, वरना मामला खत्म कर दिया जाये। लिहाजा मैंने बात वहीं समाप्त करनी चाही और कहा, "मैं नीचे अस्तबल में जाकर सो जाता हूं।" गाड़ीवान ने विरोध किया। लेकिन मैं अपनी बात पर अड़ा रहा। उसकी पत्नी ने कहा कि अगर यह अस्तबल में ही सोना चाहते हैं तो इन्हें अस्तबल में ही सोने दो। गाड़ीवान ने मेज से लैंप उठाया और जीने से, या कहना चाहिए सीढ़ियों से जो नीचे अस्तबल में उतरती थी, अपनी पत्नी को अंधेरे में छोड़कर मुझे ले गया। वह अस्तबल के एक कोने में, जहां घास-फूस पड़ी थी, घोड़े का कंबल बिछाकर और एक माचिस वहां रखकर चला गया ताकि अगर मुझे रात को कोई चीज साफ देखनी हो तो उसका इस्तेमाल कर लूं। इस बीच घोड़ा क्या कर रहा था, मैं नहीं जानता। अंधेरे में पांव पसारकर लेटा तो मुझे उसके कुछ पीछे की आवाज सुनाई दी। यह आवाज कुछ अनजानी-सी थी—नीचे चूहे कलाबाजियां खा रहे थे और ऊपर गाड़ीवान और उसकी पत्नी की बातें थीं जिनमें दोनों मेरी नुक्ताचीनी कर रहे थे। मैंने माचिस हाथ में रख ली थी। रात को मैं उठा और एक तीली जलायी। उसके क्षणिक उजाले में मुझे घोड़ागाड़ी दिखाई दे गयी। मेरे मन में अचानक उस अस्तबल को आग लगा देने की इच्छा पैदा हुई, लेकिन शीघ्र ही मैंने अपने पर काबू पा लिया। घोड़ागाड़ी अंधेरे में खड़ी थी, मैंने ज्यों ही उसका दरवाजा खोला, चूहों की एक फौज निकलकर भागी। मैं उसमें चढ़ गया। ज्यों ही मैं गद्दी पर बैठा मैंने देखा कि घोड़ागाड़ी उलार थी और यह होना भी था क्योंकि उसके बम जमीन पर टिके हुए थे। लेकिन मेरे लिए यही बेहतर था, अपने पैर सामने की ऊंची सीट पर फैलाकर आराम से बैठ गया। रात को कई बार मुझे यह महसूस हुआ कि घोड़ा खिड़की तथा अपने नथुनों से निकली सांस के जरिये मेरी ओर देख रहा है। उस समय चूंकि वह घोड़ा गाड़ी में जुता नहीं था, इस लिए मुझे उसमें बैठा देखकर उसे कुछ आश्चर्य जरूर हुआ होगा। मुझे ठंड महसूस हो रही थी क्योंकि मैं ऊपर से कंबल लाना भूल गया था। लेकिन ठंड इतनी भी नहीं थी कि मैं उठकर जाऊं, कंबल ला सकूं। घोड़ागाड़ी की खिड़की से ही मैंने अस्तबल की खिड़की को बहुत साफ-साफ देखा। मैं गाड़ी से नीचे उतरा, अब अस्तबल में उतना अंधेरा नहीं था। मैं दरवाजे तक गया लेकिन

उसे खोल नहीं सका। लिहाजा मुझे खिडकी के रास्ते बाहर निकलना पड़ा। वह आसान भी तो नहीं था—मैंने पहले अपना सिर निकाला, हाथ जमीन पर जमा दिया और किसी तरह चौखट से निकलने के लिए जोर लगाता रहा। मुझे याद है, अपने-आपको खिड़की से बाहर निकालने के लिए मैंने हाथ घास के गुच्छों में फंसा दिये थे।

जब मैं आंगन से निकला तो अचानक कुछ सूझा। यह थी मेरी कमजोरी। मैंने एक बैंक नोट माचिस की डिबिया में घुसेड़ दिया, लौटकर आंगन में गया और माचिस उसी खिड़की की चौखट पर रख दी, जहां से मैं अभी-अभी निकल कर बाहर आया था। घोड़ा अभी तक खिडकी के पास खड़ा था।

लेकिन अभी मैं सड़क पर पहुंचा ही था कि लौटकर आंगन में आया और माचिस की डिबिया में रखा नोट उठा लाया। माचिस की डिबिया मैंने वहीं छोड़ दी क्योंकि वह मेरी नहीं थी। घोड़ा अब भी खिडकी से सटा खड़ा हुआ था। मुझे इस घोड़े को देखकर बड़ी कोफ्त और उकताहट-सी हुई। पौ फट रही थी। मुझे यह भी मालूम न था कि मैं कहां हूं। मैंने उदय होते हुए सूरज की ओर, या कहिए उस दिशा की ओर प्रस्थान किया जहां से वह उदय होकर अपना प्रकाश फैलानेवाला था। मुझे समुद्र का या फिर मरुस्थल का क्षितिज पसंद है। मैं जब भी सुबह के समय बाहर होता हूं तो सूर्योदय देखने जरूर जाता हूं। जब कभी मेरी शाम बाहर हो जाती है तो मैं उसके पीछे-पीछे तब तक चलता रहता हूं, जब तक तंद्रा आकर मुझे सुला नहीं देती है। न जाने मैंने यह कहानी क्यों सुनायी ! मैं कोई और भी कहानी सुना सकता था। शायद किसी और वक्त वह सुना सकूं। जीवित आत्माएं, आप देखेंगे, हर जगह एक-दूसरे से कितना अभिन्न होती है।

हाइडलबर्ग ज्यादा ही जाते हो

हाइनरिख ब्योल

जन्म : 1917 ।
जर्मन कथाकार हाइनरिख ब्योल को सन् 1972 में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ । प्रारम्भिक उम्र में कई तरह के कार्य किये, द्वितीय विश्वयुद्ध में पैदल सेना में सैनिक बनकर युद्धक्षेत्र में भी गये । मानवीय अस्मिता पर तानाशाही के प्रभाव के तहत जनजीवन और नागरिकों की त्रासदी का मार्मिक चित्रण इन्होंने अपनी रचनाओं में की है । इनकी रचनाओं में व्यंग्य का भी तीखा धार है जो सत्तालोलुपों पर सीधा प्रहार करता है ।

रात के समय स्लीपिंग सूट पहने जब वह बिस्तर के किनारे बैठा बारह बजे की खबरों का इंतजार कर रहा था और एक और सिगरेट सुलगा चुका था, तब बीती बातों पर नजर डालते हुए उसने वह 'प्वांईट' ढूंढने की कोशिश की, जिस पर आकर यह खूबसूरत शाम उसके हाथों से फिसल गयी थी। सुबह आसमान साफ था, धूप खिली हुई थी। जून में भी मई-सी शीतलता थी, पर दोपहर के आसपास होने वाली गर्मी का अहसास बाकायदा हो रहा था। रोशनी और तापमान उसे 'ट्रेनिंग' के उन बीते दिनों की याद दिला रहे थे, जब सुबह छह और आठ के बीच वह काम पर जाने के पहले अभ्यास किया करता था।

सुबह डेढ़ घंटा उसने साइकिल चलायी थी—नगर के बाहरी इलाकों के बीच की छोटी सडकों पर, औद्योगिक इलाके और वाटिकाओं के मध्य, हरे-भरे खेत, कुंजों व उपवनो के किनारे, बड़े कब्रिस्तान के पास से होते हुए जंगल के छोरों तक, जो शहर की सीमा के उस पार काफी दूर पड़ते थे। पक्के रास्तों पर उसने रफ्तार बढा दी थी, गति को आजमाया था, लक्ष्य से पहले की तेज दौड़ लगाकर देखी थी और पाया था कि अभी भी वह अच्छे 'फॉर्म' में है, और शायद 'अमेचुअर्स' की प्रतियोगिता में फिर से हिस्सा लेने का जोखिम उठा सकता है। उसकी टांगों में पास किये गये इम्तहान की खुशी और साइकिल का फिर से नियमित अभ्यास करने का संकल्प था। नौकरी और शाम को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की पढ़ाई की वजह से पिछले तीन सालों में वह 'साइकिलिंग' पर बहुत ही कम ध्यान दे पाया था। जरूरत बस उसे अब एक नयी साइकिल की थी। कल क्रोनजोर्गलर से उसकी पट जाये तो यह भी कोई मुश्किल काम नहीं'''और इसमें कोई शक नहीं था कि क्रोनजोर्गलर से उसकी पटने ही वाली थी।

साइकिल के अभ्यास के बाद अपने कमरे के कालीनजड़े फर्श पर उसने कसरत की थी, शॉवर लिया था, साफ कपड़े पहने थे, और तब कार में बैठ ब्रेकफास्ट के लिए वह माता-पिता के यहां चला गया था—कॉफी और टोस्ट, मक्खन, ताजा अंडे और शहद, उस टैरेस पर जो उसके पिता ने घर के आगे बनाया था, खूबसूरत पर्दे, जो कार्ल ने भेंट किये थे, और गरम होती सुबह में मां-बाप के ये तसल्ली देने वाले घिसे-पिटे शब्द;

"चलो, अब तो तुम लगभग कामयाब हो ही गये।"

"बस, अब तो तुम जल्द अपने को कामयाब हुआ ही समझो !" मां ने 'जल्द' बाप ने 'लगभग' कहा था, और बीते सालों के उस भय पर अच्छी तरह नजर डाल ली थी जो उन्होने एक-दूसरे पर उछाला नही, वरन् एक-दूसरे के साथ बांट लिया था। 'अमेचुअर्स' के जिला-चैंपियन और 'इलेक्ट्रिककर' से शुरू करके कल पास किये गये इम्तहान तक का रास्ता ! दूर हो चुका भय जो 'अनुभवी गौरव' की शक्ल लेने लगा था। वे बार-बार उससे यह जानना चाहते थे कि इस या उस शब्द को स्पेनी भाषा में क्या कहते हैं। गाजर या मोटरकार, स्वर्ग की रानी, मधुमक्खी और मेहनत, ब्रेकफास्ट, शाम का भोजन और शाम की लालिमा के लिए स्पेनी भाषा मे कौन-से शब्द है ?...और कितने खुश हुए थे वे दोनों, जब वह भोजन के लिए भी रुक गया था और मंगलवार को अपने कमरे में परीक्षा पास करने की पार्टी के लिए भी निमंत्रित कर रहा था। पिता 'स्वीट डिश' के लिए 'आइसक्रीम' लाने कार लेकर चले गये और उसने और काफी ले ली, हालाकि एक घंटे बाद कैरोला के माता-पिता के यहां उसे फिर से काफी पीनी थी। यहा तक कि उसने चेरी की ब्राडी का एक पेग भी लिया और अपने माता-पिता से अपने भाई कार्ल, भाभी हिल्डा और उनके दोनो बच्चो एल्के व क्लाउज के बारे में बतियाता भी रहा। इनके बारे में दोनो का एक ही मत था कि उन्हें सिर चढाया जा रहा है, इतनी सारी फ्राकों, पतलूनो व रिकॉर्डर जैसी ऊटपटांग चीजो से, और इन सबके बीच बार-बार उनका गहरी ठंडी सास लेकर यह कहना जारी रहा :

"बस, अब तो तुम लगभग कामयाब हो ही गये।"

"बस, अब तुम अपने को जल्द कामयाब हुआ ही समझो।"

इस 'लगभग' और 'जल्द' से वह झल्ला उठा। वह कामयाब हो चुका है। सिर्फ क्रोनजोर्गेलर से बातचीत ही तो बाकी है, और क्रोनजोर्गेलर शुरू से ही उसके प्रति दोस्ताना रुख अपनाता आया है। प्रौढ़ शिक्षा महाविद्यालय के अपने स्पेनी कोर्स मे और स्पेनी साध्य उच्चतर महाविद्यालय के अपने जर्मन कोर्सों मे वह सफलता पा तो चुका है ! ! !

बाद मे पिता की उसने कार धोने में मदद की, क्यारियो मे से बेकार घास-फूस निकालने में मा का हाथ बंटाया, और जब वह चलने लगा तो मा भागकर 'फ्रीजर' मे से प्लास्टिक की थैलियों में रखी गयी गाजरें, पालक और लिफाफा भर चेरी ले आयी। इन सबको उसने फिर से एक ठंडी थैली में पैक किया और उसे तब तक रुकने को मजबूर किया जब तक कि बगीचे से वह कैरोला की मा के लिए ट्यूलिप के फूल नही ले आयी। इस बीच पिता ने उसकी कार के पहियो की जाच की, इंजिन चलवाकर देखा, उसकी आवाज़ को कुछ अविश्वास से सुना, और तब कार की नीचे सरकायी हुई खिड़की के पास आकर वे बोले,

"क्या अव भी तुम पहले की तरह बार-बार हाइडलबर्ग जाते हो'''और ऑटो-बान (हाइ वे) से ही जाते हो ?" कहने का ढग कुछ ऐसा था मानो सवाल उसकी पुरानी, करीब-करीब छकड़ा हो चुकी गाड़ी की कार्यक्षमता को लेकर किया गया हो। उस गाड़ी की जिसे हफ्ते में दो बार और कभी-कभी तो तीन बार अस्सी किलोमीटर की इस दूरी को तय करना पड़ता हो।

"हाइडलबर्ग ?'''हा, मैं अभी भी हफ्ते में दो-तीन बार वहां जाता हूं। मैं 'मर्सेडीज' का खर्च उठा सकू, इसके लिए कुछ समय तो लगेगा ही।"

"आ-हा, मर्सेडीज," पिता ने कहा, "वह जो सरकार का आदमी है न''' सांस्कृतिक विभाग का है, मेरे खयाल से'''वह कल फिर अपनी 'मर्सेडीज' मेरे पास 'इंसपेक्शन' के लिए लाया था। बस, मेरी ही 'सर्विस' मागता है वह। क्या नाम था भला उसका ?"

"क्रोनजोर्गलर ?"

"हां हा, वही। बडा ही भला आदमी है। मैं तो उसे बिना किसी अतिशयोक्ति के शरीफ आदमी तक कह सकता हू।" और तब तक मां फूलों का गुलदस्ता लिये आ गयी थी। वह बोली, "कैरोला को हमारी 'ग्रीटिंग्स' कहना, और 'नेचुरली' उसके माता-पिता को भी। मगलवार को तो हम मिल ही रहे हैं।"

उसके गाड़ी स्टार्ट करने के पहले पिता एक बार फिर करीब आये और बोले, "हाइडलबर्ग बहुत ज्यादा न जाया करो इस छकड़े में।"

जब वह 'शुल्टे-बेवरंग्स' के यहां पहुंचा, तब तक कैरोला आयी नहीं थी। उसने फोन किया और उसके लिए 'मैसेज' छोड़ा था कि उसका काम खत्म नहीं हुआ, पर वह जल्द आने की कोशिश कर रही है—काफी पीनी शुरू कर दी जाये। टैरेस ज्यादा बडा था, खिड़कियों के पर्दे फीके पड़ चुकने के बावजूद ज्यादा शानदार! सब कुछ बड़प्पन का अहसास दिला रहा था—यहा तक कि बगीचे की मेज-कुर्सियों के मुश्किल से नजर आने वाले पुरानेपन और लाल टाइलों के जोड़ों में से उग आयी घास तक मे कुछ ऐसा था, जो उसे वैसे ही उद्विग्न कर रहा था जैसे छात्र-प्रदर्शनों की कुछ बातें। यह सब और कपड़े, उसमें और कैरोला मे हमेशा ही मनमुटाव की वजह रहे है। कैरोला हमेशा उस पर कुछ ज्यादा ही दुरुस्त, कुछ ज्यादा ही मध्यमवर्गीय कपडे पहनने का आरोप लगाती रही है। कैरोला की मां से उसने साग-सब्जियों के बगीचों के बारे में बात की, उसके पिता से 'साइकिल-स्पोर्ट' के बारे में। काफी उसे अपने घर से भी ज्यादा बेस्वाद लगी, और अपनी घबराहट को उत्तेजना मे न बदलने देने की वह पूरी कोशिश करता रहा। वे सचमुच भले, प्रगतिशील लोग थे। सगाई की घोषणा करके; बिना किसी पूर्वाग्रह के उन्होंने उसे विधिवत् स्वीकार भी कर लिया था। इस बीच वह उन्हें बाकायदा पसंद भी करने लगा था। कैरोला की मां को भी जिसका बार-

बार 'हाउ स्वीट' कहना उसे शुरू-शुरू में नागवार लगता था।

आखिर डा० शुल्टे-बेवरुंग ने, जैसा कि उसने महसूस किया, कुछ झिझकते हुए उससे गैरेज में चलने का आग्रह किया। वे उसे अपनी नयी साइकिल दिखाना चाहते थे, जिस पर बैठकर वह हर सुबह पार्क के बाहर और पुराने कब्रिस्तान के चारों ओर दो-एक 'राउंड' लगाया करते थे। क्या शानदार गाड़ी थी! बड़े उत्साह से उसने उसकी तारीफ की, बिना किसी ईर्ष्या के। आजमाइश के लिए वह उस पर बैठा और बगीचे के चारों ओर एक चक्कर भी लगा आया। शुल्टे-बेवरुंग को उसने टांगों की मांसपेशियों की बात समझायी (उसे याद आ गया था कि क्लब में बूढ़े सदस्यों की टांगों की नसें हमेशा चढ़ जाया करती थीं!) और जब वह साइकिल से उतरा और गैरेज की दीवार के साथ साइकिल खड़ी कर चुका, तब शुल्टे-बेवरुंग ने पूछा—"क्या सोचते हो तुम, कि इस शानदार स्लेज-गाड़ी से, जैसा कि तुम इसे कहते हो, मुझे यहां से, कहें कि, हाइडलबर्ग जाने में कितना समय लग जायेगा? सवाल उसे बिल्कुल निश्छल, इत्तफाकिया-सा ही लगा, खासकर जब शुल्टे-बेवरुंग ने आगे कहा, "तुम जानो, मैं हाइडलबर्ग का पढ़ा हुआ हूं। उन दिनों भी मेरे पास एक साइकिल हुआ करती थी और जवानी के जोश में वहां से यहां मैं ढाई घंटों में आ जाया करता था।" वे सचमुच किसी गुप्त अभिप्राय के बगैर मुस्कराये। उन्होंने चौराहों की बत्तियों, 'ट्रैफिकजाम' और कारों की भीड़ का जिक्र किया। यह सब उन दिनों इस तादाद में नहीं थे। उन्होंने बताया कि वे आजमाकर देख चुके हैं कि कार से दफ्तर जाने में उन्हें पैंतीस और साइकिल से सिर्फ तीस ही मिनट लगते हैं।

"और तुम्हें कार से हाइडलबर्ग जाने में कितना समय लगता है?"

"आधा घंटा।"

उन्होंने कार का जिक्र किया, तो हाइडलबर्ग का नाम लेने में 'इत्तफाक' का पुट कुछ कम हो गया, पर ऐन उसी वक्त कैरोला आ गयी। वह सदा की तरह सहृदय थी, सदा की तरह सुंदर। वह थोड़ी अस्त-व्यस्त जरूर थी, और साफ दिख रहा था कि वह थककर चूर हो चुकी है। और इस वक्त एक दूसरी अन-सुलगी सिगरेट हाथ में लिये बिस्तर के किनारे बैठा वह सचमुच समझ नहीं पा रहा था कि उसकी अपनी घबराहट, उत्तेजना में बदलकर कैरोला पर जा छायी थी, या वह पहले से ही नर्वस और उत्तेजित थी और उसी की उत्तेजना आकर उस पर हावी हो गयी थी। कैरोला ने स्वाभाविक रूप से ही उसे चुंबन दिया था, पर साथ ही फुसफुसाकर उसने यह भी कह दिया था कि आज वह उसके साथ नहीं जा पायेगी। बाद में उन्होंने फ्रोनजोगेलर की बात की थी कि वह

उसकी कितनी ज्यादा तारीफ कर रहा था ! पक्की नौकरियो, सरकारी जिलो की सीमाओं, साइकिलिंग, टेनिस और स्पेनी भाषा की चर्चा भी चली थी और यह सवाल भी उठा था कि परीक्षा में वह पहले या सिर्फ दूसरे दर्जे मे ही पास होने-वाला है ? वह खुद तो मुश्किल से तीसरे दर्जे में ही उत्तीर्ण हो पायी थी, उसने बताया था ! फिर जब उसे शाम के खाने तक रुकने का निमंत्रण दिया गया तो उसने काम और थकावट का बहाना बनाया, और किसी ने उस पर जोर नही डाला कि वह ठहर ही जाये ! जल्द ही टेरेस पर फिर से ठंड हो गयी। उसने कुर्सिया और काफी के बर्तन घर के अंदर पहुंचाने में मदद की और कैरोला जब उसे कार तक पहुचाने आयी तो अचानक उसे आलिंगन मे लेकर जोर-जोर से चूमने लगी। फिर उससे एकदम सटकर वह बोली, "तुम जानते हो कि मैं तुम्हें बहुत-बहुत पसन्द करती हूं। जानती हूं कि तुम एक बढ़िया इंसान हो, बस एक छोटी-सी खामी है तुममें—तुम हाइडलबर्ग जरूरत से कुछ ज्यादा ही बार जाते हो।" तेजी से भागकर वह घर के अंदर चली गयी थी, हाथ हिला रही थी, मुस्करा रही थी, उसे 'फ्लाइंग किस' दे रही थी—और चलते हुए कार के बाहरी शीशे मे से वह पीछे की ओर देख रहा था कि कैसे वह अब भी वही खड़ी और जोर-जोर से हाथ हिलालर उसे विदा दे रही थी।

क्या था यह ? ईर्ष्या तो नही हो सकती थी ! कैरोला जानती तो थी कि वह हाइडलबर्ग डियेगो और टेरेसा के यहां जाया करता था, आवेदन-पत्रों के अनुवाद मे, फॉर्म और प्रश्न-पत्र भरने में उनकी मदद किया करता था, कि विदेशियों से सम्बन्धित पुलिस, सामाजिक कार्यालय, ट्रेड-यूनियन, विश्वविद्यालय, श्रम-कार्यालय वगैरह के लिए वह उनकी दरख्वास्तें लिख दिया करता था। उन्हें साफ 'टाइप' कर दिया करता था। वह जानती तो थी कि सारा मामला स्कूल और किंडरगार्डन मे जगह मिलने, छात्रवृत्तियो, अनुदानों, कपड़ों और विश्रामगृहों का था। वह अच्छी तरह जानती थी कि हाइडलबर्ग में वह क्या करता है। दो-एक बार वह उसके साथ भी आयी थी, बड़े उत्साह से टाइप करती रही थी, और दफ्तरो मे उपयोग किये जाने वाली जर्मन भाषा के अपने अद्भुत ज्ञान को साबित भी कर चुकी थी। दो-एक बार वह टेरेसा को अपने साथ फिल्म और कैफे में भी ले गयी थी और चिलेवासियों के एक कोष के लिए अपने पिता से उसने चंदा भी वसूल किया था !

घर जाने के बदले, तब वह हाइडलबर्ग ही चला गया। डियेगो और टेरेसा नही मिले। डियेगो का दोस्त राऊल भी नही मिला। वापस आते समय वह कारों की लम्बी लाइन में फंस गया और रात के तकरीबन नौ बजे अपने भाई कार्ल के यहां जा पहुंचा। कार्ल ने उसे फ्रिज मे ठंडी बीयर ला दी और हिल्डे ने उसके लिए अंडा तल दिया। फिर मिलकर उन्होंने टी० वी० में 'ट्रूरदस्विम' का

एक रिपोर्ताज देखा, जिस मे एडी मेर्क्स कुछ खास प्रभावशाली नहीं था। जब वह चलने लगा तो हिल्डे ने उसे, 'उस बेहद भले चिली-दम्पति' के लिए बच्चों के उतरे हुए कपडों से भरा कागज का एक थैला भी थमा दिया।

और अब आखिर में समाचार भी प्रसारित हो गये, जो उसने आधे मन से ही सुने। वह पालक, गाजरों, और चेरि की बात सोचने लगा जो उसे अपने 'फ्रीजर' में रखने हैं। दूसरी सिगरेट उसने सुलगा ही ली—कहीं चुनाव हुए थे—क्या वह आयरलैंड था ?—कहीं भूकम्प आया था, किसी ने''' क्या वह सचमुच राष्ट्रपति ही था ?'''नेकटाइयों के बारे में बडी भली-सी बात कही थी, किसी ने किसी वक्तव्य का खंडन करवाया था, विनिमय दरें बढ रही थीं, ईदी अमीन अभी भी लापता था।

दूसरी सिगरेट उसने पूरी नहीं पी, खाली दही के कप में उसने वह बीच ही में बुझा दी। वह सचमुच बुरी तरह थक गया था। जल्द ही वह सो भी गया, हालांकि 'हाइडलबर्ग' शब्द उसके दिमाग में शोर मचाता ही रहा। सुबह उसने सादा-सा ब्रेकफास्ट किया—सिर्फ दूध और डबलरोटी। फिर मेज से चीजें हटायीं, शॉवर लिया, और बड़ी एहतियात से कपड़े पहने। जब वह टाई बाँध रहा था, उसे संघीय राष्ट्रपति का ध्यान हो आया'''या कि वह संघीय चांसलर था ?'''और समय से पंद्रह मिनट पहले ही वह क्रोनजोर्गलर के प्रतीक्षा-कक्ष के सामने की बेंच पर बैठा था। उसके पास ढीले-ढाले फैशनेबल कपड़े पहने एक मोटा-सा आदमी बैठा था, जिसे वह शिक्षा शास्त्र की कक्षाओं से जानता था, नाम उसे मालूम नही था। मोटे ने फुसफुसाकर उससे कहा, "मैं कम्युनिस्ट हूं ! क्या तुम भी हो ?"

"नहीं," उसने कहा, "सचमुच नही, बुरा न मानना।"

मोटा क्रोनजोर्गलर के कमरे में ज्यादा देर नही रुका। जब वह बाहर आया तो हाथ से उसने एक इशारा किया, जिसका मतलब शायद 'अपनी तो छुट्टी हुई' ही हो सकता था और तब सचिव ने उसे अंदर बुलाया। वह भली थी। उम्र कुछ खास छोटी नहीं थी। वह हमेशा ही उससे काफी दोस्ताना बर्ताव करती आयी थी। उसे काफी हैरानी हुई, जब उसने उसे हिम्मत बंधाने वाला हल्का-सा धक्का दिया। ऐसी बातों के लिए वह उसे कुछ गंभीर समझता आया था।

क्रोनजोर्गलर उससे बड़े तपाक से मिला। वह भला आदमी था'''पुराने खयालों का, पर भला'''निष्पक्ष। उम्र का कुछ खास बड़ा नहीं, यही ज्यादा से ज्यादा चालीस के आसपास, और 'साइकिल-स्पोर्ट' का शौकीन। उसने सदा उसे प्रोत्साहित किया था। पहले वे 'टूर द स्विस' के बारे में बात करते रहे—क्या एडी 'ब्लफ' कर रहा था, ताकि 'टूर द फ्रांस' के लिए लोग उसे 'अंडर एस्टिमेट' करें ? या कि वह सचमुच ही ढल चुका था ? क्रोनजोर्गलर ने कहा,

मेर्क्स ने झांसा दिया है। वह नही माना। उसका कहना था कि मेर्क्स सचमुच तकरीबन खत्म हो चुका है—ताकत चुक जाने के कुछ लक्षणो के बारे मे 'ब्लफ' नहीं किया जा सकता। इसके बाद परीक्षा की बात हुई, काफी देर सोच-विचार किया कि क्या वे उसे सचमुच पहले दर्जे के नंबर नही दे सकते? पर मामला 'फिलॉसफी' पर आकर ठप्प हो गया था। बाकी सब ठीक है। प्रौढ महाविद्यालय व शाम के उच्चतर महाविद्यालय में उसका उम्दा काम, प्रदर्शनों में उसका किसी किस्म का हिस्सा न लेना, बस, और यहां क्रोनजोर्गलर मुस्कराया, "सिर्फ एक छोटी-सी खामी है।"

"हां, मैं जानता हूं।" वह बोला, "मैं हाइडलबर्ग जरूरत से कुछ ज्यादा ही बार जाता हूं।" क्रोनजोर्गलर का चेहरा करीब-करीब सुर्ख हो आया। कुछ भी हो, उसकी असमंजसता तो स्पष्ट थी ही। वह कोमल स्वभाव वाला रिजर्व्ड किस्म का, लगभग लजीला इंसान था। बात मुह पर मारना उसे पसन्द नही था।

"आप यह कैसे जानते हैं?"

"हर तरफ से यही सुन रहा हूं। जहां भी जाता हूं, जिस किसी से भी बात करता हूं—मेरे पिता, कैरोला, उसके पिता, सबसे सिर्फ यह सुनता हूं—हाइडलबर्ग! साफ सुनाई देता है यह मुझे, और अपने-आपसे मैं पूछता हूं कि अगर टाइम जानने के लिए मैं टेलीफोन का नंबर घुमाऊं या रेलवे स्टेशन की इन्क्वायरी का, तो क्या तब भी मैं यह नही सुनूंगा—'हाइडलबर्ग'?"

पल-भर को ऐसा लगा कि क्रोनजोर्गलर अभी उठेगा और दिलासा देते हुए अपने हाथ उसके कंधों पर रख देगा। हाथ उसने ऊपर उठाये भी, पर झट नीचे कर लिये और अपने सामने मेज पर सपाट रख दिये।

"मैं आपको बता नही सकता," वह बोला, "कि यह मेरे लिए कितनी तकलीफदेह बात है। मैं आपके मार्ग को, एक कठिन मार्ग को, सहानुभूति से देखता आया हूं। पर हमारे पास उस चिली-निवासी के बारे में एक रिपोर्ट है, जो बहुत ज्यादा अनुकूल नही है। इस रिपोर्ट की अवहेलना मैं नही कर सकता, मुझे ऐसा करने की इजाजत नही है। मुझे सिर्फ कायदे ही नहीं बताये जाते, निर्देश भी दिये जाते हैं। मुझे सिर्फ निर्देश ही नही मिलते, टेलीफोन पर मशविरे भी मिलते हैं। दोस्त है न आपका? मेरा खयाल है कि वह आपका दोस्त ही है?"

"जी।"

"अब कुछ हफ्ते आपके पास खूब खाली समय होगा। क्या कीजिएगा आप?"

एक रिपोर्ताज देखा, जिस में एडी मेर्क्स कुछ खास प्रभावशाली नहीं था। जब वह चलने लगा तो हिल्डे ने उसे, 'उस बेहद भले चिली-दम्पति' के लिए बच्चों के उतरे हुए कपडों से भरा कागज का एक थैला भी थमा दिया।

और अब आखिर में समाचार भी प्रसारित हो गये, जो उसने आधे मन से ही सुने। वह पालक, गाजरों, और चेरि की बात सोचने लगा जो उसे अपने 'फ्रीजर' में रखने हैं। दूसरी सिगरेट उसने सुलगा ही ली—कहीं चुनाव हुए थे—क्या वह आयरलैंड था ?—कहीं भूकम्प आया था, किसी ने··· क्या वह सचमुच राष्ट्रपति ही था ?···नेकटाइयों के बारे में बडी भली-सी बात कही थी, किसी ने किसी वक्तव्य का खंडन करवाया था, विनिमय दरें बढ रही थीं, ईदी अमीन अभी भी लापता था।

दूसरी सिगरेट उसने पूरी नहीं पी, खाली दही के कप में उसने वह बीच ही में बुझा दी। वह सचमुच बुरी तरह थक गया था। जल्द ही वह सो भी गया, हालांकि 'हाइडलबर्ग' शब्द उसके दिमाग में शोर मचाता ही रहा। सुबह उसने सादा-सा ब्रेकफास्ट किया—सिर्फ दूध और डबलरोटी। फिर मेज से चीजें हटायीं, शॉवर लिया, और बड़ी एहतियात से कपडे पहने। जब वह टाई बांध रहा था, उसे संघीय राष्ट्रपति का ध्यान हो आया···या कि वह संघीय चांसलर था ?···और समय से पंद्रह मिनट पहले ही वह क्रोनजोर्गेलर के प्रतीक्षा-कक्ष के सामने की बेंच पर बैठा था। उसके पास ढीले-ढाले फैशनेबल कपड़े पहने एक मोटा-सा आदमी बैठा था, जिसे वह शिक्षा शास्त्र की कक्षाओं से जानता था, नाम उसे मालूम नहीं था। मोटे ने फुसफुसाकर उससे कहा, "मैं कम्युनिस्ट हूं ! क्या तुम भी हो ?"

"नहीं," उसने कहा, "सचमुच नहीं, बुरा न मानना।"

मोटा क्रोनजोर्गेलर के कमरे में ज्यादा देर नहीं रुका। जब वह बाहर आया तो हाथ से उसने एक इशारा किया, जिसका मतलब शायद 'अपनी तो छुट्टी हुई' ही हो सकता था और तब सचिव ने उसे अंदर बुलाया। वह भली थी। उम्र कुछ खास छोटी नहीं थी। वह हमेशा ही उससे काफी दोस्ताना बर्ताव करती आयी थी। उसे काफी हैरानी हुई, जब उसने उसे हिम्मत बंधाने वाला हल्का-सा धक्का दिया। ऐसी बातों के लिए वह उसे कुछ गंभीर समझता आया था।

क्रोनजोर्गेलर उससे बडे तपाक से मिला। वह भला आदमी था···पुराने खयालों का, पर भला···निष्पक्ष। उम्र का कुछ खास बडा नहीं, यही ज्यादा से ज्यादा चालीस के आसपास, और 'साइकिल-स्पोर्ट' का शौकीन। उसने सदा उसे प्रोत्साहित किया था। पहले वे 'टूर द स्विस' के बारे में बात करते रहे—क्या एडी 'ब्लफ' कर रहा था, ताकि 'टूर द फ्रांस' के लिए लोग उसे 'अंडर एस्टिमेट' करें ? या कि वह सचमुच ही ढल चुका था ? क्रोनजोर्गेलर ने कहा,

मेक्स ने झांसा दिया है। वह नहीं माना। उसका कहना था कि मेक्स सचमुच तकरीबन खत्म हो चुका है—ताकत चुक जाने के कुछ लक्षणों के बारे में 'ब्लफ' नहीं किया जा सकता। इसके बाद परीक्षा की बात हुई, काफी देर सोच-विचार किया कि क्या वे उसे सचमुच पहले दर्जे के नंबर नहीं दे सकते? पर मामला 'फिलॉसफी' पर आकर ठप्प हो गया था। बाकी सब ठीक है। प्रौढ महाविद्यालय व शाम के उच्चतर महाविद्यालय में उसका उम्दा काम, प्रदर्शनों में उसका किसी किस्म का हिस्सा न लेना, बस, और यहा क्रोनजोर्गलर मुस्कराया, "सिर्फ एक छोटी-सी खामी है।"

"हां, मैं जानता हूं।" वह बोला, "मैं हाइडलबर्ग जरूरत से कुछ ज्यादा ही बार जाता हूं।" क्रोनजोर्गलर का चेहरा करीब-करीब सुर्ख हो आया। कुछ भी हो, उसकी असमंजसता तो स्पष्ट थी ही। वह कोमल स्वभाव वाला रिजर्व्ड किस्म का, लगभग लजीला इंसान था। बात मुंह पर मारना उसे पसन्द नहीं था।

"आप यह कैसे जानते हैं?"

"हर तरफ से यही सुन रहा हूं। जहां भी जाता हूं, जिस किसी से भी बात करता हूं—मेरे पिता, कैरोला, उसके पिता, सबसे सिर्फ यह सुनता हूं—हाइडलबर्ग! साफ सुनाई देता है यह मुझे, और अपने-आपसे मैं पूछता हूं कि अगर टाइम जानने के लिए मैं टेलीफोन का नंवर घुमाऊं या रेलवे स्टेशन को इन्क्वायरी का, तो क्या तब भी मैं यह नहीं सुनूंगा—'हाइडलबर्ग'?"

पल-भर को ऐसा लगा कि क्रोनजोर्गलर अभी उठेगा और दिलासा देते हुए अपने हाथ उसके कंधों पर रख देगा। हाथ उसने ऊपर उठाये भी, पर झट नीचे कर लिये और अपने सामने मेज पर सपाट रख दिये।

"मैं आपको बता नहीं सकता," वह बोला, "कि यह मेरे लिए कितनी तकलीफदेह बात है। मैं आपके मार्ग को, एक कठिन मार्ग को, सहानुभूति से देखता आया हूं। पर हमारे पास उस चिली-निवासी के बारे में एक रिपोर्ट है, जो बहुत ज्यादा अनुकूल नहीं है। इस रिपोर्ट की अवहेलना मैं नहीं कर सकता, मुझे ऐसा करने की इजाजत नहीं है। मुझे सिर्फ कायदे ही नहीं बताये जाते, निर्देश भी दिये जाते हैं। मुझे सिर्फ निर्देश ही नहीं मिलते, टेलीफोन पर मशविरे भी मिलते हैं। दोस्त है न आपका? मेरा खयाल है कि वह आपका दोस्त ही है?"

"जी।"

"अब कुछ हफ्ते आपके पास खूब खाली समय होगा। क्या कीजिएगा आप?"

"खूब कसरत करूंगा, फिर से साइकिल चलाऊंगा और अक्सर हाइडलबर्ग जाऊंगा।"

"साइकिल से ?"

"जी नही, कार से !"

क्रोनजोर्गलर ने ठंडी आह भरी। स्पष्ट ही वह दुःखी था, सचमुच में दु.खी था। उससे हाथ मिलाते हुए धीमी आवाज में वह बोला, "आप हाइडलबर्ग न जाया कीजिए, इससे ज्यादा मैं कुछ नही कह सकता !" फिर वह मुस्कराया और बोला, "एडी मेक्र्स की बात सोचा कीजिए।"

अपने पीछे दरवाजा वद करते और प्रतीक्षा-कक्ष मे से गुजरते हुए ही उसने विकल्पों की बात सोचनी शुरू कर दी—अनुवादक ? दुभाषिया ? टूरिस्ट-गाइड दलाली की किसी फर्म में स्पेनी भाषा का पत्र लेखक ?···'प्रोफेशनल' बनने के लिए उसकी उम्र काफी बड़ी हो चुकी थी, और 'इलेक्ट्रिकर' इस बीच काफी मिलने लगे थे ! सचिव से विदा लेना तो वह भूल ही गया था। वह एक बार फिर लौटा और हाथ के इशारे से उसे विदा देने लगा।

ईस्टर शोभायात्रा

सोल्जेनित्सिन

रूसी लेखक सोल्जेनित्सिन को सन् 1974 में नोबेल पुरस्कार मिला। इनको विश्व का सबसे बड़ा साहित्यिक सम्मान तो जरूर मिला, किन्तु अपने देश की सरकार का विरोध करने के कारण इन्हे रूस से निर्वासित भी होना पड़ा। बाद में वे अमरीका जाकर रहने लगे थे।

पुरस्कृत पुस्तक : कैंसर वार्ड।

अनुवाद : विनोद दास

घटी वजाने से अधा घंटा पहले ईसा के रूप परिवर्तन वाले पितृसत्तात्मक गिरजाघर के सामने का आहाता ऐसा खुशनुमा दिखाई देता है जैसे सुदूर स्थित औद्योगिक वस्ती मे शनिवार की रात को मनोरंजन कक्ष में होता हुआ किल्लोल, चटख स्कार्फों और स्की पैंटों को डाटे हुए। यह सच है कि कुछ ने स्कर्ट पहन रखे है। लडकियां तीन-तीन और चार-चार की टोलियों मे ठिठोली करती इधर-उधर मंडरा रही हैं, वे गिरजाघर मे घुसने के लिए धकापेल मचा रही है, लेकिन पोर्च मे बहुत भीडभाड़ है। चूंकि बूढी औरते शाम को जल्दी आकर अपनी जगहो पर जम गयी हैं, लिहाजा लडकियो ने दरवाजे से ही उन्हे बुरा-भला कहना शुरू कर दिया है।

भारी-भरकम, मजबूत देह वाले से लेकर नाजुक-कमजोर देह वाले सभी लडको के चेहरो पर वही दर्प झलक रहा है। इनमे से अमूमन सभी ने टोपिया पहन रखी हैं और यदि इनमें से कुछ के सिर नंगे हैं तो इसलिए कि वे जमीन पर हैं। हर चौथा शराब पी रहा है और हर दसवा शराब पिये हुए है और उनमे से आधे धूम्रपान कर रहे हैं—अत्यंत घिनौने ढंग से। सिगरेटें उनके निचले होंठो से चिपकी हुई है। वहां कोई लोवान की महक नही है मगर इसके एवज मे सिगरेटी धुएं के नीले छल्ले कब्रिस्तान के जगमगाते विद्युत् प्रकाश के तले घने मंडराते बादलो के साथ आकाश की ओर ऊपर उठ रहे हैं। वे लोग डामर सड़क पर थूक रहे है। चुहलबाजी में एक-दूसरे को धकिया रहे हैं और जोर-जोर से सीटियां वजा रहे हैं। कुछ अश्लील भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं और एक झुड ट्रांजिस्टर के सगीत पर थिरक रहा है। उनमे से कुछ अपनी प्रेमिकाओ को चूम रहे हैं। लडके अपने आसपास ऐसे खूखार निगाहो से घूर रहे है मानो किसी भी क्षण चाकू बाहर निकल आयेंगे। यदि कही एक बार उन्होने चाकू निकालकर एक-दूसरे पर चमकाना शुरू किया तो वे उन्हे बड़ी सरलता से धर्मसंघ के सदस्यों की ओर मोड सकते हैं।

बहरहाल चाकू बाहर नही निकले क्योकि नजदीक ही तीन या चार पुलिस वाले हर चीज पर नजर रखने के लिए ऊपर-नीचे घूम रहे हैं। लडके भी गाली-गलौज तेज आवाज मे नही कर रहे हैं वल्कि यह उनकी आम बातचीत के एक हिस्से की तरह है। लिहाजा पुलिस वाले भाप नही पाये कि वे कानून भग कर रहे हैं और वे उभरती पीढी पर सौहार्दता से हस रहे हैं। और वैसे भी पुलिस

उन लोगो के मुंह से टोपियां हटाने से रही। चूंकि यह एक सार्वजनिक जगह है और नास्तिकों के अधिकारों की रक्षा की व्यवस्था संविधान मे की गयी है।

कब्रिस्तान के बाड़े और गिरजाघर की दीवारो के करीब धक्कम-धुक्का करते हुए नास्तिक लोग प्रतिरोध करने की हिम्मत तक नही कर सकते हैं। सिर्फ चारो ओर नजर दौड़ाते हैं, इस आशंका मे कि कही कोई उन्हे चाकू न भोक दे या उनकी घड़ियो पर जबरन ऊपर से हाथ रखकर ढंक न दे जिसे उन्हे यीशु के पुनर्जन्म से अंतिम क्षण पहले देखने की जरूरत होती है। यहां, गिरजाघर के बाहर खीसें निपोरती, घुमड़ती भीड की सख्या रूढिवादियो से अधिक है जो कि तातार के शासनकाल से भी ज्यादा त्रस्त और पीड़ित हैं।

ये नौजवान कानून भंग नही कर रहे हैं। हालांकि वे हिंसा कर रहे हैं जो रक्तहीन है। डाकुओ की तरह कुटिल टेढ़े होठ, उनकी निर्लज्ज बातचीत, उनके हंसी-ठहाके, उनकी चोचलेबाजी और बेहूदे मजाक, उनका धूम्रपान करना और थूकना। ये सब यीशु की भोगी हुई यत्रणा के प्रतिकूल है जिसे कुछ गज दूर पर वे लोग मना रहे है। इन घिनौने उठाईगीरो के दर्प और उपहासात्मक रवैये मे ये सब बातें जाहिर होती है, चूकि वे लोग ये देखने आये थे कि कैसे अभी भी पुराने लोग अपने पुरखो के कर्मकांडो को करते हैं।

आस्तिको में मुझे एक या दो चेहरो की झलक दिखाई देती है। अपने चारों ओर चौकन्नी आखो से देखते हुए वे भी ईस्टर शोभायात्रा का इन्तजार कर रहे हैं। हम सभी यहूदियों को कोसते हैं। वे चिरन्तन उपद्रवी हैं। लेकिन अपने गिरेबान मे भी झाककर देखना भी उचित होगा कि हमने इस दौरान किस प्रकार के रूसियों की नस्ल तैयार की है। ये चौथे दशक के लड़ाकू नास्तिक नही हैं जो लोगों के हाथो से ईस्टर केक छीन लेते थे, हा-हा हू-हू करते, नाचते और उछलते-फांदते थे और राक्षसी प्रदर्शन करते थे। यह पीढ़ी मात्र आलसी और विधर्मी है। टेलीविजन पर आइस हाकी का सत्र खत्म हो गया है। फुटबाल सत्र अभी शुरू नही हुआ है और घनघोर ऊब उन्हे गिरिजाघर खीच लाती है। वे गिरजाघर जाने वालो को इस तरह धक्का देते हैं जैसे भूसे का बोरा। गिरजाघर के व्यावसायीकरण के लिए वे उसे कोसते हैं, लेकिन कुछ कारणों से वे मोमबत्तिया खरीदते भी हैं!

हमारे सिरो के ऊपर घटी बजती है लेकिन इसमे कोई न कोई चीज मिथ्या अवश्य है। घंटी की आवाज गहरी और सुरीली होने की बजाय बजते कनस्तर-सी है। बजती हुई घंटी शोभायात्रा के बारे में उद्घोषणा कर रही है। दर-असल, अब हलचल शुरू हुई है। हालांकि ये आस्तिक लोग नहीं हैं जो गलबली मचा रहे हैं बल्कि कुछ युवा लोगो की भीड है जो चीख-चिल्ला रही है। वे दो-दो और तीन-तीन की टोलियों में कब्रिस्तान के चारो ओर चक्कर लगा रहे हैं।

वे हड़बड़ी मचा रहे हैं जबकि उन्हे यह भी पता नहीं है कि वे किसका इन्तजार कर रहे है, कौन-से रास्ते जाना है और शोभायात्रा कहां से आयेगी। वे लाल रंग की ईस्टर मोमबत्तियों को जलाते हैं और उनसे अपनी सिगरेटें जलाने का प्रदर्शन करते हैं। भीड़ खूब जमा है मानों लोमड़ी का नाच शुरू होने की प्रतीक्षा कर रही हो। अब सिर्फ कसर बाकी है एक बीयर स्टाल की—उन कब्रों पर इन लम्बे सिर वाले छोकरों (शुक्र है हमारी जाति का कद छोटा नहीं हुआ है) द्वारा सफेद आग बहाने की।

शोभायात्रा के आगे का हिस्सा पहले ही पोर्च पार कर चुका है और घंटियों की मद्धिम-मद्धिम धुन के साथ इस दिशा में मुड़ रहा है। दो नौसिखिए आगे-आगे चल रहे हैं जो कामरेडों से जितनी भी जगह बन सके छोड़ने को कह रहे हैं। उनके तीन कदम पीछे गिरजाघर की गजी और बुजुर्ग वार्डन एक डण्डे से लटकी भारी तिरछी काट वाली शीशे की लालटेन लिये हुए है। संतुलन बनाये रखने के लिए वह सतर्कता से लालटेन की ओर देखती रहती है और अगल-बगल बराबर आशंकित नजर दौडाती रहती है और यह तस्वीर के शुरू का हिस्सा है जिसे यदि मैं सिर्फ चित्रित कर सकूं तो चित्रित करना चाहूंगा। गिरजाघर के वार्डन का भय यह है कि नये समाज के निर्माता उनके करीब आकर उन पर कूद न पड़ें और उन्हें पीट-पाट न डालें। दर्शक उनके भय को महसूस कर सकते हैं।

कोट-पैंट पहने, हाथ में मोमबत्तियां थामे हुए लडकियां, कोटो के खुले बटन, होंठो से चिपकी हुई सिगरेटें और सिर पर टोपियां पहने हुए लड़के। कुछ अपरिपक्व, मंदबुद्धि, आत्म-विश्वास से रहित चेहरे और शेष सरल सहज विश्वास वाले चेहरे तस्वीर में सबसे बडा हिस्सा यही होना चाहिए। इन्ही लोगों से ठसाठस भरा। भव्य दृश्य को देखते हुए जो किसी भी कीमत पर अलग नही देखा जा सकता है। लालटेन के पीछे दो आदमी धार्मिक ध्वजा लिए हुए हैं और वे भी एक-दूसरे से दूर-दूर चलने के बजाय भय से सट-सटकर चल रहे हैं।

इनके पीछे हाथों मे मोटी-मोटी जलती हुई मोमबत्तिया लिए हुए दस औरतें हैं जो जोड़ा बनाए हुए हैं। तस्वीर में इनका स्थान भी जरूर होना चाहिए—चेहरो पर असांसारिक भाव लिए प्रौढ महिलाएं जिन पर यदि हमला हुआ तो वे मरने के लिए तैयार है। इन दस में से दो हमउम्र युवा लडकियां हैं। लडकों की भीड़ ने उन्हें घेर रखा है लेकिन उनके चेहरे पर कितनी पवित्रता और चमक है। वे दस औरतें सटकर चलती हुई, गाती हुई, ऐसी उदात्त लग रही हैं मानो उनके चारों ओर आसपास के लोग क्रास बना रहे हैं, प्रार्थना कर रहे हैं और प्रायश्चित के लिए अपने घुटनो के बल गिर रहे हैं।

और इस तरह वास्तविक शोभायात्रा शुरू होती है। भीड़ के दोनों तरफ एक हल्की-सी रोमांच की लहर दौड़ती है।

महिलाओं के पीछे चमकीले चोंगो में सात पुरुष है जो पुजारी और डीकन हैं। वे लम्बे-लम्बे डग भर रहे हैं और आपस में सिमटे हुए हैं। लिहाजा वे एक-दूसरे के रास्ते में आ जाते हैं और वहां पर इतनी भी जगह नहीं है कि अपनी धूपदानी हिला सकें या अपने लबादों के कोनों को उठाकर आशीष दे सकें। *फिर भी यह वह शोभायात्रा है जिसमें यदि उसे भाग लेने से वंचित नहीं किया* जाता तो संपूर्ण रूस के महाधर्माध्यक्ष को चलकर आना पड़ता और सेवा करनी पड़ती।

यह ठसाठस लोगों से भरा छोटा दल हड़बड़ी मचा रहा है और कुल मिला *कर यही शोभायात्रा है, और कुछ नहीं है। प्रत्यक्ष रूप से शोभायात्रा में कोई* भी भक्त नहीं है, यदि वहां रहें भी होंगे तो वे अब तक गिरजाघर को छोड़कर चले गये होंगे। कोई भी भक्त नहीं है लेकिन पीछे से शोहदों का एक झुंड उमड़ रहा है मानों वे गोदाम के टूटे हुए दरवाजे से घुसकर लूट-पाट रहे हों, खाने के पैकेट चीरफाड़ रहे हो। सब धींगामुश्ती करते हुए अपना रास्ता बना रहे हैं। मगर किसलिए? वे अपने-आप तक को जानते नहीं हैं। वे पादरियों को केवल मूर्ख बनाकर देखने के लिए या केवल धकियाने के लिए धकिया रहे हैं। यह एक विलक्षण बात है। भक्तरहित शोभायात्रा क्रास, न बनाते हुए लोग। एक धार्मिक शोभायात्रा मे सिगरेट फूंकते हुए लोगों के सिर पर टोपिया और उनकी भीतरी जेब में रखे हुए उनके ट्रांजिस्टर।

एक बूढ़ी औरत क्रास बनाने के लिए मुड़ती है और दूसरी से कहती है, "यह साल बेहतर है, कोई उपद्रव नहीं हुआ है।"

"हां, यह तो है, यह अच्छे सालों में से एक है।"

इन लाखों लोगों को हमने पाल-पोसकर बड़ा किया है, इनका क्या होगा, कहां हैं हमारे महान विचारकों की उद्‌बोधन चेष्टाएं और प्रेरणादायक दृष्टि जो मार्गदर्शन करे? हम अपनी आने वाली पीढ़ी से भलाई की आशा करें?

सच्चाई यह है कि एक दिन ये लोग मुड़ेंगे और हम सबको रौंद डालेंगे, जिन्होंने उन्हें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया है, वे उन्हें भी रौंद डालेंगे।

अनचाहा सच

सॉल बैलो

जन्म : सन् 1915.
अमरीकी कथाकार सॉल बैलो को सन् 1976 में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। पारिवारिक माहोल कुछ ऐसा था कि बचपन से ही इन्हे अंग्रेजी के साथ-साथ फ्रेंच, इड्डिश और हिब्रू जैसी भाषाएं सीखने का अवसर मिला और अपने इस भाषा ज्ञान का उपयोग इन्होने अपनी कहानियों और उपन्यासों के पात्रों में विविधता भरकर किया। इनका पहला उपन्यास 'दि डेंग्लिग मैन' सन् 1944 में प्रकाशित हुआ और तब से ये निरन्तर लेखन कार्य से जुड़े रहे हैं।
पुरस्कृत कृति : हरजोग,
इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं : दि विक्टिम, दि एडवेंचर्स आफ ऑगी मार्च, सीज दि डे आदि।

अनुवाद : महेश दर्पण

पोंट्रिटर किसी महिला के साथ नृत्य में तल्लीन था। यह महिला पहले 'रमन एण्ड एडलीना' नामक टांगो-टीम की सदस्य थी। अधेड़ उम्र की इस महिला का मध्य-भाग कुछ भारी था, पर उसकी टांगें काफी पतली थीं।

संगीत बन्द होते ही नृत्य भी रुक गया था।

"तुम मोसेस हरजोग हो न !" पोंट्रिटर ने उसके करीब आकर पूछा।

"बिल्कुल ठीक।"

"मेरी बेटी के प्रेम में फंसे हुए हो···?"

"बेशक !"

"मुझे लगता है, इससे तुम्हारी सेहत पर भी काफी फर्क पड़ा है।"

"नहीं···मैं पहले भी कभी तंदुरुस्त नहीं रहा।"

"सभी लोग मुझे फिट्ज कहते हैं—ये एडलीना हैं···! एडलीना, ये मोसेस हैं···आजकल मेरी बेटी के चक्कर में···"

"हलो !" एडलीना ने मोसेस का अभिवादन किया और पोंट्रिटर से माचिस लेकर सिगरेट सुलगाने में व्यस्त हो गयी।

दोपहर को मोसेस की मुलाकात टेनी पोंट्रिटर से हुई। बातचीत की शुरुआत में ही उसकी आंखों से आंसू बह निकले, "अपनी बेटी पर मेरा ज्यादा दबाव नहीं है। दरअसल, मैं उसे बेइंतहा प्यार करती हूं···मुझे फिट्ज की बात भी माननी है···मैं उसके प्रति वफादार रहना चाहती हूं।"

"मुझे यकीन है···!" मोसेस ने उसके चुप होते ही कहा।

"मुझे लगता है, मेडी सचमुच तुम्हें चाहती है !"

"मैं उससे बेहद प्यार···!" वह भावुक हो उठा था।

"तुम्हें उससे प्यार करना ही चाहिए···तुम करते भी हो···पर तमाम चीजें किस कदर उलझी हुई हैं !"

"यही न, कि मैं उम्रदार और शादीशुदा इंसान हूं ?"

"तुम उसे दुखी नहीं रखोगे···वह क्या कहती और सोचती है, यह दीगर बात है···आखिरकार मैं उसकी मां हूं···"

"मेरे भीतर भी एक कलेजा है ! टेनी ने अपनी झुंझलाहट जाहिर की, "हरजोग, मैं हमेशा उन्हीं दोनों के बीच रही हूं।···मैं जानती हूं कि हम कभी अच्छे मां-बाप नहीं बन सके।···वह सोचती है कि मैंने उसे पैदा ही किया है

बस, और मैं कुछ नही कर सकती'''पर अब यह सब तुम पर है'''तुम्हें उसे एक'''" टेनी करीब-करीब रो ही दी।

हरज़ोग टेनी का दर्द समझ रहा था।

"टेनी, मैं मेडलीन को बहुत चाहता हू। अब तुम्हे परेशान होने की कोई जरूरत नही'''"

एक पुरानी इमारत का एक अपार्टमेंट, मेडलीन का निवास था जहां हरज़ोग उसके साथ रुका। वे दोनो स्टूडियो के सोफे पर साथ-साथ सोये। हरज़ोग ने उसकी तारीफ करते हुए रात-भर उसे अपने शरीर से चिपटाए रखा। गुस्से मे कभी कभी वह रो देती'''और अपने बाप की शिकायत करती।

इस अपार्टमेंट का ढर्रा बहुत पुराने किस्म का था'''यह दरअसल 1890 के विलासगृहो से मिलता-जुलता था।

'''मेडलीन ने अपना पाजामा और टोप उतार दिया जिससे वह अपना पूरा शरीर अच्छी तरह धो-पोंछ सके। सफाई के बाद उसकी नीली आखों वाला लाल चेहरा उभर आया'''और उरोज एकदम गुलाबी'''

नगे पांव, खामोशी के साथ, हरज़ोग वहा पहुचा और टब के सहारे बैठकर नजारा देखने लगा।

नहाने के बाद, हरज़ोग की परवाह किये बगैर वह इत्मीनान से मेक-अप करती रही। लगता था, जैसे दिन की जिन्दगी जीने के लिए वह हरज़ोग से मुक्त होना चाहती है। शीशा देखकर, आश्वस्त होते हुए उसने लम्बी स्कर्ट भी पहन ली, जिससे उसकी टांगें ढक गयी'''फिर भी ऊची एडी की सैंडल की वजह से घुटने थोड़े-थोड़े झलक रहे थे। मेक-अप करने के बाद जब उसने कैप पहनी तो वह करीब चालीस साल की लग रही थी।

"तुम्हे कुछ नाश्ता कर लेना चाहिए !" हरज़ोग ने कहा।

"नही, मुझे देर हो जायेगी।"

"खाली पेट काम पर जाने से तुम्हारी तबीयत खराब हो जायेगी'''मैं तुम्हे बग्घी का किराया दे दूगा।"

वे दोनो कॉरीडोर पर उतर आये।

"तुम नही आओगे क्या ?'''यहां क्या कर रहे हो ?" मेडलीन ने उससे पूछा, कॉरीडोर पर मछलियां बर्फ पर रखी जाती देखकर शायद हरज़ोग वही खोया हुआ था।

"मैं तुम्हारा इन्तजार नही कर सकती हरज़ोग !"

अब वे दोनों एक रेस्तरां की टेबल पर थे।

"तुम क्यों इतनी देर कर रहे थे ?" मेडलीन ने पूछा।

"···दरअसल, मेरी मां को मछलियां अच्छी लगती हैं !"

"मोसेस, मेरी गर्दन का मेक-अप तो ठीक है न !"

"तुम्हारे कंप्लेक्शन के हिसाब से मेक-अप की जरूरत नहीं है···वैसे हम अब कब मिलेंगे ?"

"मैं कह नहीं सकती, मुझे कॉकटेल पार्टी में जाना है।"

"पर इसके बाद तो मैं फिली चला जाऊंगा···!"

"दरअसल, मैं मां को प्रॉमिस कर चुकी हूं···उसे बूढ़े ने फिर परेशान कर रखा है।"

"मुझे लगता है, यह पहले से ही पक्का था···तलाक !"

"वह ऐसी गुलाम है," मेडलीन ने कहा, "न तो वह जा सकती है···न ही वह बूढ़ा, यह उसके लिए फायदेमंद भी है···।"

"मैंने सुना है कि वह बहुत अच्छा डायरेक्टर था !"

तभी खाते-खाते वह रुक गयी।

"क्या हो गया ? खाना खाओ !" मोसेस ने उसे टोका।

"मैं कह रही हूं कि फोरडम पर मुझे फोन मत करना।"

दरअसल, वह मोसेस को चाहती थी और मॉनसिगनर को उससे मिलने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता था।

"···और शादी के बारे में क्या सोचा ?···हम लोग कैसे करेंगे शादी ?" मोसेस ने बात बदली।

"सोच-विचार किया जा सकता है···वैसे चर्च···।"

"यही सबसे आसान है···अगर डेसी मुझे तलाक दे दे !"

"···मैं भावुकता में कतई यकीन नहीं करती। मुझे ईश्वर, पाप और मृत्यु पर यकीन है···इसलिए तुम ऐसा कोई प्रभाव डालने की कोशिश मत करो ! मैं शादी करना चाहती हूं···बस, और वह भी चर्च में।"

"हूं···!" मोसेस ने धीरे से सिर हिलाया। मेडलीन फिर शुरू हो गयी, "···बचपन में मुझे धमकाया गया···मारा गया और गाऽऽऽ···!"

"और गाली भी दी गयी ?" उसकी बात पूरी करते हुए मोसेस ने पूछा।

"मुझे चुप रहने के लिए उसने पैसा भी दिया था···वह काफी उम्र का आदमी था।"

"कौन था वह ?" हरजोग ने जिज्ञासु अन्दाज में पूछा।

"यह बहुत सारे लोगों के साथ होता है···पर सारी जिन्दगी इसी पर आधारित नहीं होती···"

"तुम सुन भी रहे हो ?" उसने पूछा।

"हां, हा···!" हरजोग ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"अच्छा अब मैं चलूं, फादर फ्रांसिस कभी देरी नही करते···!" उसने अपना हैंडबैग उठाया और चल दी।

काफी का कप सामने रखे हुए वह खयालो मे खोया हुआ था कि अचानक मेडलीन को आया देख चौक गया, "क्या हो गया···कैसे···हुआ···?"

"रास्ते में गिर पडी थी···चोट लग गयी है !"

"बेहतर होगा कि तुम लेट जाओ !" उसने उसे समझाया और उसका हैट उतारने के बाद सावधानी से जैकेट के बटन खोले और स्कर्ट भी उतार दी।

"मेरा पाजामा दे दो !" वह काप रही थी। उसके घाव मे बधी पट्टियों से दवाइयों की गध आ रही थी। वह उसके साथ बिस्तर पर लेट गया ताकि उसे गर्मायी दे सके।

"मैंने अपने पापों के लिए खुद को सजा दे दी !" उसने हरजोग से कहा और दोनो खामोश लेटे रहे।

तलाक के बाद हरजोग ने मेडलीन से शादी कर ली। लुडेविले का मकान मेडलीन के गर्भवती होने पर लिया गया। हरजोग जिन परेशानियो मे फंसा हुआ था, उन्हें देखते हुए यह सबसे बढिया जगह थी। पश्चिमी परपरा में मस्तिष्क में तत्वदर्शन और हृदय के नियम, नैतिक भावुकताओ का मूल और सम्बद्ध चीजें···जिनके बारे में हरजोग के अपने विचार थे।

मकान की हालत काफी खस्ता थी···पर एक साल की मेहनत के बाद मकान को बरबाद होने से बचा लिया गया। मेडलीन के चेक बराबर लौटते जा रहे थे और हरजोग परेशान था। हरजोग उसे समझाता, "मेडलान···तुम ये सब लाना कब बन्द करोगी ?"

"हमें इस जगह को सजाना नही है क्या ?"

"···मैं काम पर लगा रहता हूं और तुम···!"

"मैं जो भी समान लाती हूं···उसका बिल 'पे' करती हूं···तुम्हे क्या ?"

"तुमने ही कहा था कि तुम पैसे का इस्तेमाल करना सीखना चाहती हो ! अब मैं तुम्हें यहां से न्यूयार्क कैसे ले जाऊंगा ?"

"वहां हम दस दिन पहले जाएंगे।"

"और यह सारा काम···?"

"तुम्हारे ये नोट्स···बंडल के बडल बंधे पडे हैं। इतने बडे मकान के लिए यहां चार नौकरो की जरूरत है···तुम चाहते हो कि मैं अकेली घिसटती रहूं···"

लुडेविले की दीवारो पर हरजोग ने अकेले ही पेंट किया···मेडलीन के चेक

अब भी वाउंस हो रहे थे।

"मेडी, बस भी करो !"

गहरे हरे रंग का, प्रसूति के समय का कपड़ा पहने हुए थी मेडलीन डाक्टर ने उसे कैंडी न खाने की सख्त हिदायत दे रखी थी···और मोसेस उसे गुस्से में धमका रहा था।

"यहां भी हम छोटी-छोटी···।" मेडलीन झुंझलायी।

"नहीं, यह कोई छोटी-मोटी-सी चीजें नहीं हैं···।"

"तुम जो सीमाएं चाहते हो, कभी नहीं पा सकोगे···ये सब बारहवीं शताब्दी में ही कहीं होता होगा। हमेशा पुराने घर और किचिन-टेबल···अपनी लेटिन की किताब को लेकर ही चिल्लाते रहोगे तुम तो···।"

"कह तो तुम ऐसे रही हो जैसे तुम्हारा कोई बीता हुआ समय है ही नहीं ?"

"···अच्छा-अच्छा···तो अब मुझे सुनना होगा कि···किस तरह तुमने मुझे बचाया···।"

"एक मिनट ठंडे दिमाग से तो सोचो जरा !"

"सोचो···? तुम सोचने के बारे में जानते क्या हो ?"

"मैंने अपनी दिमागी तरक्की के लिए तुमसे शादी की है, मैं सीख रहा हूं···!" हरजोग गम्भीर था।

"ठीक है···मैं सिखलाऊंगी तुम्हें !" मुस्कराते हुए मेडलीन बोली। हरजोग नोट करने लगा—"विरोध ही सच्ची दोस्ती है···!"

हरजोग को तस्वीरें इकट्ठी करने का शौक था। उसके पास बारह साल की मेडलीन का वह फोटो था, जिसमें वह घोड़े पर चढ़ रही है। डेसी का भी फोटो उसके पास था।

हरजोग कुछ देर के लिए डेसी में खो गया। डेसी, जो एकदम अलग तरह की औरत थी। ठंडक देने वाली और नियमित···खामोश हरी आंखें···लम्बी नाक···और सुनहरे बाल। पहली बार वह हरजोग की पाकेट मनी एक लिफाफे में डालकर लायी थी जो हरे रंग की बजट-फाइल में रखा हुआ था···"डेसी, मुझे तुमसे यही कहना है कि मेरी अनियमितताएं और परेशानियां ले लो···!"···डेसी को तब ओहियो वापस जाना था क्योंकि उसके पिता की मृत्यु निकट ही थी···मोसेस ने अपने काटेज में ही पढ़ाई जारी रखी···।

हरजोग अब भी सोचता चला आ रहा था···।

चिमनियां साफ करने वाला

आइजेक सिंगर

जन्म : 14 जुलाई, 1904 ।

आइजेक सिंगर को सन् 1978 मे नोबेल पुरस्कार मिला। पूरा नाम आइजेक वेशिवस सिंगर। मूलरूप से ये पोलैण्ड के हैं और इनका जन्म भी पोलैण्ड में ही हुआ था। परन्तु सन् 1935 से ये स्थायी रूप से अमेरिका-वासी हो गये है। अमेरिका के ही एक समाचारपत्र 'फर्वर्ड' से सम्प्रति सम्वद्ध है। अपने लेखन के बारे में ये बहुत ही धैर्यशील रहे है। जब ये 26-27 वर्ष के थे तब यिद्दिश भाषा में अपना एक कहानी संग्रह छपवाना चाहते थे किन्तु पुस्तक का प्रूफ ही पसन्द न आने के कारण उसे रद्द कर दिया और उसके 28 वर्षों बाद जाकर फिर इनकी पुस्तकें छपनी शुरू हुई।

इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं : दि इस्टेट, दि फेमिली मासकेट, ए फ्रेंड आफ काफ्का और अन्य कहानियां, पेंशन आदि।

अनुवाद : सुभाष अखिल

वह हमारे कस्बे में घरों, कारखानों और भट्टियों की चिमनियां साफ करने वाला था। लोग हंसी-मजाक में उसे उसका नाम 'याश' नहीं, 'कलुआ' कहकर बुलाते थे। यों तो सभी चिमनियां साफ करने वाले काले ही होते हैं। इसके अलावा वे और हो भी क्या सकते है? पर याश तो ऐसा लगता था जैसे वह कोयले की खान से ही निकला हो। उसका रंग तवे की पीठ से भी काला था।

याश अब काफी उम्र का हो गया था। मगर अभी कुंवारा था और अपनी बूढ़ी मा के साथ रहता था।

बच्चे उससे बहुत डरते थे, हालांकि उसने कभी किसी को कुछ नहीं कहा। जब तक वह चिमनियां साफ करता रहा कभी कहीं आग-वाग की दुर्घटना नहीं घटी। वह पूरा हफ्ता ईमानदारी से काम करने के बाद इतवार को खुद की सफाई में जुट जाता। रगड़-रगड़कर नहाता और मां के साथ गिरजाघर में प्रार्थना करने चला जाता। मगर नहा-धोकर वह पहले से भी काला प्रतीत होता।

एक दिन याश एक दुमंजिले मकान की चिमनी साफ करते-करते धड़ाम से नीचे आ गिरा। उसके गिरने का सबको बहुत दुःख हुआ। वह हमेशा बहुत सम्भल-सम्भलकर छत पर चढ़ता था···बिल्ली की तरह दबे पांव। मगर होनी को कौन टाल सकता है! किस्मत बुरी थी···वह गिरा भी उस इमारत से, जो कस्बे में सबसे ऊंची थी।

उसके सिर में खासी चोट लगी, पर हड्डी-पसली कोई नहीं टूटी।

फिर किसी ने उसे घर पहुंचा दिया, फिर काफी दिन तक उसकी कोई खोज-खबर नहीं मिली। लोग जैसे उसे भूल गये। हा भई, बेचारा चिमनी साफ करने वाला होता ही कौन है? अब अगर वह काम नहीं कर सकता तो कस्बे वाले किसी और को काम पर रख लेंगे।

फियतल मशकवाला हमारे घर सुबह-शाम पानी भर जाया करता था। एक दिन उसने मेरी मां से कहा, "आपने कुछ सुना है? वह अपना याश त्रिकालदर्शी हो गया है।"

मेरी मां हंस दी, "यह क्या मजाक है?···अफवाहें उड़ाता है तू जानबूझ कर?"

"यह मजाक नहीं, अफवाह भी नहीं···बिल्कुल नहीं।" उसने बताया, "वह

सिर पर पट्टियां बांधे, खाट पर बैठा हर किसी के मन की बात बता रहा है।"

"तू पागल तो नहीं हो गया!" मेरी मां ने उसे डांटा, "जा अपना काम कर, फालतू बातें मत बनाया कर।"

मगर जल्दी ही यह बात कस्बे में आम चर्चा का विषय हो गई। दिमागी चोट ने सचमुच उसे अन्तर्यामी बना दिया था। हमारे कस्बे में एक उस्ताद था, मिचेलस, उसने भी हामी भर दी कि याश में सचमुच कोई दैवी शक्ति आ बसी है!

भला कभी किसी ने ऐसी अनहोनी देखी-सुनी है? अगर सिर में चोट लगने से व्यक्ति अन्तर्यामी हो जाये और गूढ़ रहस्य बताने लगे, तो आज ऐसे-ऐसे सैकड़ों लोग इसी कस्बे में होते! मगर लोग खुद वहां गये थे और अपनी आखों से देख आये हैं। वे गवाह हैं कि याश सचमुच कमाल का ज्योतिषी हो गया है। वहां पर एक आदमी ने अपनी जेब से मुट्ठी भर रेजगारी निकालकर पूछा, "याश, इसमें कितने सिक्के हैं?"

याश ने बताया और सही बताया। अन्तिम सिक्का तक ठीक वही निकला।

फिर दूसरे आदमी ने पूछा, "अच्छा याश! पिछले सप्ताह मैं इस समय कहां था?"

याश ने बताया कि वह शराब पी रहा था···और उसके साथ दो जने और भी थे···यहां तक कि याश ने उनका हुलिया तक बता दिया मानो वह भी वहां मौजूद रहा हो।

कस्बे के डाक्टर और अधिकारियों ने यह कहानी सुनी तो वे सिर के बल भागे आये। यह न हुआ होता तो शायद वह कभी भी याश की झुग्गी में न आते। वह छोटी-सी झुग्गी इतनी नीची थी कि वहां खड़े हुए लोगों के हैट छत से टकरा जाते। फिर भी वे अन्दर पहुंचे। उन्होंने कई सवाल किये। याश सबका जवाब देता रहा। वे दंग रह गये। याश का यश और भी फैलने लगा। किसान उसे 'महात्मा' कहने लगे। अगर डाक्टर ने उसे लगातार आराम करने को न कहा होता तो वे उसे मूर्ति की तरह उठाकर यात्रा पर ले निकलते।

चलो, अच्छा ही हुआ। अब याश जानवरों की तरह नहीं जीता। गुदगुदे गद्दे पर बैठा बातें करता है और उस कुत्ते से खेलता है, जो मां ने पाल लिया था। लोग उसका सम्मान करते हैं। उसका स्नेह पाना चाहते हैं, क्योंकि अब वह सब कुछ जानता है···कि किसकी जेब में क्या है···! किसने कहां कितना धन छुपा रखा है! किसने कितने पैसे शराब में उड़ा दिये!

धीरे-धीरे उसे देखनेवालों की भीड़ बढ़ने लगी। उसकी मां ने मौके का फायदा उठाया और प्रति व्यक्ति एक कोपेक दक्षिणा तय कर दी। लोगों को एक कोपेक में एक अजूबा देखना महंगा नहीं लगा। उनकी संख्या दिन-प्रतिदिन

बढ़ती ही गयी।

इस बीच कस्बे के डाक्टर ने याश का किस्सा मेयर को लिख भेजा, उन्होंने एक रपट तैयार करवायी और एक दिन राजधानी से कुछ अधिकारी इस कस्बे की तफशीश करने कस्बे में तशरीफ ले आये। उनके पहुचने से पहले मेयर ने कस्बे की तमाम गलियां साफ करवा दीं। मंडी का आंगन इतना साफ हो गया कि तिनका तक नजर न आया। टाऊनहाल पर सफेदी भी करवा दी गयी। मगर यह सब कुछ किसकी खातिर हुआ? याश चिमनियां साफ करने वाले के लिए!

सब अधिकारी और उनके साथ आये कर्मचारी याश को देखने उसकी झुग्गी में गये, उन्होंने सवाल किये और उनके जवाब मे याश ने जो कुछ कहा, सुनकर सरकारी लोगों के दिल दहल गये। खुदा जाने! ये सरकारी लोग कौन-कौन-से गुनाह करते हैं। पर याश ने बताया कि वे सब रिश्वतखोर हैं। इस पर प्रमुख अधिकारी ने कहा, "यह चिमनी साफ करने वाला जानता ही क्या है। दरअसल यह पागल हो गया है···इसे पागलखाने भेज दिया जाये।"

मगर डाक्टर ने दलील दी कि उसका मरीज अभी सफर नही क रसकता। ज्यादा हिलने-डुलने या धक्का लगने से उसकी मौत भी हो सकती है। तब उस प्रमुख अधिकारी और डाक्टर में खासी तू-तू मैं-मैं हुई। यहां तक कि उनमें हाथापाई भी हो गयी। मगर हमारा डाक्टर भी सरकारी अधिकारी था। वह इस इलाके का डाक्टर ही नही, एक सम्मानित व्यक्ति भी था। वह बहुत सख्त और खरा आदमी था। उसे कोई खरीद नही सकता था। इसीलिए उसे याश की दैवी शक्ति से कोई खतरा नही था···और इसीलिए वह जीत भी गया। फिर भी वापस जाकर उस अधिकारी ने जो रपट दी उसमें यही लिखा कि याश त्रिकालदर्शी नही बल्कि पागल है। उसने डाक्टर की भी शिकायत कर दी जिससे डाक्टर का तबादला दूसरे जिले मे कर दिया गया।

याश का घाव भरता चला गया और एक दिन वह वापस अपने काम पर भी पहुंच गया। उसकी देवी शक्ति और भी प्रखर हो उठी। वह पैसे वगैरह लेने घरों में जाता तो औरतें उससे पूछतीं, "याश इस दराज में क्या पड़ा है?" "मेरी मुट्ठी मे क्या है?"····"आज मैंने कौन-सी सब्जी खायी है?"

याश उनके हर सवाल का सही जवाब दे देता। तब वे उससे पूछतीं, "याश तू यह सब कुछ कैसे जान लेता है?"

वह कंधे बिचका देता है, "मुझे नही मालूम···यह सिर में चोट लगने से हो गया है।"···और वह भोली-सी सूरत बनाकर अपनी राह चल देता।

कस्बे में बहुत-से लोग चोर थे। वे घरों में से जो कुछ भी हाथ लगता, उठाकर ले जाते थे। मगर अब उनके लिए चोरी करना नामुमकिन हो गया।

जिसका भी कुछ उठा लिया जाता वह तुरन्त याश के पास जा पहुंचता और वह चोर का नाम बता देता'''यहां तक कि वह जगह भी जहां सामान छुपा दिया गया था। आसपास के गावों से लोग आते और पूछकर चोर को पकड़ लेते। इसलिए कई चोर अब जेल की रोटियां तोड़ रहे थे। याश उनकी आंखों का कांटा बना हुआ था। उन्होंने याश को धमकी भी भिजवा दी कि वे उसका मटियामेट कर देंगे। उन्होंने अपनी तरफ से उनका कत्ल करने की कोशिशें भी कीं। किन्तु कामयाब याश को उनके षड्यंत्र की जानकारी पहले से हो जाती थी।

एक रात वे उसे घर पकड़ने को उसकी झुग्गी में घुस गये मगर वह कुछ देर पहले ही पड़ोसियों के यहां जा छुपा। चोर हाथ मलते रह गये। इस तरह याश कस्बे में हर घर की जरूरत बन गया। कोई पैसे या चाबी वगैरह कहीं रखकर भूल जाता तो याश झट-से बता देता। किसी का बच्चा खो जाता तो उस की मां दौड़ी-दौड़ी याश के पास पहुंचती। याश खुद साथ चलकर उसे बच्चे के पास ले जाता। पांच-सात बार ऐसा हुआ कि लोगों के बच्चे जंगल में मिले। इसलिए चोरों ने यह कहना शुरू कर दिया कि याश खुद बच्चा चोरी कर लेता है और फिर अन्तर्यामी होने का ढोंग रचा लेता है। मगर किसी को विश्वास ही नहीं हुआ। यह सब कुछ वह मुफ्त में करता था, कोई पैसे देने भी लगता तो वह इनकार कर देता। हां, उसकी मां जरूर गाहे-बगाहे पैसे झड़वा लेती थी। लेकिन सच मानिए, याश को तो सिक्कों की सही कीमत की जानकारी भी नहीं थी।

हमारे कस्बे में एक पादरी भी था। वह एक बड़े शहर से यहां आया था। एक बार शुभ शुक्रवार के दिन उसने धर्म का प्रचार करते हुए उपदेश दिया, तो जानते हैं उसने किसकी चर्चा की?'''याश चिमनियां साफ करने वाले की। उसने कहा, "नास्तिक लोग नहीं मानते कि मूसा पैगम्बर थे। वे कहते हैं कि हरेक चीज का कोई कारण होना चाहिए। कोई प्रयोग, कोई तर्क होना चाहिए, मगर मैं पूछता हूं, याश को कैसे मालूम हुआ कि फलां डबलरोटी वाले की अंगूठी कुएं में गिरी है?'''अगर याश चिमनियां साफ करने वाले को छुपी हुई चीजों की जानकारी हो सकती है तो कोई पीर-पैगम्बर की शक्ति पर कैसे संदेह कर सकता है?'''हमारे कस्बे में भी कई नास्तिक हैं, मगर उनके पास इसका कोई जवाब नहीं।"

इस दौरान याश का किस्सा वारसा और अन्य शहरों में पहुंच गया, अखबार वालों ने खबरें छापी। पत्रिकाओं ने लेख प्रकाशित किये और सरकार ने जांच के लिए आयोग बिठा दिया।

कस्बे में घर-बार, सड़कें, दुकानें और गलियां एक बार फिर से साफ होने

लगी···सिर्फ गिरजाघर वाली गली ही पक्की थी, इसलिए बाकी गलियों में हर जगह लकड़ियों के फट्टे बिछवा दिये गये। क्योंकि बारिश शुरू होने वाली थी और मेयर साहब नहीं चाहते थे कि वारसा से आ रहे जांच आयोग के अधिकारी कीचड़ से लथपथ हों।

सरायवाले ने भी नये बिस्तर तैयार करवाये, हर तरफ चहल-पहल दिखायी देने लगी। कोई कुछ कर रहा था और कोई कुछ। अकेला याश ही ऐसा था, जिसने कोई तैयारी नहीं की। वह हमेशा की तरह फेरी करके चिमनियां साफ करता रहा।

लीजिए सुनिए कि फिर क्या हुआ। जांच आयोग के पहुंचने से एक दिन पहले बर्फ पड़ने लगी और एकदम कोहरा भी छा गया, तिस पर पिछली ही रात, चेम बेकरी वाले की चिमनी में से अंगारे निकले थे। चेम को खतरा था कि चिमनी में आग न लग जाये, उसने याश को संदेश भेजा। याश अपने औजार लेकर आया और चिमनी साफ करने लगा। जब उसका काम खत्म हुआ, तभी कोहरा छा गया, फिर बेकरी की चिमनी तो कई-कई घंटे लगातार सुलगती है न। इसलिए बहुत-सी कालिख उसी पर जम जाती है। बस, चिमनी साफ करके नीचे उतरते याश का ध्यान तनिक कोहरे की ओर चला गया और वह फिसलकर एक बार फिर नीचे आ गिरा। उसके सिर में चोट लगी, पर पहले जैसी नहीं। खून भी नहीं निकला।

दोस्तो, अगले दिन जांच आयोग वालों ने आकर याश से सवाल पूछे, पर याश कोई जवाब नहीं दे पाया। उसने हर बार दिमाग पर जोर दिया और यही कहकर रह गया कि उसे क्या मालूम। इस तरह पहली चोट ने जबकि उसके दिमाग का कोई खास तंतु सक्रिय कर दिया था, वहीं दूसरी चोट ने उसे निष्क्रिय कर दिया था, अधिकारियों ने फिर-फिर पूछा, "हमारे पास कितने पैसे हैं?···" हम कहां-कहां रहते हैं?"

याश ने पागलियों की तरह दांत निकालकर दिखा दिये। अधिकारियों का पारा चढ़ गया। उन्होंने पुलिस अधिकारियों को डाटा और नये डाक्टर की हालत खस्ता कर दी, उन्होंने उनसे जवाब-तलबी की कि एक चिमनियां साफ करने वाले निपट गवार से मिलने के लिए उन्हें इतनी दूर से क्यों बुलाया गया! सरकार का कितना वक्त और पैसा बेकार हुआ है!···

सबने सलीब हाथ में लेकर कसमें खायीं कि एक दिन पहले तक तो याश सब कुछ बता देता था। मगर अधिकारियों ने एक न सुनी। किसी ने उन्हें यह भी बताया कि याश कल फिर चिमनी से फिसलकर गिर गया था और शायद इसीलिए···

पर आपको लोगों का स्वभाव तो मालूम ही है। उन्हें सिर्फ वही सच लगता है, जो सामने है, जो साक्षात् है, तब सहसा पुलिस अधिकारी ने याश के पास पहुंचकर उसके सिर पर मुक्के मारने शुरू कर दिये कि शायद वही पहले वाली शक्ति फिर जाग जाये। पर दिमाग के दरवाजे एक बार बंद होने के बाद आसानी से नहीं खुलते।

दिमाग में कई प्रकार के द्वार, सुराख और कोठरियां हैं। कभी कोई चोट दिमाग को झकझोर देती है तो इसकी समस्त कार्यप्रणाली कुछ और ही हो जाती है। इसका सम्बन्ध आत्मा से है। आत्मा के बिना दिमाग तो बस पूछताछ भर ही कर सकता है···और कुछ नहीं।

मौत

एलयास कानेत्ती

जन्म : 25 जुलाई 1905.

एलयास कानेत्ती को सन् 1981 में नोबेल पुरस्कार मिला। कानेत्ती नाम से ही स्पष्ट है, ये अंग्रेज लेखक नहीं हैं। इनका जन्म बल्गारिया में हुआ था। माता-पिता स्पानी यहूदी मूल के थे। शुरू में इनकी पढाई इंग्लैंड में हुई। बाद में अपनी शिक्षा को पूरा करने के लिए ये ज्यूरिख, फ्रेंकफर्ट और वीएना में भटकते रहे। वीएना में ही तीस के शतक मे कानेत्ती ने एक लेखक की जिन्दगी शुरू की। और इन्होने जो कुछ लिखा है उसमें काफी वैचित्र्य है। ये न तो मार्क्सवाद से अनुप्राणित हैं और न ही हेगेलियन सिद्धान्तों से। रवीन्द्रनाथ टैगोर की तरह ही आदमी और आदमी के अन्दर सोयी अनुभूतियो के 'शेड्स' के ये निपुण शिल्पी हैं।

पुरस्कृत कृति : डाई बेलेडंग

इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं : क्राउड एंड पावर, दि कनाशायेंस आफ वर्ड्स दि टंग सेट फ्री आदि।

खाने का बिल खुद थेरेस ने ही दिया। वह इतनी मूर्ख क्यों है ? सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। पर अब घर और बाहर दोनों ही जगह परेशानियां पैदा हो रही हैं। उसके सवाल का जवाब अभी बकाया था। थेरेस समझ नहीं पा रही थी क्या जवाब दे। जब वे फर्नीचर की दुकान में घुसे तो उसने फिर पूछा, "हां या ना ?"

"हां, अगर तुम बुरा न मानो तो ठीक सवा बारह बजे,"

"मेरा मतलब पैसे से है !" उसने याद दिलाया। बड़े ही भोलेपन से थेरेस ने एक बढ़िया-सा जवाब दिया, "यह तो समय ही बतायेगा।"

फिर वे दोनों दुकान में चले गये। दुकान का मालिक आकर कहने लगा, "आशा है आपने खाना अच्छी तरह खाया होगा। सोने वाले कमरे के लिए सामान कल सुबह पहुंच जायेगा। क्या आप कोई खास निर्देश देना चाहेंगी ?"

"नहीं," उसने कहा, "पैसे मैं अभी देना चाहती हूं।"

पैसा लेकर उसने रसीद दे दी, तभी उसका प्रेमी बाहर निकल आया और सभी के सामने दुकान में ही जोर से थेरेस के मुंह पर बोला, "तो श्रीमती जी, आपको अपने लिए नया आशिक तलाश करना पड़ेगा। मेरे पास आपसे कम उम्र की महिलाओं के प्रस्ताव हैं और वे आपसे खूबसूरत भी हैं।"

सुनते ही वह सीधी भागी, दरवाजे को धक्का देती हुई बाहर निकली और खुली सड़क पर सबके सामने रोने लगी। थेरेस को उससे कुछ नहीं चाहिए था। उसने खाने के पैसे भी दिये। इस पर वह ऐसी बेहूदगी कर गया। वह एक विवाहिता है। उसे हर किसी के पीछे नहीं भागना चाहिए। वह कोई नौकरानी नहीं है कि जिस-तिस के पीछे मुंह मारती फिरती। वह तो अपनी एक-एक अंगुली पर दस-दस को नचा सकती है। गली में हर आदमी उसे देख रहा था। इसमें कसूर किसका था ? क्या सारा कसूर उसके पति का ही था ? उसके लिए फर्नीचर खरीदने के लिए उसे इधर-उधर भाग दौड़ करते रहना पड़ता है और बदले में क्या मिलता है ? केवल अपमान ! कम से कम अपना यह घटिया काम वह खुद भी तो कर सकता है। वह तो किसी काम का नहीं है। आखिरकार वह उसका अपना फ्लैट है। वह तो वही जानता होगा कि उसकी किताबों को रखने के लिए उसे किस तरह का फर्नीचर चाहिए। सहनशीलता भी तो उसमें सती जैसी है। इस तरह का आदमी सोचता है कि वह

तुम पर कभी भी चोट कर सकता है। पहले तो तुम उसके लिए दुनिया भर के काम करो और फिर वह तुम्हें लोगों के सामने अपमानित करने के लिए छोड़ देता है। मान लो, ऐसा उस खूबसूरत युवक पूर्व वर्णित प्रेमी, की बीवी के साथ होने लगे तो ? उसके तो बीवी ही नही है। उसके बीवी क्यों नही है ? क्यों कि वह एक असली आदमी है। एक असली आदमी की बीवी नहीं होती। कोई असली आदमी तब तक शादी नही कर सकता जब तक उसके पास दिखाने के लिए कुछ नही है। क्या है उसके पास दिखाने के लिए ? केवल अपनी चमडी और हड्डियां। लोग तो उसे मरा हुआ ही मान चुके हैं। इस तरह के लोग आखिर किस चीज के लिए जीते हैं ? ऐसे लोग किसी काम के नही होते। केवल दूसरे लोगों की कमाई का पैसा लेते हैं।

थेरेस घर में घुसी, दरवाजे पर ही भवन का रखवाला मिल गया। उसने ही बताया, "आज वे कुछ कर रहे हैं।"

"देखते हैं।" उसने जवाब दिया और उसकी ओर पीठ कर ली।

ऊपर की मंजिल पर जाकर उसने फ्लैट का दरवाजा खोला। हर चीज स्थिर थी। हाल में फर्नीचर ढेर-सा पड़ा था। बिना कोई आवाज किये उसने खाने के कमरे का दरवाजा खोला। अचानक वह आतंक से पीछे हो गयी। दीवारें अचानक बदली हुई दिख रही थीं। वे भूरी होती थी। आज सफेद थीं। अगले कमरे में भी वही परिवर्तन था। तीसरे कमरे में, जिसे वह सोने का कमरा बनाने वाली थी वहां भी यही परिवर्तन दिख रहा था। उसने पति की सारी किताबें उलटकर रख दी थी।

किताबें इस तरह से रखी जानी चाहिए कि सिलाई वाला भाग बाहर की ओर रहे ताकि आप उसे आसानी से बाहर निकाल सकें, ऐसे ही निकालकर उनकी धूल झाड़ी जाती है, वरना किताब बाहर कैसे निकलेगी। पर उसके अपने तरीके हैं। वह उनकी सफाई करते और धूल झाड़ते परेशान हो गयी थी। धूल झाड़ने के लिए एक झाड़न रखा जाना चाहिए। उसके पास पैसा नही है और वह झाड़न के लिए खर्च कर भी सकता है। फर्नीचर खरीदने पर तो वह सब पैसा खर्च करता है। बेहतर हो कि वह कुछ बचा ले। घर की औरत का भी तो एक दिल होता है।

थेरेस फिर उसे ढूंढने लगी ताकि इस दिल को उसके सिर पर दे मारे। वह बैठक में मिल गया। वह फर्श पर चारों खाने चित पड़ा था और उसके ऊपर एक सीढ़ी पड़ी हुई थी। उसके नीचे का खूबसूरत कालीन उसके खून से तर हो गया था।

खून के धब्बे साफ करना मुश्किल होता है। इन्हे धोने के लिए किस चीज का इस्तेमाल करना होगा ? यह तो जरा भी नहीं सोचता कि यह क्या किये

जा रहा है। वह जरूर झटके से भागता हुआ सीढ़ी पर चढ़ा होगा, तभी तो सीधा नीचे आ गिरा। वह कहता भी तो है कि अब उसमें ताकत नहीं रही। काश, वह खूबसूरत युवक यह सब देख लेता। ऐसा नहीं है कि वह इस नजारे से अपनी आखें सेंक रही थी, वह ऐसी नहीं है, यह भी कोई मरने का तरीका है? यह जीव हमेशा ही उसके लिए खेद का विषय रहा है। उसे इस बात की चिंता नहीं थी कि वह सीढ़ी पर से गिरकर मरा। पर जो भी ऐसी बात सुनेगा, वह यह तो नहीं देखेगा कि आप उस समय क्या कर रहे थे, वह तो इसमें मजा लेगा। पिछले आठ सालों से वह भी सीढ़ी पर चढ़ती हुई किताबों की धूल झाड़ती रही है। पर ऐसा तो उसके साथ कभी नहीं हुआ। समझदार आदमी जमाकर पैर रखता है। वह इतना मुर्ख क्यों था? अब वे सब किताबें उसकी हैं। इस कमरे की किताबों में से आधी ही पलटी होंगी। ये उसकी किस्मत है। वह कहा करता था। वही जानता होगा कि वह किस बारे में बात कर रहा है। उसी ने उन्हें खरीदा है। वह लाश पर तो उंगली भी नहीं रखेगी। इतना भारी सीढ़ी से जूझकर वह खुद को चोट नहीं लगाना चाहती थी और दूसरे फिर पुलिस भी तंग करने लगती। बेहतर हो कि वह इस चीज को जैसा का तैसा रहने दे। खून की वजह से नहीं, खून से तो वह नहीं डरती। फिर यह असली खून भी तो नहीं होगा!…ऐसे आदमी का खून भला असली कैसे हो सकता है? यह तो बस धब्बे छोड़ने लायक ही है। उसे कालीन पर दया आ रही थी।

अब ये सब चीजें उसकी हैं, यह खूबसूरत फ्लैट तो काफी काम का है। किताबों को तो वह एकदम बेच देगी। ऐसी कब किसने सोची होगी! पर घटनाएं तो ऐसे ही घटती हैं। पहले तो आप अपनी पत्नी के साथ हर तरह से खिलवाड़ करते हैं और उसके बाद आप मर जाते हैं। वह हमेशा सोचती है कि ऐसा होना उसके हित में नहीं होगा पर उसे ऐसा नहीं मानना चाहिए, इस जैसा आदमी सोचता है कि दुनिया में उसके अलावा और कोई है ही नहीं। आधी रात को बिस्तर पर पहुंच जाना और अपनी पत्नी को एक भी क्षण आराम न करने देना, किसी ने भला ऐसी बात सोची भी होगी? शरीफ आदमी तो नौ बजे बिस्तर पर आ जाता है और फिर अपनी पत्नी को आराम से सोने देता है।

लिखने की मेज पर फैली चीजों पर भी उसे दया आ रही थी। वह लपककर वहां पहुंची। टेबल लैंप का स्विच ऑन किया और मेज पर बिखरे कागजों में उसकी वसीयत तलाश करने लगी। वह समझ रही थी कि गिरने से पहले उसने वसीयत तैयार कर ली होगी। उसे पूरा विश्वास था कि उसकी उत्तराधिकारी वही हो सकती है क्योंकि अब तक उसने उसके किसी रिश्तेदार के बारे

एक घंटे तक उस मेज में सिर मारने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंची कि वहां कोई वसीयत नहीं है। इसकी उसने कोई उम्मीद भी नहीं की थी। आखिरी दम तक वह वैसा ही आदमी बना रहा, जिसे अपने अलावा किसी दूसरे की चिंता कभी नहीं होती और अपनी पत्नी के लिए उसने कुछ नहीं सोचा। एक आह भरते हुए उसने तय किया कि मेज की भीतरी दराजों को भी तलाश कर लिया जाये। पर वहां भी निराशा ही हाथ लगी। दराजों पर ताला लगा था और उसकी चाबियां वहीं अपने पाजामे की जेब में रखता था। अपने-आपको भी उसने अच्छी परेशानी में डाल दिया है, वह उसकी जेब में से कुछ नहीं निकाल सकती। अगर कहीं गलती से उसके कपड़ों पर खून का धब्बा भी लग गया तो पुलिस न जाने क्या सोचने लगे। वह उसके शरीर के निकट आयी, नीचे झुकी पर उसकी जेबों का भूगोल का पता न चल पाया। वह तो नीचे झुकने पर भी घबरा रही थी। ऐसी मुसीबत के समय उसकी आदत थी कि वह सबसे पहले अपनी स्कर्ट उतार देती थी। स्कर्ट उतारकर सावधानी से उसे तह किया और कालीन के एक कोने पर रख दिया, फिर वह लाश से एक कदम दूर हटकर नीचे झुक गयी। अपना सिर सीढ़ी पर टिका लिया और अपनी तर्जनी धीरे से दायीं जेब में डाल दी। पर उंगली ज्यादा दूर नहीं जा सकी, वह बड़ी असुविधाजनक स्थिति में पड़ा हुआ था। उसका ख्याल था, जेब के भीतर गहरे में उस की चीज मिल जायेगी। पर तभी एक आतंक ने उसे आ घेरा कि कहीं सीढ़ी पर ही तो खून नहीं लगा है। जल्दी से वह उठ खड़ी हुई और अपने हाथ से माथे को उस जगह छूकर देखा जहां वह सीढ़ी से टिका था। वहां खून नहीं लगा था, पर पसीना और चाबी की नाकाम तलाश ने उसे निराश कर दिया था। "कुछ किया जाना चाहिए" उसने खुद से कहा, "इसे इस तरह से पड़ा तो नहीं रहने दिया जा सकता।"

उसने अपनी स्कर्ट पहनी और भवन के रखवाले को बुलाने चली गयी।

भवन के रखवाले ने कमरे में आकर पहले तो पूरे नजारे का जायजा लिया और जब उसकी नजर सीढ़ी पर पड़ी तो आश्चर्य हुआ कि सीढ़ी हिल रही थी।

वह पास गयी और सीढ़ी उठाकर किनारे कर दी।

कियेन को होश आ रहा था। दर्द से कराहते हुए उसने उपर ऊठने की कोशिश की पर उठ नहीं पाया।

"ऐसे कोई मरता है ?" रखवाला बुदबुदाया और कियेन को सहारा देकर खड़ा करने की कोशिश करने लगा।

वह अपनी आंखो पर विश्वास न कर सकी। पर जब उसने कियेन को अपने सहायक के सहारे से अपने पांवों पर खडे पतली आवाज में सीढ़ी को कोसते देखा तो उसे यकीन आ गया कि वह जिंदा है।

"यह तो हद हो गयी है", वह तीखी आवाज में बोली, "किसी ने कभी सुना भी नहीं होगा कि ऐसा कहीं होता है। एक इज्जतदार आदमी···मैं पूछती हूं, लोग हमारे बारे में क्या सोचेंगे ?"

"आप चुप भी कीजिए", भवन के रखवाले ने उसके पागल प्रलाप को टोका और बोला, "जाकर किसी डाक्टर को ले आइए। मैं इन्हें बिस्तर पर लिटाता हूं।"

वह प्रोफेसर को कंधे पर लादे हुए बाहर के हॉल तक लाया जहा तमाम फर्नीचर के बीच में एक पलंग भी पड़ा था···

कपड़े उतरे जाते समय कियेन लगातार बुदबुदा रहा था। "मैं बेहोश नही था, मैं बेहोश नही था" वह यह मानने के लिए तैयार ही नहीं था कि कुछ देर के लिए वह बेहोश हो गया था।

थेरेस डाक्टर को बुलाने के लिए बाहर निकल आयी थी। सडक पर आकर वह धीरे-धीरे शांत होने लगी। तीन कमरे तो उसी के है। इसके तो कागजात भी उसी के नाम हैं। अब तक एक ही सवाल उसके मन में उठ रहा था, "अब क्या होगा ? जब मरा हुआ आदमी ही जीवित हो गया तो आगे कुछ भी हो सकता है।"

दिवास्वप्न

गैब्रिएल गार्सिया मार्केज

जन्म : 1928
स्पेन के लेखक गैब्रिएल गार्सिया मार्केज को सन् 1982 में नोबेल पुरस्कार मिला। मार्केज ने अपने जीवन के केवल प्रारम्भिक आठ वर्ष अराकाताका (कोलम्बिया) में गुजारे हैं लेकिन वहां के मौसम, लोगों, रीति-रिवाजों से वह इस कदर जुड़े रहे हैं कि उसी के माध्यम से व्यापक सार्वभौम मनुष्य के इतिहास का सृजन कर पाए हैं। मानव हित के प्रति सोच को मार्केज ने केवल साहित्यिक लेखन और पत्रकारिता—तक सीमित नही रखा बल्कि उसे ठोस रूप देने के लिए मैक्सिको में एक मानवाधिकार संस्थान की स्थापना भी की है जिसका व्यय वह स्वयं वहन करते हैं।
पुरस्कृत कृति : वन हण्ड्रेड इयर्स आफ सालिट्यूट।
इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं : आटम आफ दि पैट्रिआर्क।

अनुवाद : पृथ्वीनाथ शास्त्री

वालुई चट्टानों की कपकंपाती सुरंग से रेलगाडी वाहर निकल आयी। लगातार एक जैसे लगते केले के बगीचो के पास से गुजरती यह गाड़ी और हवा की वह गहरी उमस। उन्हें दरियाई ठडी हवा का जैसे और कोई अहसास ही नही रहा। फिर डिब्बे की खिडकी मे एक दमघोटू धुए का रेला आया। रेलवे के समानान्तर चलती सकरी सड़क पर हरे केलो के गुच्छो से लदी बैलगाड़ियां मरक रही थी। उससे परे की वजर जमीन के कुछ टुकडों पर बिजली के पंखों वाले कुछ दफ्तर भी दीख पडे। लाल पकी ईंटो वाली इमारतें, कुछ रिहायशी मकान, ताड के पेडो और गुलाबी गुल्मों के बीच से झांक रहे थे। दिन के ग्यारह बजे थे। गर्मी अभी शुरू नही हुई थी।

"वह खिड़की बन्द कर दो", औरत ने कहा, "तेरे बालों मे धुआं भर जाएगा।"

लड़की ने कोशिश की लेकिन जंग लगी खिड़की का पल्ला वह हिला भी नही सकी।

तीसरे दर्जे के उस डिब्बे मे सिर्फ ये दो ही सवारियां बैठी थी। खिड़की से इंजन का धुआ बराबर आता देखकर लडकी अपनी जगह से उठी और जो चीजें उसके पास थी, नीचे रख दी। और वे थी भी क्या···एक प्लास्टिक का थैला था, जिसमे कुछ खाने की चीजें थीं, और फूलो का एक गुच्छा, अखबारी कागज में लपेटा हुआ। वह सामने की सीट पर बैठ गयी, खिडकी से दूर हटकर अपनी मां के सामने, वे दोनो ही गर्मी के कपडे पहने थी।

बारह साल की लड़की का यह पहला मौका था रेलगाडी मे चढ़ने का। औरत इतनी बुढा गयी थी कि उसकी मां जैसी नही लगती थी। लम्बा-सा झगला पहने वह अपनी रीढ की हड्डी सीट के तख्ते से सटाये बैठी थी। पेटेंट चमड़े का थैला, जिसकी ऊपरी सतहें उधड़ती जा रही थी, उसने अपनी गोद में सहेज रखा था, उसके चेहरे पर वह गंभीर प्रौढ़ता थी जो गरीबी की आदत पड़े लोगों मे कही भी दिखाई पड़ सकती है।

बारह बजते-बजते गर्मी बढ गयी। गाडी पानी लेने को दस मिनट तक एक ऐसे छोटे-से बीच के स्टेशन पर रुकी जहां आसपास किसी शहर का कोई नामोनिशान न था। बाहर, बगानों की अजीब-सी वीरानगी में परछाइयां साफ नजर आती थीं। लेकिन डिब्बे के अन्दर की हवा ऐसी ठहर गयी थी कि

वह कच्चे चमडे की तरह गधाने लगा। गाडी चली तो लेकिन तेजी नहीं पकड पायी। वह दो एक ही जैसे कस्बाई स्टेशनों पर भी रुकी।

औरत को बैठे-बैठे नींद आ गयी थी। लडकी ने अपने जूते उतार दिये। फिर वाश-बेसिन पर जाकर उसने फूलों का गुच्छा भिगोया।

लौटी तो देखा मां खाना परोसे इन्तजार कर रही थी। उसने लडकी को पनीर का एक टुकडा दिया था, अनाज से बना आधा पैनकेक और शायद कुछ पकवान भी। उतना ही उसने खुद लिया था, उसी प्लास्टिक के थैले में। वे जब खा रही थी तभी गाडी एक लोहे से बने पुल से गुजरी, एकदम रेंगती-सी।

औरत ने खाना खत्म कर दिया। "अपने जूते पहन ले," लडकी से कहा।

लडकी ने बाहर की ओर ताका, तो कुछ नहीं दिखा, सिर्फ रेगिस्तान जैसा एक मैदान था। गाडी ने अब फिर रफ्तार पकड ली थी लेकिन लडकी ने पकवान का आखिरी हिस्सा खाया नहीं, थैले में रख दिया, और जल्दी में अपने जूते पहन लिये। औरत ने उसे कंघी दी, "अपने बाल काढ ले।"

गाडी अब सीटी बजाती दौड रही थी और लडकी बालों पर कंघी फिरा रही थी। औरत ने अपनी गर्दन का पसीना और चेहरे की चिकनाई उंगलियों से ही पोंछ लिये। लडकी जब कंघी कर चुकी, तब गाडी उस बडे शहर के बाहरी हिस्से में बने उदास मकानों के बीच से गुजर रही थी, जो पहले कस्बों की बनिस्बत पिछडा-सा लग रहा था।

"अगर और भी कुछ करना चाहो तो अभी कर लो," औरत ने लडकी से कहा, "बाद में कहीं पानी भी नहीं पीना, चाहे प्यास से जान ही क्यों न निकलने लगे। और रोना तो एकदम नहीं।"

लडकी ने अपना सिर हिला दिया। खिडकी से बहुत ही गर्म हवा का झोंका आया, साथ ही इंजन की सीटी की तीखी आवाज और पुराने डिब्बों की खडखडाहट। औरत ने बाकी बचे खाने के साथ प्लास्टिक का थैला तहाया और अपने हाथों से लगे चमडे के थैले में रख लिया। एक लमहे-भर खिडकी से अगस्त के मंगलवार की भरी दुपहरिया चौंधी और इस शहर की सारी तस्वीर भी। लडकी ने खूब गोल किये अखबारी कागजों में फूलों का गुच्छा लपेटा और खिडकी की तरफ से और भी कुछ दूर हट गयी। वह अपनी मां की ओर ताकने लगी। बदले में कुछ अच्छा-सा भाव उसकी मां के चेहरे पर भी उभर आया। गाडी सीटी बजाती धीमी पडी और कुछ ही क्षणों बाद रुक गयी।

स्टेशन पर कोई नहीं था। बाहर सडक की दूसरी ओर बादाम के पेड़ों की छाया में पूल-हाल सुना हुआ था। सारा शहर जैसे ताप से तैरता-उतराता सा रहा था। औरत व लडकी गाडी से उतरकर सडक पर छाया में आ गयीं।

करीब दो बजे का वक्त था। सारा शहर ऊंघता-सा दिखा। जनरल स्टोर्स, दफ्तर, पब्लिक स्कूल तो सब ग्यारह बजे ही बन्द हो चुके थे। उन्हें तो अब चार बजे खुलना था, तभी गाड़ी भी लौटने वाली थी। सिर्फ स्टेशन के सामने वाला वह होटल, जिसमें बार और पूल-हाल थे, और वह तार का दफ्तर, चौक के एक तरफ खुले थे। मकानों के दरवाजे बन्द थे और खिड़कियों पर परदे खिंचे थे।

बादाम के पेड़ों की छाया में धीमे-धीमे चलती वे दोनों आगे बढ़ती गयीं और सीधे पादरी के घर आ पहुंचीं। हौले से दरवाजा खटखटाया। एक लमहे-भर वह रुकी, फिर खटखटाया। अन्दर से पंखा चलने की आवाज आ रही थी। उन्हें कदमों की आहट नहीं सुनाई दी। बस, बड़ी धीमी-सी दरवाजा खुलने की आवाज सुनी। फिर खबरदार करती-सी एक आवाज आयी, शायद धातु की बनी जाली के पीछे से ही, "कौन है?" औरत ने बाहर की जाली से झांकने की कोशिश की।

"मुझे पादरी साहब से मिलना है," उसने कहा।

"वह तो सो रहे हैं अभी।"

"मुझे उनसे जरूरी काम है" ने औरत ने जिद की।

उसकी आवाज से शान्त दृढ़ता छलकने लगी थी।

दरवाजा थोड़ा खुला; आहट के बिना ही, और मोटी-सी एक अधेड़ उम्र की औरत सामने आ गयी। उसकी त्वचा पीली थी और केश इस्पाती रंग के थे। चश्मे के मोटे शीशों में गोल बटनों जैसी आंखें झलक रही थीं।

"अन्दर आ जाओ।" वह बोली।

वे एक कमरे में आयीं जहां बासी फलों की गंध आ रही थी। पादरी के घर की औरत ने उन्हें एक काठ की बेंच पर ला बैठाया। लड़की तो बैठ गयी पर मां खड़ी-खड़ी ही देखती रही। उसका मन तो कहीं और ही था, दोनों हाथों में वही चमड़े का बैग था, जिसे वह शायद और भी जोर से पकड़े थी।

पादरी के घर की वह औरत कमरे के दूर के दरवाजे पर फिर दिखाई पड़ी।

"वह कहते हैं, तीन बजे के बाद आना।" फिर उसने बहुत ही धीमे स्वर में कहा, "वह अभी पांच मिनट पहले ही तो लेटे हैं।"

"गाड़ी साढ़े तीन बजे जाती है।" औरत ने कहा।

बहुत ही नपा-तुला, मथा-सा जवाब था यह, लेकिन आवाज में आजिजी थी इस बार। कुछ अन्तर्ध्वनियां-सी भरी थीं उसमें। घर की औरत इस बार अचानक मुस्करायी।

"अच्छा", वह बोली।

दरवाजा जब फिर बन्द हुआ तब वह औरत लड़की के पास जा बैठी। यह प्रतीक्षा-कक्ष बहुत ही संकरा-सा था, लेकिन था साफ-सुथरा। लकड़ी की एक रेलिंग ने उसे बीच से बाट रखा था, उसी के दूसरी ओर एक मेज पड़ी थी जिस पर आयल क्लाथ बिछा था। उसी पर एक ओर गुलदस्ता था तो दूसरी ओर एक पुराना-सा टाइप-राइटर, उसके बाद शायद चर्च की रिकार्ड-फाइलें थी।

दूरवाला दरवाजा फिर खुला और इस बार पादरी स्वयं आया, सफेद रूमाल से अपना चश्मा पोंछता हुआ। उसके चश्मा लगाते ही मालूम हो गया कि वह उसी अधेड़ औरत का बड़ा भाई है, जिसने दरवाजा खोला था।

"मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूं ?" उसने पूछा।

"कब्रगाह की चाबी चाहिए" औरत ने कहा।

लड़की की गोद में फूल थे और उसके दोनों पैर बेंच के नीचे मिले-जुड़े थे। पादरी ने उसकी ओर ताका, फिर उस औरत पर एक नजर फेंकी, और फिर खिड़की पर लगी तारों की जाली के बाहर के चमकते निरभ्र आकाश को देखा।

"इस कड़ी गर्मी में," उसने कहा, "तुम सूरज ढलने का इन्तजार तो करती।"

औरत ने चुपचाप सिर हिला दिया। पादरी रेलिंग के उस ओर गया, अपनी छोटी अलमारी से एक नोटबुक निकाली। फिर कलम और दावात को ले वह मेज के सहारे जा बैठा।

"कौन-सी कब्र पर जाना है तुम्हें ?" उसने पूछा।

"कार्लोस सेन्तेनो की।" औरत ने बताया।

"कौन ?"

"कार्लोस सेन्तेनो।" औरत ने दुहराया।

पादरी फिर भी कुछ समझा नहीं।

"यही तो उस चोर का नाम है जो पिछले हफ्ते यहां, इस शहर में, मारा गया था," औरत ने उसी लहजे से कहा, "मैं उसकी मां हूं।"

पादरी की नजर ने अब उसकी परख की। वह भी उसकी ओर पूरे आत्म-संयम से एकटक ताकती रही। आखिर, वह पादरी शरमा गया, उसने अपना सिर झुकाया और लिखना शुरू किया। ज्यों ही उसने अपनी नोटबुक का वह पन्ना भर लिया, उस औरत को अपना परिचय देने को कहा, और उसने भी बेहिचक सारी तफसील पेश कर दी, मानो वह उन्हें पढ़ रही हो। पादरी को पसीना आ गया। लड़की ने अपने बायें जूते का बकसुआ खोला। अपनी एड़ी जूते से बाहर निकाली और बेंच की रेलिंग पर टिका दी। वैसा ही उसने दायीं से भी किया।

घटना पिछले हफ्ते सोमवार को शुरू हुई थी। सुबह तीन बजे, यहां से कुछ

ही ब्लाक दूर, रेबेका नाम की एक अकेली विधवा उस घर में रहती थी, जहां अजीबोगरीब चीजों का अम्बार लगा था। बरसात की आवाज के ऊपर से उसे लगा था कि कोई बाहर के दरवाजे को खोलने की कोशिश में है। वह उठी, अपने डेस्क के दराजों में से उसने जल्दी-जल्दी वही तमचा ढूंढ निकाला जिसे कर्नल आरेलिआनो बुएंडा के जमाने से लेकर अब तक किसी ने इस्तेमाल नहीं किया था। वह उसे लेकर रोशनी जलाये बिना ही अपने रिहायशी कमरे तक आ गयी। वह बाहर के दरवाजे के ताले से आती आवाज से इतनी भयभीत नहीं थी जितनी कि उस डर से जो 28 साल से अकेली रहते-रहते उसके दिल में एक दहशत बनकर समा गया था। उसने अपने मन में उस जगह को ही नहीं अंकित कर लिया जहां वह दरवाजा था, बल्कि उसमे जड़े ताले की ऊंचाई भी सोच ली।

फिर उसने तमंचा दोनों हाथों से कसकर पकड़ा, आखें मींची और खटाक घोड़ा दबा दिया। जिन्दगी मे पहली बार उसने यह तमंचा चलाया था। जोर से एक धड़ाका हुआ, और उस क्षण तो चमकीली टिन पर पड़ती तेज बरखा की बूंदों की आवाज के सिवाय और कुछ भी सुनायी नही पड़ा, लेकिन, बाद में, फौरन ही, उसे लगा कि कोई धातु की जैसी चीज गिरी और झनायी, फिर एक कराहती-सी आवाज उभरी, मीठी-सी, लेकिन बहुत ही थकी-बुझी-सी : "ओह, अम्मी", वह एक आदमी की थी, जिसे लोगों ने सुबह उस दरवाजे के पास लाश की तरह पड़ा देखा। उसकी नाक के टुकड़े हो गये थे। पहनावे में फ्लेनेल की एक धारीदार रंगीन कमीज थी, रोज पहनने की एक पतलून भी जो पेटी की जगह डोर से बांधी थी, पैरों से जूते नदारद थे। शहर में उसे किसी ने पहचाना भी नहीं।

"अच्छा तो उसी का नाम था कार्लोस सेन्तेनो," सब कुछ लिख चुकने के बाद पादरी बड़बड़ाया।

"सेन्तेनो आयला," औरत ने कहा, "वह मेरा इकलौता बेटा था।"

पादरी अपनी उस छोटी आलमारी के पास पहुंचा। उसी के एक पलड़े के अंदरूनी हिस्से पर दो जंगखायी लम्बी चाबियां लटकी थीं; उसने वे उतारीं, उन्हें खुली कापी में रखा, चौड़ी रेलिंग पर, और फिर जिस पन्ने पर उसकी अपनी लिखावट जहां पूरी हुई थी, उसी ओर उंगली से इशारा करते हुए कहा, औरत की ओर मुखातिब होकर।

"यहां दस्तखत करो।"

औरत ने वहां अपना नाम घसीट दिया। अपने हाथों का थैला बगल में दबाकर। लड़की ने फूल उठाये, रेलिंग तक वह मरमराती-सी आ गयी और अपनी मां को गौर से देखती रही।

पादरी ने लम्बी सांस ली।

"तुमने क्या यह कोशिश नहीं की कभी कि वह ठीक रास्ते पर चले?"

"वह बहुत ही अच्छा आदमी था," औरत ने दस्तखत करने के बाद जवाब दिया।

पादरी ने पहले उस औरत की ओर देखा और फिर उस लड़की की ओर। फिर एक तरह के पवित्र आश्चर्य के साथ सोचा कि वे दोनों रोने क्यों नहीं लगीं? औरत ने उसी स्वर में कहा:

"मैंने उसे ऐसा कुछ भी कभी भी चुराने में मना किया था, जिसे किसी को खाना हो; और उसने हमेशा इसका ख्याल रखा, बल्कि पहले तो, जब वह मुक्केबाजी करता था तब तीन-तीन दिन बिस्तरे पर ही पड़ा रहता था क्योंकि मुक्कों की मार से पस्त हुआ रहता था।"

"उसके सारे दांत खींच-खींचकर निकाले गये थे," लड़की ने बीच में टोका।

"हां, यह सही है," औरत ने हामी भरी, और लड़की की बात से अपनी रजामंदी जाहिर की, "उन दिनों मैं जो कुछ भी खाती थी उसमें उस मार का स्वाद रहता था जो मेरे बेटे को शनिवारी रातों में खानी पड़ती थी।"

"तेरी माया अपरम्पार है, प्रभु।" पादरी ने ऐसा ही कुछ कहा।

लेकिन उसने वह बड़े यकीन से कहा था। इसकी वजह कुछ तो शायद उस का अपना अनुभव था, जिसने उसे थोड़ा शक्की बना दिया था, और कुछ शायद एक कारण तेज गरमी भी थी। उसने उन्हें सुझाया कि वे अपने सिर ढक लें नहीं तो लू लग जायेगी। जंभाई लेता और लगभग सोया हुआ-सा वह उन्हें यह समझाता रहा कि उन्हें कार्लोस सेन्तेनो की कब्र तक कहां और कैसे पहुंचना है, और यह भी कि जब वे दोनों वापस आयें तब उन्हें अब की तरह दरवाजा खटकाना नहीं है, न ही कहीं दस्तक देनी है। उन्हें चाबियां दरवाजे के नीचे रख देनी हैं, और उसी जगह, अगर वे ऐसा कर सकें तो, चर्च के लिए कुछ भेंट भी रख दें। औरत ने पादरी के ये आदेश बड़े ध्यान से सुने लेकिन मुस्कराहट के बिना ही शुक्रिया अदा कर दी।

पादरी ने गली की ओर का दरवाजा खोलते-खोलते ही देखा कि बाहर के दरवाजे की जाली पर किसी की नाक चिपकी है और वह अन्दर झांकने की कोशिश में है। असल में बाहर बच्चों का एक पूरा झुण्ड खड़ा था। जब दरवाजा पूरा खुला तो वे इधर-उधर छितर गये। आमतौर पर, उस वक्त यह गली सुनसान रहा करती थी। अब तो वहां सिर्फ बच्चे ही नहीं और भी कुछ लोगों के झुंड बादाम के पेड़ों के नीचे जुट गये थे। पादरी ने ताप में उतराती-तैरती उस गली पर उठती नजरें डालीं और वह सब समझ गया। उसने फिर दरवाजा बन्द

कर लिया।

"ठहरो एक मिनट।" उसने औरत की तरफ देखे बिना ही कहा।

उसकी बहिन दरवाजे पर अपनी रातवाली कमीज पर अब एक काला कोट पहन आयी थी। उसके बाल कन्धों पर बिखरे थे। उसने पादरी की ओर चुपचाप ताका।

"क्या बात है ?" उसने पूछा।

"लोगों की निगाह पड गयी है" बहिन ने फुसफुसाया।

"तुम इधर पिछवाडे की ओर से चली जाओ तो ठीक रहेगा।" पादरी ने औरत से कहा।

"वहां भी वही हालत है।" बहिन ने बताया, "हर कोई खिड़की पर खड़ा है।"

औरत ने तब तक शायद कुछ नही समझा था। फिर उसने फूलो का गुच्छा अपनी बेटी के हाथों से ले लिया और दरवाजे की ओर बढ़ी।

बेटी उसके पीछे चल दी।

"सूरज ढलने तक इन्तजार कर लो न।" पादरी ने सुझाया।

"तुम पिघल जाओगी इस गरमी में।" कमरे में पीछे खड़ी बहिन ने भी कहा, "ठहरो न, मैं तुम्हें तब ओढने के लिए चोगा भी दे दूंगी।"

"शुक्रिया !" औरत ने जवाब दिया, "हम ऐसे ही ठीक हैं," उसने लड़की का हाथ पकड़ा और गली में बाहर निकल आयी।

□□□